काउन्ट लुईस हेमन (कीरो)

हस्त-रेखाएँ बोलती हैं

(Language of the Hand)

(उदाहरण चित्रों सहित)

मूल लेखक :

कीरो [CHEIRO]

(विश्वविख्यात भविष्यवक्ता)

हिन्दी रूपान्तरकार

डॉ० गौरी शंकर कपूर
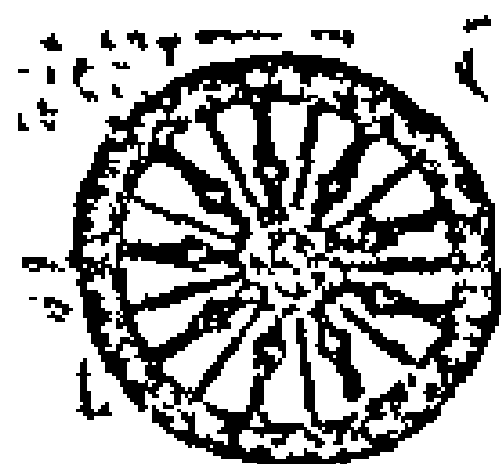
रंजन पब्लिकेशन्स

16, अन्सारी रोड, दरियागंज

नई दिल्ली-110002

प्रकाशक :
रंजन पब्लिकेशन्स
16, अन्सारी रोड, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन : 278835

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

संस्करण : 1990

मूल्य : 40.00

मुद्रक :
बन्धु प्रिंटिंग सर्विस कं०,
दिल्ली-110032

प्राक्कथन

किसी बात या वस्तु के सम्बन्ध में विश्वास तभी बनता है जब उसे इन्द्रियों द्वारा या अन्तरात्मा द्वारा देख या समझ लिया जाये। कोई आस्तिक हो या नास्तिक, दोनों प्रकार के लोग एक-दूसरे के पूरक होते हैं। मानव-समाज को वास्तविकता या सत्य की यथार्थता को सिद्ध करने के लिए दोनों प्रकार के व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

अपनी इस पुस्तक को जनता के सम्मुख रखते हुए हमें अपने उत्तरदायित्व के साथ-साथ इस बात का पूरा अहसास है कि इसके अध्ययन से पाठकों को कितना लाभ होगा, समाज का कितना हित होगा। हमने यह पुस्तक किसी वर्ग विशेष के लोगों को ध्यान में रखकर लिखने का प्रयास नही किया बल्कि यह उन सबके लिए है जो मानव-जीवन के नियामक प्रकृति के नियमों को स्वीकार करते हैं और जिनका विशेपकर हाथ के अध्ययन से दिग्दर्शन होता है।

किसी वस्तु या विषय को सूक्ष्म अध्ययन के लिए अयोग्य नही समझना चाहिए। एक अणु अपने अस्तित्व के महत्त्व में पूर्ण होता है। अतः यदि कोई व्यक्ति ऐसी धारणा बनाये कि हस्त-विज्ञान ध्यान देने योग्य विषय नही है तो यह उसका भ्रममात्र होगा; क्योंकि बहुत-सी बड़ी-बड़ी और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सच्चाइयां या वास्तविकताएं, जिनको कभी नगण्य माना जाता था, वे अब असीमित शक्ति का साधन बन गई हैं। ऐसे लोगों से हम यह अनुरोध करेंगे कि हस्त-विज्ञान रूपी अणु का विश्लेषण करके तो देखें। हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि उनका श्रम व्यर्थ नही जायेगा। इस विषय का अध्ययन स्वयं अपनी यथार्थता को प्रमाणित कर देगा।

हस्त-विज्ञान के पक्ष मे हमने आयुर्विज्ञान और विज्ञान से सम्बन्धित अनेकों तथ्यों को एकत्रित करने का प्रयास किया है जो हम आगे चलकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। इन तथ्यों से यह स्पष्ट हो जाएगा कि हाथ एक विधान के अनुसरण करने वाले हैं और जो प्रभाव उस विधान पर पड़ता है, वही प्रभाव हाथो में दिखाई देता है। इस विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले जिन ख्याति प्राप्त विद्वानों ने मस्तिष्क और हाथ के सम्बन्धित होने के विषय में जो धारणाएं बनाई हैं और जो विचार व्यक्त किए हैं, उनको हमने भी स्वीकार किया और जहां भी हमने इस पुस्तक में उनका वर्णन

किया है हमने स्पष्ट कर दिया है कि उन विचारों का जन्मदाता कौन है। इस प्रकार वे लोग जो इस विज्ञान पर विश्वास नहीं करते उनसे हम यही कहेंगे कि हस्त-परीक्षा के विषय के अध्ययन में और उसको विकसित करने में अनेकों ज्ञानवान, यूनान के दर्शन शास्त्रियों तथा वर्तमान काल के वैज्ञानिकों ने भी दिलचस्पी ली है।

जब हम मस्तिष्क (Brain) की क्रियाशीलता और समस्त शरीर पर उसके प्रभाव के सम्बन्ध में विचार करते हैं, तो हमें यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होता कि वे वैज्ञानिक जिन्होंने पहले यह प्रमाणित किया था कि जितनी शिराएं (Nerves) मस्तिष्क और हाथों के बीच में हैं उतनी शरीर की व्यवस्था में कहीं भी नहीं हैं, वे अब अपने अनुसंधान कार्य के आधार पर यहां तक कहने और करने को तैयार हैं कि जब भी मस्तिष्क में किसी विचार या धारणा का जन्म होता है तो हाथ को उसका अहसास हो जाता है। यदि केवल इसी दृष्टिकोण से हस्त-विज्ञान को देखें तो उसकी यथार्थता असंगत नहीं लगेगी।

इस पुस्तक में हमने कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के हाथों की छाप दी है। यह अपने इस अभिप्राय से किया है कि पाठक उनके जीवन इतिहास से परिचित होंगे। इस सम्बन्ध में हम एक दृष्टि से यह दिखाना चाहते थे कि भिन्न-भिन्न प्रकार की चित्त प्रकृति, मनोदशा, स्वभाव और संस्कार के व्यक्तियों के हाथों में कितना अन्तर होता है। जिस उद्देश्य से हम यह पुस्तक प्रस्तुत कर रहे हैं, उसको ध्यान में रखकर हम उन हाथों का विवेचन भी करेंगे। हमारी पुस्तक को पढ़कर यदि वे स्वयं भी इस कार्य को करेंगे तो वे अत्यन्त लाभान्वित होंगे।

इस पुस्तक के प्रकरणों में हमने पाठकों के सम्मुख हस्त विज्ञान के उन नियमों और सिद्धान्तों को स्पष्ट तथा सरल रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है जो हमने अपने अनुभव में सत्य पाये हैं और जो इस क्षेत्र में हमारी सफलता के मूलाधार हैं। इसके दो कारण हैं। एक तो यह है कि हस्त-विज्ञान पर हमें पूर्ण आस्था है और हम इसको वह मान्यता दिलवाना चाहते हैं जो उसका अधिकार है। दूसरा यह कि अपने सतत परिश्रम, अध्ययन और अनुभव से हमने जो ज्ञान अर्जित किया है, वह जीवित रहे और लोग इससे लाभ उठा सकें क्योंकि वह दिन तो आना ही है जब स्वास्थ्य अथवा अन्य कारणों से हमें इस क्षेत्र से अवकाश लेना ही पड़ेगा।

—कीरो

प्रकाशकीय

हस्त-विज्ञान पर विश्वविख्यात भविष्य वक्ता कीरो (Cheiro) की यह सर्वश्रेष्ठ रचना है। कीरो केवल हस्त विशेषज्ञ ही नहीं थे; बल्कि अंक विद्या और ज्योतिष के भी विशिष्ट विद्वान थे। उनकी सत्य प्रकाशित भविष्यवाणियों का मुख्य आधार असाधारण ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव था।

प्रस्तुत पुस्तक केवल अनुवाद ही नहीं है, विद्वान अनुवादक ने जगह-जगह पर अपने अनुभव एवं विचार तथा भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के मान्य ग्रन्थों के मत व पाश्चात्य विद्वानों (बेनहम, सेण्टजरमेन आदि) के भी मत देकर पाठकों को एक ही स्थान पर उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की है।

यह कहना भी उचित है कि हिन्दी साहित्य के भण्डार में ऐसे उत्तम ग्रन्थ की वृद्धि कर एक अभाव की पूर्ति की गई है। भाषा एवं लेखन की शैली अति सरल है जिससे विद्वान और जनसाधारण पूर्ण लाभ उठा सकें।

आशा है हमारे पाठक इसे पाकर प्रसन्नता अनुभव करेंगे।

कीरो की अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तक **"अंकों में छिपा भविष्य"** भी पाठकों को उपयोगी रहेगी।

—**प्रकाशक**

विश्वविख्यात भविष्यवक्ता
कीरो—(CHEIRO) लिखित
केवल जन्म तारीख से भविष्य जानने की
अद्भुत पुस्तक

अंकों में
छिपा
भविष्य
(NUMEROLOGY)

अब आपको किसी ज्योतिषी के पास जाकर अपना भविष्य मालूम करने की आवश्यकता नहीं रही।

यह एक ऐसी अनूठी पुस्तक है जिसकी आपको वर्षों से तलाश थी। इसमें प्रसिद्ध ज्योतिषी कीरो (CHEIRO) का ज्ञान व 40 वर्षों का अनुभव समाया हुआ है।

इसे पढ़कर आप जान सकेंगे कि आपकी मूल प्रकृति तथा स्वभाव क्या है, कौन से वर्ष आपके जीवन में महत्वपूर्ण रहेंगे, कौन व्यक्ति आपका सबसे उपयुक्त जीवन साथी हो सकता है, किन व्यक्तियों के साथ मैत्री तथा साझेदारी आपके लिए लाभदायक रहेगी ? कौन से दिन आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होंगे ? आपके स्वास्थ्य की क्या दशा रहेगी और आपके लिए भविष्य क्या-क्या संभावनाएं लेकर उपस्थित हो सकता है आदि विचित्र जानकारी आप पायेंगे।

यदि आप जीवन में सुखी और सफल होना चाहते हैं तो यह पुस्तक एक सच्चे मित्र की भांति आपका पथ-प्रदर्शन करेगी। पत्र लिख कर वी० पी० मंगाइये।

मूल्य 40 रुपये

डाक व्यय 8 रु० अलग

आपके सम्पूर्ण जीवन का नक्शा

अनुक्रमणिका

हस्त-विज्ञान के पक्ष में

कीरो के शब्दों में

यदि किसी विज्ञान, कला का कार्य विशेष का आरम्भ से ही मनुष्य जाति के सुधार और प्रगति का ध्येय हो, तो वह विज्ञान, कला और कार्य मान्यता और प्रोत्साहन के अधिकारी होते हैं।

मनुष्य की प्रकृति के विश्लेषण, अध्ययन और परीक्षण करने के जितने क्षेत्र हैं, उनमें हाथ को सबसे अधिक महत्त्व का स्थान प्राप्त होना चाहिए। हाथ के परीक्षण से न केवल मनुष्य जाति की खामियों या कमियों या दोषों को जाना जा सकता है, परन्तु यह भी ज्ञान हो सकता है कि उन दोषों या कमियों को किस प्रकार दूर किया जा सकता है। हाथ आचरण की उस बन्द अलमारी की चाभी है जिसके अन्दर प्रकृति न केवल दैनिक जीवन की प्रेरक शक्ति को; बल्कि उन अन्तर्निहित क्षमताओं और गुणों तथा कार्य शक्तियों को भी छिपाकर रखती हैं, जिनको हम स्व (self) को पहचानकर, अपने जीवन में कार्यान्वित कर सकते हैं।

हम में से कदाचित् कोई ही ऐसा होगा जो अपने बीते हुए जीवन काल का सर्वेक्षण करके, कभी-न-कभी यह अनुभव न करेगा कि उसके गत जीवन के कितने महीने, वर्ष या जीवन का एक बहुत बड़ा भाग, उसके माता-पिता या उसकी अपनी अनभिज्ञता या अज्ञान के कारण निरर्थक व्यतीत हुए हैं।

'अपने आप को पहचानो' हमारे ज्ञानी पूर्वजों का यह मंत्र ऐसा व्यापक और अर्थपूर्ण है कि उसको भूल जाना कठिन है। जब प्रकृति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करके उसके महत्त्व और अस्तित्व को हम स्वीकार करते हैं, तो हमें ऐसे अध्ययन और पठन पर विचार करना चाहिए जो इस सम्बन्ध में हमें और अधिक ज्ञान दे सकते हैं। अपने सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करके हम अपने ऊपर अधिकार रखने में समर्थ होंगे और अपने आपकी उन्नति करके, हम मनुष्य जाति की उन्नति कर सकेंगे।

हस्त-विज्ञान का विषय अपने आपको समझने से सम्बन्ध रखता है। इस विज्ञान की उत्पत्ति पर विचार करने के लिए हमें संसार के इतिहास के आरम्भ के दिनों को

और अपना ध्यान आकर्षित करना होगा और मनुष्य के आदि काल के पूर्वजों का स्मरण करना होगा जिन्होंने बड़े-बड़े साम्राज्यों, सभ्यताओं, जातियों और राजकुलों के नष्ट हो जाने पर भी अपने ज्ञान के भण्डार को सुरक्षित रखा। आज भी वे उस व्यक्ति (Individuality) से परिपूर्ण हैं जैसे वे हजारों वर्ष पूर्व थे जब इतिहास के प्रार्थ पृष्ठ लिखे जा रहे थे। हमारा सकेत पूर्वी देशों में रहने वाले उन हिन्दू विद्वानों की अं है जिनके दर्शन (Philosophy) और प्रज्ञान (wisdom) को आज फिर से मान्यत देने का क्रम आरम्भ हो गया है। ज्ञात ससार के इतिहास के प्रारम्भिक दिनों पर दृष्टि डालने से हमें मालूम होगा कि सर्वप्रथम भाषा विषयक सामग्री इन्ही लोगों के पास थी। सभ्यता के उस काल को आर्य सभ्यता (Aryan civilization) के नाम से जाना जाता है। इतिहास के परे जाना हमारे लिए सम्भव नही है, परन्तु भारत की स्मारक इमारतो के खण्डहर और गुफाओं में बने मन्दिर पुरातत्त्ववेत्ताओं के साक्ष्य के अनुसार इतने पुराने हैं कि इतिहास भी उनके निर्माण काल को बताने मे असमर्थ है।

हस्त-विज्ञान के ज्ञान की उत्पत्ति को जानने के लिए हमें प्रागैतिहासिक (prehistoric) काल की ओर जाना होगा। इतिहास हमें बताता है कि आर्य सभ्यता के पुरातन काल में उनकी अपनी भाषा थी और अपना साहित्य था। यह हमें केवल उन अवशेषो से ज्ञात होता है जो कभी-कभी और कही-कही देखने को प्राप्त हो जाते हैं।

वे लोग कौन थे जिन्होंने सर्वप्रथम हस्त-विज्ञान को समझा और उसको व्याव-हारिक रूप दिया, उनका ज्ञान हमे प्राप्त है और उनकी विद्वत्ता के सम्बन्ध मे अकाट्य प्रमाण मौजूद हैं। भारत की प्राचीन काल की स्मारक इमारतें (monuments) हमें बताती हैं कि रोम या इजरायल की स्थापना से बहुत पहले, इस देश मे ज्ञान का कितना बहुमूल्य भण्डार एकत्रित कर लिया गया था। भारत के प्राचीन मन्दिरो मे खगोल-शास्त्र की जो गणनाएं प्रकाश में आयी हैं उनके अनुसार हिन्दू विद्वानो को दिवुवत के अग्रगमन (Precession of equinox) का ज्ञान ईसा काल (Christian era) से शताब्दियों पहले से प्राप्त था। भारत के प्राचीन काल के कुछ गुफाओं मे बने मन्दिरो मे नरसिंही मूर्तियो (sphinx) की रहस्यपूर्ण आकृतिया अपनी मूक भाषा मे यह बताती हैं कि यह ज्ञान यहा के विद्वानों को उन अन्य देशों से पहले प्राप्त था, जो बाद में अपने ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धियों के लिए प्रसिद्ध हुए। ऐसे ही विद्वान हस्त-विज्ञान के जन्मदाता थे और बाद मे उनके बताये हुए सिद्धान्त अन्य देशों मे पहुंचे। अभी तक पाये प्राचीन ग्रन्थों में हिन्दुओं के वेद सबसे अधिक पुरातन धर्मग्रन्थ हैं और कुछ अधिकृत सूत्रो के अनुसार वे ही यूनान की सभ्यता और ज्ञान के भण्डार के मूलाधार थे।

जब यह तथ्य हमारे सामने है कि हस्त-विज्ञान के जन्मदाता ऐसे देव पुरुष और ज्ञानवान थे, तो इस विषय को हमें समुचित आदर की दृष्टि से देखना चाहिए

और उसके अध्ययन और विवेचन को पूर्ण न्याय देना चाहिए। इसमें जरा भी सन्देह की गुंजाइश नहीं है कि हस्त-परीक्षा का अध्ययन आदि काल से चला आ रहा है और सबसे अधिक पुरातन विज्ञानों में उसकी गणना की जाती है। इस सम्बन्ध में इतिहास हमें बताता है कि भारत के उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में अविस्मरणीय समय से जोशी जाति के विद्वान हस्त-परीक्षा में अत्यन्त दक्ष थे और उसका अनुपालन करते थे और प्रशिक्षण भी देते थे। इस सम्बन्ध में संक्षेप में हम उस अनोखी और अत्यन्त पुरानी पुस्तक का विवरण देना चाहते हैं जिसे भारत की यात्रा में हमें देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। यह पुस्तक उन ब्राह्मणों का अमूल्य खजाना था जो उसके स्वामी थे। वे ही उसको समझने और उसमें दी हुई हाथ की आकृतियों, रेखाओं और चिन्हों का अर्थ बताने में समर्थ थे। यह पुस्तक एक गुफा में बने मन्दिर के खण्डहर में रखी जाती थी और उसके स्वामियों के अतिरिक्त कोई उसको स्पर्श तक नहीं कर सकता था। वह रहस्य-पूर्ण पुस्तक मनुष्य की चमड़ी की बनी हुई थी और बड़े बुद्धि कौशल से उसको पुस्तक का रूप दिया गया था। वह बहुत लम्बी-चौड़ी थी और उसमें सैंकड़ों हस्त-चित्र थे और उसमें दर्ज किया हुआ था कि कौन-सी रेखा और चित्र का अर्थ किस समय सत्य प्रमाणित हुआ था। इस अनूठे ग्रन्थ के सम्बन्ध में एक विचित्र बात यह थी कि वह एक ऐसे लाल रंग के तरल पदार्थ से लिखी हुई थी जो इतना पक्का था कि समय उसकी स्पष्टता, गहराई और चमक पर कोई प्रभाव न डाल सका। पीले रंग की चमड़ी पर लाल रंग के चित्र, अंक चिन्ह और रेखायें एक अद्भुत दृश्य उपस्थित करती थी। उन लोगों ने कदाचित जड़ी-बूटियों से कोई ऐसा रसायन तैयार किया था जिसके प्रलेप से पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ ऐसा चमकता था जैसे उस पर वारनिश की गई हो। मिश्रण कोई भी हो उसके इस्तेमाल से पुस्तक के सभी पृष्ठ बिल्कुल नए से लगते थे। यदि समय का कुछ प्रभाव पड़ा था तो पुस्तक की जिल्दों पर जो कुछ घिसी फटी नजर आती थी। यह पुस्तक बहुत पुरानी थी इसमें तो कोई सन्देह नहीं; परन्तु कितनी पुरानी थी और उसके स्वामियों के किन पूर्वजों ने उसको तैयार किया, इसका ज्ञान उन्हें भी नहीं था। वह प्राचीन ग्रन्थ तीन भागों में विभाजित था। प्रथम भाग एक ऐसी भाषा में लिखा था जिसका अर्थ वे ब्राह्मण भी निकालने में असमर्थ थे। भारत में ऐसे बहुत से बहुमूल्य खजाने मौजूद हैं; परन्तु उनके स्वामी किसी भी मूल्य पर उनसे अलग होने को तैयार नहीं हैं।

हस्त-विज्ञान का ज्ञान भारत में जन्म लेकर दूर देशों तक फैल गया। वहां उससे सम्बन्धित नियमों और सिद्धान्तों का अध्ययन किया गया। उस पर विचार-विमर्श हुए, व्यावहारिक रूप से उसकी परीक्षा की गई और इस प्रकार हस्त-विज्ञान की प्रगति और अनुपालन होने लगा। जैसे विभिन्न जातियों के लोग विभिन्न धर्मों को प्रचारित या प्रस्तावित करते हैं उसी प्रकार हस्त-विज्ञान की विभिन्न प्रणालियां और वर्गीकरण बनते गये और प्रचारित होने लगे। जैसा हम कह चुके हैं, हस्त विज्ञान का

प्राचीनतम लिपिवद्ध अभिलेख (record) भारत में था; परन्तु यह अत्यन्त खोज कर पर भी हम जानने मे असमर्थ रहे कि यह ज्ञान कब और किस समय में और किस क्र से अन्य देशों मे प्रस्तावित हुआ। हां, इतना हमें अवश्य पता लगा कि प्राचीन काल से हस्त-विज्ञान का अनुपालन चीन, तिब्बत, पर्सिया (जो अब ईरान के नाम से जाना जाता है) और मिश्र मे होता था। परन्तु यूनानी सभ्यता के समय इस विज्ञान को कुछ स्पष्ट रूप प्राप्त हुआ। वहा उसकी काफी प्रगति हुई और ऐसा पता लगता है कि Anaxagoras नाम के एक यूनानी विद्वान ईसा से 423 वर्ष पूर्व हस्त-विज्ञान का अनुपालन करते थे और उसका प्रशिक्षण भी देते थे। ऐसा भी मालूम हुआ है कि हस्त-विज्ञान पर सोने के अक्षरों में लिखी हुई एक पुस्तक Hispanus नाम के एक यूनानी विद्वान को एक धर्मस्थल की वेदी पर प्राप्त हुई थी जो उन्होने सिकन्दर महान को भेंट कर दी और कहा कि यह ग्रन्थ एक उन्नत और जिज्ञासु बुद्धि वाले के पढने योग्य है। एरिस्टाटिल, प्लिनी, Parcelus, Cardamis, Ablertus, Magmis और शहन्शाह आगस्टस हस्त-विज्ञान को समझते थे और उसको प्रचुर मात्रा में सम्मान देते थे।

यह सदा से विवाद का विषय रहा है कि क्या हमारे प्राचीनकाल के विद्वा हमसे अधिक प्रबुद्ध थे। हम तो यही कहेगे और इस बात को स्वीकार भी किया गर है कि प्राचीन काल मे जब मनुष्य जाति के सम्बन्ध में कोई विचार किया जाता था कोई अध्ययन किया जाता था, कोई सिद्धान्त या नियम बनाए जाते थे, तो उनके विचारणीय विषय का पात्र मनुष्य ही, होता था। अतः उनके निष्कर्षों को अधिक यथार्थ निर्णित करना उचित होगा—आज के समय में तो लोगों के मुकाबले यन्त्र, तन्त्र, मशीनरी और मनुष्य जाति को नष्ट करने के उपकरणों का निर्माण होता है। और फिर जब वर्तमान युग में यह स्वीकार किया जाता है कि प्राचीन काल के यूनानी दर्शन-शास्त्री मनन और प्राज्ञता की असाधारण गहनता वाले व्यक्ति थे तो हम उनके प्राधिकार की अवहेलना क्यों करें और महत्त्वपूर्ण विषय के अध्ययन को गहन क्यों न करें जिसमें उन्हें पूर्ण आस्था थी और जिसने उनके अवधान पर अधिकार कर रखा था। और जब दूसरे विषयो में हम उनकी विद्वत्ता और विज्ञता को मान्यता देते हैं तो हस्त-विज्ञान में उनकी प्रबुद्धता को अस्वीकार क्यों करें?

अब जब मनुष्य जाति के सम्बन्ध मे अनुशीलन (study) में यह स्वीकार किया जाने लगा कि मनुष्य के मुख पर नाक, आंख, कान आदि के नियत स्थान हैं, तो इस बात को भी मान्यता दी गयी कि मनुष्य के हाथ में शीर्ष रेखा, जीवन रेखा आदि के लिए भी प्रकृति ने उपयुक्त स्थान नियत किये हैं। और जैसे-जैसे इस विषय पर अध्ययन और अभ्यास ने प्रगति की, हस्त-विज्ञान के छात्रो ने केवल हाथ में पाये जाने वाले चिन्हो और रेखाओं आदि का नामकरण ही नही किया; बल्कि उनके अर्थ और प्रभावों की भिन्नता का—जैसे शीर्ष रेखा का मनोवृत्ति से, हृदय रेखा का स्नेह और अनुराग से, जीवन रेखा का जीवन शक्ति और आयु काल से सम्बन्ध स्थापित

किया। इसी प्रकार उन्होंने अन्य चिन्हों, गृह-क्षेत्रों आदि को नाम दिये और उनके हाथ के स्वामी पर प्रभाव पड़ने के नियमों को निर्णित किया।

यह कहा जाता है कि हमारे धार्मिक नेता इस प्राचीन काल की विद्या से ईर्ष्या करते थे। पता नहीं, यह ठीक है या गलत; परन्तु आजकल भी हम देखते हैं कि धर्म के ठेकेदार (Church) हमारे आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन दोनों के लिए ईश्वर के चुने हुये दिव्य वक्ता (Oracle) बन गये हैं। हम अपनी असहिष्णुता नहीं प्रकट करना चाहते; परन्तु यह सत्य है कि यूरोपीय देशों में किसी भी प्रबल या अभिभावी धर्म का इतिहास, मनुष्य द्वारा ज्ञान की उपलब्धियों को प्राप्त करने के विरोध की कहानी है। उनके अनुसार हस्त-विज्ञान के जन्मदाता काफिर विधर्मी थे। इस विज्ञान के गुणों की ओर उन्होंने ध्यान तक नहीं दिया, उसको न्याय मिलने का तो प्रश्न ही न था। उसके केवल इन्द्रजाल और जादू-टोना होने का प्रचार किया। उनका निश्चित मत था (या ऐसा करके वे अपने स्थान को सुरक्षित रखना चाहते थे) कि हस्त-शास्त्री शैतान की सन्तान हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि पुरुष और स्त्री इतने भयभीत हो गये कि उन्होंने हस्त-विज्ञान को गैर कानूनी निर्णित कर दिया और फिर वही हुआ जो ऐसी परिस्थितियों में होना था। हस्त-विज्ञान जैसे दैविक और प्राकृतिक ज्ञान की प्रगति में संलग्न विद्वान तो शैतान की औलाद बन गये जिनके पास की हवा भी दूषित थी और खानाबदोष, आवारा तथा जिप्सी हस्त-शास्त्री बन गये।

मध्य कालीन युग में इस प्राचीन दैविक ज्ञान की पुनर्स्थापना करने के अनेकों प्रयत्न किये गये। Die Kunst Ciromanta नाम की एक पुस्तक हस्त-विज्ञान पर स० 1475 में और उसके बाद Cyromantia Aristotelis Cum Figuris नाम की दूसरी पुस्तक स० 1490 में प्रकाशित हुई। ये दोनों पुस्तकें अब भी ब्रिटिश म्यूजियम में रखी हैं। इससे यह आभास मिला कि हस्त-विद्या पूर्ण रूप से लुप्त नहीं हुई थी और धर्म के ठेकेदारों द्वारा लगाई गई आग की राख के गर्भ में बहुत से अंगारे अब भी भभक रहे थे। इसके पश्चात् उन्नीसवीं शताब्दी में यह विज्ञान फोनिक्स (Phoenix अमर पक्षी) के समान, इस उत्पीड़न की अग्नि से, जिसने उसको जड़मूल से नष्ट करने का प्रयास किया था, उभरकर पुनः अपनी शक्ति एकत्रित करने लगा। वैज्ञानिक वातावरण ने उस मत को समाप्त कर दिया जिसने हस्त-विज्ञान को अन्ध-विश्वास की संज्ञा दी थी। अब लगभग सब ओर प्रमाण प्रस्तुत हो रहे हैं कि यह प्राचीन विद्या भ्रान्ति नहीं, एक वास्तविक ज्ञानरूपी रत्न है जिसकी गहनताओं में सत्य का प्रकाश अन्तर्विष्ट है, जिसको ईश्वर की सृष्टि को मान्यता देने वाले जानने और देखने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और उसे पूज्य मानते हैं।

हमारे लिए यहां उचित होगा कि हम हस्त-विज्ञान के पक्ष मे लिखकर धार्मिक संस्थानों (Church) के आक्रमणों और लांछनों से उसकी रक्षा करें। आप ही बताइये धार्मिक संस्थानों को इस निगूढ़ विज्ञान पर लांछन लगाने का क्या अधिकार है? बड़े

दुःख की बात है अब भी शैतान उन लोगों के पीछे लगा है जो इस विज्ञान की प्रगति और इसके विभाग मे सहयोग देते हैं या भाग लेते हैं, जो धार्मिक संस्थानों को स्वीकार नही है। लन्दन मे आये हमें एक महीना भी नही व्यतीत हुआ था कि एक कैथोलिक पादरी ने एक समूचे परिवार को निर्मुक्त (Absolution—एक धार्मिक रस्म) देने से इन्कार कर दिया, क्योंकि वे हमारे पास अपने हाथ दिखाकर हमारी सलाह लेने आये थे। अमरीका मे अपने प्रथम वर्ष के अन्दर ही हमारे दो पादरी आये और हमें विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि हमारी सफलता शैतान की देन थी। एक ने तो यह भी कहा कि ईश्वर ने इनको हमारे पास इसलिए भेजा था कि हम पादरी बन जायें जिससे शैतानी शक्तियो से हमारा सम्बन्ध टूट जाये।

धार्मिक संस्थानों (Church) के मत मे सहवर्तिता (Consistency) नही है। उनका मूलाधार बाइबिल है और बाइबिल भविष्य-वाणियों से परिपूर्ण है, प्रारब्ध की पुस्तक (Book of fate) है। हेब्रू (Hebrews', हिन्दुओं, मिश्रियों (Egyptians) और चाल्डियन लोगो (Chaldeans) और सब देशो के लोगों में जहां भविष्य-वक्तव्य को प्रोत्साहन दिया जाता है, भविष्य-वक्ता धार्मिक नेताओं से पृथक होते हैं।

धार्मिक संस्थानों (Church), के विरोध को ध्यान में रखकर हमें यह बताते हुये बहुत मनोरंजन होता है कि स्वय बाइबिल मे कई पद हैं जिनमें हाथो का जिक्र है। बहुत से अधिकृत लोगों का कहना है कि यहूदियो ने मिश्र में जिन कलाओं मे प्रशिक्षण लिया था उनमें से एक हस्त-विज्ञान भी था; परन्तु इस सम्बन्ध मे जो सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पद है वह है 'Job'। वह सैंतीसवें प्रकरण मे सातवां पद है। हेब्रू मे उसका अर्थ कुछ और ही लिया गया; परन्तु अंग्रेजी मे उसका अनुवाद इस प्रकार है—"God placed signs or seals in the hands of men, that all men know their works" (ईश्वर ने हाथों मे चिन्ह इसलिए अंकित किये जिससे लोग जान जायें कि कैसा भविष्य उनकी प्रतीक्षा कर रहा है)। इस सम्बन्ध मे बाइबिल में कुछ और भी पद हैं जो नीचे दिये जा रहे हैं—

(1) "Lenght of days is in her right hand and honour are in her left"

(2) "What evil is in my hand."

(3) "And receive his mark in his forehead or in his hand."

अब हमें यह देखना है कि आधुनिक विज्ञान से हस्त-विद्या को क्या सहयोग प्राप्त हुआ है और इस विद्या का कोई मूलाधार है या नही। क्या यह परिकल्पना या अटकलबाजी मात्र है? विशिष्टीकरण (Specialization) के इस युग मे यही देखने में आता है कि लोग लगभग सभी क्षेत्रों में किसी पूर्ण विषय में परिपक्वता प्राप्त करने मे दिलचस्पी नही रखते। वे उसके किसी एक भाग को चुन लेते हैं और उसी में विशिष्टता प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। पहले जमाने मे तो ऐसा होता था कि जो

डाक्टर बनता था वह चिकित्सक, रासायनिक और सर्जन सब कुछ होता था। उन्नीसवीं शताब्दी में, विशेषकर उसके अन्त होने के समय हर क्षेत्र में विशिष्टीकरण आरम्भ हो गया। जो चिकित्सक (Physician) बना वह सर्जन नहीं रहा और जो सर्जन बना वह चिकित्सक नहीं रहा। दांतों का इलाज करने वाला डाक्टर तो कहलाने लगा, परन्तु डाक्टरी के वास्तविक कार्य, जैसे चिकित्सा और सर्जरी से उसका कोई सम्बन्ध नही रहा। जो रासायनिक बना उसे भी किसी और विषय से सम्बन्ध रखने की आवश्यकता नहीं रही। हड्डियों का इलाज साधारण चिकित्सक या सर्जन नही करते, उनका इलाज हड्डियों का डाक्टर करता जो अपने आपको आर्थोपिडिएस्ट कहता है। इसी प्रकार आंखो, कानों आदि के विशेषज्ञ बन गये।

विशिष्टीकरण मान लिया एक बहुत उन्नति की बात है; परन्तु इसमें एक बहुत बड़ा दोष या कमी भी है। इसके द्वारा एक विशेष विषय में अधिकाधिक ज्ञान तो प्राप्त हो जाता है; परन्तु विशेषज्ञों का दृष्टिकोण संकीर्ण हो जाता है और उनका ज्ञान भी अपने विषय तक ही सीमित रहता है। ऐसा होता है कि चिकित्सक शरीर-रचना विज्ञान (Anatomy) के विषय में अधिक नही जानता है और सर्जन की चिकित्सा सम्बन्धी विज्ञता कम हो जाती है। स्नायु (Nerve) विशेषज्ञ साधारण रोगो का इलाज करने में असमर्थ होता है। नौबत तो यहां तक आ गयी है कि चिकित्सक और सर्जन शरीर के केवल एक भाग विशेष या रोग विशेष का इलाज करते हैं। कोई व्यक्ति सम्मोहन शक्ति द्वारा इलाज में प्रभावित है। सहयोग से वह किसी साधारण चिकित्सक के पास पहुंच जाता है। जब वह चिकित्सक से सम्मोहन शक्ति के विषय में बात करता है तो उसको बताया जाता है कि ऐसी कोई शक्ति का होना असम्भव है। आप ही विचार कीजिए कि जो व्यक्ति किसी से बिल्कुल अनभिज्ञ हो उसे उस विषय को असम्भव घोषित करने का क्या अधिकार है? इसी प्रकार कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना ही शिक्षित, ज्ञानवान और अपने विषय में बहुत बड़ा विशेषज्ञ ही क्यों न हो उसे टेलीपैथी, सम्मोहन विद्या (mesmerism), हस्तविज्ञान, ज्योतिष या अंक विद्या आदि को असम्भव घोषित करने का कोई अधिकार नहीं है जब उसे उनके सम्बन्ध में सामान्य ज्ञान भी नहीं प्राप्त है। इस सम्बन्ध में वाल्टेयर का न्यूटन के सम्बन्ध में कहा हुआ एक वाक्य हमें स्मरण हो आया है। उसने कहा था—"न्यूटन अपने सारे विज्ञान मे पारंगत है; परन्तु वह यह नही जानता कि उसके हाथ कैसे हरकत करते हैं।" प्रायः लोग हमसे कहते हैं—"श्रीमान् जी, आपने मेरे हाथ की रेखायें देखकर मेरे गत जीवन के विषय में तो सब कुछ बता दिया है और मुझे विश्वास होने लगा है कि मेरे भविष्य के सम्बन्ध में भी ठीक ही बतायेंगे परन्तु डा०" तो कहता है यह सब ढोंग है। आप ही बताइये मैं क्या करूं।" जो डाक्टर हस्त-विज्ञान आदि को ढोंग कहता है और समझता है वह ऐसा व्यक्ति होगा जिसको अपने जीवन में यह जानने का समय और अवसर ही न मिला होगा कि हाथ और मस्तिष्क में कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

उसे मेडिकल स्पेशलिस्टों की इस विषय की पुस्तकों को देखने का सौभाग्य भी नहीं प्राप्त हुआ होगा। उसका अनुभव तो अपने चिकित्सकीय जीवन में केवल ज्वर, निमोनिया जैसी दैनिक जीवन की बीमारियों तक ही सीमित होगा। वह तो यह जानता होगा कि आदमी के हाथ होते हैं मगर उनका महत्त्व उसके पेशे में केवल इतना ही रहता होगा कि उनमें नाड़ी गतिशील होती है और ज्वर आने पर वे गर्म हो जाते हैं।

बीस वर्ष पूर्व (कीरो अपने समय की बात कर रहे हैं) लगभग प्रत्येक चिकित्सक (Physician) सम्मोहन शक्ति (Hypnotism) को असम्भव बात कहता था। आज वे ही लोग उसको मान्यता देकर उसका ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न हैं। ऐसा ही हस्त-विज्ञान के सम्बन्ध मे हुआ। वर्षों वे इसको ढोंग कहते रहे; परन्तु अब वे स्वीकार करते हैं कि हाथ चमत्कारिक रूप से विभिन्न प्रकार के रोगों का संकेत देता है। लंदन और पेरिस के चिकित्सक अब रोग निदान में नाखूनों के आकार, रंग और उन पर बने चिन्हों को देखना आवश्यक समझने लगे हैं।

यदि चिकित्सा व्यवसाय के लोग पुराने पूर्वाग्रह को भुला दें और किसी अधिकृत और विश्वसनीय हस्त-विज्ञान की रचना का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें तो हम उन्हें विश्वास दिलाते हैं और दावे के साथ कहते हैं कि उनका परिश्रम व्यर्थ नहीं जायेगा और उनकी रोग निदान सम्बन्धी क्षमता में अपूर्व वृद्धि होगी। इस सम्बन्ध में 'हस्त-विज्ञान' के शीर्षक से एडिनबर्ग के विश्वविद्यालय की एक पत्रिका में सम्पादक को सम्बोधित एक पत्र प्रकाशित हुआ था, जिसके कुछ महत्त्वपूर्ण अंश हम नीचे दे रहे हैं:—

महोदय,

कुछ वर्ष हुए मैं रॉयल इन्फरमरी अस्पताल के एक वार्ड से गुजर रहा था तो सहसा मेरे मन में एक मरीज के हाथ की रेखाओं को देखने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

मैं निकटतम मरीज के पलग के पास गया और बिना मरीज को देखे उसका हाथ देखने लगा। न तो मैं हस्त-विज्ञान में अधिक विश्वास करता था और न ही मुझे उसका कोई विशेष ज्ञान था। इतना मैं अवश्य जानता था कि हाथ में पांच मुख्य रेखायें होती हैं, उनके नाम क्या हैं और यह नियम कि रेखा का किसी स्थान में टूटना दुर्भाग्य सूचक होता है। मैंने हाथों की परीक्षा की और देखा कि जीवन रेखा दोनों हाथों में टूटी हुई थी और भाग्य रेखा अपनी नियमित लम्बाई के एक चौथाई भाग को पार करके रुक गई थी और उसके अन्त पर क्रास का चिन्ह अंकित था। जब मैंने मरीज से पूछताछ की तो मुझे ज्ञात हुआ कि वह 23 वर्ष का था और क्षय रोग से ग्रसित था। कुछ ही दिन पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। स्थान के अभाव से मैं अपने निजी अनुभव

ह अन्य उदाहरण देने में असमर्थ हूं। मैं जानता हूं कि हस्त-विज्ञान को बहुत लोग बकवास समझते हैं, मैं ऐसा नही समझता; क्योंकि वास्तविकता को दवाया नहीं जा सकता। यद्यपि मेरे विचार में हस्त-विद्या का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। इस सम्बन्ध मे मैं अपने कुछ विचार दे रहा हूं—

(1) मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसका हाथ सबसे अधिक विकसित होता है।

(2) वाक् पटुता, भाषण पटुता, क्रोध, अनुराग आदि की प्रवृत्तियाँ हाथों के संचालन से व्यक्त की जाती हैं।

(3) इस संचालन के कारण हाथ में सिमटन, चुन्नट या रेखायें बन जाती हैं।

(4) ये चुन्नटें और रेखायें सचालन और प्रवृत्तियों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं।

(5) प्रत्येक हाथ में चार स्पष्ट चुन्नटें या रेखायें होती हैं जिनका अनुभव के अनुसार अनुराग, मानसिक क्षमता, आयु-काल और मानसिक झुकाव से निश्चित सम्बन्ध होता है।

(6) एक पतली परन्तु स्पष्ट रेखा यदि आयु रेखा (जीवन रेखा) को काटे या वह टूटी हुई हो या उसमें शाखा हो, तो उसकी नियमानुवर्तिता या एक समानता (Uniformity) में विघ्न पड़ता है और परिणामस्वरूप जीवित रहने की प्रवृत्ति मे बाधा पड़ती है।

(7) साधारण और सूक्ष्म संचालन से जो चुन्नटें या रेखायें बनती हैं उन पर नियन्त्रण करने वाली शिराओं (Nerves) में कुछ ऐसे तंतु या रेशे होते हैं जो प्रदोलनों (Vibrations) को संचालित करते हैं; जिससे आयु रेखा (जीवन रेखा) पर प्रभाव पड़ता है और इस प्रकार क्रियाशीलता से क्रास के स्वरूप वाली चुन्नटें या रेखायें बन जाती हैं।

(8) हस्त-विज्ञान के विद्वानों के अनुसार बायां हाथ उन गुणों या प्रवृत्तियों को व्यक्त करता है जो जन्मजात हैं और दाहिना हाथ उन गुणों और प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन कराता है जिनका हम निर्माण करते हैं या अभिग्रहण करते हैं। इस प्रकार बायें हाथ से हमारे जन्मजात गुण व्यक्त होते हैं, उनको हम बदल नहीं पाते हैं और जिन गुणों को हम अभिग्रहण करते हैं वे दाहिने हाथ में देखने को मिलते हैं।

इस पत्र से यह प्रमाणित होता है कि इस विज्ञान का साधारण अध्ययन भी उन लोगों का, जो इस पर आस्था नहीं रखते हैं, विश्वास दिला सकता है कि हाथ की रेखायें अर्थहीन नही होतीं।

चिकित्सा शास्त्र में ऐसी मान्यता है कि कान के ऊपरी भाग में यदि कोई गांठ हो तो वह पागलपन का संकेत देती है। ऐसी गांठ प्रायः उन लोगों में पायी जाती है जिनको पागलपन पैतृक देन के रूप में मिलता है। पेरिस की (Academic des Sciences) विज्ञान मे शोध करने वाली एक संस्था) ने इस सम्बन्ध में काफी शोधकार्य

किया और अन्त में यह प्रमाणित कर दिया कि केवल कान की सूक्ष्म परीक्षा द्वारा पागलपन के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है। हमारा (कीरो का) तर्क यह है कि जब कान की परीक्षा से इस प्रकार का निष्कर्ष निकाला जा सकता है, तो क्या हाथ की, जिसका मस्तिष्क (Brain) से सम्बन्ध है, परीक्षा से ऐसा करना असम्भव है?

चिकित्सक अब स्वीकार करने लगे हैं कि नाखून के विभिन्न प्रकार के आकार विभिन्न प्रकार के रोगों की सभावना का संकेत करते हैं। हमारा दावा तो यह है कि नाखूनों को देखकर यह बताया जा सकता है कि भविष्य में जातक पक्षाघात, क्षय रोग, हृदय रोग आदि का शिकार हो सकता है या नहीं। कई डाक्टरों ने गुप्त रूप से इस बात को स्वीकार किया है कि उन्होंने हाथों की परीक्षा से कई प्रकार के निदान किये हैं; परन्तु खुले आम डाक्टर लोग हाथ की महत्ता को मानने को तैयार नहीं हैं।

अब हम यह तुलना करके दिखायेंगे कि डाक्टर को अपने मरीज और हस्त-शास्त्री को अपने मुवक्किल देखने में क्या अन्तर है? हम यह तुलना इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आयुर्विज्ञान (Medical) व्यवसाय के लोग हस्त-शास्त्री को कोई महत्त्व देना उचित नहीं समझते हैं।

प्रथम बात तो यह है कि डाक्टर मान्यता प्राप्त विज्ञान के आधार पर अपना व्यवसाय करता है। अपने शोधकार्य के लिए आधुनिकतम यंत्र उसको प्राप्त हैं; परन्तु कितने डाक्टर ऐसे हैं जो मरीज के बिना बताये उसका रोग जान लेते हैं और कितने डाक्टरों का रोग का निदान बिल्कुल ठीक निकलता है? कुछ वर्ष हुए लन्दन में (La Grippe नाम का एक संक्रामक रोग व्यापक रूप से फैल गया था। हमें याद है कि लन्दन के एक मुख्य समाचार पत्र में एक व्यक्ति के इस सम्बन्ध मे अनुभवों के पत्र प्रकाशित हुए थे। वह नगर के सात उच्च कोटि के चिकित्सकों के पास गया। सातों ने उसके लिए भिन्न-भिन्न औषधियों के नुस्खे लिखे।

अब हम यह बताते हैं कि किसी मुवक्किल के आने पर हस्त-शास्त्री क्या करता है? मुवक्किल न तो अपना नाम या पेशा बताता है, न ही यह बताता है कि वह विवाहित है या अविवाहित। बस, अपने हाथ सामने परीक्षा के लिए खोल देता है। हस्त-शास्त्री उसके बीते हुए जीवन की घटनाओं और उसके बीते समय के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में और उसकी वर्तमान परिस्थितियों का विवरण उसे बताता है। और जब अपने कथन को सत्य पाकर उसे आत्मविश्वास प्राप्त हो जाता है तो वह मुवक्किल को बताता है कि भविष्य में उसके जीवन में क्या घटित होगा। डाक्टर को रोग निदान के लिए सब सहायक सामग्रियां प्राप्त होती हैं, परन्तु हस्त-शास्त्री के पास केवल उस का ज्ञान और अनुभव ही होता है। डाक्टर इलाज में सैकड़ों बार असफल हो जाता है तो उस पर कोई दोष नहीं लगता; परन्तु हस्त-शास्त्री की यदि एक बात भी गलत निकल जाये तो उसे ढोंगी और नीम हकीम कहा जाता है और हस्त-विज्ञान के लिए

निराधार,' 'बकवास' और 'भ्रांतिपूर्ण' जैसे विशेषण प्रयुक्त होते हैं। हस्त-शास्त्री केवल गत जीवन और भविष्य की घटनाओं का विवरण देता है। किसी की जान लेना या बचाना तो उसके हाथ में नहीं होता। भयानक गलतियां करके या गलत रोग निदान करके डाक्टर तो कभी-कभी मरीजों की जान भी ले लेता है; परन्तु तब भी वह किसी दोष का भागी नहीं होता। एक हस्त-शास्त्री की बात गलत निकलने पर मुवक्किल दूसरे और अधिक अनुभवी विद्वान के पास जा सकता है; परन्तु डाक्टर की गलती से अपना जीवन खोकर मरीज तो केवल ईश्वर ही के पास जा सकता है।

वैज्ञानिकों ने जो प्रमाण प्रस्तुत किये हैं उनके अनुसार रेखाओं, ग्रह क्षेत्रों, चिन्हों आदि की हस्त-विज्ञान में उपयोगिता के पक्ष में असीमित युक्तिसंगत तर्क दिये जा सकते हैं। आपने देखा होगा और आप देख सकते हैं कि दो हाथ कभी एक समान नहीं होते। उनकी बनावट, उनकी रेखाओं और अन्य चिन्हों में बड़ा अन्तर होता है। जुड़वां बच्चों के हाथ भी एक दूसरे से भिन्न होते हैं, उनकी रेखाओं मे भिन्नता होती है, कभी-कभी बनावट भी भिन्न होती है और यही कारण है कि उनके स्वभाव मे भी भिन्नता होती है। दोनों (या तीनों या चारो) जुड़वां बच्चों का व्यक्तित्व अलग-अलग होता है। उनका भाग्य भी एक-सा नहीं होता। प्राय: वे सब भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यवसाय करते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि यदि किसी पुत्र का स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल मिलता-जुलता हो तो स्वभाव से सम्बन्धित लक्षण कभी-कभी कई पीढियो तक होते हैं। और यह भी प्राय: देखा गया है कि बच्चों के हाथों मे तथा उनके पिताओं के हाथों मे रेखाओं की स्थितियों मे काफी अन्तर होता है और यही कारण है कि सन्तान की जीवनधारा अपने पिता के समान नहीं चलती। क्या यह नहीं होता कि मोचियों के लड़के ऊंचे प्रशासनिक पद या मंत्रित्व प्राप्त करने में सफल होते हैं, मंत्रियों के लड़के गुण्डे और हत्यारे निकलते हैं। वकील के लड़के डाक्टर बनते हैं, डाक्टर के लड़के वकील बनते हैं। ऐसा भी देखा गया है कि कोई बच्चा शकल-सूरत और स्वभाव से मां से मिलता-जुलता है और दूसरे की पिता से समानता होती है। ऐसी परिस्थितियों में इस प्रकार की समानता को दर्शाने वाले चिन्ह उन लोगों के हाथों में अवश्य पाये जायेंगे।

यह एक बहुत गलतफहमी फैली हुई है कि रेखायें हाथों से काम करने से बनती हैं। वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत है। जब बच्चे का जन्म होता है तो उसके हाथों में रेखायें बिल्कुल स्पष्ट बनी हुई होती हैं (देखिए प्लेट संख्या 9)। हाथों द्वारा काम करने से उन पर त्वचा की एक मोटी और कच्ची तह जम जाती है जो रेखाओं को छिपा लेती है, बनाती नही। यदि किसी रीति से उसको कोमल बना दिया जाये तो वह तह हट जाती है और मौलिक चिन्ह स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगते हैं।

हाथों की वरिष्ठता (Superiority) एक अत्यन्त ध्यान देने योग्य विषय है। वैज्ञानिक और ज्ञानवान लोग एकमत हैं कि हाथ मनुष्य के शरीर के अन्य अंगों से

अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। Anaxagoras का कहना है—"मनुष्य की वरिष्ठता का कारण उसके हाथ हैं।" *Aristotle* के अनुसार—"The hand is the organ of organs, the active agent of the passive powers of the entire system." (मनुष्य के शरीर में हाथ सब अवयवों से वरिष्ठ है, वह समस्त शारीरिक व्यवस्था की निश्चेष्ट शक्तियों का सक्रिय प्रतिनिधि है।) एक प्रसिद्ध विद्वान सर चार्ल्स का कहना है—"We ought to define the hand as belonging exclusively to man, corresponding in its sensibility and motion, to the endowment of mind." (हाथ की व्याख्या करते समय हमें उसे एकमात्र मनुष्य ही की सम्पत्ति कहना चाहिए जिसकी संवेदनशीलता और क्रियाशीलता मस्तिष्क की नैसर्गिक प्रवृत्ति के अनुरूप होती है)। एक दूसरे विद्वान सर रिचर्ड ओवेन ने अपनी पुस्तक 'The Nature of Limbs' में लिखा है—"In the hand every bone is distinguishable from one another, each digit has its own peculiar character." (हाथ में प्रत्येक हड्डी एक दूसरे से पृथक् पहचानी जा सकती है और हर एक अंक का अपना विशेष गुण होता है।)

इस बात को दीर्घकाल से स्वीकार किया गया है कि हाथ अपने संकेतों और हरकतों द्वारा जातक के मन की बात को व्यक्त कर सकते हैं, जैसे कि होंठ बोलकर करते है। इस विषय में एक प्रसिद्ध विशेषज्ञ (Quintilian) ने हाथों की भाषा के सम्बन्ध में कहा है—"शरीर के दूसरे अंग तो बोलने वाले के सहायक मात्र होते हैं, परन्तु हाथ स्वयं सारी बातें कह देने में समर्थ होते हैं। वे प्रश्न करते हैं, वे आश्वासन देते हैं, वे आह्वान करते हैं, वे निवेदन करते हैं, वे धमकी देते हैं, वे अनुरोध करते हैं, वे भय की भावना को प्रदर्शित करते हैं, वे विरोध, दुःख, हर्ष, सन्देश, स्वीकृति, पश्चाताप सभी को व्यक्त कर देते हैं।"

अब हम तन्त्रियों (नसों), त्वचा और स्पर्श की चेतना के विषय पर आते हैं। त्वचा के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त करते हुए सर चार्ल्स बैल ने लिखा है—"त्वचा स्पर्श की इन्द्रियों का इतना महत्त्वपूर्ण भाग है कि उसके माध्यम से बाहरी भावनाओं का प्रभाव नसों तक पहुंचता है। अंगुलियों के अग्रिम भाग (छोर) से स्पर्श की चेतना का अनुभव होता है। नाखून अंगुलियों के अग्रछोरों (tips) को सहारा देते है और उनकी लचीली गद्दी (cushion) को संपोषित करने को वे चौड़े और ढाल के समान होते हैं। बाहरी उपकरण का गद्दी (cushion) एक महत्त्वपूर्ण भाग है। उसके कोमल और लचीली होने के कारण वे स्पर्श के लिए अत्यन्त अनुकूल होते हैं। यह एक असाधारण तथ्य है कि हम नाड़ी की गति को जिह्वा से अनुभव नहीं कर सकते, वह अनुभव हम केवल अंगुलियों ही से प्राप्त कर सकते हैं। यदि हम सूक्ष्मता से निरीक्षण करें तो हम देखेंगे कि स्पर्श की सबसे अधिक चेतना अंगुलियों के अग्र छोरों या नोकों से ही प्राप्त होती है। उन अग्र छोरों के भीतरी भाग में जो नसें होती हैं उन्हीं के द्वार

हमें स्पर्श की चेतना का अनुभव होता है।"

आयुर्विज्ञान (Medical Science) ने प्रमाणित कर दिया है कि शारीरिक व्यवस्था में हाथ में सबसे अधिक नसें होती हैं और करतल में हाथ के अन्य भागों से अधिक नसें होती हैं। यह भी स्वीकार कर लिया गया है कि मस्तिष्क (brain) से हाथ को जाने वाली नसें इतनी परिवर्धित या विकसित होती हैं कि वे निश्चेष्ट हों या सक्रिय, वे मस्तिष्क के हर आदेश का पालन करती हैं। आयुर्विज्ञान की एक पुस्तक में लिखा है—"That every apparent single nerve is in reality two nerve cords in one sheath, the one conveys the action of the brain to the part, and the other conveys the action of the part to the brain." (प्रत्येक दृश्य नस वास्तव में एक ही आवरण में दो नसों की डोरियों के समान होती है। एक मस्तिष्क की प्रक्रिया शरीर के भाग को पहुंचाती है और दूसरी उस भाग की प्रक्रिया को मस्तिष्क को पहुंचाती है।)

इस सम्बन्ध में हाथ में पायी जाने वाली कणिकाओं (corpuscles) पर भी विचार करना आवश्यक है। Meissner ने अपनी पुस्तक (Anatomy and physiology of the Hand) में कहा है कि हाथ में कणिकाएं बहुत महत्त्वपूर्ण अर्थ रखती हैं। उन्होंने यह प्रमाणित कर दिया था कि अविजित आणविक पदार्थ (unyielding molecular substance) अंगुलियों के छोरों (tips) और हाथ की रेखाओं पर पाया जाता है, और मणिबन्ध के निकट अदृश्य हो जाता है। इन कणिकाओं में महत्त्वपूर्ण नसों का रेशा होता है और जब तक शरीर में जीवनी शक्ति होती है ये एक प्रकार के प्रदोलन करती रहती हैं जो प्राण निकल जाने पर बन्द हो जाते हैं। इस तथ्य पर बाद में और भी प्रयोग किए गये थे—यह जानने के लिए कि ये कणिकाएं किस प्रकार का प्रदोलन करती हैं। अन्ततः यह प्रमाणित हो गया कि जिन व्यक्तियों के कान धीमी-से-धीमी आवाज सुन सकते हैं, वे इन प्रदोलनों को हर जीवित व्यक्ति के शरीर में पहचान सकते हैं। इन प्रयोगों के सिलसिले में शोध-कार्यकर्ताओं को ऐसा व्यक्ति मिला जो अन्धा था; परन्तु उसके सुनने की शक्ति बहुत तीव्र थी। कणिकाओं के प्रदोलनों को सुनकर वह यह बता सकता था कि कोई व्यक्ति पुरुष है या स्त्री ? उसकी उम्र क्या है ? उसका स्वभाव और स्वास्थ्य कैसा है ? प्रस्तुत व्यक्ति यदि अस्वस्थ होता तो वह अन्धा व्यक्ति यह बता सकता था कि उसके जीवित रहने की सम्भावना है या नहीं।

अब हम एक ऐसे विषय में प्रवेश करते हैं जिसका हमारे विचार से हस्त-विज्ञान से घनिष्ठ और अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध है। ज्ञान रखने वाले विद्वानों ने यह मत प्रकट किया है कि नसों और मस्तिष्क का सम्बन्ध एक प्रकार के तरल पदार्थ या आसव (essence—सत) से भी है। इस सम्बन्ध में (Abercrombie) नाम के एक

माध्यम स्नायविक तरल पदार्थ (nervous fluid) की क्रियाशीलता से होता है वे या तो प्रदोलनों (vibrations) द्वारा या विद्युत के समान एक सूक्ष्म शक्ति द्वारा इस कार्य को सम्पन्न करता है। जिन लोगों ने हस्त-विज्ञान और उसके मूल सिद्धान्तों का गम्भीरता से अध्ययन किया है उन्होने उपर्युक्त मत को पर्याप्त रूप से मान्यता दी है। Muller (मुलर) नाम के एक विद्वान का मत है कि कदाचित् शरीर की स्नायु व्यवस्था (nervous system) और विद्युत शक्ति के बीच में कुछ ऐसा सम्बन्ध है (जिसकी वास्तविकता अभी स्पष्ट रूप से ज्ञात नही हुई है) जो विद्युत और आकर्षण शक्ति में होता है। उनका कहना है कि शायद जब नसें किसी बात का आभास देती हैं तो एक अज्ञात प्रकार का तरल पदार्थ (आसव) उनमें तेजी से बहने लगता है। ऐसा भी हो सकता है कि स्नायु व्यवस्था में कोई अज्ञात प्रबन्ध है जो नसों द्वारा उत्पन्न प्रदोलन को मस्तिष्क से सम्बन्धित करता है।

हमें फ्रांसीसी विद्वान professor Savary Odiardi से परिचित होने का सौभाग्य प्राप्त है जिनका अधिकांश जीवन बिजली द्वारा रोग-निवारण करने का शोध कार्य करने में व्यतीत हुआ था। बिजली के माध्यम से अनेकों प्रकार के असाध्य रोगों का सफल इलाज करने में उनको आशातीत सफलता प्राप्त हुई थी। एक बार उन्होंने बातचीत के सिलसिले में हमें बताया कि उनके मतानुसार नसें विचारों, भावनाओं और प्रेरणाओं को मस्तिष्क से शरीर में पहुंचाने में टेलीग्राफ व्यवस्था के समान कार्य करती हैं। Herder नाम के एक विद्वान् ने अपनी एक पुस्तक में, जो पेरिस में सन् 1827 में प्रकाशित हुई थी, स्नायविक तरल पदार्थ की वास्तविकता से अपनी सहमति प्रकट की थी। उसके कथनानुसार यह तरल पदार्थ, जो विद्युत से भी अधिक सूक्ष्म है, मस्तिष्क की भावनाओं को नसों में संचालित करता है।

इन सब सम्मानित मतों के द्वारा हमारा उद्देश्य यह प्रमाणित करना है कि मन किस प्रकार हाथ की रेखाओं, नाखूनों और हाथ के अन्य भागो को प्रभावित करता है। इसमें अन्धविश्वास का कोई स्थान नहीं है। इसका आधार वैज्ञानिकों का शोध कार्य है और जो प्रमाण और निष्कर्ष उन्होंने प्रस्तुत किए है उनको अमान्य समझना हमारी भूल होगी। अग्रगण्य विशेषज्ञों का कहना है कि किसी कंकाल या ठठरी (skelenton) की परीक्षा करने में प्राणी विज्ञानी या जन्तु विज्ञानी (Zoologist) को ज्ञात हो जाता है कि हड्डियों पर बनी अनियमितताएं और धारियां मांसपेशियों और नसों के दबाव और क्रियाशीलता का परिणाम होती हैं। हड्डी के एक टुकड़े की सूक्ष्म परीक्षा करके दक्ष वैज्ञानिक एक मृत पशु के सारे ढाचे का नक्शा तैयार कर सकता है। वह बता सकता है कि पशु के अंगों की बनावट कैसी थी, वह किस जाति का था, उसकी आदतें कैसी थीं और वह किस रोग से ग्रसित था। यदि एक हड्डी के टुकड़े से इतनी अधिक सूचना प्राप्त होना सम्भव है तो फिर हम मनुष्य शरीर के एक भाग—हाथ—से क्या नही जान सकते ! क्या यह एक हास्यास्पद या असम्भव

दावा है ? हस्त-विशेषज्ञ हाथ की परीक्षा करके किसी भी व्यक्ति [illegible], उसके रहने के वातावरण, उसके गत जीवन और भविष्यादि के सम्बन्ध मे सब कुछ बताने का प्रयत्न कर सकता है । कुछ विशेषज्ञो का दावा है कि बिना रेखाओ को देखे ऐसा किया जाना सम्भव है ।

यह हम पहले स्पष्ट कर चुके हैं कि रेखाएं हाथों द्वारा काम करने से नही बनतीं । इसी प्रकार हाथ के समेटने से भी रेखाएं नहीं बनती है । यह अवश्य है कि हाथ रेखाओं के ऊपर मुड़ता है, परन्तु यह भी सत्य है कि ऐसे स्थानो में रेखाएं या उनमें टूट-फूट दिखायी देती है जहां हाथ को मोड़ना या समेटना सम्भव नहीं है । ऐसा भी होता है कि पक्षाघात जैसे रोगो के होने पर हाथ की रेखाएं बिल्कुल अदृश्य हो जाती हैं यद्यपि करतल को पहले के समान मोड़ा या समेटा जा सकता है । अतः इस बात को विस्मरण कर देना चाहिए कि करतल के मोड़ने या समेटने से रेखाओं का निर्माण होता है ।

प्रायः यह प्रश्न भी उठाया गया है कि क्या कपाल विज्ञान (Phrenology) य रूपाकृति या मुखाकृति (Physiognomy) का ज्ञान और अध्ययन हस्त-विज्ञान में कुशल और प्रवीण होने में सहायक होता है ? हमारा उत्तर है कि इसकी कोई आवश्यकता नही है । हाथ, जिसका मस्तिष्क के सब भागों से सीधा सम्बन्ध रहता है, सक्रिय, प्रसुप्त (Dormant) या निश्चेष्ट होने वाले गुणों से अवगत करा देता है । हाथ यह भी संकेत देता है कि कौन से गुण भविष्य में विकसित होने वाले हैं । मुखाकृति विज्ञान के विषय में तो यह कहा जा सकता है कि मुख के स्वाभाविक रूप को इच्छानुसार किसी भी समय बदला जा सकता है; परन्तु भरसक प्रयत्न करके भी रेखाओ के रूप और उनके स्थान को नहीं बदला जा सकता ।

प्रसिद्ध उपन्यासकार बालजक (Balzac) ने अपनी एक पुस्तक में एक स्थान में लिखा है—"हम चुप रहने के लिए अपने होठों को बन्द रखने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं, न देखने के लिए या अपने मन की भावनाओं को छिपाने के लिए अपनी आंखें बन्द रख सकते हैं, अपनी भौंहों के संचालन को रोक सकते हैं, अपने मस्तिष्क पर नियन्त्रण रख सकते हैं, परन्तु हाथ पर हम इस प्रकार का अधिकार रखने में असमर्थ होते हैं, क्योंकि शरीर का कोई भी अन्य अंग हाथ से अधिक भावनासूचक नहीं होता ।

अब हम हाथ से भविष्य का आभास मिलने के कारण पर विचार करेंगे । हम यह बताने का प्रयत्न करेंगे कि इस प्रकार के विश्वास का प्रचलन कैसे हुआ ? इस सम्बन्ध में प्रथम बात ध्यान में रखने योग्य यह है कि विभिन्न प्रकार की बनावट में विभिन्न रेखाओ का अर्थ निकालने की प्रणाली उस समय से आरम्भ होती है जब इस विषय में दिलचस्पी वे लोग लेते थे जो खेती-बाड़ी के काम में व्यस्त रहते थे । जैसे मुख पर नाक, कान, होठ, मुंह आदि की स्वाभाविक स्थितियों को मान्यता मिली, उसी

प्रकार हाथ में जीवन, शीर्ष, हृदय तथा अन्य रेखाओं की प्रकृत स्थितियों को स्वीकार किया गया। आरम्भ मे रेखाओं का इस प्रकार का नामकरण कैसे किया गया था यह हम नही जानते, परन्तु उन नामों में औचित्य और यथार्थता है, इसको स्वीकार करना पड़ेगा। अत. जब यह प्रकाशित हो गया कि शीर्ष रेखा पर कुछ चिन्ह निश्चित प्रकार के मानसिक प्रभाव प्रकट करते हैं या जीवन रेखा पर कुछ चिन्ह आयु-काल को कम या अधिक होने का संकेत देते है तो उनमे बीमारी, अस्वस्थता, पागलपन, मृत्यु आदि का अर्थ निकालना अयुक्तिसंगत न होगा। इसी प्रकार हाथ की रेखाओं और चिन्हों से यह बताना भी सत्य निकलेगा कि विवाह कब होगा, वैवाहिक जीवन कैसा व्यतीत होगा और जातक को अपने जीवन मे समृद्धि प्राप्त होगी या उसका जीवन आर्थिक कठिनाइयों से परिपूर्ण होगा। ऐसा क्यों होगा? यह हमारी शक्ति से बाहर है, परन्तु हमने इस सम्बन्ध मे अपनी धारणा बनायी है वह इस प्रकार है— प्रकृति के नियम आरम्भ में रहस्य के पर्दे में छिपे थे। जैसे-जैसे समय बीतता गया मनुष्य को उन नियमों की भिन्नता ज्ञात होती गयी और उसके लिए वे रहस्य नही रहे। हमारा यह भी मत है कि हम सबसे वियुक्त होकर नही रह सकते और जो नियम समस्त सृष्टि पर प्रभाव डालते है हम भी उनसे प्रभावित होते हैं। इसी प्रकार हम सृष्टि का एक अंश होकर अपना प्रभाव एक-दूसरे पर डालते हैं। इस विषय की समीक्षा करने पर हमे यह ज्ञात होता है कि हाथ पहले से भविष्य मे घटनाओं के घटित होने का संकेत देकर कुछ सीमा तक प्रारब्ध के सिद्धान्त का प्रतिपादन करता है और ऐसी परिस्थितियों का आभास देता है जिनको हम बदल नही सकते। परन्तु यहां पर एक मनोरंजक और शिक्षाप्रद संयोग (Combination) देखने में आता है। मनुष्य प्रारब्ध और स्वतन्त्र इच्छाशक्ति (Destiny and free will) के प्रति द्विविध रूप से अनुक्रियात्मक है। हम यह स्वीकार करते हैं कि मनुष्य अपनी स्वतन्त्र इच्छा शक्ति रखता है, परन्तु वह असीमित नही है। जैसे मनुष्य की शक्ति सीमित होती है, उसकी ऊंचाई लम्बाई सीमित होती है। यदि बाइबिल का अध्ययन किया जाये तो हम देखेंगे कि वहां प्रारब्ध या भवितव्यता को आत्यंतिक या निर्णित तथा असीम माना गया है। बाइबिल के अनुसार सब काम ईश्वर के अनुसार होते हैं, मनुष्य उनमे हस्तक्षेप नहीं कर सकता। संसार के इतिहास को देखिये। राष्ट्रों का प्रारब्ध भूतकाल के खण्डहरों में दबा पड़ा है। रोम, यूनान और मिश्र मे शक्तिशाली सम्राट संसार में आये और अपने नियत प्रारब्ध के अनुसार अभिनय करके चले गये।

क्या यह विश्वास करना कठिन है कि कोई अदृश्य विधान है या कोई रहस्यपूर्ण अज्ञात प्रेरणा या शक्ति है जो हमारे जीवन पथ को निर्धारित करती है और उस पर नियंत्रण रखती है? यदि बाह्य रूप से हमें ऐसा प्रतीत होता है तो हमें उन बातों के सम्बन्ध में भी सोचना चाहिए जिनके अस्तित्व पर हमने बिना किसी आधार पर या बहुत कम आधार पर विश्वास कर लिया है। यदि हम स्थिर विचार (Consistent)
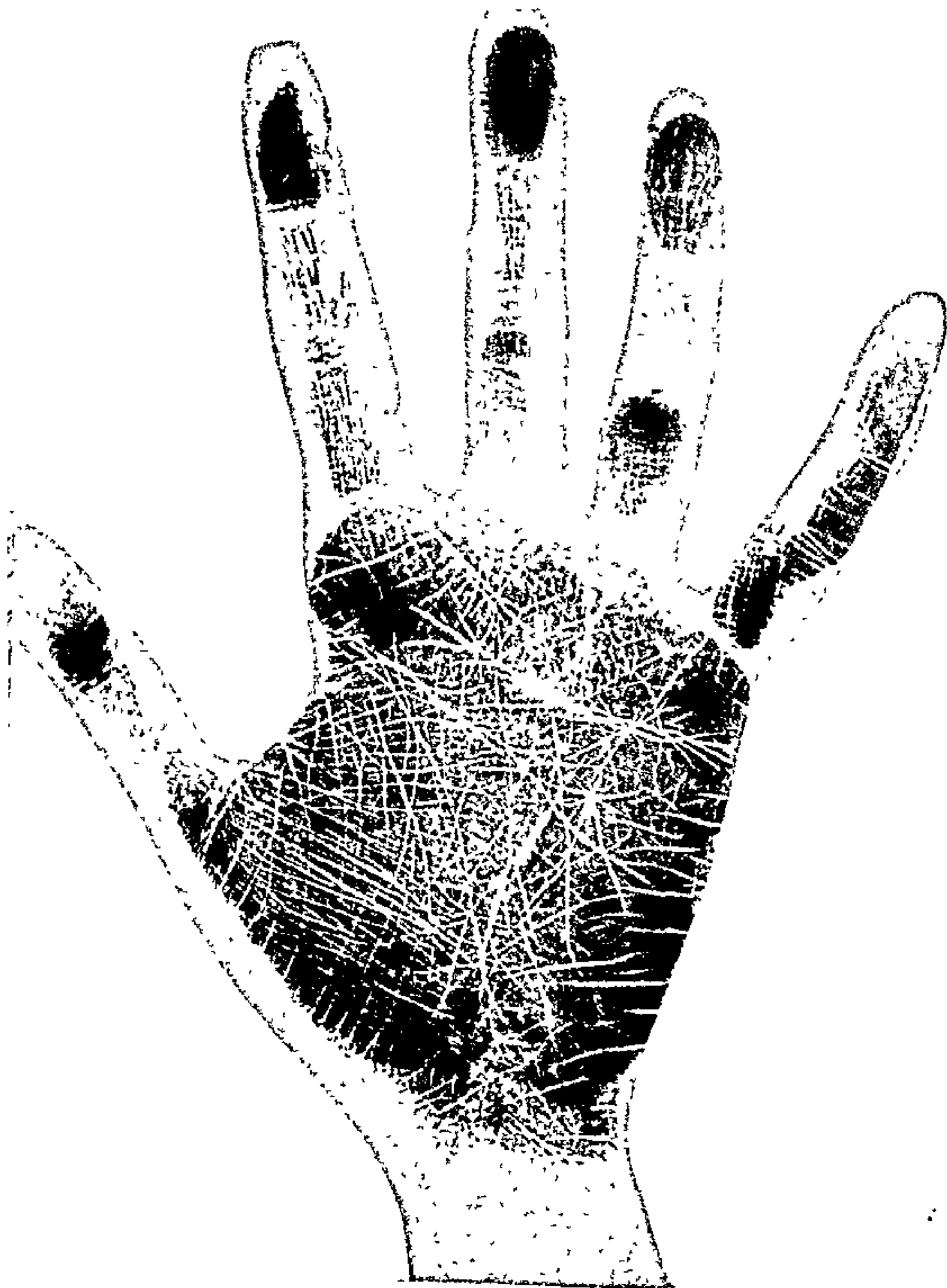
प्लेट —2 हर हाइनेस इन्फेन्टा ईयूलालिया

रहें तो हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि अनेक धर्म, विचार, धारणायें और सिद्धांत हैं जिनके प्रति न केवल जनसमूह ही आस्था रखते हैं, वरन् जो प्रज्ञासपन्न (Intellectual) लोगों के ठोस विश्वास के भी केन्द्र रहे हैं। यदि लोग सरलता से इस बात पर विश्वास करने पर तैयार हैं कि इस जीवन के बाद भी दूसरा जीवन है (जिसके सम्बन्ध में हमारे पास कोई ठोस प्रमाण नहीं), तो क्या प्रारब्ध या भवितव्यता (होनी) के सिद्धांत, जो कि युक्तिसंगत है, का समर्थन करना बिल्कुल असंगत होगा ? इस सम्बन्ध में हम पाठकों का ध्यान हमारे समय के प्रसिद्ध विद्वान डुगल्ड स्टेवर्ट की पुस्तक Outlines of Moral Philosophy की ओर आकर्षित करते हैं जिसमें लिखा है—"All Philosophical inquiry and all practical knowledge which guides our conduct in life presupposes such as established order in the succession of events as enables us to form conjectures concerning the future from the observation of our past." (समस्त दार्शनिक ज्ञान की खोज और सब व्यावहारिक ज्ञान, जो हमारे जीवन के संचालन का मार्गदर्शन करते हैं, घटनाओं के अनुक्रमण के नियमित विधान के पूर्वानुमान पर आधारित है, जिसमें हम भविष्य में घटने वाली बातों की गत जीवन के अनुभव के आधार पर धारणा बनाने में समर्थ होते है)।

इस प्रकार मनुष्य प्रारब्ध का निर्माता और गुलाम दोनो होता है। वह केवल अपने अस्तित्व या विद्यमानता से ऐसे विधान सक्रियता मे लाता है जिनकी प्रतिक्रिया उस पर होती है और उसके द्वारा दूसरों पर होती है। जो वर्तमान है वह विगत का परिणाम है और वर्तमान ही उसका कारण होता है जो भविष्य में होने वाला है। गत जीवन के कर्म ही वर्तमान को प्रभावित करते हैं और वर्तमान के कर्म भविष्य पर अपना प्रभाव डालते हैं। यही मनुष्य के जीवन का क्रम है जो सृष्टि के आरम्भ से चला आया है और जब तक सृष्टि है, यह क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा।

अत. यह स्वीकार करना होगा कि प्रारब्ध का सिद्धात अनिष्टकारी होने के स्थानों में मनुष्य के लिए इष्टकारी सिद्ध होता है। वह पुरुषों और स्त्रियों को अपने उत्तरदायित्व को समझने के लिए विवश करता है। यह उनको सिखाता है कि अपना उद्धार करने के लिए अपना सारा ध्यान अपनी सुरक्षा और कुशलता पर ही नहीं केन्द्रित रखना चाहिए, दूसरों के प्रति भी संवेदनशील होना आवश्यक है। यह मत जिसका हम अनुपालन और अनुमोदन करते हैं, समाज के सब वर्गों के लिए उपयुक्त होगा, लोगो को अपनी नि.स्वार्थ भावनाओं द्वारा उनको ऊंचा उठायेगा और उनके दृष्टिकोण को उदार और विस्तृत बनायेगा। हठधर्मी के स्थान में उन्हें सत्य की यथार्थता दिखाई देगी। उनको यह शिक्षा मिलेगी कि हम मानवता की सन्तान है, और हम सबको भाई-बहिन के नाते से, एक-दूसरे की सेवा करनी चाहिए। इससे मनुष्य जाति को परिपूर्णता और कुशलता (Perfection) प्राप्त होगी, इससे समस्त मनुष्य

जाति लाभान्वित होगी और उनको भी प्रगतिशीलता प्राप्त होगी जो हमारे बाद संसार में आने वाले हैं।

प्रारब्ध या भवितव्यता का सिद्धांत लोगों के काम करने में बाधा नहीं डाल[ता]। वह उनको और अधिक प्रगतिशील बनाता है। वह यह विश्वास नहीं दिलाता है [कि] जो करेंगे उसका पारितोषिक प्राप्त होगा। वह मनुष्य को इस बात की सन्तुष्टि प्रदा[न] करता है कि जो कुछ कर सकता था वह उसने किया है। वह कठिन परीक्षा या कठि[न]नाइयों के समय मनुष्य को धैर्य रखने की, विपत् काल में सन्तोषी बने रहने की, सफ[ल]ता के समय विनम्र बने रहने की और जीवन की प्रत्येक स्थिति में नैतिक उच्चता बनाये रखने की प्रबोधना और प्रेरणा देता है।

इसके विपरीत इच्छा शक्ति की स्वतन्त्रता (free will) के अनुसार अपने जीवन को नियोजित करने का सिद्धांत, जिसका प्रायः प्रतिपादन किया जाता है, क्या परिणाम उत्पन्न करता है ? मानव जाति की अनन्तता में बड़े-बड़े आदमी लघुतम अणु मे रूपांतरित हो जाते हैं। हम जीवन के स्तर में गिरे हुए दिखायी देते हैं। हम लाखों-करोड़ों लोगों को एक-दूसरे को कुचलते हुए और एक-दूसरे का शोषण करते हुए, एक-दूसरे पर निर्वाह करते और अपनी स्वतन्त्रता के लिए समस्त प्रचंडता और उत्कटता से संघर्ष करते दिखाई देते हैं। ऐसे जीवन में न तो कोई संतुष्टि का चिन्ह है, न शान्ति है और न सुन्दरता है। उनकी आस्थाओं या धार्मिक विश्वासों में ऐसा आश्वासन भी नहीं है कि जीवन के अन्त में इस प्रकार की प्रपंचनाओं से विश्राम तथा अपने कर्मों का कोई पुरस्कार मिलेगा।

दूसरी ओर प्रारब्ध या भवितव्यता पर सच्ची आस्था रखने वाला व्यक्ति अपने हाथ बन्द करके प्रतीक्षा नहीं करेगा, वह उनको खोलेगा और सन्तोष और तत्परता से अपने काम मे संलग्न हो जाएगा। इस पथ पर यह विश्वास लेकर अग्रसर होगा कि जो बोझ या उत्तरदायित्व वह संभाल रहा है उसे उस पर इसलिए डाला गया है, जिससे उसे प्रबोधन मिले कि वह दूसरों का बोझ हलका करे। वह यह अनुभव करेगा कि जीवन की जंजीर मे यह एक कड़ी है (जीवन की शृंखला मे वह एक ग्रंथि या जोड़ है) जो अनादि-अनंत है। कड़ी कितनी ही छोटी हो तब भी उसका अपना प्रयोजन होता है। उसको सन्तोषपूर्वक सहन करना होगा और प्रतिष्ठा के साथ कार्यान्वित करना होगा। न सफलताएं उसको गर्व से भर देंगी, न असफलताएं उसके मनोबल को गिराएंगी। वह जीवन मे भले कार्य भी करेगा—बुरे कार्य भी करेगा—हम सब ही ऐसा करते हैं—बुराई उतनी ही आवश्यक है जितनी अच्छाई—परन्तु वह जो भी करेगा उसमें अपना पूरा प्रयत्न लगाना होगा। यही सब कुछ है। और अन्त मे—वास्तव मे अन्त है ही नहीं—क्योंकि यदि जीवन के बाद कोई दूसरा जीवन (जन्म) न भी हो तो भी वह मिट्टी के उन कणों में बना रहता है जिनमें से वह आया था। परन्तु आत्मा का कोई अस्तित्व होता है तो वह अनादि-अनत आत्मा का भाग

होता है और इस प्रकार सबकी सफलता में उसे सफलता प्राप्त होती है। मेरे मत के अनुसार यही प्रारब्ध और भवितव्यता का सिद्धांत है जिसका हाथ के अध्ययन से प्रतिपादन किया जाता है। यही वह मत है जिसको धार्मिक पंथी घृणा की दृष्टि से देखते थे और जिसको ईश्वर के आदेशों के विरुद्ध माना जाता था। हम इस रहस्य को जानने में सदा असमर्थ रहेंगे कि किस सृजन शक्ति द्वारा हाथों में विभिन्न प्रकार के चिन्ह अंकित होते हैं; परन्तु इस कारण हमें उन पर विश्वास न करने का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है। क्या कोई व्यक्ति कह सकता है—"मैं जीवित नहीं रहना चाहता क्योंकि मैं नहीं जानता कि जीवन कैसे बना है।" या "मैं कोई सोच-विचार नहीं करना चाहता क्योंकि मैं सोच-विचार की प्रक्रिया से अनभिज्ञ हूं।" हमारे साधारण जीवन में सैकड़ों रहस्यपूर्ण बातें होती हैं जिनको हमारी सीमाबद्ध बुद्धि समझने में असमर्थ होती है, परन्तु इस कारण हम उनका परित्याग तो नहीं कर देते। सभी धर्मों के विशिष्ट विचारकों ने इस तथ्य पर आस्था प्रकट की है कि हमारे नियन्त्रण से परे एक परम शक्ति है जिसके निर्धारित नियमों के अनुसार ही हमारे जीवन का नक्शा बनता है। इस सम्बन्ध में प्रोफेसर टिन्डल का यह कथन उल्लेखनीय है—

"Life and its conditions set forth the operations of inscrutable power, we know not its origin, we know not its end, the presumption, if not the degradation, rests with those who place upon the throne of universe a magnified image of themselves."

(जीवन और उसकी परिस्थितियां एक अज्ञात और अपरीक्षीय शक्ति (या सत्ता) के परिचालन को आरम्भ कर देती हैं; न तो हमें उसकी उत्पत्ति का ज्ञान है, न उसके अन्त का; प्रकल्पना या निम्नीकरण उन लोगों की जिम्मेदारी है जिन्होंने सृष्टि के सिंहासन पर अपनी प्रतिकृतियों (images) को विस्तीर्ण करके बैठा रखा है।)

Voltaire ने कहा है, "एक ऐसी शक्ति है जो बिना हमसे परामर्श किए हमारे अन्दर सक्रिय हो जाती है।"

इसी सम्बन्ध में Emerson का कथन भी उल्लेखनीय है। वह कहता है—

"A little consideration of what takes place around us every day must show us that a higher law than that of ours will regulates events."

(यदि हम नित्य अपने चारों तरफ होने वाली घटनाओं पर ध्यान दें और विचार करें तो हम देखेंगे कि हमारी इच्छा शक्ति से अधिक कोई अन्य शक्तिशाली विधान उनका विनियमन करता है।)

हमने जो कुछ ऊपर लिखा है उससे आपको ज्ञात होगा कि हस्त-विज्ञान तथा निगूढ़ विज्ञान (occult sciences) किस प्रकार अपने को सजीव रखने में समर्थ रहे हैं। हमने देखा कि

हस्त विज्ञान के पक्ष में जाते हैं। हमने प्राकृतिक दृष्टिकोण से उसकी परीक्षा की और उसमें वह उत्तीर्ण हुआ है। हमने उनको धर्म के दृष्टिकोण से परखा है और उसको धर्म-समन्वित पाया है। हमने निष्कर्ष निकाला है कि यह विषय जन साधारण की भलाई का ही साधन है, क्योंकि जैसा हमने कहा है कि इसके सिद्धान्त मनुष्य जाति को अपने उत्तरदायित्व को समझने मे समर्थ बनाते हैं और इसके द्वारा हमें भविष्य के सम्बन्ध मे चेतावनी मिलती है और इस विज्ञान में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण गुण यह है कि यह अपने आपको पहचानने में सहायक होता है। उसकी यथार्थता और सत्यता के कारण हमें उसको प्रोत्साहन देना चाहिए, उसको और अधिक समृद्ध करना चाहिए। हमे इसको सीखना चाहिए और दूसरों को सिखाना चाहिए। हमें उसको अधिक व्यापक करने के लिए उसका समर्थन करना चाहिए।

नोट—ऊपर दिये हुए प्रलेखन मे जिन धार्मिक ग्रन्थों के नेताओं के विषय में उल्लेख किया है वे यूरोपीय देशो के निवासी थे और ईसाई धर्म के अनुयायी थे। कीरो के समय मे और उस समय से पूर्व इन धर्मोन्मत्त नेताओ ने ज्योतिष विज्ञान, हस्त-विज्ञान तथा अन्य निगूढ विद्याओं के विरुद्ध सांघातिक प्रचार किया था और उसको गैर-कानूनी तक घोषित करवाने का प्रयास किया था। यह इन विद्वानो की ठोस यथार्थता और सत्यता तथा इनका अनुपालन करने वालों की सहिष्णुता की असीम क्षमता थी कि जिसने इसको लुप्त होने से बचा लिया। परन्तु हमारे देश में सदा इन विद्याओ को मान्यता मिलती रही है। कीरो तक ने स्वीकार किया है कि इन निगूढ विद्याओ का जन्म स्थान भारत ही है। इस समय इस सम्बन्ध में जो कुछ हमे प्राप्त है वह तपोबल द्वारा दिव्य दृष्टि प्राप्त करने वाले हमारे ऋषियों-मुनियों की देन है।

इतना हम अवश्य कहेगे कि हिन्दू हस्त-विज्ञान, जो हमें इस समय प्राप्त है, वह पूर्ण नही है। इसीलिए इस विज्ञान मे रुचि रखने वाले अधिकतर पाश्चात्य विद्वानो द्वारा लिखे गए ग्रन्थों को ही अपनी पाठ्य पुस्तकें बनाते है। हिन्दुओ का इस विषय पर ज्ञान कम नहीं था, परन्तु या तो प्राचीन ग्रन्थ नष्ट हो गए हैं अथवा उनको जन साधारण द्वारा अब भी छिपाकर रखा गया है।

इसमे जरा भी सन्देह नही है कि पाश्चात्य देशों मे इस पर अत्यन्त वैज्ञानिक रूप मे शोध कार्य किया गया है। उतनी दिलचस्पी हमारे देश मे नही दिखाई देती है। कुछ संस्थाए हैं जो इस क्षेत्र मे महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं, परन्तु उनकी संख्या कम है। हमने देखा है कि रमते साधु प्रायः हाथ देखकर गत जीवन और भविष्य के संबंध मे ऐसे सत्य तथ्य प्रस्तुत करते हैं जो हमको आश्चर्य मे डाल देते हैं। यदि वह ज्ञान जो ऐसे विद्वानों के पास है हमें पुस्तकों के रूप में प्राप्त हो जाए और उन लोगों तक ही सीमित न रहे तो हम भी पाश्चात्य विद्वानों से पीछे नही रहेंगे।

प्रथम खण्ड

हाथ की बनावट आदि का ज्ञान

(Cheirognomy)

(1)

हस्त-विज्ञान के अध्ययन का अर्थ है—हाथ परीक्षा का सम्पूर्ण ज्ञान। परन्तु इस विषय को दो भागों में विभाजित किया गया है—कीरोनोमी (Cheirognomy) और कीरोमेन्सी (Cheiromancy)। प्रथम भाग हाथ और अंगुलियों की बनावट तथा उनके आकार के बारे में है और स्वभाव, आचरण, मनोवृत्ति और चरित्र पर वंशानुगत प्रभाव से सम्बन्धित हैं। दूसरा भाग करतल पर रेखाओं और अन्य चिन्हों के बारे में है जो गत जीवन, वर्तमान और भविष्य में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित है।

अतः यह स्पष्ट है कि इस विषय का अध्ययन (दूसरे अंश का) प्रथम अंश की जानकारी के बिना अपूर्ण रहेगा। जैसे अध्ययन मे वैसे ही हाथ की परीक्षा में, जिज्ञासु छात्र को करतल की रेखाओं तथा उन पर बने चिन्हों आदि के अवलोकन से पूर्व हाथ की बनावट, उसके आकार, अंगुलियों, त्वचा, नाखून आदि का निरीक्षण करना होगा। कुछ लोग प्रथम भाग के अध्ययन को ध्यान देने योग्य नही समझते और हस्त-विज्ञान पर लिखी अनेकों पुस्तकों ने इस महत्त्वपूर्ण विषय की उपेक्षा की है। वे सीधे ही रेखाओं आदि के मनोरंजक विषय पर आ गए हैं।

यदि हस्त-विज्ञान के छात्र थोड़ा सा ही विचार करें तो वे सन्तुष्ट हो जाएगे कि इस प्रकार की अध्ययन योजना गलत है और उसके कारण निष्कर्ष ठीक नही निकलेगा। यदि कोई व्यक्ति इस विज्ञान में दक्ष होने मे दिलचस्पी रखता है तो उसे इसका अध्ययन पूर्णरूप से ही करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त हाथ की बनावट का अवलोकन हाथ की रेखाओं आदि की अपेक्षा अधिक शीघ्रता से और कम कठिनाई से किया जा सकता है। यह इस ज्ञान का एक अभिन्न अंग है। रेल या बस यात्रा में

यदि आप अकेले बैठे ऊब रहे हो तो आप निकट में बैठे अन्य यात्रियों के हाथों तथा अंगुलियों पर नजर डालकर उनके स्वभाव और मनोवृत्ति का अनुमान लगा सकते हैं।

विभिन्न राष्ट्रों और जातियो के लोगो के अभिलक्षण (विशेषताएं) उनके हाथो की बनावट और आकारों द्वारा जानना अध्ययन का एक मनोरंजक विषय हो सकता है जिस पर कोई विशेष ध्यान नही दिया गया है। आगे चलकर हमने जो इस सम्बन्ध मे देखा है वह-हम पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे। हाथों की बनावट आदि से व्यवसाय की उपयुक्तता जानने मे भी महत्त्वपूर्ण सहायता मिलती है। अब हम आपको बताएगे कि विभिन्न प्रकार के हाथ जातक की प्रकृति, चित्तवृत्ति, मनोवृत्ति और उसके स्वभाव आदि से अवगत कराने में किस प्रकार सहायता करते हैं।

हाथ सात प्रकार के होते हैं और प्रत्येक प्रकार के हाथ में सात प्रकार की विशेषताए होती हैं।

सात प्रकार के हाथ इस प्रकार हैं—

(1) अयौगिक या निम्न श्रेणी का हाथ (elementary)
(2) वर्गाकार या उपयोगी हाथ (square)
(3) चमसाकार हाथ (stapulate)
(4) दार्शनिक हाथ या गांठदार हाथ (philosophic)
(5) नोकीला या कलापूर्ण हाथ (conic or artistic)
(6) बहुत नोकीला या आदर्श (psychic)
(7) मिश्रित हाथ (mixed)

सात प्रकार की विशेषताएं हमें सात प्रकार के हाथों के सम्मिश्रण स प्राप्त होती हैं। बिल्कुल मूल रूप से सभ्य जातियों में निम्न श्रेणी का हाथ कठिनता से दिखाई देता है। अतः हम इस प्रसंग को वर्गाकार हाथ से आरम्भ करते हैं। वर्गाकार हाथ की सात विशेषताएं होंगी—वर्गाकार हाथ छोटी वर्गाकार अंगुलियों के साथ; वर्गाकार हाथ लम्बी वर्गाकार अंगुलियों के साथ; वर्गाकार हाथ गाठदार अंगुलियों के साथ; वर्गाकार हाथ चमसाकार अंगुलियों के साथ; वर्गाकार हाथ नोकीली अंगुलियों के साथ; वर्गाकार हाथ बहुत नोकीली अंगुलियो के साथ; वर्गाकार हाथ मिश्रित अंगुलियों के साथ। इसी प्रकार अन्य प्रकार के हाथों की विशेषताओं का अध्ययन करना चाहिए।

(2)
निम्न श्रेणी का हाथ

स्वाभाविक है निम्न श्रेणी के हाथ के स्वामी वे लोग होंगे जिनका बौद्धिक और वैचारिक स्तर निम्न होता है। ऐसा हाथ बेढंगा, अपरिष्कृत व गंवारू होता है।
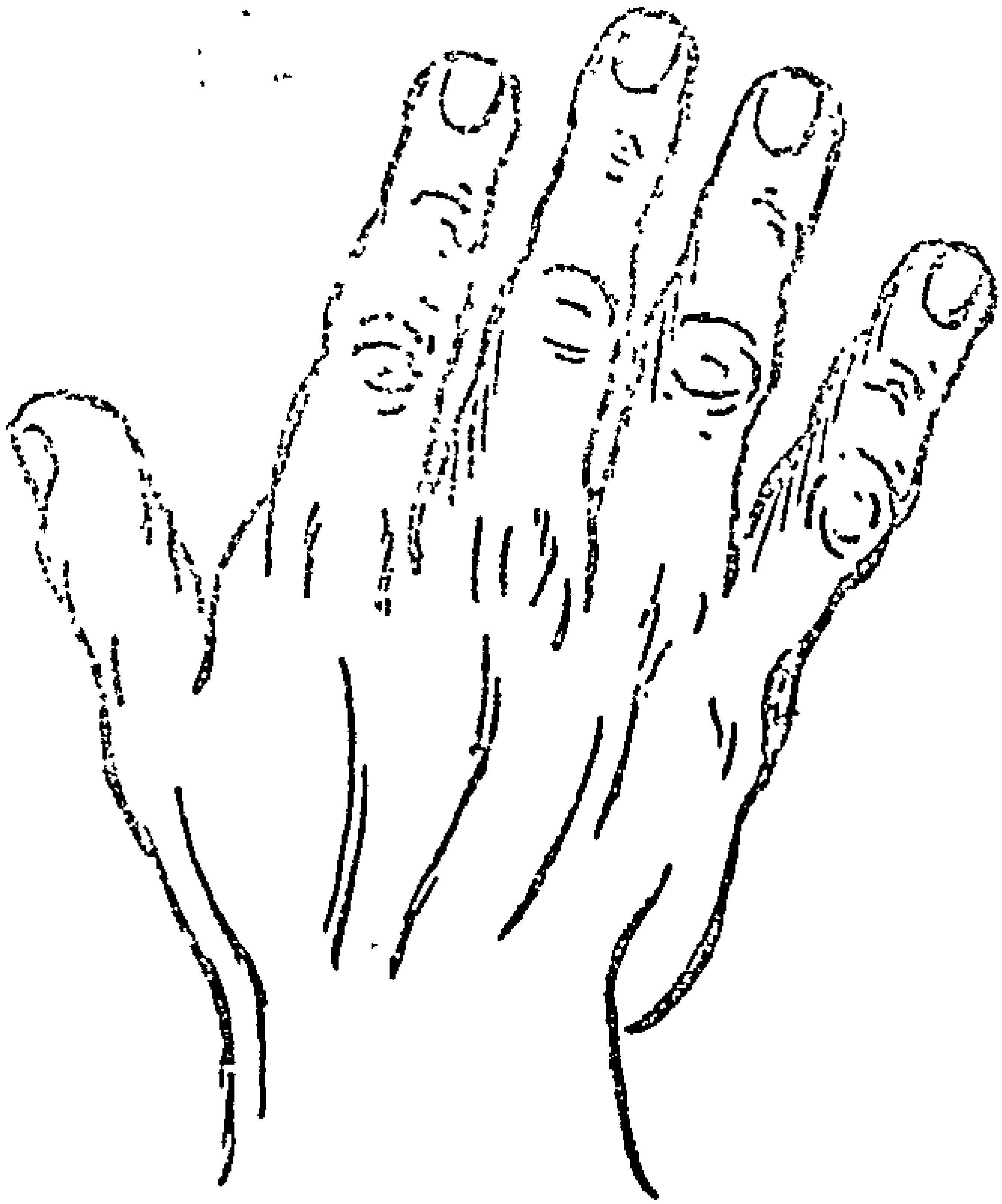
चित्र 1. निम्न श्रेणी का हाथ

देखने में बड़ा, मोटा, भारी करतल वाला है। अंगुलियां और नाखून छोटे होते हैं (चित्र संख्या 1) हाथ की जिल्द मोटी, खुरदरी होती है। हस्त-परीक्षा में करतल और अंगुलियों की लम्बाई बहुत महत्त्व रखती है। हस्त-विज्ञान पर कुछ पुस्तकों के अनुसार बौद्धिक स्तर ऊंचा होने के लिए अंगुलियों को करतल या हथेली से लम्बा होना चाहिए; परन्तु हम इस कथन को ठीक नहीं समझते। यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि अंगुलियां हथेली से बहुत लम्बी पाई जाती हैं। वे लगभग उतनी लम्बी या उतनी ही लम्बी अवश्य हो सकती हैं; परन्तु ऐसा भी बहुत कम देखने में आता है कि करतल और अंगुलियां बिल्कुल एक लम्बाई की हों। परन्तु जब करतल के अनुपात में अंगुलियां लम्बी हों तो बौद्धिक स्तर अधिक ऊंचा होता है। यदि वे अनुपात में छोटी हों तो

बौद्धिक स्तर उच्च श्रेणी वालों में कम होता है। Dr. Cairn ने मनुष्य शरीर की बनावट के विषय पर अपनी पुस्तक में लिखा है—"The bones of the palm form, among brute animals almost the whole hand." (नृशंस पशुओं में करतल की हड्डियां सारा हाथ बनाती हैं) इससे यह अर्थ निकलता है कि हाथ में हथेली का जितना अधिक प्रभुत्व होता है या वह जितनी अधिक हावी होती है, उतना ही अधिक पाशविक स्वभाव उस हाथ के स्वामी का होता है। निम्न श्रेणी के हाथ में यही विशेष दान है। हथेली सदा मोटी और खुरदरी होती है और अंगुलियां छोटी और बेढंगी होती हैं। करतल पर रेखायें भी बहुत कम दिखाई देती हैं। इस श्रेणी के हाथ वाले बहुत कम मानसिक और बौद्धिक क्षमता के होते हैं। और जो कुछ इस प्रकार की क्षमता होती है उसका झुकाव पाशविक वृत्ति की ओर अधिक होता है। उनका अपने भावावेश पर बिल्कुल नियन्त्रण नहीं होता है। प्रेम या स्नेह, रंग और सुन्दरता की ओर उनमें कोई आकर्षण की भावना नही होती। इस प्रकार के हाथों में अंगूठा छोटा और मोटा होता है। उसका ऊपरी भाग या नाखून वाला पर्व भारी, भरा हुआ और अधिकतर वर्गाकार होता है। ऐसे व्यक्ति हिंसक प्रकृति के और शीघ्र आवेश में आ जाने या उत्तेजित हो जाने वाले होते हैं; परन्तु वे साहसी नहीं होते। उनमें चालाकी का गुण होता है; परन्तु यह गुण नैसर्गिक वृत्ति का होता है, विवेक मति का नहीं। उनमें कोई महत्वाकांक्षा नही होती। खाना, पीना, सोना और मर जाना यही उनका जीवन होता है। ऐसे व्यक्तियों को पशु-वृत्ति का असंस्कृत रूप कहना चाहिये।

इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध ज्योतिष विद्वान पं० गोपेशकुमार ने अपनी पुस्तक 'हस्त रेखा विज्ञान' में एक संस्कृत के श्लोक का जिक्र किया है जिसका अर्थ है—यदि मनुष्य में केवल निद्रा, भय, विषय-वासना ही हों तो वह पशु के समान होता है। निम्न श्रेणी के हाथ वालों की समानता इसी प्रकार के लोगों से की जा सकती है।

(3)
वर्गाकार हाथ : उसका विभाजन और विविधतायें

जिस हाथ में हथेली का नीचे का भाग (कलाई के पास) तथा ऊपर का भाग (अंगुलियों की जड़ के पास) वर्गाकार हो, अर्थात् हथेली जितनी लम्बी हो लगभग उतनी ही चौड़ी (चित्र संख्या 2) हो तो उसे वर्गाकार हाथ कहते हैं। इस प्रकार के हाथ की अंगुलियों में नाखून भी प्रायः छोटे और वर्गाकार होते हैं। ऐसे हाथ वाले लोग जीवन के हर क्षेत्र में पाये जाते हैं। वे कार्य-कुशल होते हैं, इसलिए इस प्रकार
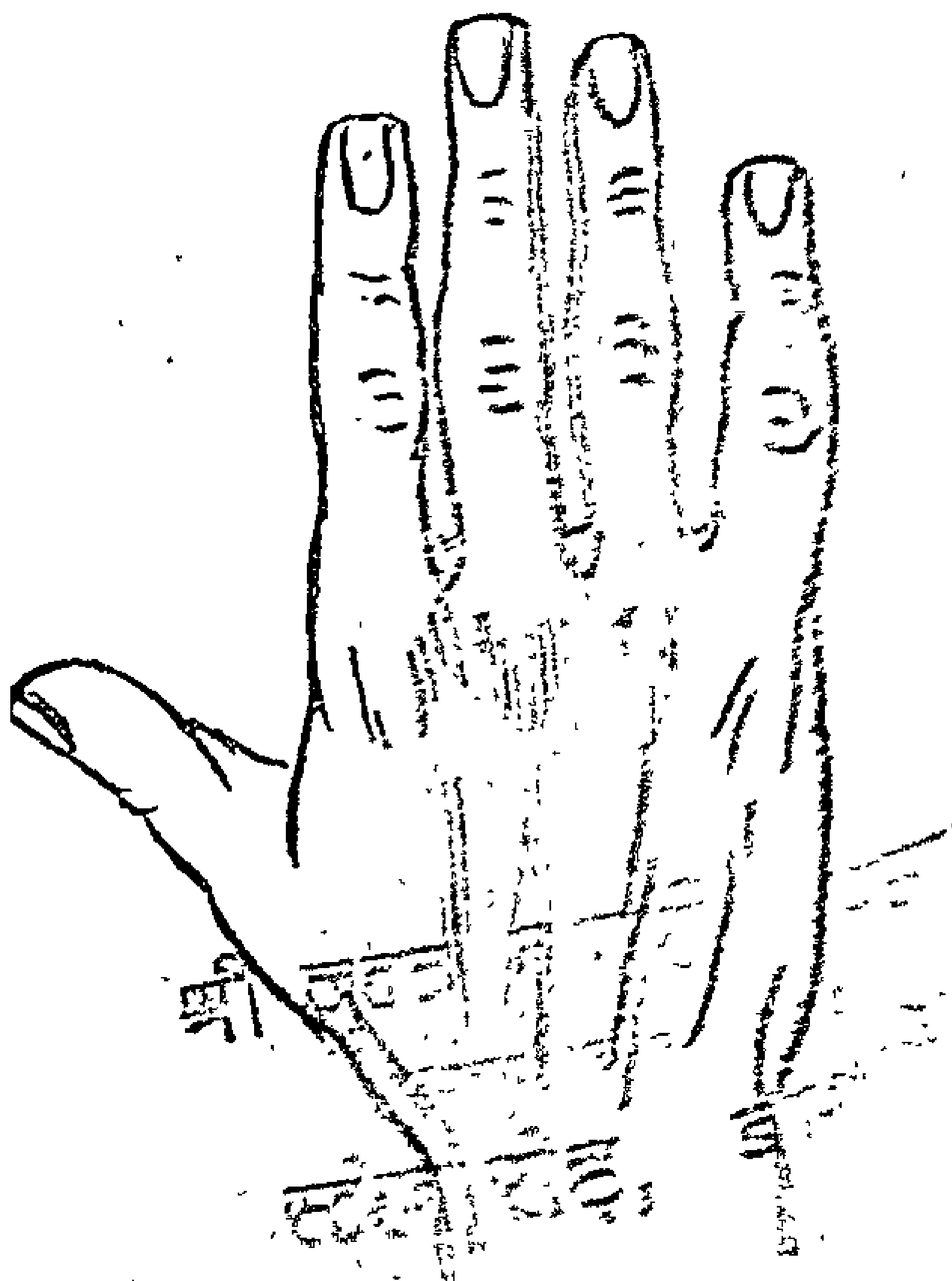
उनकी कार्यशैली और आदतों मे नियमितता होती है। उनमें लगन और सन्तोष प्रचुर मात्रा में होता है। वे पस्त होकर बैठने वाले नही, वरन् दृढ़ निश्चयी और दुराग्रही होते हैं। काव्य या कला मे इनका मन इतना नही लगता जितना किसी उपयोगी काम में। अर्थात् प्रत्येक बात का मूल्य वे लोग उसकी उपयोगिता और सांसारिक व्यवहार के दृष्टिकोण से देखते हैं और इसमें उन्हें सफलता प्राप्त होती है। धार्मिक मामलों में सीमाओं का उल्लंघन नही करते। अर्थात् वे अन्धविश्वासी नहीं होते। वे दिखावे के साथ मे वास्तविकता को पसन्द करते हैं। वे धारणाओ और विचारो के बजाय निश्चित मत देखना चाहते हैं। न तो उनमें लोगों के प्रति अनुकरणशीलता होती है, न ही वे सर्वतोमुखी होते हैं। उनमे मौलिकता और कल्पना-शक्ति कम होती है; परन्तु जो कार्य वे हाथ में लेते है उसमे संलग्न हो जाते है। उनमें आचरण की दृढ़ता होती है और इच्छा-शक्ति इतनी प्रबल होती है कि अपने से अधिक प्रतिभाशाली प्रतिद्वंद्वियो को पछाड़ देते हैं। ऐसे व्यक्ति कृषि और व्यापार को प्रोत्साहन देते हैं। उन्हें अपना घर और घरेलू जीवन पसन्द होता है। वे स्नेह करते हैं; परन्तु उसका प्रदर्शन नही करते। वे सच्चे मन के होते हैं और अपने वचन का पालन करते है। वे सिद्धांतों के पक्के होते है। जिससे मित्रता करते हैं उसे पूरी तरह निभाते हैं। व्यवसाय मे वे ईमानदारी से चलते हैं। परन्तु सबसे बड़ा अवगुण उनमें यह होता है कि प्रत्येक बात की सूक्ष्मता से जांच-पड़ताल करते हैं और जो कुछ उनकी समझ में नही आता उस पर वे विश्वास करने को तैयार नही होते।

वर्गाकार हाथ और छोटी वर्गाकार अंगुलियां

इस प्रकार की विलक्षणता प्राय. देखने में आती है और उसको सरलता से पहचाना जा सकता है। इस प्रकार के हाथ का जातक सांसारिकता में बिल्कुल रमा होता है। वह सदा यही कहेगा—"जब तक मैं अपने कानो से सुन न लूं और अपनी आंखों से देख न लूं, मैं विश्वास करने को तैयार नहीं हूं।" हाथों की ऐसी बनावट एक हठी स्वभाव को व्यक्त करती है। इस प्रकार के लोग अधिक संकीर्ण विचारों वाले होते हैं। ये लोग धन अर्जित करते हैं, और उसे संचय करते हैं; परन्तु उन्हें काफी परिश्रम करना पड़ता है। चाहे कंजूस न हो; परन्तु उनका व्यावसायिक दृष्टिकोण सदा प्रधान होता है और वे उसी दृष्टि से प्रत्येक बात का मूल्य आंकते हैं।

वर्गाकार हाथ और लम्बी वर्गाकार अंगुलियां

इस प्रकार के हाथ में (वर्गाकार हाथ मे) बहुत लम्बी वर्गाकार अंगुलियां होती हैं। इस बनावट के जातकों का छोटी अंगुलियों वालों की तुलना मे बौद्धिक स्तर अधिक विकसित होता है। यह बनावट युक्तिसंगतता और व्यवस्था को व्यक्त करती है। केवल वर्गाकार बनावट के हाथ वालों की अपेक्षा ये गुण इन लोगों मे अधिक होते

हैं। वे तो नियम और रूढ़ियों से जकड़े होने के कारण नये रास्ते पर चलने में असमर्थ होते हैं। इस प्रकार के हाथ के जातक यद्यपि हर बात का वैज्ञानिक ढंग से विश्लेषण करते हैं; परन्तु उस सम्बन्ध में बनी हुई पूर्व धारणाओं से प्रभावित नहीं होते हैं और युक्तिसंगत तरीके से समझकर किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। यही कारण है कि इस प्रकार के लोग ऐसे व्यवसाय में सफल होते हैं जिसमें वैज्ञानिक और युक्तिसंगत तरीके अपनाये जाते हैं।

वर्गाकार हाथ और गांठदार अंगुलियां

इस प्रकार के हाथों में प्राय: लम्बी अंगुलियां होती हैं जिनमें गांठें होती है। इस प्रकार के हाथ जातकों मे हर बात को ब्योरे सहित परीक्षा करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करते हैं। वे छोटी-छोटी बारीकियों को स्वयं देखते हैं। वे इमारतों के निर्माण कार्य में रुचि रखते है। उन्हे योजनायें और नक्शे बनाने का शौक होता है। ऐसे हाथ वाले यद्यपि बहुत बड़े आविष्कारक चाहे न बन सकें; परन्तु वे कुशल वास्तु-शिल्पी (Architect) और गणितज्ञ बन सकते हैं। यदि चिकित्सा या किसी अन्य विज्ञान के क्षेत्र में प्रविष्ट हों तो वे अपने चुने हुए विषय में विशेषज्ञ बनना चाहेंगे और अपने सूक्ष्म विश्लेषण की रुचि द्वारा दक्षता प्राप्त करने में सफल होगे।

वर्गाकार हाथ और चमसाकार अंगुलिया

चमसाकार अंगुलियां वे होती हैं जो आगे से फैली हुई होती हैं। चमसाकार अंगुलियां वर्गाकार हाथों में आविष्कार करने की प्रवृत्ति प्रदान करती हैं। व्याव-हारिकता उनमें प्रचुर मात्रा में होती है। इस कारण वे लोग अपनी बुद्धि, दक्षता और क्षमता ऐसे कार्यों में लगाते हैं जिनमें उपयोगिता हो। वे कुशल इंजीनियर बनते हैं और मशीनी पुर्जे, घरेलू इस्तेमाल मे आने वाले नये यन्त्र या साधन या इसी प्रकार की अन्य वस्तुओं का निर्माण करते हैं। हर प्रकार के मशीन सम्बन्धी कार्य में इन लोगों की बहुत रुचि होती है। उपयोगी उत्कृष्ट यांत्रिक रचनाओं का निर्माण करने का श्रेय उन्ही लोगों को प्राप्त होता है जिनके वर्गाकार हाथों में चमसाकार अंगुलियां होती हैं।

वर्गाकार हाथ और कुछ नोकीली (Conic) अंगुलियां

यद्यपि इस प्रकार की बनावट का ध्यान करके ऐसी धारणा बनती है कि संगीत रचना इस शीर्षक के अन्दर आती है; तब भी कुछ विचार करने के बाद यह ज्ञात हो जाएगा कि ऐसी धारणा केवल ठीक ही नहीं, युक्तिसंगत भी है। प्रथम बात तो यह है कि वर्गाकार हाथ प्राय: मननशील (छात्र) व्यक्ति का होता है। वह जातक को परिश्रम करने और अनुक्रम (Continuity) बनाये रखने की क्षमता देता है और

कुछ नोकीली अंगुलियां कल्पनाशक्ति और प्रेरणात्मक क्षमता देती हैं। संगीत रचना करने वाला कितनी ही अधिक कल्पनाशक्ति रखता हो और वह अपनी कला में उन्नत होने के लिए कितना ही प्रेरित और महत्वाकांक्षी हो, सफल होने के लिए उसमें छात्रों जैसी लगन की आवश्यकता अवश्य होती है। यदि हम मस्तिष्क के गुण और उसकी प्रवृत्ति (जो कि अत्यन्त आवश्यक है) की ओर ध्यान दें तो हमें स्पष्ट हो जाएगा कि हाथ को क्यों पूर्णरूप से संतुलित होना चाहिए और क्यों प्रेरणा और कल्पनाशक्ति का सम्बन्ध मननशीलता तथा व्यवस्थता से होना जरूरी है। क्योंकि जब गुणों का इस प्रकार सम्मिश्रण होगा तभी समुचित सफलता प्राप्त होगी। हमने अनेकों संगीतज्ञों के हाथों की परीक्षा की है और हमने ऊपर दिये हुए नियम को बिल्कुल यथार्थ पाया है। साहित्य क्षेत्र में प्रविष्ट लोगो पर भी यही नियम लागू होता है। वे अपनी अध्ययन-शीलता के आधार पर ही कल्पना के क्षेत्र में अग्रसर होते हैं। यहां पर हस्त-विज्ञान के छात्र को कुछ हताश होना पड़ता है। वह यह समझता है कि क्योंकि कोई पुरुष या स्त्री कला के क्षेत्र मे है (संगीत में या साहित्य मे) तो उसका हाथ कुछ नोकीला (Conic) अवश्य होना चाहिये; परन्तु यदि हम अपने जीवन क्षेत्र में कुछ व्यापक दृष्टि से देखें तो हमें ज्ञात हो जायेगा कि कुछ नोकीले हाथो के स्वामी कलाप्रिय होते है या उनके स्वभाव में कला की प्रवृत्ति होती है, परन्तु यह जरूरी नही है कि वे अपनी कल्पनाशक्ति को कार्यान्वित भी कर सकें या उसको व्यावहारिक रूप देने में समर्थ हों। वास्तव में ऐसा श्रेय उन लोगों को प्राप्त होता है जिनके हाथों में वर्गाकार हाथ और कुछ नोकीली अंगुलियों का सम्मिलन होता है। इस बात को सरल शब्दो मे श्री गोपेश कुमार ओझा ने इस प्रकार स्पष्ट किया है—"शुद्ध कलाकार का हाथ लम्बोतरा और अंगुलियों का अग्रभाग भी कुछ नोकीला होता है। इस कारण बहुत से लोगों को यह आश्चर्य की बात मालूम होगी कि वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति भी संगीत, साहित्य आदि में सफल हो सकते हैं। किन्तु वास्तव में उसका रहस्य यह है कि हाथ भी लम्बोतरा और अंगुलियां भी कुछ नोकीली हों तो मनुष्य शुद्ध कलाकार तो होता है; किन्तु सृजनात्मक योग्यता का अभाव होने के कारण अपने कार्य का सम्पादन वह इतने अच्छे रूप में नही कर सकता कि उसका संसार में नाम हो या धन प्राप्त हो। इसे वर्गाकार हाथ और कुछ नोकीली अंगुलियों, इन दोनों गुणों के सम्मिश्रण से कलात्मक योग्यता और सांसारिक दृष्टि से प्रसार और व्यावहारिक रूप देने में सफलता होती है।"

वर्गाकार हाथ और अत्यन्त नोकीली अंगुलियां

बिल्कुल विशुद्ध अत्यन्त नोकीली अंगुलियो वाले वर्गाकार हाथ दुर्लभ से होते हैं। प्राय: दिखाई देता है कि जो हाथ कुछ वर्गाकार होता है उसमें लम्बे नाखूनों वाली लम्बी नोकीली अंगुलियां होती हैं। इस प्रकार की बनावट का प्रभाव यह पड़ता

है कि उनका जीवन ठीक आरम्भ होता है, उनके उद्देश्य ठीक होते हैं; परन्तु वे हर प्रकार की भावदशाओं और सनक तथा अस्थिरता के शिकार होते हैं। इस प्रकार की बनावट के हाथ का स्वामी कोई पत्रकार हो तो उसका स्टूडियो अर्धसमाप्त चित्रों से भरा हुआ होगा। वर्गाकार हाथ और लम्बी नोकीली अंगुलियों में परस्पर इतना विरोध होता है कि जातक के स्वभाव में परस्पर विरोधी भाव एक-दूसरे को काटते रहते हैं और उसे सफल नहीं होने देते। उसके अच्छी प्रकार आरम्भ किये हुये कार्य बीच में ही रह जाते हैं।

वर्गाकार हाथ और मिश्रित लक्षणों वाली अंगुलियां

इस प्रकार का हाथ बहुधा देखने में आता है। यह पुरुषों में अधिक और स्त्रियों में कम पाया जाता है। इस प्रकार के हाथ में या तो प्रत्येक अंगुली भिन्न बनावट की होती है या दो-तीन एक प्रकार की होती हैं और शेष भिन्न प्रकार की। दूसरे शब्दों में मिश्रित लक्षणों वाला हाथ वह कहलाता है जिसमें कोई नोकीली, कोई वर्गाकृति वाली, कोई चमसाकार और कोई बहुत नोकीली अंगुली होती है। ऐसे हाथ वाले जातकों का अंगूठा प्रायः लचकदार होता है और अपने मध्य भाग से पीछे की ओर अधिक मुड़ता है। तर्जनी (अंगूठे की ओर से प्रथम अंगुली) प्रायः नोकीली, मध्यमा (दूसरी) वर्गाकार, अनामिका (तीसरी) चमसाकार और कनिष्ठका (चौथी और सबसे छोटी) भी नोकीली होती है। ऐसे लोग बहुत विषयज्ञ (अनेकों विषयों में चतुर) होते हैं। ऐसे हाथ वाला व्यक्ति एक अवसर पर काव्य-प्रेरणाओं से परिपूर्ण होगा, दूसरे अवसर पर वह वैज्ञानिक और अत्यन्त युक्तिसंगत होगा। वह योजनाओं की कल्पना करेगा और फिर उनको व्यावहारिक रूप दे डालेगा। वह किसी विषय पर योग्यता के साथ विचार-विमर्श या वाद-विवाद करने में असमर्थ होता है। परन्तु उद्देश्य की अनु-क्रमहीनता के कारण अर्थात् किसी एक काम को जमकर सम्पन्न करने में असमर्थ होने के कारण, ऐसे व्यक्ति बहुत कम उन्नति के शिखर पर पहुंच पाते हैं।

(4)
चमसाकार हाथ

चमसाकार हाथ में न केवल अंगुलियों के अग्र भाग आगे से फैले हुए होते हैं बल्कि हथेली भी (या तो कलाई के पास वाला भाग, या अंगुलियों के मूल के पास का स्थान) फैली हुई होती है (चित्र संख्या 3)।

जब कलाई के पास चौड़ाई अधिक होती है, तो करतल अंगुलियों की नोकीला हो जाता है, यदि चौड़ाई अंगुलियों के मूल के स्थान पर अधिक हो का ढलान कलाई की दिशा में हो जाता है। इन दो बनावटों के विषय में

चित्र-3 चमसाकार या सक्रिय हाथ

प्रकाश डालेंगे। पहले हमें यह देखना है कि चमसाकार हाथ के विशेष गुण क्या होते हैं।

पहली बात यह है कि यदि चमसाकार हाथ सख्त और दृढ़ हो तो यह समझना चाहिये कि जातक का स्वभाव अधीर और उत्तेजनापूर्ण होगा, परन्तु उसमें कार्यशक्ति और उत्साह प्रचुर मात्रा में होगा। यदि हाथ कोमल, पिलपिला और शिथिल हो, जैसा प्रायः देखने में आता है, तो जातक का चित्त अस्थिर और स्वभाव चिड़चिड़ा

होता है। इस प्रकार का मनुष्य कभी तो काम अत्यन्त उत्साह से करता है और कभी बिल्कुल ढीला पड़ जाता है। वह जमकर किसी काम को सम्पन्न करने में असमर्थ होता है।

चमसाकार हाथ वालों में एक विशेष गुण यह होता है कि उनमें काम करने की लगन, कार्यशक्ति और आत्मनिर्भरता होती है। कर्मण्यता इनको और भी अधिक सक्रिय बना देती है। इस कारण नये स्थानों, देशों आदि की खोज में दिलचस्पी रखने वाले, समुद्री जहाजों को चलाने वाले, नये-नये आविष्कार करने वाले या प्रकृति सम्बन्धी नये-नये सिद्धांतों को बनाने वाले इस प्रकार के हाथ के स्वामी होते हैं। बड़े-बड़े इंजीनियरों और मशीन तथा कलपुर्जों के काम में सिद्धहस्त लोगों के हाथ प्रायः चमसाकार होते हैं। लेकिन इस प्रकार के हाथ उपर्युक्त लोगों तक ही नहीं सीमित होते। वे जीवन के अन्य क्षेत्रों में काम करने वालों में भी पाये जाते हैं। सामान्यतः चमसाकार हाथ बड़ा होता है और उसमें बड़ी-बड़ी सुविकसित अंगुलियां होती हैं। इस प्रकार के हाथों वालों मे आत्मनिर्भरता का गुण बहुत होता है। उनकी यही मनो-वृत्ति और उत्साह उनको नये स्थानों को खोजने, संकटों की परवाह न करने तथा नयी-नयी बातों को ढूंढ़ निकालने, नये सिद्धांत बनाने, नये प्रकार के आविष्कार करने को प्रेरित करते हैं। वे स्थापित नियमों और सिद्धांतों की परवाह न करके अपने तरीके से खोज करते और नये सिद्धांत और नयी वस्तुएं, नये आविष्कार संसार को प्रस्तुत करने में सफल होते हैं। दूसरों का अनुसरण उनका स्वभाव स्वीकार नहीं करता। वे अपना रास्ता स्वयं नियत करते हैं और उसी पर चलना चाहते हैं। अपने जीवन में किसी भी क्षेत्र में हों, किसी भी स्थिति में हों (छोटी-बड़ी, ऊंची-नीची), चमसाकार हाथ वाले अपने को ऊपर उठाने के अवसर स्वयं ढूंढ़ निकालते हैं और प्रमाणित करते हैं कि उनका व्यक्तित्व दूसरों से पृथक है। अभिनय, संगीत, राजनीति, चिकित्सा, धर्मोपदेश कोई भी क्षेत्र या व्यवसाय हो, चमसाकार हाथ वाले अपनी कर्मठता और स्वतंत्र मनोवृत्ति के कारण स्थापित तरीकों और नियमों का अनुपालन न करके, अपनी ही पताका फहराते हैं। इसका यह कारण नही है कि वे सनकी होते हैं, या उन्हे अपनी परम्पराओं को बदलने की हठ होती है। उनकी मौलिक और स्वतंत्र विचार शक्ति, उनकी आत्मनिर्भरता, उनके नैतिक गुण और हर बात को अपने दृष्टिकोण से देखने की प्रकृति उनको दूसरों की बताई हुई परिपाटियों को न मानने को विवश कर देती है। चमसाकार हाथ वाले पुरुष और स्त्री नये विचारो के अग्रदूत होते हैं। वे अनेकों वर्ष बाद में जो कुछ हो सकता है उसकी गणना और कल्पना पहले से कर लेने में समर्थ होते हैं। यह नहीं कि वे सदा ठीक ही होते हैं। वे गलतियां भी करते है, फिर भी वे ऐसे तथ्यों को खोज निकालने मे सफल होते हैं और ऐसे आविष्कारों या सिद्धांतों की आधारशिला बना देते हैं जो वर्षों बाद जन साधारण के लिये या उन्हीं के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

जिस चमसाकार हाथ में करतल अंगुलियों के मूल में अधिक फैला हो उस जातक में आविष्कार-वृत्ति और व्यावहारिकता या उपयोगिता प्रचुर मात्रा में होती है ऐसे हाथ वाले व्यक्ति कल-कारखाने सम्बन्धी आविष्कार करते हैं और रेल, जहाज आदि जीवनोपयोगी यन्त्र ~ ाते हैं। इसका कारण यह है कि इस प्रकार की बनावट में वर्गाकार हाथ का ही गुण आ जाता है। यदि नणिवन्ध या कलाई के पास वाला भाग विशेष चौड़ा हो तो मौलिक आविष्कार की क्षमता का उपयोग 'विचार', 'मानसिक' या 'बौद्धिक' क्षेत्र में विशेष होता है। नवीन वैज्ञानिक या साहित्यिक अनुसंधान, विशेष फूल-पौधों की बारीकियों का अन्वेषण जैसे कार्यों का वह विशेषज्ञ बन जाता है। यदि वह किसी नवीन आविष्कार की योजना बनाने में सफल हो जाय तो भी उसकी प्रवृत्ति की पूर्ति हो जाती है। संसार मे ऐसे लोगों की भी आवश्यकता होती है, इसलिए उनकी सृष्टि की जाती है।

(5)

दार्शनिक या गांठदार अंगुलियों का हाथ

इस बनावट के नाम से इस प्रकार का अर्थ व्यक्त हो जाता है। अंग्रेजी में इस प्रकार के हाथ को 'Philosophic' कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा से है, जिसमें 'Philos' शब्द का अर्थ होता है 'प्रेम या अनुराग' 'Sophia' शब्द का अर्थ होता है प्रबुद्धता (Wisdom)। इस प्रकार के हाथ के आकार को सरलता से पहचाना जा सकता है। यह हाथ प्रायः लम्बा और नोकीला होता है। अगुलियो का ढाचा विशेष प्रमुख और अगुलियों की गाठें उन्नत होती हैं। नाखून इसमें लम्बे होते हैं (चित्र सख्या ४) धन प्राप्ति मे सफलता इस प्रकार के हाथ को कम मिलती है। ऐसे हाथ वालों की दृष्टि मे बुद्धि विकास और ज्ञान का महत्व सोने-चादी से अधिक होता है। ये लोग विचार-प्रधान होते हैं। अर्थात् मानसिक विकास सम्बन्धी कार्यों मे विशेष रूप से प्रवृत्त होते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले अधिकतर विद्यार्थी (अध्ययन करने वाले) होते हैं, परन्तु उनके अध्ययन के विषय विशेषता लिए होते है। वे मानव जाति और मानवता के विषय मे विशेष दिलचस्पी रखते हैं। जीवन वीणा के हर तार और उसकी हर धुन से परिचित होते हैं। वे उसे बजाते हैं। जो सुर उसमें से निकलते हैं, वे उन्हें सोने-चांदी के सिक्कों की झंकार से अधिक सन्तुष्टि देते हैं। इस प्रकार वे भी संसार के अन्य लोगो के समान महत्वाकाक्षी होते हैं, परन्तु उनके लिये जीवन का ध्येय बिल्कुल भिन्न प्रकार का होता है। वे अन्य लोगों से भिन्न रहना चाहते हैं और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये वे सब प्रकार के कष्ट या कठिनाइयां उठाने को तैयार रहते हैं। क्योंकि ज्ञान ही शक्ति और अधिकार देने वाला होता है। मानव जाति का

चित्र-4 -गांठदार या दार्शनिक हाथ

ज्ञान उन्हें मनुष्य के ऊपर अधिकार प्राप्त कराता है। इस प्रकार के लोग हर वस्तु के रहस्य को जानने में प्रयत्नशील रहते हैं। यदि वे धर्मोपदेश देते हैं तो उसमें दर्शन (Philosophy) होता है। यदि वे चित्रकला में रुचि लेते हैं तो उसमें रहस्यवाद की छाप होती है। यदि वे काव्य लिखें तो प्रेम और विरह की पीड़ाओं का वर्णन नहीं होता है। इसके स्थान में उनकी कविताओं मे दार्शनिक दृष्टिकोण या आस्तिक अन्वेषण होता है। उनमे सांसारिकता का लेशमात्र भी स्थान नहीं होता। पूर्वी देशों में— विशेषकर भारत मे—इस प्रकार के हाथ बहुधा देखने को मिलते हैं। यहां विद्वान

ब्राह्मण जाति के लोगों में, योगियों में, विचारवादियों के हाथ काफी संख्या में इसी प्रकार के होते हैं। इंग्लैंड में कार्डिनल मैंनिंग और टैनीसन के हाथ इसी प्रकार के थे। कैथोलिक चर्च के पादरियों में भी इस प्रकार के हाथ पाये जाते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले जातक स्वभाव से चुपचाप रहने वाले और अपने विचारों को गुप्त रखने वाले होते हैं। वे गम्भीर विचारक होते हैं। वे छोटी-से-छोटी बात में सावधानी बरतते हैं। हर शब्द को नाप-तोलकर बोलते हैं। उन्हें इस बात का गर्व होता है कि वे अन्य लोगों से भिन्न हैं। यदि कोई उन्हें किसी प्रकार की चोट या हानि पहुंचाये तो वे उसे कभी विस्मृत नहीं करते और धैर्य के साथ अवसर की प्रतीक्षा करते हैं और उपयुक्त अवसर आने पर पूरा हिसाब चुकता कर देते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले प्रायः अहंवादी (Egoistic) होते हैं, जो उनकी जीवनचर्या के अनुरूप होता है। जब दार्शनिक हाथ बहुत अधिक विकसित और उन्नत होता है तो जातकों में धर्मान्धता आ जाती है। वे रहस्यवाद की सीमा का उल्लंघन कर जाते हैं। इसका विस्मयजनक उदाहरण हमें पूर्वी देशों में मिलता है जहां शैशव-काल से ही बालक संन्यास लेकर संसार के बन्धनों से पृथक हो जाते हैं।

हम इस प्रकार के हाथ के गुणों के सम्बन्ध में हस्तविज्ञान के विषय में लिखने वाले कितने ही लेखकों से सहमत नहीं। हमारे विचार से इन लोगों ने एक-दूसरे की नकल की है। वास्तव में उन्नीसवीं शताब्दी में इस विज्ञान को काफी क्षति पहुंची जब अनेकों सज्जन और महिलायें इस विषय पर लिखने लगी। उन्होंने कुछ पुस्तकें पढ़ी, कुछ व्यावहारिक अनुभव किये और इधर-उधर से विचारों को एकत्रित करके स्वयं भी एक पुस्तक लिख डाली। इस प्रकार की बाजारू पुस्तकें प्रगट हुईं और शीघ्र ही विलीन हो गयी। हमें एक महिला की, जिन्होंने हस्त-विज्ञान का अध्ययन केवल आठ महीने किया था, एक पुस्तिका पढने का अवसर प्राप्त हुआ था। हमें उसमें यह पढकर बहुत मनोरंजक लगा कि वर्गाकार हाथ में छोटी अंगुलियां काव्य रुचि और आदर्शवाद की सूचक होती है। हमने इस पुस्तक पर अपने विचार व्यक्त करने से पूर्व विभिन्न मतों, विचारों और दृष्टिकोणों का गम्भीरतापूर्वक विश्लेषण किया है और जो निष्कर्ष हमने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत किये वे सैकड़ो हाथों की परीक्षा करने के बाद निश्चित किये गये हैं। हम क्षमा-प्रार्थी हैं कि हम मुख्य विषय से हट गये थे।

हाथ की अंगुलियों में गांठें निकला होना विचारक प्रवृत्ति का सूचक होता है। प्रत्येक बात का सूक्ष्म विश्लेषण करना इस प्रकार के हाथ वालों का स्वभाव बन जाता है। परन्तु हाथ के आकार या उसकी बनावट से ही यह निर्णय किया जा सकता है कि अन्वेषण की ऐसी क्षमता भौतिक कार्यों के लिये होगी या मानव जाति के सम्बन्ध में होगी। अंगुलियों के अग्रभाग चतुष्कोणाकृति या कुछ नोकीले होने से इनमें आत्मिक स्फूर्ति आती है। वर्गाकार अंगुलियों के कारण उसमें धैर्य और अध्यवसाय तथा कुछ नोकीली अंगुलियों के कारण आत्मत्याग की भावना होती है।

(6)

कुछ नोकीला हाथ

कुछ नोकीला हाथ, वास्तव में मध्यम आकार या लम्बाई-चौड़ाई का (न बहुत बड़ा न छोटा) होता है इसमें अंगुलियां अपने मूल स्थान में पुष्ट अर्थात् भरी हुई और अन्त में कुछ नोकीली होती हैं (चित्र संख्या 5)। प्रायः इसको अधिक नोकीले हाथ की
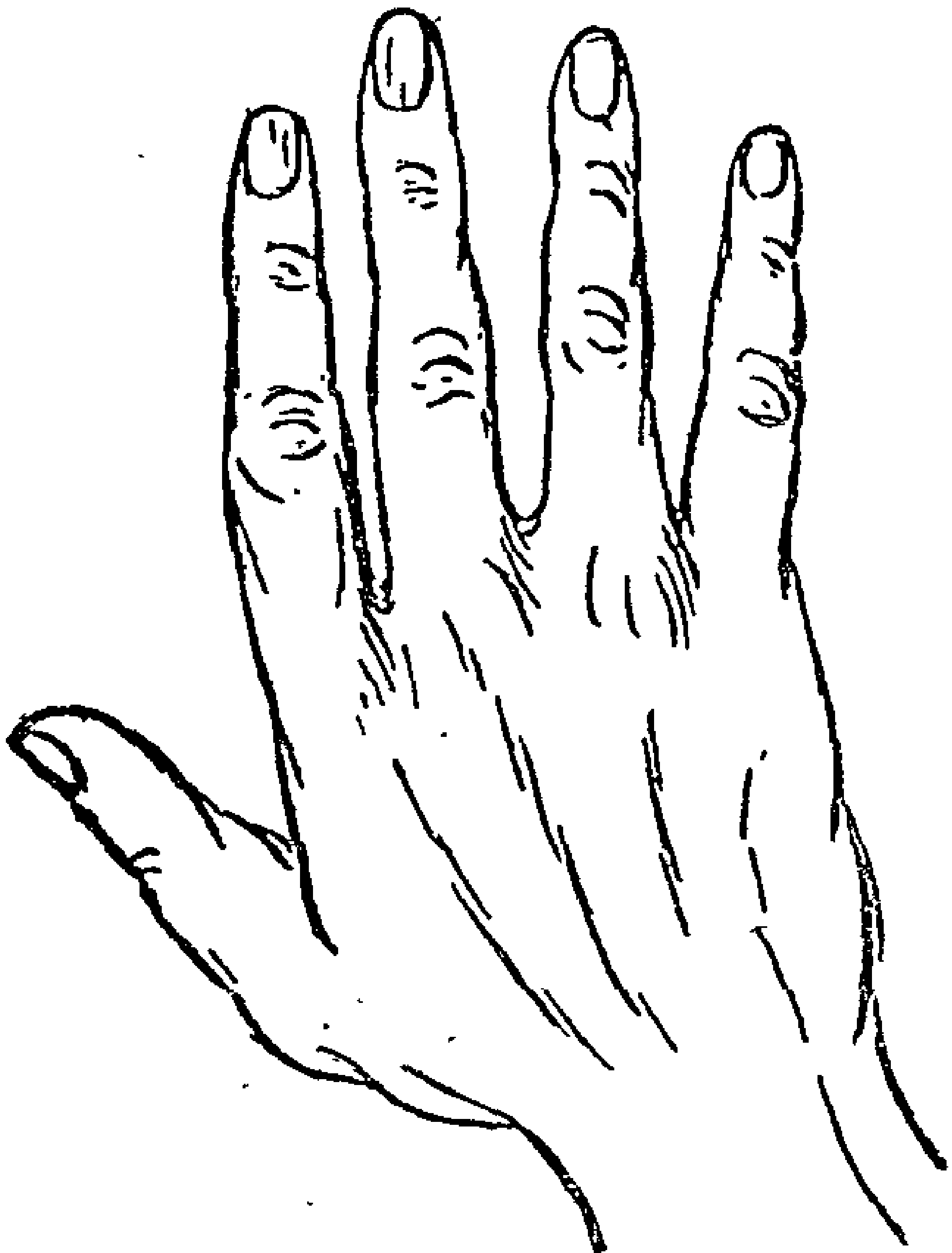
चित्र-5—कुछ नोकीला या कलात्मक हाथ

तरह समझ लिया जाता है, परन्तु यह लम्बोतरा और संकीर्ण होता है और इसमें अंगुलियां काफी लम्बी और काफी नोकीली होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वालों में आवेग, मन की सूझ तथा मनोवृत्ति की प्रधानता होती है। कुछ नोकीले हाथ के स्वामी प्रायः 'आवेग की सन्तान' (Children of *impulse*) कहे जाते हैं। *आवेग से तात्पर्य है कि जब मन की जैसी सहसा रुचि हुई,* काम कर डाला। आवेगपूर्ण व्यक्ति विचार करके, गुण-दोष की मीमांसा नहीं करते।

इस प्रकार के हाथ के सम्बन्ध में बहुत-सी विविधतायें होती हैं, परन्तु अधिकतर कुछ नोकीला (Conic) हाथ मुलायम, कुछ नोकीली अंगुलियों वाला होता है। अंगुलियों के नाखून लम्बे होते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले कलाप्रिय, आवेगात्मक (आवेशात्मक) स्वभाव के होते हैं, परन्तु साथ-ही-साथ वे आराम तलब, शौकीन तबीयत-के और आलसी होते हैं। इन लोगो मे सबसे बड़ा अवगुण यह होता है कि चाहे वे चतुर और शीघ्र निर्णय लेने वाले हों, उनमें धैर्य की बिलकुल कमी होती है और वे बहुत शीघ्र थक जाते हैं और अपने संकल्प को पूर्ण करने मे बहुत कम सफल होते हैं। वे बातचीत में निपुण होते हैं, वे किसी भी विषय को शीघ्रता से समझ लेते हैं; परन्तु उनका ज्ञान छिछला होता है। वे विद्यार्थियों के समान मननशील नही होते, वे किसी विषय की गहराई मे नहीं जाते। बस, क्षणिक आवेश या तुरन्त विचार करके निर्णय कर लेते हैं। *इस कारण वे अनुराग, प्रेम और मित्रता में परिवर्तनशील होते हैं।* जिन लोगों से उनका सम्पर्क होता है, उनसे वे बहुत प्रभावित होते हैं। उनके चारों ओर जो वातावरण होता है उससे भी वे काफी प्रभावित होते हैं। वे अपनी पसन्दगी और *नापसंदगी के स्वभाव को सीमा से पार ले जाते हैं। वे भावुक होते हैं। वे सहसा क्रुद्ध* हो उठते हैं, परन्तु उनका क्रोध क्षणिक होता है। जब उन पर क्रोध का दौरा पड़ता है तो जो भी उनके मुह मे आता है कह डालते है। वे यह नही सोचते कि उनकी बातों का क्या परिणाम होगा। वे सदा उदार और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं, परन्तु जहां अपने आराम और सुख का प्रश्न उठता है वहा निःस्वार्थ नही होते। पैसे के मामले में वे स्वार्थी नही होते। यदि उनके पास धन होता है तो उदारता से दान देते हैं। परन्तु उनमें यह समझने की क्षमता नही होती, और न ही वे यह जानने का विशेष प्रयास करते हैं कि उनकी कृपा या दान का पात्र योग्य है अथवा अयोग्य। उनके सामने मांगने वाला आता है, मन मे आता है तो जेब खाली कर देते हैं और मन में नहीं आया तो उसको दुत्कार देते हैं। इन लोगों में नाम या यश कमाने के लिए दान देने की भावना इतनी नहीं होती, मन की उमंग ही प्रधान होती है।

इस प्रकार के हाथ को कलाकार का हाथ (Artistic Hand) भी कहा गया है; परन्तु ऐसे हाथ वालों को वास्तव मे कला सम्बन्धी विषयों पर धारणायें, योजनायें या कल्पनायें बनाना आता है, उनको कार्यान्वित करने की क्षमता उनमे नही होती। उनके सम्बन्ध में यह कहना यथार्थता के समीप होगा कि वे कला से प्रभावित होते हैं,

कलाकार नहीं होते। अन्य प्रकार के हाथ वालों से उन पर चित्र, संगीत, भाषण-पटुता वाक्-पटुता, आंसू, हर्ष और दुख का अधिक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार दूसरों के अपनेपन और सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से वे क्षण भर में उनकी ओर खिंच जाते हैं। वे इतने आवेशात्मक होते हैं कि एकदम हर्षातिरेक के शिखर पर पहुंच जाते हैं और उसी प्रकार सहसा छोटी-सी बात से बिल्कुल हताश हो जाते हैं।

जब कोनिक हाथ सख्त और लचकदार (Elastic) होता है, तो जातक में सख्त हाथ के सद्गुणों के साथ-साथ अधिक स्फूर्ति, कार्य-कुशलता और इच्छाशक्ति भी होती है। कुछ सख्त नोकीले हाथ वाला जातक स्वभाव से कलाप्रिय होता है और यदि उसे कला के क्षेत्र में प्रविष्ट होने का प्रोत्साहन मिले तो अपनी कार्यशक्ति और दृढ़-संकल्प के गुणों की सहायता से वह अत्यन्त सफल बन सकता है। इस प्रकार के लोग रंगमंच, राजनीति तथा अन्य स्थानों में, जहां तत्काल जनता को आकर्षित करना हो, विशेष रूप से सफल होते हैं। परन्तु यह विस्मरण नहीं करना चाहिए कि ये लोग तात्कालिक प्रेरणा या आवेश के वश में आकर कुछ कर पाते हैं, सोच-विचार करके कुछ नहीं करते। यदि इस हाथ की बनावट वाली कोई गायिका हो तो वह गाने से पहले रियाज नहीं करेगी। बस, अपने व्यक्तित्व और उमंग से ही दर्शकों को आकर्षित करेगी। कोई वक्ता ऐसा हो तो वह कोई युक्तिसंगत सामग्री एकत्रित नहीं करेगा। बस, अपनी आवेशपूर्ण और ओजस्वी वाक् शक्ति से लोगों को मुग्ध कर देगा।

हमने जो ऊपर कहा है उसका संक्षिप्त अर्थ यह है कि तात्कालिकता इस प्रकार के लोगों का सबसे बड़ा गुण और शक्ति है। यही उनकी सफलता का आधार होता है। हम एक उदाहरण देते हैं। कोई महिला है, जिसकी अंगुलियां वर्गाकार हैं। वह बहुत निपुण और सफल गायिका बन सकती है और वह उस दूसरी गायिका से, जिसकी अंगुलियां नोकीली हों, अधिक ऊंचाई प्राप्त कर सकती है, परन्तु इस प्रकार की सफलता के लिए उसका आधार जोश या मनोवेग नहीं होगा। वह परिश्रम करेगी, रियाज करेगी और धैर्य के साथ अपने ध्येय को प्राप्त करेगी। कलाप्रिय हाथ मनोवृत्ति से सम्बन्ध रखता है, अंगुलियों की विविधतायें मनोवृत्ति में परिवर्तन लाती हैं। जैसा कि हमने ऊपर बताया है कि कलाप्रिय हाथ में वर्गाकार अंगुलियां क्षणिक जोश या आवेश के आधार को लगन, परिश्रम और व्यवस्था में परिवर्तित कर देती हैं।

यदि किसी कलाप्रिय या कुछ नोकीले हाथ में चमसाकार अंगुलियां हों तो जातक चित्रकार हो तो वह अपनी चित्रकारी में मौलिकता लायेगा और नये-नये प्रकार के डिजाइनों में और रंगों के मिश्रण से चित्र बनाकर प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। यदि अंगुलियां दार्शनिक हों तो चित्रों में रहस्यवाद की छाप होगी।

(7)

अत्यन्त नोकीला हाथ

यह हाथ सात प्रकार के हाथों में सबसे अधिक अभागा है। (चित्र संख्या 6)। वास्तव में अत्यन्त नोकीला हाथ बहुत कम देखने को मिलता है। इस प्रकार के हाथ को अंग्रेजी मे Psychic Hand कहते हैं। Psychic शब्द का अर्थ है 'आध्यात्मिक'।

चित्र-6—आध्यात्मिक या आदर्शसूचक हाथ

इसलिये इस प्रकार के हाथ का सम्बन्ध आत्मा से होता है। यद्यपि वास्तविक आध्यात्मिक (इसको कुछ लेखक 'शान्तनिष्ठ' हाथ भी कहते हैं) हाथ मिलना कठिन है,

अनेकों इससे मिलते-जुलते हाथ बहुधा दिखाई देते हैं। जैसे हम ऊपर कह चुके हैं— देखने में यह सबसे सुन्दर आकृति का होता है। यह लम्बा, संकीर्ण और कोमल होता है। इसकी अंगुलियां शुंडाकार (नीचे से ऊपर जाने तक पतली हो जाने वाली) और कोमल होती हैं। इन अंगुलियों में लम्बे बादाम के आकार के नाखून होते हैं। इनकी उत्कृष्टता और सुन्दरता इनकी शक्ति की कमी और निष्क्रियता की द्योतक हैं। ऐसे सुकुमार हाथों को देखकर यह सहानुभूतिपूर्ण उग्रता मन में जागृत हो उठती है कि ऐसे हाथ के स्वामी जीवन-यात्रा के संघर्षों का सामना करने में कैसे समर्थ होंगे, क्योंकि ये लोग परिश्रम करने में बिल्कुल अक्षम होते हैं।

इस प्रकार के लोग स्वप्नों की दुनिया में विचरने वाले और आदर्शवादी होते हैं। ये प्रत्येक वस्तु में सुन्दरता ढूंढ़ते हैं और उसे देखकर उसकी कद्र करते हैं। वे नम्र स्वभाव के और शान्तिप्रिय होते हैं। वे किसी का अविश्वास नही करते और जो उनके प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करता है और उनके साथ सज्जनता और मृदुता से व्यवहार करता है उसके वे गुलाम बन जाते हैं। परन्तु उनमें परिश्रमशीलता, सांसारिक चतुरता और व्यावहारिकता नही होती। व्यवस्था, समय की पाबन्दी या अनुशासन, उनके लिये कोई अर्थ नहीं रखते। वे सरलता से दूसरों के प्रभाव मे आ जाते हैं और इच्छा न होने पर भी परिस्थितियां उन्हें जिस ओर ले जाती हैं उधरही वे बह जाते हैं। प्रकृति के रंगो के प्रति वे बहुत आकर्षित होते हैं। उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जिनके लिए संगीत का प्रत्येक स्वर, प्रत्येक हर्ष, दुख, आवेश रंगों में प्रतिबिम्बित होता है। बिना उसकी चेतना के ये लोग धर्म की ओर आकर्षित होते हैं; परन्तु वे यथार्थता या सत्य की खोज करने में असमर्थ होते हैं। यदि वे गिरजाघर में जाते हैं तो वे वहां के धार्मिक संगीत और रस्मों से प्रभावित होते हैं; परन्तु उसका अर्थ या उद्देश्य क्या है यह वे जानने का प्रयास नहीं करते। अपनी अन्तर्हित भावनाओं के कारण धर्म में उनकी अनुरक्ति होती है, वे अध्यात्म के किनारों तक पहुंच जाते हैं, वे जीवन के रहस्यों को विस्मय और भय से देखते हैं; परन्तु वे नही जानते कि ऐसा क्यों होता है। सब प्रकार के जादू के तमाशे उन्हें अपनी ओर आकर्षित करते हैं, वे उनसे धोखा भी खा जाते हैं, पर अन्त में उन्हें इस प्रकार भ्रमित हो जाने पर क्रोध आता है। इन लोगों में अतीन्द्रिय ज्ञान अत्यन्त विकसित होता है और वे अच्छे सूक्ष्मग्राही, और परोक्षदर्शी (Clairvoyants) बनते हैं क्योंकि भावनाओं, नैसर्गिक वृत्तियों और दूसरों के प्रभावों को उनके स्वभाव में अधिक स्वीकृति मिलती है। सांसारिकता और वास्तविकता से वे बिल्कुल अनभिज्ञ रहते हैं।

इस प्रकार के गुणों वाले बच्चो के माता-पिता नही जानते कि उनसे किस प्रकार व्यवहार करें—विशेषकर जब वे सांसारिकता मे चतुर और व्यावहारिक होते है, यदि कही गलती से वे उन्हे अपनी तरह का बनाने का प्रयत्न करते हैं तो वे उन बच्चों का जीवन नष्ट कर देते हैं।

इन सुन्दर और सुकुमार हाथों के स्वामी स्वभावत: इतने भावुक होते हैं कि वे कभी-कभी अपनी परिस्थितियों को देखकर ऐसा अनुभव करने लगते हैं कि उनका जीवन निरर्थक है । इसका परिणाम यह होता है कि उनकी मन स्थिति विकृत हो जाती है और वे उदासीन हो जाते हैं । परन्तु उनका ऐसा विचार करना असंगत है । प्रकृति ने कोई भी वस्तु निरर्थक नही बनाई है । वास्तव में उनमें सुन्दर और मृदुल स्वभाव के गुण होते हैं, इस कारण संसार में ऐसे लोगों की अपेक्षा, जो भौतिक वस्तुओं का भण्डार एकत्रित कर लेते हैं, इन लोगों की अधिक आवश्यकता है । शायद उनको संसार में मानवी नियमों में संतुलन स्थापित करने के लिये लाया जाता है । आज के हलचल भरे संसार में ये ही लोग हैं जो सुन्दरता और कोमल भावनाओं का आभास दिखाते है । उनको निरर्थक समझना भारी भूल होगी । हमे उन्हे प्रोत्साहन देना चाहिए और उनको अपने आपको उपयोगी बनाने में सहायता देनी चाहिए ।

(8)

मिश्रित लक्षणों वाला हाथ

मिश्रित लक्षणों वाले हाथ का वर्णन करना बहुत कठिन है । वर्गाकार हाथ के परिच्छेद में हमने ऐसे वर्गाकार हाथ का उदाहरण दिया था जिसमे मिश्रित प्रकार की अंगुलियां होती हैं । उस उदाहरण मे मिश्रित प्रकार की अंगुलियों को वर्गाकार हाथ का आधार प्राप्त था; परन्तु जो वास्तविक रूप से मिश्रित लक्षण वाला हाथ होता है उसको कोई ऐसा आधार प्राप्त नहीं होता ।

किसी हाथ को मिश्रित लक्षण वाला हाथ इसलिए कहते हैं कि हाथ की तो कोई श्रेणी होती नहीं, अंगुलियां मिश्रित लक्षण वाली हैं—कोई कुछ नोकीली, कोई वर्गाकार, कोई चमसाकार और कोई दार्शनिक (चित्र संख्या 7) ।

वास्तव में होता यह है कि हस्तविज्ञान के अनुसार सात प्रकार के हाथ होते हैं; परन्तु ईश्वर की सृष्टि में हाथ सात प्रकार के सांचों में ढालकर नही बनाये जाते कि तुरन्त कह दिया जाय कि वह अमुक हाथ अमुक सांचे में ढला हुआ है ।

मिश्रित लक्षण वाला हाथ जातक को सर्वतोमुखी, अनेक गुणों से युक्त और परिवर्तनशील बनाता है । इस प्रकार का व्यक्ति अपने आपको सब परिस्थितियों के अनुकूल बना लेता है । वह चतुर होता है, परन्तु अपनी योग्यताओं के उपयोग में अनिश्चित होता है । ऐसे हाथ वाले व्यक्ति अनेक गुणो से युक्त तो होते हैं, परन्तु अपने सीमित समय और बौद्धिक शक्ति को भिन्न-भिन्न कार्यों मे लगाने के कारण किसी भी कार्य में पूर्णता प्राप्त नही कर सकते । विज्ञान, कला या गपशप किसी भी विषय, बातचीत या वाद-विवाद मे इस हाथ वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली होगा । वह

चित्र-7—मिश्रित हाथ

कोई भी वाद्य-यन्त्र अच्छी तरह बजा सकता है, चित्रकारी करे तो अच्छे चित्र बना लेता है, कोई अन्य काम करे तो उसे भी ठीक कर लेगा, परन्तु पूर्ण दक्षता उसको किसी काम में भी नहीं मिलेगी।

यदि मिश्रित लक्षण वाले हाथ में शीर्ष रेखा (Line of Head) बलवान हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी अनेक योग्यताओं में से कोई एक चुन लेगा जो सबसे अधिक हो और फिर उस गुण से सम्बन्धित जो कार्य वह करेगा, उसमें उसके अन्य गुण भी सहायक होंगे। इस प्रकार वह उस कार्य में अपनी प्रतिभा का पूर्णरूप से उपयोग करने में

समर्थ होगा। जिस किसी कार्य में कूटनीति और चतुरता की आवश्यकता हो, उनमें ये लोग विशेष रूप से सफल होते हैं।

वे इतने सर्वतोमुखी और बहुगुणी होते हैं कि हर प्रकार के लोगों से, जो उनके सम्पर्क मे आते हैं, हिलमिल जाते हैं। जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि उनकी सबसे बडी खूबी यह होती है कि वे अपने आपको सब प्रकार की परिस्थितियों के अनुरूप बना लेते हैं। वे अन्य लोगो की तरह भाग्य के उतार-चढ़ाव से घबराते नही हैं। उनके लिये सब प्रकार के कार्य सरल होते हैं। वे आविष्कारक बुद्धि के होते हैं और यदि स्वय मेहनत करनी पडे तो वे आश्चर्यपूर्ण योजनाओं की रूपरेखा बनाने की क्षमता रखते हैं। अस्थिरता उनमे इतनी अधिक होती है कि एक नगर या स्थान में अधिक समय तक नही टिकते। नये-नये विचार उनके मस्तिष्क में मंडराते रहते हैं। यदि नाटक के सम्बन्ध मे विचार प्रबल हुए तो नाटक लिखने बैठ जाते हैं। विचार बदला तो वे नये प्रकार का गैस स्टोव या कोई और वस्तु निर्माण करने की रूपरेखा तैयार करने लगते हैं। इस प्रकार उनके मस्तिष्क में विचारों, योजनाओं और निश्चयों में परिवर्तन होते रहते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि किसी भी काम में विशेष सफलता नही प्राप्त कर पाते।

परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि करतल यदि किसी निश्चित आकार का हो तो ऊपर दिये हुए गुण बदल जाते हैं। यदि करतल वर्गाकार, चमसाकार, दार्शनिक या कोनिक हो, तो मिश्रित लक्षण वाली अंगुलियां अधिक सफलता दिलाने मे समर्थ होती हैं। दूसरी ओर यदि सारा हाथ मिश्रित लक्षणों का हो तो जातक अनेक गुणों वाला तो होता है; परन्तु विशेषज्ञ या दक्ष किसी में भी नही होता। ऐसे व्यक्ति को अंग्रेजी मे 'Jack of all trades' कहते हैं।

(9)
हाथ का अंगूठा

हाथ का अंगूठा इतने महत्त्व का माना गया है कि उसके लिए हमने एक पृथक प्रकरण रखना आवश्यक समझा है। अंगूठे का विषय हाथ की बनावट सम्बन्धी अध्ययन ही के लिए आवश्यक नही है, वरन् हाथ की रेखाओं आदि का विवेचन करने में भी अंगूठे के प्रभाव को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है। एक प्रकार से हस्त-विज्ञान की यथार्थता केवल अंगूठे के अध्ययन के ठोस आधार से ही प्रमाणित की जा सकती है।

प्रत्येक युग में अंगूठे ने केवल हाथ मे ही नहीं, संसार भर मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यह सर्वज्ञात है कि पूर्वी देशों में जब बंदी को बन्दीकर्ता के सम्मुख लाया जाता था तो यदि वह अपने अंगूठे को अपनी अंगुलियों से ढांप लेता था

तो यह समझा जाता था कि उसने आत्मसमर्पण कर दिया है और वह दया की भीख मांग रहा है। इजराइल के लोग युद्ध में अपने शत्रुओं के अंगूठे काट दिया करते थे। जिप्सी लोग अपनी भविष्यवाणियां करने में अंगूठे की परीक्षा को बहुत महत्त्व देते थे। हमने स्वयं उनको अंगूठे की बनावट, उसकी स्थिति और उसके कोण की परीक्षा करके गणनाएं करते देखा है। भारत में हाथ की परीक्षा की विविध पद्धतियां प्रयोग की जाती थीं; परन्तु कोई भी पद्धति हो, अंगूठे की परीक्षा को प्रमुख स्थान दिया जाता था। चीन के निवासी भी हस्त विज्ञान में विश्वास रखते हैं और हस्त-परीक्षा केवल अंगूठे की परीक्षा से ही करते हैं। यह भी एक मनोरंजक बात है कि हमारे ईसाई धर्म में भी अंगूठे को एक सम्मानपूर्ण भूमिका दी गयी है। धर्मानुसार अंगूठा ईश्वर का प्रतिनिधित्व करता है। अंगूठे को प्रथम अंगुली सम्बोधित करके जीसस क्राइस्ट माना है जो ईश्वर की इच्छा को व्यक्त करती है। अंगूठा ही हाथ की ऐसी अंगुली है जो अपनी स्थिति के आधार पर अन्य अंगुलियों से पृथक स्वतन्त्रता रखता है और उनकी क्रिया के बिना सीधा खड़ा हो सकता है। ग्रीक चर्च (धर्म) के बिशप (मुख्य पादरी) अंगूठे और उसके बाद वाली अंगुली के द्वारा आशीर्वाद दिया करते थे।

हम अपने पाठकों को अंगूठे के मेडीकल महत्त्व के सैकड़ों उदाहरण दे सकते हैं। परन्तु सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि अंगूठा मस्तिष्क के अंगूठा-केन्द्र (Thumb centre) से सम्बन्धित है।

पक्षाघात या लकवा एक वायुजनित स्नायु रोग है। जिन लोगों को पक्षाघात होता है, उनके शरीर का एक भाग संचालन योग्य नहीं रहता। स्नायु रोग के कुछ विशेषज्ञ ऐसे भी हैं जो जिस व्यक्ति को पक्षाघात का रोग होने वाला है, वर्षों पूर्व उसके हाथ के अंगूठे की परीक्षा करके बता देते हैं कि उसे यह रोग होगा। कई वर्ष आगे चलकर यह रोग शरीर को ग्रसित करेगा, इसके चिन्ह या लक्षण शरीर के किसी अन्य भाग में नहीं मिलते। अंगूठे से केवल रोग मालूम ही नहीं हो जाता है, बल्कि उसको रोका भी जा सकता है। ऐसा करने के लिए मस्तिष्क में जो अंगूठे का केन्द्र है (Thumb centre of the brain) उसमें आपरेशन किया जाता है (यह भी अंगूठे की ही परीक्षा से किया जा सकता है) तो भविष्य में रोग होने की आशंका दूर हो जाती है। ऐसा सजीव और सर्वज्ञात प्रमाण होते हुए भी लोग हस्त-परीक्षा विज्ञान पर विश्वास करने को तैयार नहीं होते। एक बार प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉक्टर फ्रैंसिस गाल्टन ने प्रदर्शन करके प्रमाणित कर दिया था कि अंगूठे की त्वचा में जो लहरदार सूक्ष्म धारियां होती हैं उनके द्वारा अपराधियों को पकड़ा जा सकता है। अब भी दाइयों (बच्चों को जन्माने में सहायता देने वाली स्त्रियां) का यह कथन प्रचलित है कि यदि जन्म के कुछ दिन बाद तक बच्चा अपना अंगूठा अंगुलियों के अन्दर दबाये रहे तो उसको शारीरिक निर्बलता होगी। यदि सात दिन के बाद में बच्चा अंगूठा

अंगुलियों के अन्दर दबाये रहे तो यह माना जाता था कि बच्चा मानसिक रूप से निर्बल होगा। यदि कोई अपगाश्रम या उपचारालय (Asylum) में जायें तो देखेंगे कि जो बच्चे, पुरुष या स्त्री जन्म से जड़ बुद्धि वाले होते हैं, उनके अंगूठे अत्यन्त निर्बल होते हैं। कुछ तो बिल्कुल ही अविकसित होते हैं। जिन लोगों का मन कमजोर होता है, उनके अगूठे निर्बल होते हैं। जो व्यक्ति अगूठे को अंगुलियों से दबाकर बात करता दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि उनमें आत्मविश्वास और आत्म-निर्भरता की बहुत कमी है। मृत्यु के समय जब मनुष्य की विचार-शक्ति का ह्रास हो जाता है तब अगूठे इस प्रकार निर्जीव न हों तो मरीज के बचने की आशा की जा सकती है, क्योंकि अंगूठा चैतन्यता का केन्द्र होता है।

फ्रांस के उन्नीसवी शताब्दी के प्रसिद्ध हस्तविज्ञान-वेत्ता और अनुभवी लेखक D. Arpentigny के अनुसार अंगूठा मनुष्य को व्यक्तित्व देता है। (The thumb individualises the man)। चिम्पैन्जी (Chimpaanzee) का हाथ मनुष्य के हाथ के समान तो नही होता; परन्तु बहुत कुछ उसी प्रकार का होता है। यद्यपि हाथ की बनावट ठीक होती है; लेकिन यदि नापा जाये तो इसका अगूठा पहली (तर्जनी) अंगुली के मूल तक नही पहुचता। इससे यह अर्थ निकलता है कि अगूठा जितना ऊंचा हो और आनुपातिकता मे अच्छा हो, बौद्धिक क्षमतायें उतनी ही अधिक प्रबल होती हैं। यदि बनावट इसके विपरीत हो तो परिणाम भी विपरीत होता है।

जिसका अंगूठा छोटा, बेडौल, बेढंगा और मोटा होता है वह असभ्य, उद्दण्ड और क्रूर होता है और उसी प्रकार के विचारों और उसी तरह का उसका व्यवहार होता है। पाशविकता की भावना उसके स्वभाव का प्रमुख अंग होती है। दूसरी ओर जिस पुरुष या स्त्री का अंगूठा लम्बा और अच्छे आकार का होता है वह उच्च बौद्धिक स्तर का और सुसंस्कृत होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी अभिलाषा या उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए अपनी बौद्धिक शक्ति का उपयोग करता है जबकि छोटे और मोटे अंगूठे वाला व्यक्ति ऐसी परिस्थिति में अपनी पाशविक शक्ति का प्रदर्शन करता है। अतः अगूठा लम्बा और हाथ में पुष्टता से जुड़ा होना चाहिए। वह करतल से सीधे कोण (Right angle) मे स्थित होना चाहिए और न ही उसका हाथ की तरफ अधिक निकट होना शुभ होता है। उसका अंगुलियों की ओर ढलान होना चाहिए; परन्तु उनके ऊपर गिरना नही चाहिए। जब अंगूठा हाथ से दूर सीधे कोण में होता है तो स्वभाव या प्रकृति सीमाओं का उल्लंघन कर जाती है और जातक एकदम स्वतन्त्र बन जाता है। इस प्रकार के स्वभाव वालों पर नियन्त्रण करना कठिन होता है। उन्हें विरोध बिल्कुल पसन्द नही होता और वे आक्रामक और उद्दण्ड बन जाते हैं। जब अगूठे की बनावट ठीक और अच्छी हो, परन्तु वह नीचे को गिरा हुआ हो और अंगुलियों की ओर विलिप्ट (ऐंठा हुआ) हो, तो जातक मे स्वतन्त्र बनने की क्षमता नहीं होती। यह जानना कठिन होता है कि ऐसे व्यक्ति के मन पर किस प्रकार की

ावनाओं और विचारों का अधिकार होता है। यदि उसका अंगूठा लम्बा हो, तो वह पने विरोधी या प्रतिस्पर्धी को अपनी बौद्धिक योग्यता द्वारा पराजित करने का प्रयत्न करता है। परन्तु यदि अंगूठा छोटा और मोटा हुआ तो वह हिंसात्मक योजना बना कर उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता है। जब कोई सुपुष्ट अंगूठा इन दोनो सीमाओं को उल्लंघन करने वाले अंगूठों की तरह न हो तो जातक में ऐसी स्वतंत्रता की भावनायें उत्पन्न करेगा जिनसे वह गौरव और प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा और उसका नैतिक स्तर ऊंचा उठेगा। वह अपने कार्यों में सावधानी बरतेगा और उसमें इच्छा शक्ति और निर्णय लेने की क्षमता प्रचुर मात्रा में होगी। ऊपर दिये तथ्यों के विश्लेषण से हम इस निर्णय पर पहुंचते हैं—

(1) सुनिर्मित लम्बा अंगूठा बौद्धिक इच्छाशक्ति को प्रबलता देता है।

(2) छोटा मोटा अंगूठा पाशविक भावना और शक्ति तथा हठधर्मी का सूचक है।

(3) छोटा और निर्बल अंगूठा इच्छाशक्ति की कमजोरी और कार्यशक्ति की अपर्याप्तता का सूचक है।

अविस्मरणीय समय से अंगूठे को तीन भागों में विभाजित किया गया है जो संसार पर आधिपत्य रखने वाली तीन महान शक्तियों के प्रतीक हैं—प्रेम (अनुराग), तर्क शक्ति (युक्ति संगतता) और इच्छा शक्ति।

अंगूठे का प्रथम पर्व इच्छाशक्ति का, दूसरा तर्कशक्ति का और तीसरा जहां शुक्र क्षेत्र आरम्भ होता है, प्रेम का सूचक होता है।

जब अंगूठा संतुलित या समान रूप से विकसित न हो तो जातक की प्रकृति में कुछ दोष पाये जाते हैं—प्रथम पर्व अत्यन्त लम्बा हो तो जातक तर्कशक्ति या युक्ति-संगतता पर बिल्कुल निर्भर नहीं होता; उसको केवल अपनी इच्छाशक्ति पर ही विश्वास होता है और उसी को वह इस्तेमाल करता है।

जब दूसरा पर्व प्रथम पर्व से अत्यधिक लम्बा हो तो जातक शान्तिप्रिय होता है और हर काम को युक्ति-संगतता से सम्पन्न करना चाहता है; परन्तु उसमें अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के लिए इच्छाशक्ति और दृढ निश्चय नहीं होता।

जब तीसरा पर्व लम्बा होता है और अंगूठा छोटा होता है तो पुरुष या स्त्री की विषय-वासना की ओर प्रबल प्रावृत्ति होती है।

अंगूठे के सम्बन्ध में अध्ययन करना हो तो यह भी देखना चाहिए कि अंगूठा अपने प्रथम जोड़ पर लचीला है, सख्त है या तना हुआ है। यदि लचीला हो तो वह पीछे मुड़कर कमान का या मेहराब का आकार धारण कर लेता है। यदि वह बेलोच हो तो प्रथम पर्व को दबाने से पीछे की ओर नहीं मोड़ा जा सकता। ये दोनों एक-दूसरे से विपरीत गुण मनुष्य के स्वभाव और उसके आचरण से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते
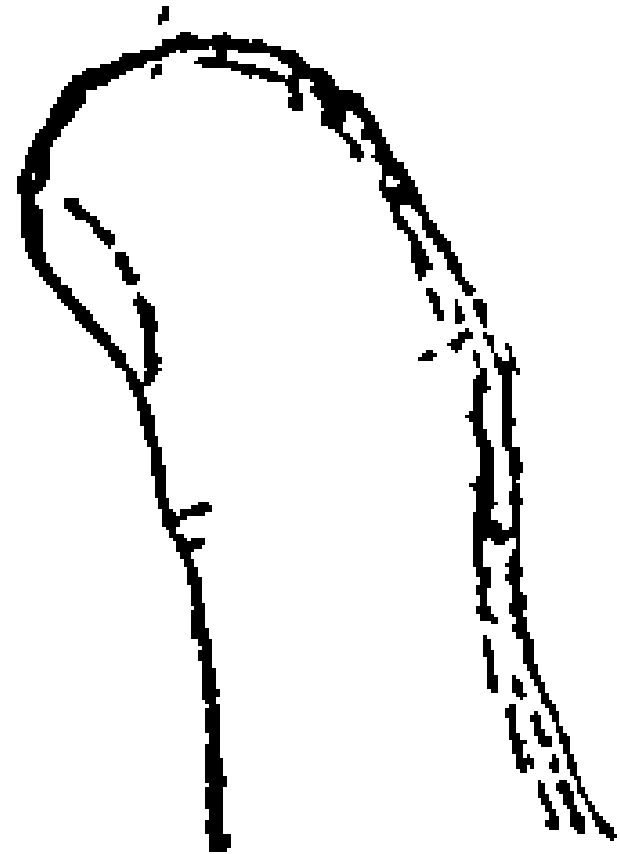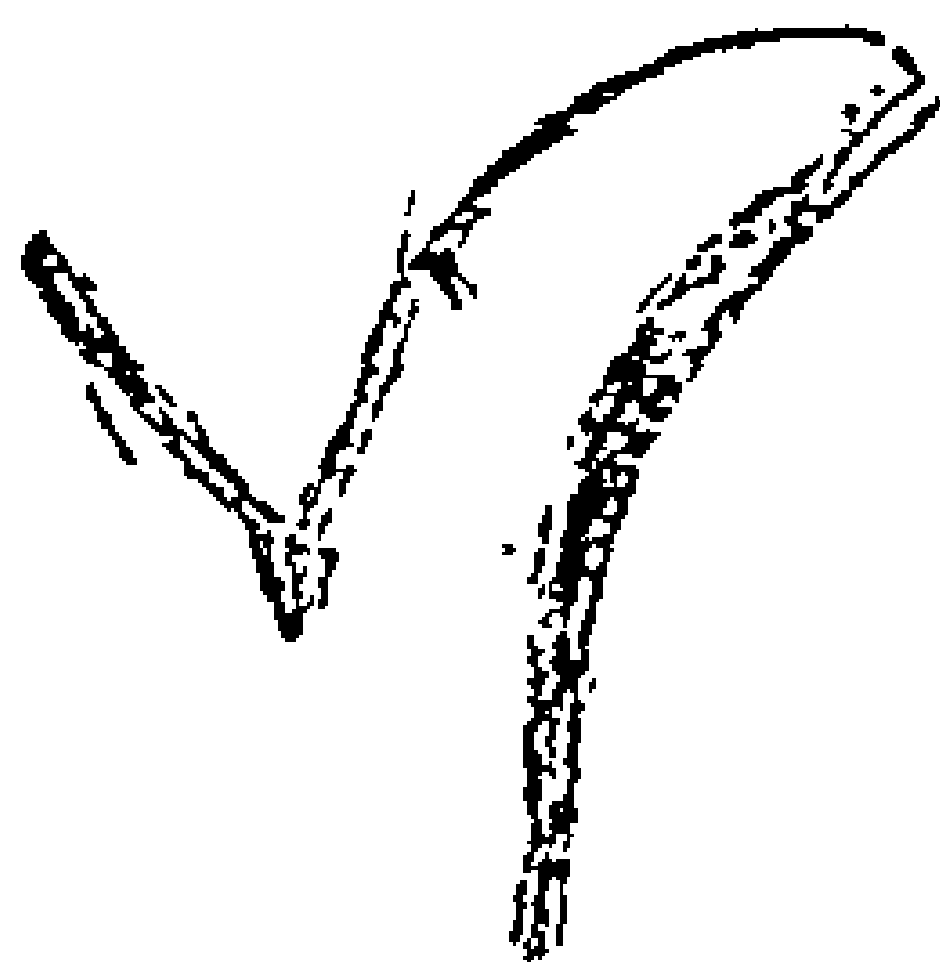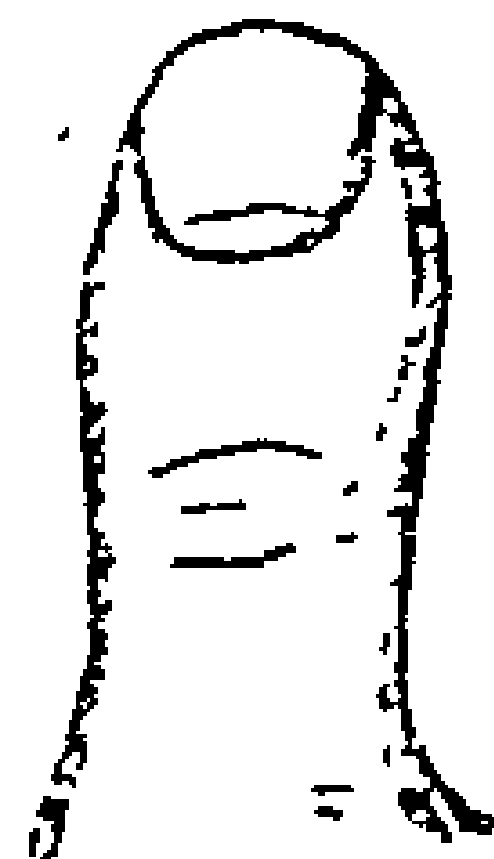
चित्र-8 (क) गदा के आकार का अंगूठा। (ख) लचकदार (पीछे की ओर मुड़ने वाला
(ग) बेलोच, सख्त या तना हुआ अंगूठा। (घ) द्वितीय पर्व बीच से पतला है। (ङ
... पर्व न मोटा न पतला। (च) द्वितीय पर्व बीच से मोटा है। अंगूठा भी छोटा

लचीला अंगूठा

यदि अंगूठा अपने प्रथम जोड़ पर सरलता से पीछे की ओर मुड़ जाता है तो जातक फिजूल खर्च करने वाला होता है। वह धन के सम्बन्ध मे फिजूलखर्च और उदार नहीं होता, बल्कि अपने विचारों में, स्वभाव में हर बात मे वैसा ही होता है। न उसे धन की परवाह होती है, न समय की। ऐसे लोगों का स्वभाव ऐसा होता है कि वे अपने आपको हर प्रकार के लोगों और परिस्थितियों के अनुकूल बना लेते हैं। कोई भी समाज हो वे उसमें बिना कठिनाई के घुल-मिल जाते हैं। उनको अपने सजातीय लोगों, सम्बन्धियों और देश के प्रति भावात्मक प्रेम होता है। कोई भी काम नया नही लगता। हर एक वातावरण में वे सरलता से रम जाते हैं। इसलिए वे जहां भी जाते हैं उन्हें किसी कठिनाई का अनुभव नही होता।

बेलोच या दृढ़ जोड़ अंगूठा

सामान्य तौर पर जो कुछ हमने ऊपर लचीले अंगूठे के सम्बन्ध में लिखा है उससे विपरीत गुण बेलोच होते हैं। ऐसे अंगूठे वाले अधिक व्यावहारिक होते हैं। उन की इच्छाशक्ति प्रबल होती है। उनमे हठपूर्ण निश्चयता होती है जो उनके चरित्र (स्वभाव) को और भी अधिक दृढ़ बना देती है। यही गुण उनको सफलता दिलवाने वाले होते हैं। वे हर कदम सावधानी से उठाते हैं और अपने मन की बात मन-ही-मन मे रखते हैं। जबकि लचीले अंगूठे वाले जल्दबाजी करते हैं, बेलोच अंगूठे सोच-विचार के बाद काम करने को प्रधानता देते हैं। ये लोग लचीले अंगूठे वालों के समान बार-बार अपने विचारों में परिवर्तन नहीं करते। जब किसी निष्कर्ष पर पहुंच जाते हैं तो उस पर डटे रहते हैं। वे उद्देश्य की पूर्ति के लिए हठधर्मी बन जाते हैं और विरोध को कुचल डालते हैं। वे अपने घर और देश की उन्नति मे दिलचस्पी रखते हैं, उनमें सुधार करने का भरसक प्रयत्न करते हैं और पूर्णतया योगदान देते हैं। वे अपने प्रेम या स्नेह का प्रदर्शन करना पसन्द नही करते। युद्ध में वे अपने प्राण दे देते हैं; परन्तु पीछे नही हटते। कला के क्षेत्र में अपने व्यक्तित्व की और वैयक्तिक प्रतिभा की छाप डालते हैं। वे शक्तिशाली शासक बनते हैं।

संक्षेप मे यह समझना चाहिए कि लचक और पीछे की ओर झुकाव होने से कल्पना, भावुकता, उदारता आदि गुण तथा फिजूलखर्ची तथा विचारों की अधिकता के कारण उनमें योजनाओं को कार्यान्वित न कर सकना आदि अवगुण होते है। यदि लचक न हो तो सांसारिक कार्यक्षमता, परिश्रम, मितव्ययता आदि गुण होते हैं; परन्तु कला और सौंदर्य का आकर्षण, विचारों का विस्तार, प्रेम-प्रदर्शन आदि गुण नहीं होते।

अंगूठे का प्रथम पर्व

हैं, ऐसा मनुष्य तर्क या विचार को काम में नहीं लेता, केवल अपनी इच्छा के अनुसार काम करता है।

अंगूठे का प्रथम पर्व यदि बहुत छोटा और कमजोर हो तथा शुक्र का बहुत उन्नत हो तो मनुष्य काम-वासना के वशीभूत हो जाता है और मन में संयम कमी होती है। यदि स्त्री का हाथ इस प्रकार का हो तो वह शीघ्र परपुरुष के फांवे में आ जाती है। जिसके अंगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ होता है उसमें विचार दृढ़ता होती है, इस कारण उसे कोई सरलता से बहका नहीं सकता।

यदि पहला पर्व मोटा और भारी हो और नाखून चपटा हो तो ऐसे व्यक्ति को बहुत प्रबल क्रोध आता है। वह क्रोध में सब भूल जाता है। अंगूठे का आगे का भाग बिलकुल 'गदा' की तरह हो तो जातक क्रोध आने पर उचित अनुचित का विचार नहीं करता। अगूठे की प्रथम और द्वितीय गांठ (सन्धि) यदि सख्त हो तो और भी अधिक क्रोध आता है। ऐसे व्यक्ति हिंसक होते हैं और क्रोध के आवेश में हत्या भी कर सकते हैं। यदि प्रथम पर्व चपटा हो तो मनुष्य शान्त प्रकृति का होता है।

अंगूठे का दूसरा पर्व

अंगूठे में यह बहुत ध्यान देने योग्य बात है कि दूसरे पर्व की बनावट कैसी है। यह बनावट भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है और इससे मनुष्य की प्रकृति का निश्चित संकेत मिलता है। दो मुख्य बनावटें जो सामान्यतः देखने में आती है, वे इस प्रकार हैं—

(1) बीच में पतला —कमर की तरह दिखने वाला [चित्र 8 (घ)]।
(2) उसके विपरीत शकल का पूरा भरा हुआ और बेढंगा [चित्र संख्या 8 (च)]।

जब हमने अपनी पुस्तक 'Book on Hand' प्रकाशित की थी तो हमने इन दो प्रकार की बनावटों का मनुष्य की प्रकृति के सम्बन्ध मे उल्लेख किया था। हमारे इस कथन 'कमर के आकार से नीति कुशलता प्रकट होती है' पर काफी आलोचना हुई थी। अतः यहां हम यह समझाने का प्रयत्न करेंगे कि हम इस निष्कर्ष पर क्यों पहुचे थे। यह तो हम बता चुके हैं कि अंगूठे की सुगठन मनुष्य के उच्च बौद्धिक स्तर और उसके उच्च विकास की सूचक है और बेढंगी गठन इस बात की ओर संकेत देती है कि जातक अपनी उद्देश्यपूर्ति के लिए पाशविक शक्ति का उपयोग करता है। कमर की तरह पतली बनावट सुगठन का एक अंग है और मानसिक शक्ति की द्योतक है। बेढंगी बनावट उद्देश्य की पूर्ति के लिए जोर-जबरदस्ती का स्वभाव देती है। इसीलिए दूसरे पर्व के बीच से पतला होने से नीति कुशलता आती है और जातक के व्यवहार में चतुरता प्रधान भूमिका अदा करती है। दुर्भाग्य से यदि दूसरा पर्व बीच मे अत्यन्त पतला हो तो उसको शुभ लक्षण नही मानना चाहिए। ऐसी बनावट के कारण स्नायु-

प्लेट 5 विलियम व्हिटमे

शक्ति (Nervous Energy) कमजोर हो जाती है और जातक विचार करते-करते घबरा जाता है।

यदि द्वितीय पर्व बहुत लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति प्रत्येक विषय पर लम्बी बात करता है; परन्तु किसी का विश्वास नहीं करता। यदि साधारण लम्बा हो तो ऐसे व्यक्ति में तर्क शक्ति अच्छी होती है। वह प्रत्येक बात का सब दृष्टिकोणों से विश्लेषण करता है यदि पर्व छोटा है तो तर्क शक्ति निर्बल होती है। यदि बहुत छोटा हो तो बौद्धिक क्षमता की कमी होती है। ऐसा व्यक्ति किसी कार्य के करने से पूर्व उस पर विचार भी नहीं करना चाहता।

अंगूठे की बनावट के साथ-साथ यह भी ध्यान में रखना चाहिये कि हाथ कठोर है या कोमल है। यदि हाथ कठोर हो तो, अंगूठे की दृढ़ता और स्फूर्ति की स्वाभाविक प्रवृत्ति को पुष्टि और वृद्धि मिलती है। परिणामस्वरूप जातक, जिसका हाथ कठोर और सुगठित हो और जिसके अंगूठे का पर्व समुचित रूप से विकसित हो, तो कोमल हाथ वाले की अपेक्षा वह उद्देश्य पूर्ति में या योजनाओं के कार्यान्वित करने में अधिक दृढ़-निश्चय वाला होता है।

जब अंगूठे में तो उपर्युक्त गुण हों; परन्तु करतल कोमल हो तो ऐसा व्यक्ति कभी तो अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में तेजी से कार्य करता है और कभी एकदम शिथिल पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति से यह आशा करना कि वह काम पूरा कर लेगा व्यर्थ है।

हाथ के द्वारा मनुष्य की प्रकृति का अध्ययन करने में उन लोगों पर विशेष रूप से ध्यान जाता है जिनका अंगूठा लचीला होने के कारण पीछे की ओर मुड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति में नैतिकता को अधिक महत्व न देने की प्रवृत्ति होती है जो सीधे और दृढ़ अंगूठे वालों में पाई जाती है। वह साधारणतया अपने आवेशों और भावनाओं के साथ ही बहता रहता है।

नोट—हमारे हिन्दू सामुद्रिक शास्त्र ने भी अंगूठे के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण ज्ञान प्रदान किया है जिसका वर्णन पाश्चात्य लेखकों की पुस्तकों में नहीं मिलता। कीरो ने यद्यपि भारत को हस्त विज्ञान की उत्पत्ति के लिए प्रमुख श्रेय दिया है; परन्तु उसने अपनी पुस्तकों में भारतीय मत कहीं भी नहीं दिया। पाठकों के लाभार्थ हम उपयुक्त स्थानों पर भारतीय मत भी देने का प्रयत्न करेंगे।

'सामुद्रिक तिलक' नामक हिन्दू ग्रन्थ में लिखा है कि अंगूठा सीधा, चिकना, ऊंचा, गोल, दाहिनी ओर घूमा हुआ हो, उसके पर्व सघन हों अर्थात् एक-दूसरे से अच्छी तरह मिले और मांसल हों और बराबर हों तो जातक धनवान होता है। जिसके अंगूठों के पर्वों में 'यव' के चिन्ह स्पष्ट हों, वह भाग्यवान होता है। जिसके अंगूठे के मूल पर 'यव' हो वह विद्वान और पुत्रवान होता है। जिसके अंगूठे के मध्य में 'यव' चिन्ह हों वह धन, सुवर्ण, रत्न आदि प्राप्त करता है, और भोगी होता है। यदि अंगूठे

के मूल में चारों ओर घूमने वाली तीन 'यवों' की माला हो तो ऐसा व्यक्ति राजा या राजा का मन्त्री होता है। अनेक हाथी उसके पास रहते हैं। यदि केवल दो 'यव माला' हो तो भी व्यक्ति राजपूजित होता है। अर्थात् उच्च पदवी पाता है। 'प्रयोग पराजित' नामक ग्रन्थ के मतानुसार यदि अंगूठे के मूल में एक भी यव माला हो तो भी मनुष्य समृद्धिशाली होता है। यदि अगूठे के नीचे काकपद हो तो वृद्धावस्था में कष्ट प्राप्त होता है। 'यव' का चिन्ह दो रेखाओं से बनता है—एक रेखा ऊपर कुछ गोलाई लिये हुये, एक रेखा नीचे कुछ गोलाई लिए हुए। इन रेखाओं के बीच मे जो भाग होता है वह 'जौ के दाने' की तरह लम्बा, दोनो सिरों पर पतला और बीच में मोटा होता है। 'यव' चिन्ह को हिन्दू-शास्त्र में बहुत अधिक शुभ माना गया है—

"अमत्स्यस्य कुतो विद्या अयवस्य कुतो धनम्"

(नारदीय संहिता)

अर्थात् जिसके हाथ में मत्स्य चिन्ह नहीं होगा वह पूर्ण विद्वान् कैसे हो सकता है? यदि 'यव' चिन्ह न हो तो धन कैसे होगा?

'विवेक विलास' के अनुसार अंगूठे के मूल में 'यव' चिन्ह हों तो विद्या, ख्याति, और विभूति (ऐश्वर्य) प्राप्त होते हैं। यदि शुक्ल पक्ष मे जन्म हो तो दाहिने हाथ के अंगूठे से विचार करना चाहिए। यदि कृष्ण पक्ष मे जन्म हो तो बायें हाथ के अंगूठे से विचार करना उचित होगा। यदि एक भी 'यव' हो तो मनुष्य श्रीमान् होता है।

यदि स्त्रियों के हाथ मे गोल, सीधा, गोल नाखून वाला मुलायम अंगूठा हो तो शुभ होता है। जिन स्त्रियों के अंगूठे तथा अगुलियो में 'यव' का चिन्ह हो और 'यव' के ऊपर और नीचे की रेखायें बराबर हों तो ऐसी स्त्रियां बहुत धन-धान्य की स्वामिनी होती हैं और सुख भोगती है।

(10)

अंगुलियों के जोड़ (गांठें)

अगुलियों के जोड़ उन्नत (गांठदार) या अनुन्नत (चिकने) होते हैं, इनका हाथ की परीक्षा में बहुत महत्व होता है। प्रतीकात्मक भाषा मे अंगुलियों में जोड विभिन्न पर्वों के बीच मे दीवार के समान होते हैं और जातक के विशेष गुणों और स्वभाव के सूचक होते हैं।

जब अगुलियों के जोड चिकने होते हैं तो जातक की प्रवृत्ति आवेशात्मक होती है और वह अपने निर्णय विवेचन-शक्ति का उपयोग किये बिना कर लेता है। यदि वर्गाकार हाथ हो तो इस अवगुण मे कुछ सुधार तो होता है, परन्तु वह समाप्त नहीं जाता। परिणामस्वरूप यदि किसी वैज्ञानिक की अंगुलिया वर्गाकार हों, परन्तु जोड़

चिकने हों [चित्र संख्या 9 (क)] तो यह अपने निष्कर्ष पर तुरन्त पहुंच जायेगा, परन्तु प्रायः अपनी कार्य-प्रणाली को पूरा विवेचन देने में असमर्थ होगा। इस प्रकार की अंगुलियों वाला डॉक्टर रोग का निदान भी इसी प्रकार करेगा। यदि वह अपने काम में दक्ष होगा तो उसका निष्कर्ष या निदान ठीक हो सकता है, परन्तु अधिकतर इस प्रकार की अंगुलियों वाले, उन व्यक्तियों की अपेक्षा, जिनकी वर्गाकार अंगुलियां गांठदार होती हैं, अधिक गलतियां करते हैं। नोकीली, चिकने जोड़ों वाली अंगुलियां पूर्णरूप से अन्तर्ज्ञान सूचक (intuitive) होती हैं [चित्र संख्या 9 (ख)]। ऐसी अंगुलियों वाले व्यक्ति किसी विषय में विस्तार से विचार या विवेचन करने का कष्ट नहीं उठाना चाहते। वे कपड़े पहनने में भी लापरवाह होते हैं और छोटे-छोटे

(क) (ख) (ग)

(चित्र संख्या 9)
(क) वर्गाकार अंगुली और चिकने जोड़
(ख) नोकीली अंगुली और चिकने जोड़
(ग) उन्नत (गांठदार) जोड़

मामलों में भी कोई ध्यान देना पसन्द नहीं करते। ऐसे व्यक्ति यदि व्यापार करते हों तो उनके काम के तरीकों में कोई व्यवस्था न होगी। उनके काम के कागजात भी ठीक स्थानों पर न होंगे और आवश्यकता के समय उनको प्राप्त करना कठिन होगा। ये लोग स्वयं तो लापरवाह होते हैं; परन्तु दूसरों को व्यवस्थित रूप से काम करते देखना चाहते हैं।

जब अंगुलियों के जोड़ उन्नत या गांठदार [चित्र संख्या 9 (ग)] होते हैं तो

प्रभाव बिल्कुल विपरीत होता है। अंगुलियों के जोड़ उन्नत या अनुन्नत होने से कार्य की क्षमता में कोई अन्तर नहीं आता। जिन लोगों की अंगुलियां चिकने जोड़ों वाली होती हैं वे उतना ही कठोर परिश्रम करते हैं जैसे गांठदार जोड़ों की अंगुलियों वाले करते हैं अन्तर यह है कि प्रथम श्रेणी वालों का परिश्रम शारीरिक होता है और दूसरी श्रेणी वालों का मानसिक और बौद्धिक। पीढ़ियों तक एक ही परिवार में इन दो श्रेणियों के व्यक्ति पाये जाते हैं।

क्योंकि उन्नत या गांठदार जोड़ों वाली अंगुलियों के गुण चिकने जोड़ों वाली अंगुलियों के गुणों के विपरीत होते हैं, इस प्रकार की अंगुलियों वाले जातक काम और उनकी प्रणाली में अधिक यथार्थता का प्रदर्शन करते हैं। यदि किसी वैज्ञानिक का हाथ वर्गाकार हो और अंगुलियां गांठदार हों तो जिस कार्य में वह संलग्न हो उसे इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं होती कि उसके सूक्ष्म विवेचन और विस्तारपूर्वक निरीक्षण के कार्य में कितना समय लगेगा। यही कारण है कि दार्शनिक हाथों वाले अपने काम में सूक्ष्मता में जाने के इच्छुक और आग्रही होते हैं। कमरे की व्यवस्था में यदि जरा सी भी गड़बड़ हो तो गांठदार जोड़ों वाली अंगुलियों के जातकों की तुरन्त उस पर नजर पड़ जाती है। छोटी-छोटी बातों में तो वे चिन्तित हो जाते हैं, परन्तु महत्त्वपूर्ण कामों में वे स्थिर और शान्त रहते हैं। अपने को वस्त्रों से सज्जित करने में बहुत सतर्क और सावधान होते हैं। वे यह चाहते हैं कि जो वस्त्र वे पहनें वे फैशन के अनुसार एक-दूसरे से मिलते-जुलते हों। वे यह कभी पसन्द नहीं करते कि जो सूट वे पहने हों तो कमीज, टाई, मोजे, जूते, उसके रंग के अनुकूल न हों। वे यह भी नहीं पसन्द करते कि जो पुरुष या स्त्री उनके साथ हो वह भी उनके समान ही अपनी वेश-भूषा में सावधान न हो। नाटक के काम में गांठदार जोड़ों की अंगुली वाले व्यक्ति अभिनेताओं की भूमिकायें अत्यन्त यथार्थता से निश्चित करते हैं, उनमें मनुष्य स्वभाव और उसकी प्रकृति के सूक्ष्म विश्लेषण की क्षमता होने के कारण वे साहित्य के क्षेत्र में पर्याप्त प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। इन सब बातों से यही निष्कर्ष निकलता है कि जिन व्यक्तियों की अंगुलियों में पर्वों पर गाठें उन्नत होती हैं वे आवेश की उमंग पर नियंत्रण रखते हैं और उनका स्वभाव अत्यन्त विवेकशील (Observant), विचारशील और विश्लेषण करने वाला हो जाता है।

नोट—हम एक उपन्यास पढ़ रहे थे। उसमें चिकनी अंगुलियों के सम्बन्ध में पढ़कर हम बहुत प्रभावित हुए। हम पाठकों के लाभार्थ और मनोरंजनार्थ वह अंश नीचे देते हैं—

"His hands were a surprise, being narrow and long fingered and as smooth as if they had done no manual work. They were the hands of artist. She pulled her eyes from them. The buildings Car

Anderson designed were artistic creations in every sense exquisite monuments of man's ability to form stone, concrete and glass into glorious shapes."

(11)

अंगुलियां

अंगुलियां लम्बी होती हैं या छोटी होती हैं, करतल की लम्बाई से उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

लम्बी अंगुलियों वालों में हर बात में सूक्ष्मता और विस्तार मे जाने (विश्लेषण) की प्रवृत्ति होती है। चाहे कमरे की सजावट हो, नौकरों के प्रति व्यवहार हो, चित्रकारी हो, वे सब मे व्यावहारिक रूप से ही कार्य करते हैं। अपने वस्त्रो की सज्जा मे वे छोटे से छोटे ऐब को देखने में नहीं चूकते। कभी-कभी तो वे इस दिशा में सनकियो की तरह व्यवहार करने लगते हैं।

छोटी अंगुलियों वालों में शीघ्रता या जल्दबाजी की प्रवृत्ति बहुत तीव्र होती है। वे स्वभाव से आवेशात्मक होते हैं। वे छोटी-छोटी बातों पर ध्यान देना पसन्द नहीं करते। जो कुछ समस्या उनके सामने आये, वे उस पर तुरन्त निर्णय ले लेते हैं। वे अपने दिखावे की परवाह नही करते, न ही वे समाज की परिपाटीबद्धता (Conventionalities) के पावन्द होते हैं। वे सोचने-विचारने में जल्दबाज होते हैं और बातचीत में मुंहफट होते हैं।

यदि अंगुलियां मोटी और वेडौल हों और साथ में छोटी भी हों तो जातक क्रूर और स्वार्थपूर्ण स्वभाव के होते हैं।

यदि अंगुलियां तनी हुई (बेलोच) और अन्दर की ओर मुड़ी हों या स्वाभाविक रूप से संकुचित हों, तो जातक अत्यन्त सावधानी बरतने वाले, अल्पभाषी, कम मिलने-जुलने वाले और कायर होते हैं।

जब अंगुलियां लचकदार होती हैं और पीछे की ओर धनुष के समान मुड़ जाती हैं, तो जातक अत्यन्त मिष्ट और आकर्षक स्वभाव का होता है, पर समाज में वह पसन्द किया जाता है, मैत्री की भावना से परिपूर्ण होता है। वह चतुर भी होता है और उसमे हर बात को जानने की जिज्ञासा और उत्सुकता होती है।

यदि अंगुलियां स्वाभाविक रूप से टेढ़ी-मेढ़ी और विकृत हों तो जातक स्वभाव से धोखेबाज, सीधे रास्ते पर न चलने वाला, विकृत मस्तिष्क का और सदा दूसरों की बुराई करने वाला होता है। अच्छे हाथ पर ऐसी अंगुलियां कम ही देखी जाती हैं। यदि हों तो जातक हास्यास्पद होता है और उसको देखकर तबीयत प्रसन्न नहीं होती।

प्रवृत्ति द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की महत्वकांक्षा होती है। वह यही चाहता है कि उसका नाम देश या संसार के कोने-कोने में फैल जाये। यदि वह इतनी लम्बी हो कि मध्यमा की बराबरी करती हो तो जातक जीवन को एक लाटरी या जुआ समझने लगता है। उसमें कला के अंतर्हित गुण और चतुरता होती है, परन्तु वह सफलता प्राप्त करने के लिये अपना जीवन, धन, मान, सम्मान सब दांव पर लगाने को तैयार रहता है।

यदि मध्यमा का अग्रभाग चमसाकार हो तो जातक सफल अभिनेता, ओजस्वी वक्ता या सफल धर्मोपदेशक बनता है। ऐसी बनावट से उसके कला सम्बन्धी स्वाभाविक गुणों को प्रोत्साहन मिलता है।

यदि कनिष्ठिका सुगठित हो और अच्छे आकार की हो तथा लम्बी हो तो वह हाथ के अंगूठे से सम्बन्ध में संतुलन लाती है। ऐसे जातक दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ होते हैं। यदि वह इतनी लम्बी हो कि अनामिका के नाखून तक पहुंच जाये तो जातक ओजस्वी वक्ता और प्रतिभावान लेखक बन सकता है। ऐसा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होता है और हर विषय की बात करने की योग्यता रखता है।

नोट—यद्यपि कीरो ने अंगुलियों के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी दे दी है; परन्तु इस सम्बन्ध में कुछ और भी तथ्य हम नीचे दे रहे हैं जो पाठकों के लिये ज्ञान-वर्धक सिद्ध होंगे।

जो अंगुली अपने स्थान पर सीधी हो उसे प्रधान और जो अंगुलियां उसकी ओर झुकी हुई हों उन्हें अप्रधान समझना चाहिये। अप्रधान अंगुलियां अपने गुण और शक्ति का थोड़ा अंश प्रधान अंगुली को दे देती हैं। उदाहरण के लिये यदि तीनों अंगुलियां तर्जनी की ओर झुकी हों तो तर्जनी को बल प्राप्त होगा और इस कारण बृहस्पति के क्षेत्र सम्बन्धी प्रभाव में वृद्धि होगी। यदि कनिष्ठिका की ओर सब अंगुलियां झुकी हों तो बुद्ध क्षेत्र के प्रभाव में वृद्धि होगी।

अंगुलियां के प्रारम्भ होने का स्थान लगभग एक ही तल से होना अच्छा समझा जाता है। यदि कोई अंगुली अन्य अंगुलियों की अपेक्षा नीचे से आरम्भ हो तो उससे उस अंगुली की शक्ति घट जाती है। यदि कोई अंगुली अधिक ऊंचे स्थान से उठती है तो उसकी शक्ति में वृद्धि होती है।

यदि किसी अंगुली का प्रथम पर्व (जिस पर्व में नाखून होता है) लम्बा और बड़ा हो तो उस अंगुली के नीचे वाले ग्रह क्षेत्र का मस्तिष्क सम्बन्धी कार्यों पर विशेष प्रभाव होगा। यदि मध्यम पर्व सबसे अधिक लम्बा और बड़ा हो तो उस अंगुली से सम्बन्धित ग्रह का प्रभाव व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक होगा। यदि तृतीय पर्व सबसे अधिक बलवान् हो तो सांसारिक पदार्थों में अधिक रुचि होगी।

यदि अंगुली के अग्रभाग पर अन्दर की ओर मांस की गोल गद्दी-सी हो तो जातक मे अत्यधिक संवेदनशीलता और व्यवहार-कुशलता होती है और वह सदा प्रयत्नशील होता है कि उसके कारण किसी दूसरे को किसी प्रकार का प्राप्त हो।

यदि अंगुलियां अपने मूल स्थान पर मोटी और फूली हुई हों तो जातक दूसरों के बजाय अपने आराम का अधिक उत्सुक होता है। वह खाने-पीने और अच्छे रहन-सहन का बहुत शौकीन होता है। यदि मूल स्थान पर अंगुलियां पतली कमर के आकार की हों तो जातक अपने स्वार्थ की किंचित मात्र भी परवाह नही करता और खान-पान मे सावधान और केवल अपने मन पसन्द की चुनी हुई वस्तुओं मे रुचि रखता है।

अंगुलियां खुली हुई हो और तर्जनी और मध्यमा के बीच मे अधिक फासला हो तो जातक स्वतंत्र विचार का होता है। यदि मध्यमा और अनामिका के मध्य मे अधिक फासला हो तो जातक स्वतन्त्र रूप से कार्य करने वाला होता है।

अंगुलियों की एक-दूसरे के अपेक्षाकृत लम्बाई-छोटाई

प्रत्येक हाथ मे अंगुलियों की लम्बाई मे अन्तर होता है। किसी हाथ मे तर्जनी अंगुली बहुत छोटी होती है, किसी मे मध्यमा के बराबर होती है। ऐसा अन्य अंगुलियों के सम्बन्ध मे भी होता है।

जब तर्जनी अत्यधिक लम्बी हो तो जातक अत्यन्त घमण्डी बन जाता है। उसमे दूसरों पर शासन रखने और उन पर अपना प्रभुत्व जमाने की प्रवृत्ति आ जाती है। ऐसी अंगुली प्रायः कट्टर धार्मिक और राजनैतिक नेताओं के हाथों में पाई जाती है। ऐसे लोग अपने नियम स्वयं बनाने वाले होते हैं।

जब यह अंगुली (तर्जनी) असाधारण रूप से लम्बी हो और मध्यमा के बराबर हो तो जातक मे घमण्ड की मात्रा और भी अधिक होती है। प्रभुत्व का नशा उसको उन्मत्त बना देता है और वह यह समझने लगता है कि संसार मे वह सबसे ऊंचा और महान है। नेपोलियन की तर्जनी इसी प्रकार की थी। (शायद हिटलर की भी ऐसी ही होगी)।

तर्जनी अंगुली को बृहस्पति या गुरु की अंगुली कहते है। मध्यमा को शनि की, अनामिका को सूर्य की और कनिष्ठका को बुध की अंगुली कहते हैं।

यदि मध्यमा वर्गाकार और भारी हो तो जातक अत्यधिक गम्भीर स्वभाव का होता है। एक प्रकार से उसे अस्वस्थ (Morbid) स्वभाव का कहा जा सकता है।

यदि मध्यमा नोकीली हो तो जातक के स्वभाव मे निष्ठुरता और छिछोरापन होता है।

यदि अनामिका लम्बाई मे तर्जनी के बराबर हो तो जातक मे अपनी कला की

प्रवृत्ति द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने की महत्त्वकांक्षा होती है। वह यही चाहता है कि उसका नाम देश या संसार के कोने-कोने में फैल जाये। यदि वह इतनी लम्बी हो कि मध्यमा की बराबरी करती हो तो जातक जीवन को एक लाटरी या जुआ समझने लगता है। उसमें कला के अंतर्हित गुण और चतुरता होती है, परन्तु वह सफलता प्राप्त करने के लिये अपना जीवन, धन, मान, सम्मान सब दांव पर लगाने को तैयार रहता है।

यदि मध्यमा का अग्रभाग चमसाकार हो तो जातक सफल अभिनेता, ओजस्वी वक्ता या सफल धर्मोपदेशक बनता है। ऐसी बनावट से उसके कला सम्बन्धी स्वाभाविक गुणों को प्रोत्साहन मिलता है।

यदि कनिष्ठिका सुगठित हो और अच्छे आकार की हो तथा लम्बी हो तो वह हाथ के अंगूठे से सम्बन्ध में संतुलन लाती है। ऐसे जातक दूसरों पर अपना प्रभाव डालने में समर्थ होते हैं। यदि वह इतनी लम्बी हो कि अनामिका के नाखून तक पहुंच जाये तो जातक ओजस्वी वक्ता और प्रतिभावान लेखक बन सकता है। ऐसा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न होता है और हर विषय की बात करने की योग्यता रखता है।

नोट—यद्यपि कीरो ने अंगुलियों के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी दे दी है; परन्तु इस सम्बन्ध में कुछ और भी तथ्य हम नीचे दे रहे हैं जो पाठकों के लिये ज्ञानवर्धक सिद्ध होंगे।

जो अंगुली अपने स्थान पर सीधी हो उसे प्रधान और जो अंगुलियां उसकी ओर झुकी हुई हों उन्हें अप्रधान समझना चाहिये। अप्रधान अंगुलियां अपने गुण और शक्ति का थोड़ा अंश प्रधान अंगुली को दे देती हैं। उदाहरण के लिये यदि तीनों अंगुलियां तर्जनी की ओर झुकी हों तो तर्जनी को बल प्राप्त होगा और इस कारण बृहस्पति के क्षेत्र सम्बन्धी प्रभाव में वृद्धि होगी। यदि कनिष्ठिका की ओर सब अंगुलियां झुकी हों तो बुद्ध क्षेत्र के प्रभाव में वृद्धि होगी।

अंगुलियां के प्रारम्भ होने का स्थान लगभग एक ही तल से होना अच्छा समझा जाता है। यदि कोई अंगुली अन्य अंगुलियों की अपेक्षा नीचे से प्रारम्भ हो तो उससे उस अंगुली की शक्ति घट जाती है। यदि कोई अंगुली अधिक ऊंचे स्थान से उठती है तो उसकी शक्ति में वृद्धि होती है।

यदि किसी अंगुली का प्रथम पर्व (जिस पर्व में नाखून होता है) लम्बा और बड़ा हो तो उस अंगुली के नीचे वाले ग्रह क्षेत्र का मस्तिष्क सम्बन्धी कार्यों पर विशेष प्रभाव होगा। यदि मध्यम पर्व सबसे अधिक लम्बा और बड़ा हो तो उस अंगुली से सम्बन्धित ग्रह का प्रभाव व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक होगा। यदि तृतीय पर्व सबसे अधिक बलवान हो तो सांसारिक पदार्थों में अधिक रुचि होगी।

हिन्दू हस्तशास्त्र के अनुसार अंगुलियों के लक्षण

पुरुषों के हाथों की अंगुलियां—

'भविष्य पुराण' के मतानुसार जिनकी अंगुलियां विरल हों (उनके बीच में छिद्र हो) तो वे दरिद्र होते हैं। यदि अंगुलियां सघन होती हैं, अर्थात् एक-दूसरे से बिल्कुल मिली हुई हो तो जातक धनवान होता है। यदि विरल होने के साथ अंगुलियां रूखी भी हों तो जातक केवल निर्धन ही नहीं, दुःखी भी होता है।

'गरुड़ पुराण' के अनुसार अंगुलियां सीधी हों तो शुभ होती हैं और आयु को बढ़ाती हैं। जिनकी अंगुलिया चपटी हों वे जातक दूसरों की नौकरी करके उदर-पालन करते हैं। जिसकी अंगुलियां बहुत मोटी हो वह जातक निर्धन होता है और यदि पीछे कर पृष्ठ की ओर अंगुलिया झुकी हुई हो तो जातक की शस्त्र से मृत्यु होती है।

'विवेक विलास' के मतानुसार अंगुलियों के पर्व लम्बे हों और अंगूठे के मूल स्थान पर रेखायें हों तो जातक पुत्रवान होता है और वह दीर्घायु तथा धनवान होता है।

एक मत यह भी है कि जिसकी अंगुलियां बहुत लम्बी हों उसका बहुत स्त्रियों से समागम होता है।

'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार यदि कनिष्ठिका का नाखून अनामिका के दूसरे पर्व से आगे निकल जाये तो प्रायः मनुष्य अधिक धनी होता है। यदि अंगुलियां लम्बी हों तो जातक सौभाग्यशाली होता है। अंगुलियों के विरल, कुटिल तथा सूखे होने से मनुष्य निर्धन होता है।

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है कि यदि अंगुलियां विरल हों, अर्थात उनके बीच में छिद्र हों तो धन का जातक से प्रेम नहीं होता। ऐसा भी होता है कि कुछ अंगुलियों के बीच में छिद्र होते हैं और कुछ परस्पर मिली हुई होती हैं। यदि ऐसा हो तो फल इस प्रकार समझना चाहिये : यदि तर्जनी और मध्यमा के बीच में दरार हो तो जीवन के प्रथम भाग में धनहीनता होती है। यदि मध्यमा और अनामिका के बीच में दरार हो तो धनहीनता का सामना जीवन के मध्य भाग में करना पड़ता है। यदि अनामिका और कनिष्ठिका के बीच में दरार हो तो धन का कष्ट वृद्धावस्था में भोगना पड़ता है। इसी प्रकार अंगुलियों के परस्पर मिले हुए होने का फल जानना चाहिये यदि सब मिली हुई हों तो जीवन भर धन का सुख प्राप्त होता है। यदि सबके बीच में दरार हो तो समस्त जीवन धन के कष्ट में व्यतीत होता है।

'नारद संहिता' के मतानुसार अनामिका का मध्य पर्व पार करके कनिष्ठिका आगे बढ़ जाये तो जातक सौ वर्ष का होता है। यदि कनिष्ठिका का अग्रभाग अनामि

के मध्यम पर्व तक पहुंचे तो आयु 80 वर्ष की होती है। उससे कुछ कम हो तो 70 वर्ष और यदि अनामिका के मध्य पर्व के मध्यम भाग तक पहुंचे तो जातक की आयु केवल 60 वर्ष की होती है।

यह उस समय के शास्त्र का कथन है जब साधारणतया आयु 80-90 वर्ष की हुआ करती थी। इसलिए ऊपर जो 100, 80 तथा 60 की आयु बताई गई है उसे क्रमशः दीर्घायु, मध्य आयु तथा अल्प आयु समझकर निर्णय करना चाहिये।

यहां पर यह बता देना भी उचित होगा कि किसी एक लक्षण से निर्णय लेना उचित न होगा, अन्य लक्षणों पर भी समुचित ध्यान देना और विचार करना आवश्यक है।

स्त्रियों के हाथ की अंगुलियां—

स्त्रियों की अंगुलियों के सम्बन्ध में 'भविष्य पुराण' का कहना है कि जिसकी अंगुलियां गोलाई लिये हुए, बराबर पर्व वाली, आगे से पतली, कोमल त्वचा वाली तथा गांठ रहित हों, वह स्त्री सुख भोगती है।

स्कन्द पुराण के अनुसार—

निम्नलिखित परिस्थितियों में स्त्रियां दुख भोगने वाली होती हैं—

(1) अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों।
(2) अंगुलियां सूखी हुई या मांसरहित हों।
(3) बहुत लाल वर्ण की हों।
(4) बहुत छोटी हों।
(5) विरल हों।
(6) चपटी या सूखी हों।

जिस स्त्री की अंगुलियां बहुत छोटी हों और दोनों हाथों से अंजुली बनाते समय अंगुलियों के बीच में छिद्र रहें तो वह स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् पति के समस्त संचित और अर्जित धन को खर्च कर देती है।

(12)

नाखून

स्वास्थ्य के सम्बन्ध में, और किन रोगों से जातक ग्रसित हो सकता है, यह जानने के लिए नाखून असाधारण रूप से मार्गदर्शक होते हैं। लन्दन और पेरिस में

डाक्टरों ने नाखूनों की परीक्षा और उनके लक्षणों के सम्बन्ध में काफी दिलचस्पी दिखाई है (यह कीरो अपने समय का अनुभव बता रहे हैं)। प्रायः रोगी यह नहीं जानता या उसे याद न रहा हो कि उसके माता-पिता किस रोग से ग्रसित रहते थे और किस रोग के कारण उनकी मृत्यु हुई थी, परन्तु नाखूनों की कुछ क्षणो की परीक्षा से वंशानुगत (Hereditary) लक्षण का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। हम पहले नाखूनों के स्वास्थ्य से सम्बन्ध का विवेचन करेंगे और फिर इस विषय पर आयेंगे कि उनके द्वारा मनुष्य की प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में क्या ज्ञान प्राप्त होता है।

यहां पर हम यह बता दें कि नाखून की देख-भाल कितनी ही सावधानी से की जाये उनके प्रारूप या प्रभाव को किंचित् मात्र भी नहीं बदला जा सकता। नाखून चाहे किसी कारणवश टूट गये हों, या सावधानी से उनकी पालिश की गयी हो, उनका प्रारूप (Type) अपरिवर्तित रहता है। मकेनिक कितना ही काम करे यदि उसके नाखून लम्बे हैं तो वे वैसे ही रहेंगे। कोई शौकीन सज्जन छोटे चौड़े नाखून वाले हों, तो वे उनको सुन्दर और आकर्षक बनाने का चाहे जितना प्रयत्न करें, नाखून छोटे चौड़े ही रहेंगे।

नाखून चार प्रकार के होते हैं—लम्बे, छोटे, चौड़े और संकीर्ण।

लम्बे नाखून

लम्बे नाखून उतनी शारीरिक शक्ति के प्रतीक नहीं होते जितने छोटे चौड़े नाखून होते हैं। जिन व्यक्तियो के नाखून बहुत लम्बे होते हैं उनको सदा छाती और फेफड़े के रोगों के होने की सम्भावना रहती है और यह सम्भावना और भी अधिक बढ़ जाती है यदि नाखून अपने ऊपरी भाग के पीछे की ओर, अंगुली की ओर या अंगुली के आर-पार वक्र हो गये हों (चित्र संख्या 10 'ए')। यह प्रवृत्ति अत्यधिक बढ़ जाती है यदि नाखून पर धारियां बन जाती हैं या वह पसलीदार (उभरा हुआ) बन जाता है। (चित्र संख्या 10 'आ')।

इस प्रकार का नाखून यदि कुछ छोटा होता है तो गले के रोगों—लेरिन्जाइटिस, दमा और श्वास नली की सूजन के प्रति प्रवृत्ति का द्योतक होता है।

यदि लम्बे नाखून अपने ऊपरी अन्त पर अत्यन्त चौड़े हों और उनमें नीलापन हो तो यह समझना चाहिये कि अस्वस्थता के कारण शरीर में रक्त संचार या रक्त वितरण मे दोष उत्पन्न हो गया है। ऐसे नाखून स्नायुमण्डल की थकावट के भी द्योतक होते हैं जिसके कारण जातक विवश होकर खाट पर पड़ जाता है अर्थात् उसमे चलने-फिरने की शक्ति नही रहती। ऐसी परिस्थिति का सामना स्त्रियों को प्रायः चौदह इक्कीस वर्ष की अवस्था और बयालीस और सैंतालीस की अवस्था के बीच में पड़ता है। (चित्र संख्या 10 ओ)
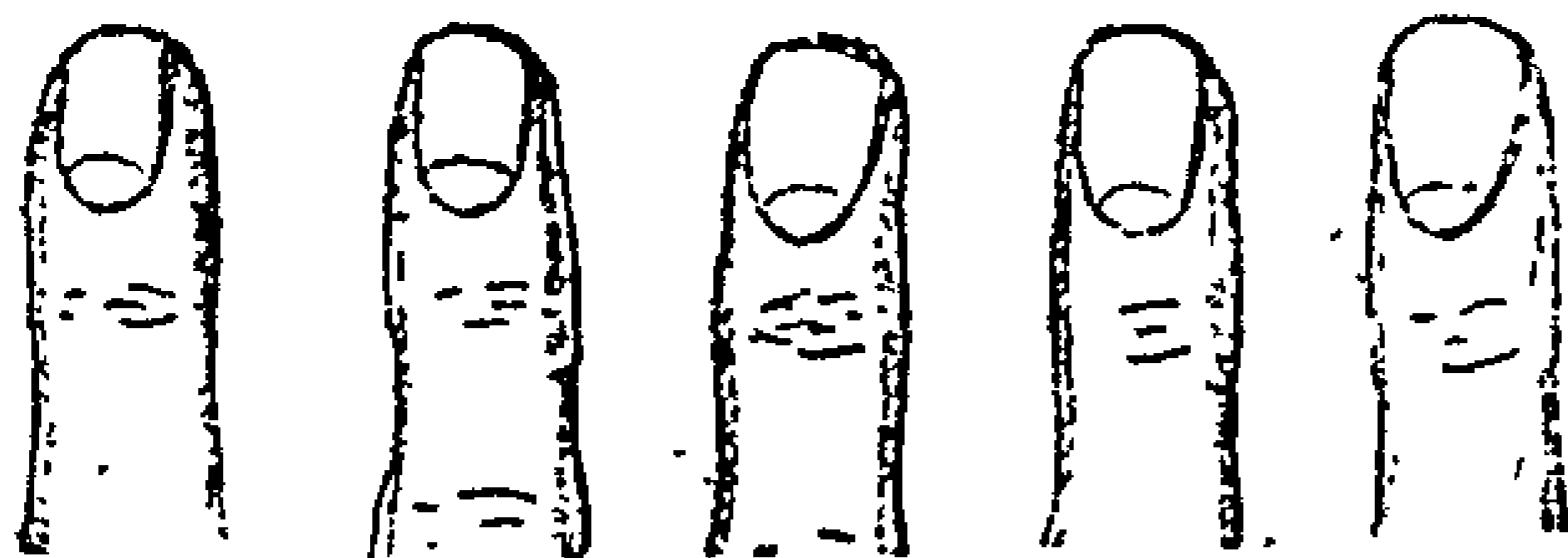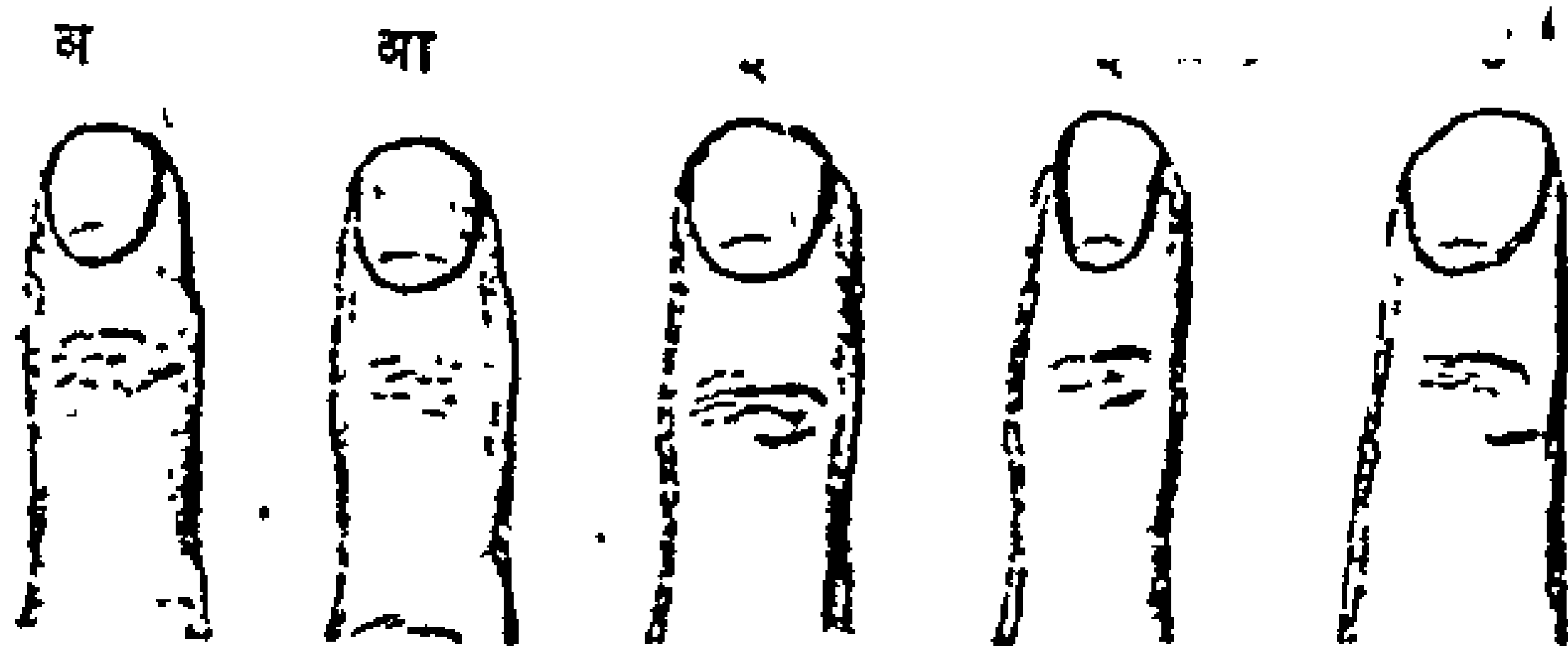
चित्र-10

(अ) और (आ)—गले की खराबियों या रोगों के बताने वाले।

(इ), (ई) और (उ)—ब्रोन्कियल अर्थात् श्वास की नली में रोग बताने वाले।

(ऊ) और (ए)—फेफड़ों की कमजोरी बताने वाले।

(ऐ), (ओ) और (औ)—क्षय रोग की ओर प्रवृत्ति बताने वाले।

छोटे नाखून

चित्र संख्या (11)

(क), (ख), (ग), (घ), (ङ)—रक्त संचार में दोष तथा हृदय रोग के प्रति प्रवृत्ति दिखाने वाले नाखून।

(च), (छ), (ज), (झ), (ञ),—पक्षाघात (Paralysis) रोग के प्रति प्रवृत्ति दिखाने वाले नाखून।

जिन परिवारों में हृदय रोग के प्रति प्रवृत्ति होती है, उनके सब सदस्यों के नाखून प्राय: छोटे होते हैं। (चित्र संख्या 11)

यदि नाखून अपने मूल स्थान पर पतले और चपटे हों और उनमें चन्द्र का
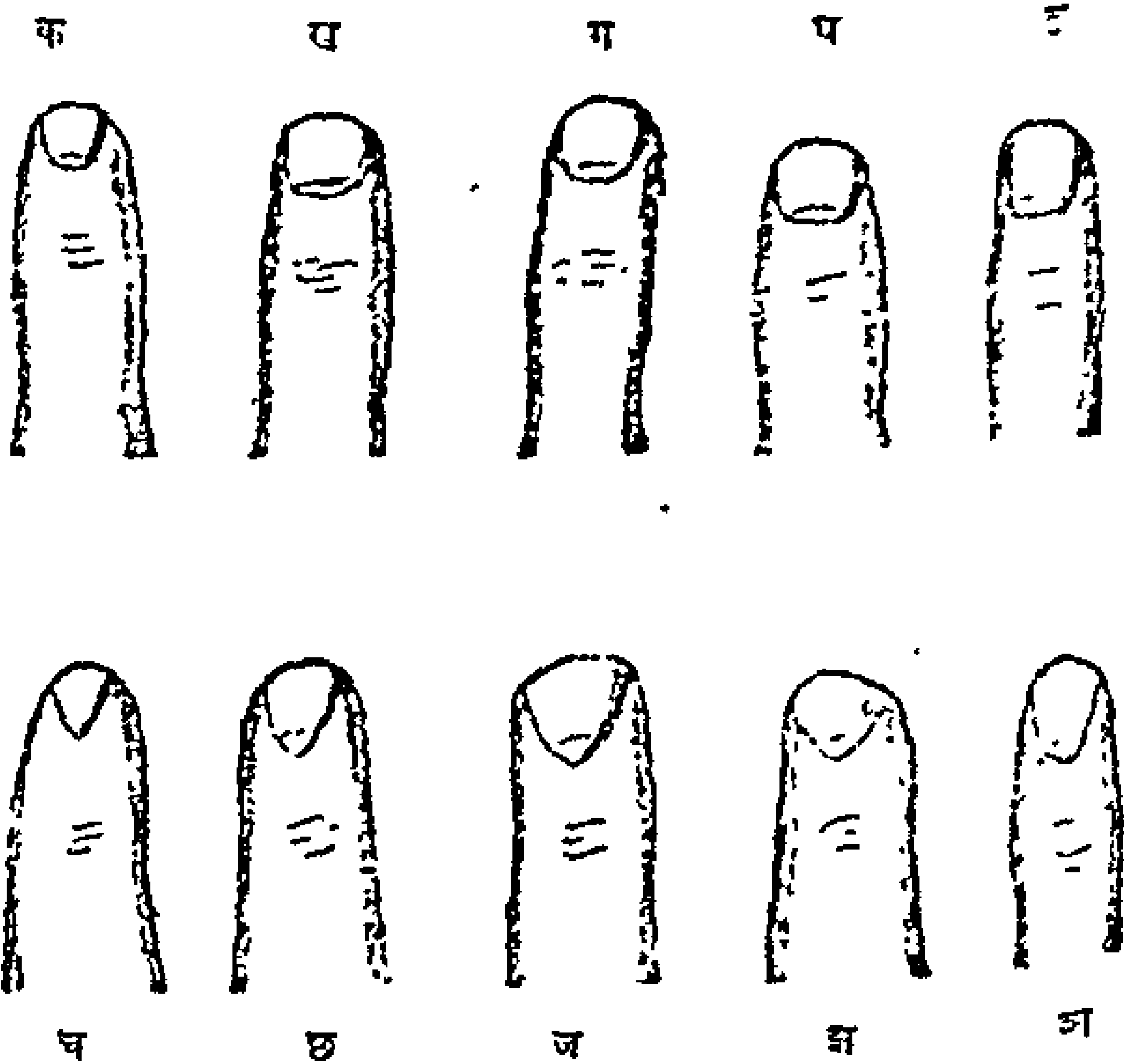
चित्र-11—रोगों का संकेत देने वाले नाखून

आकार छोटा हो या बिल्कुल न हो, तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि जातक के हृदय की क्रियाशीलता निर्बल है। अर्थात् वह हृदय रोग से पीड़ित है।

यदि नाखूनों मे चन्द्र बड़े हों तो रक्त संचार सुचारु रूप से होता है।

यदि छोटे नाखून अपने मूल स्थान पर बहुत चपटे और धंसे हुए हों तो स्नायु मण्डल के रोग होते हैं। (चित्र संख्या 11)

यदि बहुत चपटे नाखून अपने किनारों पर मुड़ने (वक्र होने) या ऊपर उठने का उपक्रम करते हो तो उसे पक्षाघात रोग की चेतावनी मानना चाहिए- विशेषकर जब वे भंगुर, सफेद और चपटे हों। यह अन्तिम लक्षण यह भी बताता है कि रोग काफी बढ़ी हुई अवस्था में है (चित्र संख्या 11 'झ')।

छोटे नाखून वालों में लम्बे नाखूनों वालों की अपेक्षा, हृदय रोगों से तथा उन रोगों से जो धड़ और नीचे के अंगों पर कुप्रभाव डालते हैं, ग्रसित होने की अधिक प्रवृत्ति होती है।

लम्बे नाखून वालों में शरीर के ऊपर भागों—फेफड़े, छाती और सिर के रोग होने की अधिक सम्भावना होती है।

जिनके नाखूनों पर स्वाभाविक धब्बे हों तो वे लोग जल्दी घबरा जाते हैं आवेश में आ जाते हैं। [illegible] भावनात्मक होती है। जब

नाखून धब्बों से भरे हों तो यह समझना चाहिए कि स्नायुमण्डल की पूर्ण रूप से परीक्षा, उसकी जांच-पड़ताल और उसके पुनः व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

पतले नाखून यदि छोटे हों तो वे निर्बल स्वास्थ्य के द्योतक होते हैं। बहुत संकीर्ण (Narrow) और लम्बे ऊंचे और मुड़े हुए नाखून रीढ़ में रोग (Spinal trouble) के द्योतक होते हैं। ऐसे नाखून वालों से अधिक शारीरिक शक्ति की आशा नहीं रखनी चाहिये।

नाखून से मनोवृत्ति का ज्ञान

मनोवृत्ति के अनुसार लम्बे नाखून वाले छोटे नाखून वालों की अपेक्षा कम आलोचनात्मक होते हैं। वे नम्र और शान्त स्वभाव के और मिष्टभाषी होते हैं। इस प्रकार के जातक अधिक तर्कादि में नहीं पड़ते और अपने विवाद शान्तिपूर्वक निर्णित कर लेते हैं। वे साधारण बातों में विशेष चिन्तित नहीं होते हैं। वे आदर्शवादी होते हैं और गीत, संगीत या अन्य कला क्षेत्रों में रुचि रखते हैं; परन्तु लम्बे नाखून वाले स्वप्नदर्शी (Visionary) होते हैं और कल्पना के जगत में विचरा करते हैं। यदि कोई उन्हें पसन्द न हो तो वे उसके सम्बन्ध में सोचना भी नहीं चाहते।

यदि नाखून छोटे और चौड़े हों तो जातक में आलोचनात्मक प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति अपनी भी आलोचना करने में संकोच नहीं करते। जो भी काम उन्हें करना हो उसका वे पूर्णरूप से विश्लेषण करते हैं। वे युक्तिसंगत भी होते हैं और लम्बे नाखून वालों के समान अव्यावहारिक नहीं होते। वे शीघ्र निर्णय लेते हैं और अविलम्ब अपने कार्य को सम्पन्न कर लेते हैं। बहस करने में वे पक्के होते हैं और समय हो तो अपनी बात को यथार्थ प्रमाणित करने के लिए घण्टों बहस करने को तैयार रहते हैं। उन्हें क्रोध जल्दी आ जाता है और जो मुंह में आता है, कह डालते हैं। जो बात उनकी समझ में नहीं आती उसको वह मानने को तैयार नहीं होते।

यदि नाखूनों की चौड़ाई लम्बाई से अधिक हो तो जातक अत्यन्त कलहप्रिय होता है और बात-बात पर झगड़ा करने को उतारू हो जाता है। उसकी दूसरों के कार्यों या मामलों में हस्तक्षेप करने की आदत होती है। यदि कहीं दो व्यक्तियों में झगड़ा होता हो तो वह भी उसमें सम्मिलित हो जाता है और झगड़ा करने वालों से अधिक जोश दिखाता है।

यदि किसी को नाखून चबाने की आदत हो तो यह समझना चाहिये कि वह व्यक्ति नरवस स्वभाव का है और साधारण सी बात से चिन्तित होने वाला है।

नोट—हिन्दू हस्त-शास्त्र ने भी नाखूनों की परीक्षा को काफी महत्त्व दिया है। हम संक्षेप में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य नीचे दे रहे हैं।

'गरुड़ पुराण' के अनुसार जिनके नाखून तुष के समान होते हैं (अर्थात् पीलापन लिए हुए और शीघ्र टूटने वाले), वे व्यक्ति नपुंसक होते हैं। जिनके नाखून टेढ़े और

रेखायुक्त हों, वे दरिद्री होते हैं। जिनके नाखूनों पर धब्बे हों और देखने में रूखे हों वे दूसरों की सेवा करके अपना उदर पालन करते हैं।

'गर्ग संहिता' के अनुसार जिनके नाखून एक वर्ण के न हों, छाजने के समान अंगुलियों के अग्रभाग की ओर फैले हुये हों या सीप के समान हों, या फटे हुये दिखाई दें, या बहुत छोटे हों, वे दरिद्र होते हैं। जिनके नाखून निर्मल और ललाई लिये हों वे भाग्यशाली होते हैं।

'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार कछुये की पीठ की तरह कुछ ऊंचाई लिए हुए, मूंगे की तरह लाल, चिकने और चमकदार नाखून शुभ होते हैं और जातक उच्च पद प्राप्त करता है। यदि नाखून बहुत बड़े हों, टेढ़े या रूखे हों, अंगुली की त्वचा में धंसे हुये हों और उनमें न तेज हो न कान्ति, तो ऐसे नाखूनों वाले व्यक्ति सुखी नहीं होते। जिनके नाखूनों पर सफेद बिन्दुओं के चिन्ह हों उनका आचरण ठीक नहीं होता और वे पराधीन होकर जीवन व्यतीत करते हैं।

'विवेक बिलास' के अनुसार यदि नाखून कुछ-चिकनाई और ललाई लिये हुए अंगुली के अग्रभाग से आगे बढ़े हुए, अंगुली के पर्व से आधे, कुछ ऊंचे हों तो शुभ लक्षण वाले होते हैं। यदि इनका रंग कुछ पीला हो तो रोग सूचित करते हैं। यदि कुछ सफेदी हो तो वैराग्य प्रकृति के सूचक होते हैं। यदि उन पर सफेद बिन्दु हों तो उनसे दुष्टता प्रकट होती है। यदि शेर के नाखूनों की तरह हों तो जातक क्रूर होता है। जिनके नाखूनों में चमक न हो और टेढ़े और रूखे हों, उन्हें अधम समझना चाहिए।

यदि स्त्रियों के नाखून बन्धूक पुष्प की तरह लाल, कुछ ऊंचाई लिए हुए हों तो वे ऐश्वर्यशालिनी होती हैं। यदि टेढ़े, खुरदरे, कान्तिहीन, सफेद हों या पीलापन लिये हुए हों, चकत्तेदार हों तो स्त्री दरिद्र होती है।

'स्कन्द पुराण' के अनुसार यदि स्त्रियों के नाखून अंगुली के अग्रभाग से कुछ आगे निकले हुये, गुलाबी वर्ण के हों तो शुभ होते हैं। पीले, कान्तिहीन, नीचे धंसे हुए या सुन्दर रंग से युक्त न हों तो दरिद्रता के सूचक होते हैं। नाखूनों पर सफेद चिन्ह व्यभिचार के लक्षण हैं।

(13)

करतल, बड़े और छोटे हाथ

यदि करतल पतला, कठोर और सूखा हो तो जातक भीरुतापूर्ण, शीघ्र घबरा जाने वाला (Nervous) और चिन्तापूर्ण स्वभाव का होता है।

करतल मोटा, भरा हुआ कोमल हो तो जातक की विषय-वासना और भोग विलास की ओर प्रवृत्ति होती है।

जब करतल लचीला (Elastic) और दृढ हो और उसका अंगुलियों से आनुपातिक संतुलन हो तो जातक में स्थिरता और समचित्तता होती है। यह स्फूर्तिपूर्ण होता है और उसमें बात को तुरन्त समझ लेने का गुण होता है।

करतल बहुत मोटा न हो; परन्तु कोमल, पिलपिला और शिथिल हो तो जातक आराम तलब और आलसी होता है और उसकी विषय-वासना की ओर प्रवृत्ति होती है।

गड्ढेदार करतल अत्यन्त अभाग्यसूचक माना जाता है। ऐसे करतल वालों को जीवन में उतनी अवनति का सामना नहीं करना पड़ता जितना निराशाओं का। हमने प्रायः देखा है कि करतल में गड्ढा प्रायः किसी रेखा या हाथ के भाग की ओर झुका होता है, बिल्कुल मध्य में नहीं होता। यदि यह जीवन रेखा की ओर झुका हो तो पारिवारिक जीवन में गड़बड़ और निराशायें होती हैं और यदि हाथ का शेष भाग रोग के संकेत देता हो तो जातक की यातनायें बढ़ जाती हैं। यदि गड्ढा भाग्य रेखा के नीचे आता है तो व्यापार में, धन के सम्बन्ध में और अन्य सांसारिक मामलों मे दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है। यदि गड्ढा हृदय रेखा के नीचे हो तो प्रेम के सम्बन्ध में निराशा का सामना करना पड़ता है।

बड़े और छोटे हाथ

यह देखा गया है कि बड़े हाथ वाले हर काम को सूक्ष्मता से विश्लेषण करके करते हैं और बारीकी के कामों में उन्हें दक्षता प्राप्त होती है। छोटे हाथ वाले उनके विपरीत गुणों वाले होते हैं। हमने एक बार लन्दन के प्रसिद्ध जौहरी का कारखाना देखा और हमें कोई विस्मय नहीं हुआ जब वहां सब कारीगरों के हाथ हमने बड़े देखे। छोटे हाथ वालों में इतना धैर्य नही होता कि वे बारीकी के काम कर सकें। वे बड़ी-बड़ी योजनायें तो बना सकते हैं, परन्तु उनको कार्यान्वित करना उनके बस मे नही होता। वे बड़े-बड़े संस्थानों का प्रबन्ध करते हैं, समाज के नेता बनते हैं और इन कार्यों में सफल भी होते हैं। यह भी एक मनोरंजक बात है कि छोटे हाथ वालों की लिखावट बड़ी होती है।

(14)

हाथों पर बाल

यदि हस्त-विज्ञान के किसी प्रतिपादक को पर्दे के पीछे बैठे किसी व्यक्ति के हाथ की परीक्षा करने का अवसर पड़े तो हाथ पर उगते हुए बाल यद्यपि देखने में कोई महत्व के नहीं लगते; परन्तु गम्भीरता से इस बात का अध्ययन किया जाए तो उनमे महत्ता आ जाती है। इस सम्बन्ध मे यह जानना आवश्यक है कि बाल किन

नियमों से नियन्त्रित होकर उगते हैं। प्रकृति ने शरीर की बहुत-सी लाभदायक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बालों की रचना की है। हम केवल महत्वपूर्ण तथ्य ही प्रस्तुत करेंगे जिससे हस्त-विज्ञान का छात्र हस्त परीक्षा के अध्ययन मे लाभान्वित हो सके। इस सम्बन्ध मे जानना आवश्यक है कि बाल भिन्न-भिन्न रग के क्यो होते हैं, क्यो कुछ बाल सुन्दर और मुलायम होते हैं, कुछ रूखे-सूखे होते हैं, और इसके कारण मनुष्य (पुरुष या स्त्री) की मनोवृत्ति मे क्यों परिवर्तन होते हैं।

पहली बात तो यह है कि प्रत्येक बाल एक बारीक ट्यूब के समान होता है। ये ट्यूब त्वचा और त्वचा की नसो से संबधित होते हैं। वास्तव मे ये बाल या ट्यूब शरीर के विद्युत प्रवाह को बाहर निकालने का काम करते हैं और बालों के रगो में वह विद्युत प्रवाह समा जाता है। इससे जातक की मनोवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर यह जान लीजिए कि यदि शरीर की व्यवस्था में बहुत मात्रा में लोहा (iron) और लाल रंग का द्रव्य (pigment) हो, तो बालों से गुजरता हुआ विद्युत प्रवाह इन पदार्थों को बालो मे या ट्यूबों मे भर देता है और बालो के रग को काला, भूरा (brown), सलेटी, सुनहला या सफेद बना देता है। जिन व्यक्तियो के बाल सुनहले या सफेद होते हैं, उनके शरीर मे लोहा (iron) और काला द्रव्य या रंग कम मात्रा मे होता है। प्रायः ऐसे लोग अधिक निस्तेज, निरुत्साही और नम्र होते हैं और दूसरों के तथा अपने चारों तरफ होने वाले वातावरण के प्रभाव में आ जाते हैं। गहरे रंग के बालों पर इस प्रकार का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ता है।

गहरे रंग के बालो वाले व्यक्ति यद्यपि काम करने में कम स्फूर्तिपूर्ण होते हैं, परन्तु उनके मिजाज में जोश और आवेश होता है। वे अधिक तुनुक मिजाज वाले होते हैं और हल्के रंग के बालो वालों से प्रेम या स्नेह मे अपेक्षाकृत अधिक ओजवान होते हैं। लाल रंग के बालों का गुण बिल्कुल विपरीत होता है। लाल रंग के बाल काले, भूरे या सुनहरे बालों से अपेक्षाकृत अधिक रूखे-सूखे और कम चिकने और मुलायम होते हैं। ये अन्य प्रकार के बालों के समान उतने बारीक भी नही होते। ट्यूब अधिक चौड़ा होता है। इसलिए उनके द्वारा बाहर निकलने वाले विद्युत प्रवाह की मात्रा भी अधिक होती है। परिणामस्वरूप लाल रंग के बालों वाले व्यक्ति अधिक उत्तेजनात्मक होते हैं और काले, भूरे या सुनहले बालो वाले व्यक्ति के मुकाबले अधिक सरलता से और शीघ्रता से काम करने को प्रेरित किये जा सकते हैं।

जब शारीरिक व्यवस्था, वृद्धावस्था या अधिक नशा करने या भोग विलास मे शक्ति नष्ट हो जाने से, कमजोर हो जाती है, तो शरीर मे बिजली कम मात्रा मे बनती है और लगभग शरीर के अन्दर ही इस्तेमाल हो जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि द्रव्य या रंग का बालों के ट्यूबो मे जाना बन्द हो जाता है और बाल सफेद होने लगते हैं। यह किसी सहसा आघात या झटके से होता है तो स्नायविक विद्युत द्रव्य के तेज प्रवाह के कारण बाल अपनी जड़ों पर खड़े हो जाते हैं। उसकी प्रतिक्रिया भी

तुरन्त आरम्भ हो जाती है और प्रायः कुछ ही घंटों में बाल सफेद हो जाते हैं। ऐसे झटके के बाद शारीरिक व्यवस्था में फिर कभी सुधार नहीं होता और बाल अपना पूर्व रंग पुनः नही प्राप्त कर सकते।

जहां तक हमने पढ़ा है और देखा है बालों के रंग के संबंध मे हमने जो विचार प्रस्तुत किए हैं, उन पर किसी का ध्यान नहीं गया है। हमारा अनुरोध है कि पाठक इन विचारों की व्यावहारिक रूप से परीक्षा करें और उनको और अधिक विकसित रूप देने का प्रयत्न करें।

नोट—बाल कर-पृष्ठ (हथेली के पीछे का भाग) पर होते हैं, हथेली पर कभी नहीं होते। ऊपर जो बालों के संबंध में कीरो ने लिखा है उसके अनुसार कर-पृष्ठ पर बाल हों तो उनका फल इस प्रकार समझना चाहिए—

(1) जिनके हाथ पर भूरे या हल्के रंग के सूक्ष्म बाल हों, वे मृदु स्वभाव के सज्जन, शीघ्र दूसरो के प्रभाव मे आ जाने वाले होते हैं; परन्तु ये लोग आलसी स्वभाव के होते हैं और अधिक परिश्रम करना पसंद नही करते।

(2) यदि बाल काले हों तो मनुष्य के स्वभाव में उग्रता होती है। उनके प्रेम में वासना तथा ईर्ष्या की मात्रा होती हैं। वे लोग चिड़चिड़े मिजाज के होते हैं और सहिष्णुता कम होने के कारण शीघ्र क्रुद्ध हो उठते हैं।

(3) यदि हाथ के बाल काले और मोटे हो तो काले बाल होने के जो गुण या अवगुण ऊपर बताये गये हैं वे सब तीव्र मात्रा में, इस प्रकार के व्यक्तियों मे पाये जाते हैं। प्रत्येक बात अधिक मात्रा में होने से इनकी प्रकृति क्रूर और क्रोधयुक्त होती है। प्रेम में वासना की मात्रा अधिक होने से ये हर प्रकार से अपनी इच्छा-पूर्ति में तत्पर हो जाते हैं।

कर-पृष्ठ पर बाल नही होना प्रकृति (शरीर और चित्त) की मृदुता का लक्षण है। मोटे बाल होना शारीरिक शक्ति का तथा हृदय की कठोरता का सूचक है। बाल जितने पतले और विरल हों उतना ही मृदु प्रकृति का मनुष्य होगा। यदि घने और अधिक हों तो इससे विपरीत फल होगा।

कर-पृष्ठ के सम्बन्ध में हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार पृथ्विपतियों (राजा या उच्चाधिकारियों) के कर पृष्ठ ऊंचे उठे हुए, चिकने, चारो ओर सर्प के फन के आकार के फैले हुए होते हैं। उनमें नसें नही दिखाई देतीं। इसके विपरीत यदि कर-पृष्ठ सूखा, मांस रहित, नीचा, रोयें या बाल सहित, खुरदरा और रंग उड़ा हुआ हो या सुन्दर वर्ण न हो तो शुभ नही होता।

'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार यदि कर-पृष्ठ में रोयें या बाल हो या नसें

दिखाई दें तो जातक निर्धन होता है।

स्त्रियों के संबंध में यह मान्यता दी गई है कि जिस स्त्री के कर-पृष्ठ कम बाल रहित हों और नसें न दिखाई दें तो शुभ लक्षण है। यदि कर-पृष्ठ पर बाल हों, उन पर रोयें बहुत हों और नसें दिखाई देती हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती। यह भी मान्यता है कि जिन स्त्रियों के पैरों और बाहों में घने बाल हों, उन्हें दुःख प्राप्त होता। जिन स्त्रियों के मूंछें या दाढ़ी हों—वे मर्दाना स्वभाव की होती है।

(15)

ग्रह क्षेत्र, उनकी स्थिति और उनके गुणादि

हम ग्रह क्षेत्रों का हाथ में महत्त्वपूर्ण स्थान मानते हैं। अतः उनके संबंध में विवेचन हम इस पुस्तक के 'हाथ की बनावट' वाले भाग में करना उचित समझते हैं। इस संबंध में हम यही उल्लेख करना आवश्यक समझते हैं कि हाथों से काम करने से करतल की त्वचा खुरदरी या कुछ मोटी चाहे हो जाये; परन्तु वे स्थान जिनको ग्रह क्षेत्रों का नाम दिया गया है, हाथ से काम करने के कारण दबते या घटते नहीं हैं। ये ग्रह क्षेत्र जन्मजात या वंशानुगत गुणों को व्यक्त करते हैं। इन क्षेत्रों को नाम देने की एक परम्परा मान्यता प्राप्त कर गई है। जिसके अनुसार इनको विभिन्न ग्रहों से संबंधित नाम दिये गये हैं। सम्भव है कि इन क्षेत्रों पर उन ग्रहों का, जिनके नाम से ये क्षेत्र जाने जाते हैं, प्रभाव हो; परन्तु हाथ की परीक्षा के विषय के साथ-साथ हम ग्रहों के प्रभाव का विचार करना उचित नहीं समझते। परन्तु नाम हम भी उन क्षेत्रों का ग्रहों पर आधारित कर रहे हैं, क्योंकि इससे पाठकों के लिए उनके गुणों को समझना सरल हो जाएगा। (चित्र संख्या 12 में ग्रह क्षेत्र दिखाए गए हैं)।

शुक्र क्षेत्र (Mount of Venus)

शुक्र क्षेत्र अंगूठे के मूल स्थान के नीचे स्थित होता है। यदि यह अत्यधि उन्नत न हो तो यह शुभ लक्षण माना जाता है। यह ग्रह क्षेत्र हाथ की सबसे ब और सबसे अधिक रक्त-वाहिकाओं (Blood vessels) को आच्छादित करता है। अ यदि शुक्र क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत और विकसित हों तो जातक का स्वास्थ्य बहु अच्छा और हृष्ट-पुष्ट होता है। यदि शुक्र क्षेत्र छोटा हो तो स्वास्थ्य ठीक नहीं हो और काम-शक्ति भी कम होती है। यदि शुक्र क्षेत्र असाधारण रूप से बड़ा हो तो पु की स्त्री के प्रति और स्त्री की पुरुष के प्रति काम-वासना की बहुत अधिकता हो है।

शुक्र क्षेत्र से स्वास्थ्य, सौन्दर्य-प्रियता, प्रेम, अनुराग, स्नेह, काम-वासना, सन्तानोत्पादक शक्ति, काव्य तथा संगीतप्रियता, दया, सहानुभूति आदि का विचार किया जाता है।
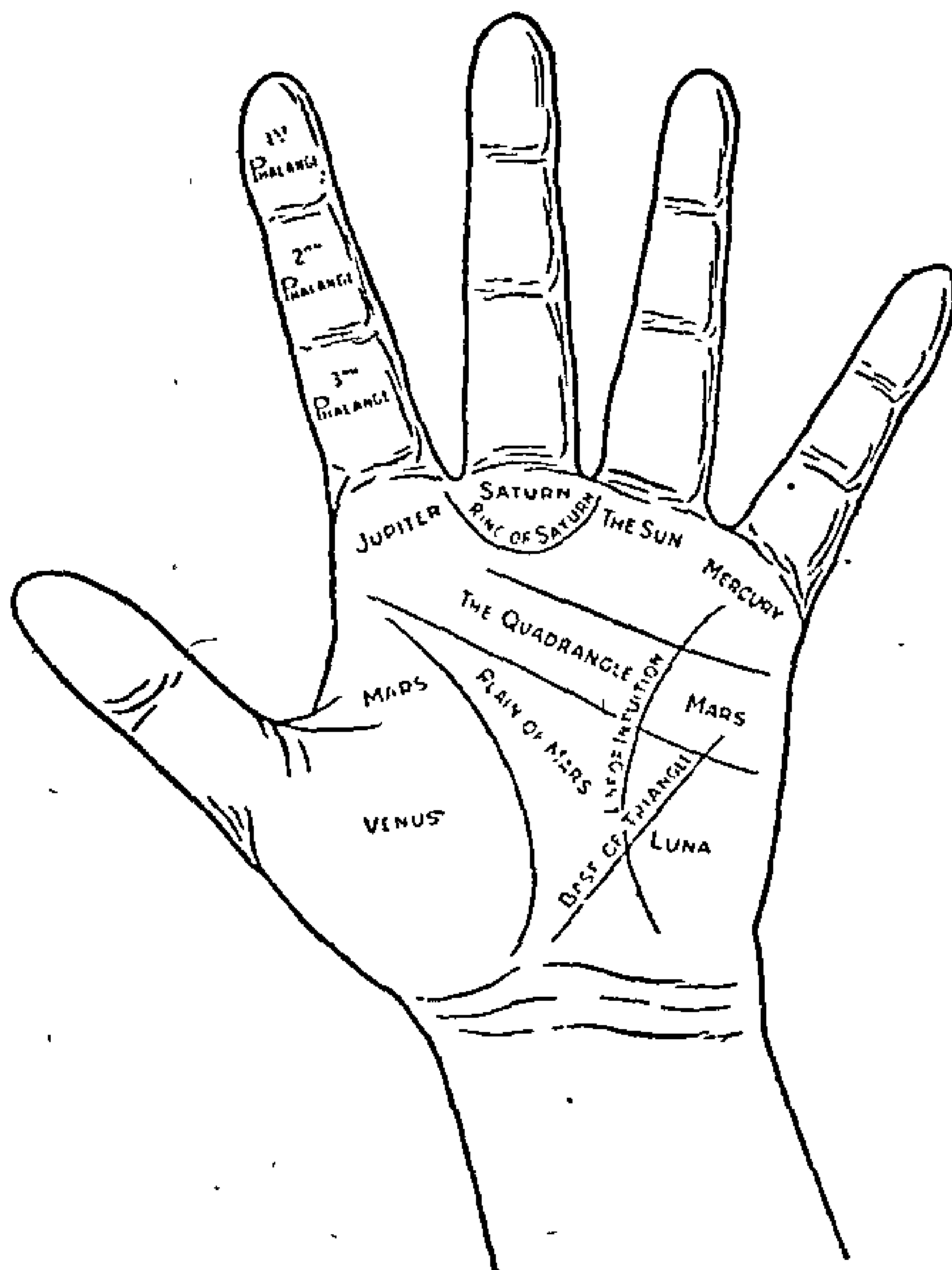
चित्र-12—ग्रह क्षेत्र

यदि शुक्र क्षेत्र उन्नत और बड़ा हो तो सन्तानोत्पादक-शक्ति अच्छी होती है।

यदि बहुत धंसा हो और संकीर्ण हो तो यह शक्ति कम होती है। यह स्थान दोषयुक्त हो और अन्य रोग के लक्षण हो तो जननेन्द्रिय संबंधी रोग होते हैं।

नोट—जो गुण शुक्र क्षेत्र के ऊपर दिये गये हैं ये सीमा के अन्दर रहेंगे या सीमा को पार कर जायेंगे (अवगुण बन जायेंगे) यह निश्चय करने के लिए हाथ के अन्य लक्षणों का अवलोकन भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि इस क्षेत्र से यह संकेत मिले कि कामुकता अधिक होगी तो अंगूठे और शीर्ष रेखा को भी देखना चाहिए। यदि अंगूठे का प्रथम पर्व बलिष्ठ हो और शीर्ष रेखा लम्बी और सुन्दर हो तो मनुष्य अपनी काम भावना पर नियन्त्रण करने मे समर्थ होगा और व्यभिचारी नही बनेगा। यदि किसी स्त्री के हाथ में शुक्र क्षेत्र में असाधारण रूप से बड़ा और उन्नत हो, बृहस्पति और सूर्य क्षेत्र धंसे हुए हों; हृदय रेखा पर द्वीप चिह्न हो, शीर्ष रेखा छोटी और कमजोर हो, अंगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा; पतला और कमजोर हो, तो वह शीघ्र पथभ्रष्ट हो जाएगी।

बृहस्पति क्षेत्र (Mount of jupiter)

यह क्षेत्र तर्जनी के मूल स्थान से नीचे स्थित होता है (चित्र संख्या 12)। जिस व्यक्ति के हाथ मे बृहस्पति क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत हो तो उसमें महत्वाकांक्षा, आत्मगौरव, उत्साह, स्फूर्ति और शासन करने की इच्छा अधिक मात्रा में होती है। यदि किसी व्यक्ति के हाथ मे बृहस्पति क्षेत्र चपटा या धंसा हुआ हो तो उसमे धार्मिक विश्वास और बड़ो के प्रति श्रद्धा नही होती। यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो मन में अहंकार बहुत अधिक होता है। ऐसा व्यक्ति डिक्टेटर (तानाशाह) बन जाता है।

शनि क्षेत्र (Mount of Saturn)

यह मध्यमा के मूल स्थान के नीचे स्थित होता है (चित्र 12)। इसके गुण हैं—एकान्तप्रियता, शान्ति, कम बोलना, बुद्धिमानी, सच्चाई, तत्परता, गम्भीर विषयों के अध्ययन की रुचि, संस्कृति और संगीत की ओर आकर्षण।

नोट—कीरो ने इस विषय को अत्यन्त संक्षिप्त रूप में लिखा है : हम पाठकों के लाभार्थ इस क्षेत्र के संबंध में कुछ अन्य आवश्यक तथ्य दे रहे हैं।

किसी हाथ मे यदि शनि क्षेत्र बिल्कुल गुणरहित हो (साधारण हो), तो जातक का जीवन साधारण रूप से व्यतीत होता है। यदि साधारण उन्नत हो तो जातक विचारशील होता है। यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक विशेष चिन्तायुक्त और निराशावादी होता है। उसमे दूसरों के प्रति अविश्वास की मात्रा अधिक होती है। यदि अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो उसमे आत्महत्या की प्रवृत्ति होती है। ऐसे व्यक्ति की विवाह मे रुचि नही होती। वह अत्यधिक एकान्तप्रिय हो जाता है।

सूर्य क्षेत्र (Mount of the Sun)

यह क्षेत्र अनामिका के मूल स्थान के नीचे स्थित होता है (चित्र संख्या 12)। जब यह क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत होता है तो जातक हर एक सुन्दर वस्तु को प्रशंसात्मक भाव से देखता है, चाहे उसमें कला-कृतियों की परख करने का गुण न हो तब भी वह कलाप्रिय होता है। चित्रकारी, कविता, संगीत, उच्च विचारों और बौद्धिक उच्चता के प्रति उसका रुझान होता है। वह सदा उत्साह और उल्लास से भरा हुआ होता है।

यदि यह क्षेत्र बिल्कुल धंसा हुआ हो तो उत्साह कम होता है। कला और काव्य आदि के प्रति कोई आकर्षण नहीं होता। न अध्ययन की ओर रुचि होती है। तमाशा देखना, खाना-पीना—बस, यही जीवन का ध्येय होता है। बुद्धि प्रखर नहीं होती।

यदि अच्छी प्रकार उन्नत हो तो मान-प्रतिष्ठा, धन-संग्रह आदि में सफलता प्राप्त होती है। धार्मिकता की ओर भी रुचि होती है। वैवाहिक जीवन प्रायः सुखी नहीं होता; क्योंकि ऐसे व्यक्तियों को प्रायः अपने समान गुणवान जीवन साथी नहीं मिलता।

यदि यह क्षेत्र अत्यन्त उन्नत हो तो अहम् बहुत बढ़ जाता है। जातक में ईर्ष्या, खुशामदप्रियता आदि अवगुण होते हैं।

बुध क्षेत्र (Monnt of Mercury)

कनिष्ठिका के मूल स्थान के नीचे यह क्षेत्र स्थित होता है (चित्र संख्या 12)। इसमें बुद्ध ग्रह के सब गुण होते हैं। किसी एक स्थान या कार्य से मन ऊब जाना और दूसरे नवीन स्थान पर जाना, यात्रा या नये लोगों से सम्पर्क स्थापित करना, शीघ्र निर्णय पर पहुंच जाने की या बोलने की शक्ति, हाजिरजवाबी, हास-परिहास आदि—ये गुण इन लोगों में पाए जाते हैं। यदि हाथ मे अन्य शुभ लक्षण हों तो ये सब गुण शुभ फल देने वाले होते हैं। यदि हाथ में लक्षण अशुभ हों और बुद्ध क्षेत्र दोषयुक्त हो तो चालाकी, धोखा देना, जालसाजी द्वारा मनुष्य अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करता है।

यदि बुद्ध क्षेत्र नीचा हो तो हिसाब-किताब, वैज्ञानिक कार्य तथा उस व्यापारिक काम में जातक की तबीयत नहीं लगती जिसमें हिसाब की विशेष आवश्यकता हो।

यदि सामान्य रूप से उच्च हो तो ऐसा मनुष्य ओजस्वी वक्ता, व्यापार कुशल, बुद्धिमान, शीघ्र कार्य करने वाला, यात्रा प्रेमी होता है। ऐसे व्यक्तियों में आविष्कारक प्रवृत्ति भी विशेष होती है।

मंगल क्षेत्र (Mount of Mars)

मंगल क्षेत्र दो होते हैं। एक तो बृहस्पति क्षेत्र के नीचे और जीवन रेखा के अन्दर होता है। (चित्र संख्या 12)। यह शुक्र के ऊपर की ओर जुड़ा हुआ होता है। यह सक्रिय साहस और योद्धा बनने की क्षमता देता है। जब यह क्षेत्र बड़ा होता है तो जातक में लड़ने-भिड़ने और झगड़ा करने की प्रवृत्ति होती है।

दूसरा मगल क्षेत्र चन्द्र और बुद्ध क्षेत्र के बीच में होता है। यह निश्चेष्ट साहस (Passive courage), आत्म-संयम और प्रतिरोध-शक्ति को प्रदर्शित करता है।

यदि हाथ के अन्य लक्षण अच्छे हों और प्रथम मंगल क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत हो तो जातक फौज या पुलिस मे जहां भी साहस की आवश्यकता हो उच्च पद पर सफल होता है। इसके विपरीत यदि अन्य लक्षण अशुभ हो तो जातक डाकू, लूटमार करने वाला बन सकता है। यदि यह क्षेत्र दबा हुआ हो तो मनुष्य कायर होता है। यदि अत्यधिक ऊंचा हो तो जातक में दुस्साहस, अत्याचार करने की और क्रूरता की प्रवृत्ति होती है।

चन्द्र क्षेत्र (Mount of the Moon)

यह क्षेत्र मंगल के दूसरे क्षेत्र के नीचे और शुक्र क्षेत्र के बराबर मे होता है (चित्र संख्या 12)। चन्द्र क्षेत्र का कल्पना, सौन्दर्यप्रियता, आदर्शवाद, काव्य, साहित्य आदि से विशेष सम्बन्ध होता है।

जिनके हाथ मे चन्द्र क्षेत्र दबा हुआ हो तो उनमें कल्पना, मन की विशेष स्फूर्ति, नये आविष्कार या सूझ के विचार नहीं होते। जिनके हाथ में यह क्षेत्र उच्च हो वे काव्य, कला, कल्पना, संगीत, साहित्य आदि में सफल होते हैं।

यदि यह क्षेत्र साधारण रूप से उच्च हो और मध्य का तृतीयांश विशेष फूला हो तो अन्तड़ियों का रोग व पाचन-शक्ति की कमी होती है।

यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण शुभ न हों तो चिड़-चिड़ापन, दुःखी मनोवृत्ति, पागलपन, सिरदर्द जैसे रोग होते हैं।

यदि यह क्षेत्र उन्नत न हो, लम्बा और संकीर्ण हो तो शान्तिप्रियता, एकान्तवास, ध्यान में मन लगना, नवीन कार्य मे उत्साह न होना आदि विशेषतायें होती हैं।

अपने स्थान से खिसके हुए ग्रह क्षेत्र

ग्रह क्षेत्रों के खिसकने का अर्थ है—उनके शिखरों का खिसकना। कभी-कभी किसी क्षेत्र का शिखर बिल्कुल मध्य मे नही होता, कुछ इधर-उधर होता है। उदाहरण लिए बृहस्पति क्षेत्र का शिखर शनि क्षेत्र की ओर झुका हो सकता है। इसी प्रकार क्षेत्र का शिखर बृहस्पति क्षेत्र की या सूर्य की ओर खिसका हुआ हो सकता है।

वास्तव में कभी-कभी ग्रह क्षेत्र का शिखर इतना दाहिनी या बायीं ओर खिसका होता है कि यह किस ग्रह क्षेत्र का शिखर है यह जानना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में निश्चय करने का तरीका यह है कि आवर्धक शीशे (Magnifying glass) से यह देखना चाहिए कि प्रत्येक ग्रह का शिखर कहां है। हथेली की त्वचा में जो बाल जैसी पतली सूक्ष्म धारियां होती हैं वे प्रत्येक क्षेत्र के शिखर पर आकर मिलती हैं। बस, यह स्थान ग्रह क्षेत्र का शिखर है।

किसी ग्रह क्षेत्र के शिखर के स्थान से खिसक कर दूसरे ग्रह क्षेत्र की ओर हो जाने से उसके गुणों में अन्तर आ जाता है। वास्तव मे तब दोनों ग्रह क्षेत्र के गुणों का मिश्रण हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि शनि के क्षेत्र (उसका शिखर) का झुकाव बृहस्पति क्षेत्र की ओर होता है तो बृहस्पत्ति क्षेत्र के गुणों मे शनि क्षेत्र की बुद्धिमानी, उदासीनता, धार्मिक प्रवृत्ति का भी समावेश हो जाता है। यदि शनि क्षेत्र (उसके शिखर) का सूर्य क्षेत्र की ओर झुकाव हो तो शनि क्षेत्र के उपयुक्त गुणों का सूर्य क्षत्र की कलाप्रियता आदि गुणों मे सम्मिश्रण हो जाता है। यदि सूर्य क्षेत्र उसके शिखर) का बुध क्षेत्र की ओर झुकाव हो तो उसकी कलाप्रियता बुध क्षेत्र की यापारिक और वैज्ञानिक क्षमता आदि गुणों को प्रभावित करेगी।

(16)

विभिन्न देशों के निवासियों और जातियों के हाथ

यह तो सब ही जानते हैं कि विभिन्न देशों के निवासियों और जातियों के रीरों की गठन, बनावट रंग, रूप में अन्तर होता है। यह कहा जाता है—"प्रकृति ा जो नियम एक ओस की बूंद को गोल बनाता है, वही संसार की रचना करता है।" The law which rounds a dew drop shapes a world) अत यदि प्रकृति कुछ नियम भिन्न प्रकार की सृष्टि करते हैं, तो वे भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर और य भी बनाते हैं जो अपने गुणों में एक-दूसरे से विभिन्न होते हैं।

बसे निम्नश्रेणी का या अविकसित हाथ (The Elementary hnd)

इस प्रकार का हाथ अपने वास्तविक रूप में सभ्य जातियो मे बहुत कम पाया ता है। इस प्रकार के हाथ बहुत ठण्डे स्थानों (जैसे आइसलैंण्ड 'लैपलैण्ड, रूस के ती भाग, साइबेरिया) में रहने वाली आदिम जातियो के लोगो में पाये जाते है। ारत में भी आदिम जातियों में जो अब भी आधुनिक सभ्यता के प्रभाव में नहीं आये , ऐसे हाथ अवश्य होंगे)।

ये लोग श्लेषात्मक और भावशून्य होते हैं। ...

विकसित अवस्था मे नहीं होते। इसलिए और जातियों की अपेक्षा उनको शारीरिक पीड़ा का कम अनुभव होता है। वे अपनी मनोवृत्ति में पशुओं के समान होते हैं और विषय-वासना मे भी पाशविक होते हैं। उनमें कोई महत्त्वाकांक्षा नही होती। बस, इतना ही है कि वे चार पैरों वाले पशु नहीं होते, दो पैरों वाले आदमी होते हैं और मनुष्य जाति में उनकी गणना होती है। इस श्रेणी के कुछ विकसित हाथ भी होते हैं जो विभिन्न देशों मे सभ्य जातियों मे पाये जाते हैं।

वर्गाकार हाथ (The Square hand)

वर्गाकार हाथ अधिकतर स्वीडन, डेन्मार्क, जर्मनी, हालैण्ड, इंग्लैण्ड, स्काटलैंड के निवासियों में पाया जाता है। (यह नहीं कहा जा सकता कि भारत तथा अन्य देशों में, जो आधुनिक सभ्यता में और देशों के समान, कौरों के रचनाकाल से, बहुत अधिक उन्नति कर गये हैं, इस प्रकार के हाथ न हों। वास्तव में सब देशों मे सब प्रकार के हाथ देखे जा सकते हैं। हां, यह हो सकता है कि प्रकृति ने उपरोक्त देशों में अधिकतर वर्गाकार हाथ बनाये हों)।

वर्गाकार हाथ के गुणों का वर्णन हम पुस्तक के आरम्भ में कर चुके हैं।

दार्शनिक हाथ (The Philosophic hand)

इस प्रकार के हाथ अधिकतर पूर्वी देशों में पाये जाते हैं। इस प्रकार के हाथ धार्मिक नेताओं और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों में पाये जाते हैं जिनका ध्यान ईश्वर के रहस्यों को जानने में लीन होता है। अपने धार्मिक सिद्धांतों की रक्षा के लिए और मान्यता दिलाने के लिए ये लोग अपना सर्वस्व समर्पण करने को उद्यत रहते हैं।

कुछ नोकीले या कोनिक हाथ (The Conic hand)

इस प्रकार के हाथ अधिकतर योरुप के दक्षिण भाग में पाये जाते हैं; परन्तु विवाह आदि से जातियों का मिश्रण हो जाने से, अब इस प्रकार के हाथ संसार के सब ही देशों में देखे जा सकते हैं। यूनान, इटली, स्पेन, फ्रांस और आयरलैण्ड के निवासियों मे इस प्रकार के हाथों की अधिकता होती है। इन लोगों में विशेष गुण यह होता है कि ये भावात्मक होते हैं। इनके विचार और कार्यशीलता में आवेश की मात्रा अधिक होती है। ये कलाप्रिय होते हैं। उत्तेजना, प्रभाव्यता और संवेदनशीलता का उनके स्वभाव मे विशेष स्थान होता है। वर्गाकार और चमसाकार हाथ वालों की अपेक्षा कोनिक हाथ वाले अधिक धन-अर्जन करने की क्षमता नहीं रखते। उनमें व्यवहारिक कुशलता की कमी होती है, इसी से उपर्युक्त श्रेणी के हाथ वालों से पीछे रह जाते हैं।

चमसाकार हाथ (The Spatulate hand)

अमरीका सभी देशों की जातियो और निवासियों का निवास स्थान बन गया है। जातियों (Races) का सम्मिश्रण इस देश में सबसे अधिक हुआ है। यहा चमसाकार हाथों ने अन्य श्रेणी के हाथों को दवा दिया है। हमारा विश्वास है कि चमसाकार हाथ के गुणों ने इस महान देश के इतिहास के निर्माण और प्रगति में अत्यन्त सक्रिय और महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जैसा हम पहले बता चुके हैं कि चमसाकार हाथ स्फूर्ति, मौलिकता और अधीरता का हाथ है। यह नवीन स्थानों की खोज करने वालों, नयी बातों को जन्म देन वालों, विज्ञान मे नये आविष्कार और खोजों के करने वालो और कला में नये आयाम दिखाने वालों का हाथ होता है। चमसाकार हाथ वाले कभी रूढ़िवादी नहीं होते। नियमों का पालन करना उनके स्वभाव के विरुद्ध होता है। वे वर्गाकार हाथों के समान परिश्रम करके नही, वरन अपने विचारों की शीघ्रगामिता के कारण सफल आविष्कारक बनते है। वे दूसरों के विचारों का इस्तेमाल तो करते हैं, परन्तु उनको नया रूप देकर सुधार देते है। उन्हें जोखिम उठाने में संकोच नही होता। वे सर्वतोमुखी होते हैं। उनमे सबसे बड़ा अवगुण उनकी परिवर्तनशीलता होता है। जब भी उनके मन में आता है वे एक काम को छोड़कर दूसरा काम हाथ मे ले लेते हैं। वे अपनी सनको में मतान्ध होते हैं और अपने उत्साह और सच्चाई के कारण प्रायः समस्यायें और उलझनें उत्पन्न करने वाले होते हैं। इस अवगुण के बावजूद ससार इसी प्रकार के सर्वतोमुखी गुणों वाले लोगो के नये विचारों, नये आविष्कारों और नयी खोजो पर निर्भर है।

बहुत नोकीला हाथ (Psychic hand)

इस प्रकार का हाथ किसी विशेष देश या जाति में सीमित नही है। लगभग सभी देशों में इस प्रकार के हाथ पाये जाते हैं।

इन हाथों के स्वामी, जैसा हम पहले वर्णन कर चुके हैं, अपने ही विशेष गुण रखते हैं। न वे पृथ्वी के होते हैं न आकाश के। परन्तु वे मनुष्य तो होते ही हैं। वे जब मनुष्य हैं तब उनमें कोई गुण भी होने चाहियें। न तो उनके सुन्दर हाथ संसार के विषम व्यवहार के लिए बने हैं, न ही उनके विचार सांसारिकता के लिए उपयुक्त हैं। वे मनुष्य जाति को मनुष्य जाति का प्रतिविम्ब ही दे सकते हैं।

को पढना प्रकृति की पुस्तक पढने के बराबर है। अध्ययन के लिए यह एक अत्यन्त जटिल, परन्तु मनोरंजक विषय है। कोई कारण नही कि पाठक यदि हमारे आदेशानुसार सपरिश्रम अध्ययन करें तो इस विषय में दक्षता प्राप्त करने में सफल न हो।

इस विषय को न्याय देने के लिए हम उन लेखकों का अनुसरण नही करेंगे जिन्होंने हाथ की परीक्षा में अनेकों पुस्तकें लिख डाली है, किन्तु विषय की गहराई को नहीं छुआ है। हम आपको दिखायेंगे कि प्रत्येक रेखा हर हाथ मे एक-सा फल नही देती। हाथों की बनावट तथा अन्य कारणों से चाहे उस रेखा का वही स्वरूप हो, उसका प्रभाव बदल जाता है। उदाहरण के लिए शीर्ष रेखा को लीजिये। यदि शीर्ष रेखा एक वर्गाकार हाथ मे नीचे (चन्द्र क्षेत्र की ओर) झुकी हुई हो तो उसके गुण में और उसी तरह की शीर्ष रेखा के, जो दार्शनिक या कोनिक हाथ में हो, गुण में बहुत अन्तर होगा। हमने यह पुस्तक इस प्रकार लिखी है कि यह पाठक के लिए मनोरजक हो और हस्त-विज्ञान के छात्र के लिए लाभदायक सिद्ध हो। इस जटिल विषय में हर प्रसग को समझा कर लिखना और बिल्कुल स्पष्ट करना बहुत कठिन है; तब भी हमने भरसक प्रयास किया है कि हमारे आदेश समझ में आ जायें।

एक और महत्व की बात का छात्रों को और पाठकों को ध्यान मे रखना अत्यन्त आवश्यक है। पाठको के सम्मुख भिन्न-भिन्न प्रकार के मत आयेंगे। उनको परखना होगा। जब हम विभिन्न मतो को परखते हैं और उनका व्यवहारिक रूप से परीक्षण करते है तभी हमे सच्चाई और यथार्थता का ज्ञान प्राप्त होता है। आप डाक्टरों को ही ले लीजिये। प्रायः देखा जाता है कि रोग विज्ञान और रोग के इलाज का तरीका एक दूसरे से अलग होता है। यदि दो डाक्टरों ने एक ही रोग निर्णीत किया तो वे जो दवाइयां देंगे वे एक-सी नही होंगी। हमारा मत तो यह है कि किसी विषय के पठन-मनन में हमे उन नियमों को स्वीकार करना चाहिए जो हमारे विश्वास के अनुसार ठीक हों। हस्त-विज्ञान पर भी यही नियम लागू होता है। यदि आप इस विद्या को सीखना चाहते हैं तो उसी पुस्तक को पढ़िये जिसको आप विश्वसनीय समझते हैं और फिर अपने पठन-मनन, बुद्धि और तर्क शक्ति से उनके नियमों को समझिये और व्यावहारिक रूप से उन्हे परखिये, तभी आपको सफलता प्राप्त होगी।

हमारा हस्त-विज्ञान पर अन्य लेखकों से मतान्तर इस बात में है कि हम रेखाओं को विभिन्न शीर्षकों के अन्दर रखते हैं और प्रत्येक शीर्षक की रेखा की पृथक् रूप से परीक्षा करते हैं। उदाहरण के लिए हमारी मान्यता है कि जीवन रेखा या आयु रेखा उन बातों से सम्बन्धित है जिनका हमारे जीवन पर प्रभाव पड़ता है। हम शीर्ष रेखा को उन सब बातों से संबंधित करते हैं जिनका प्रभाव हमारी बौद्धिक और मानसिक क्षमता पर पड़ता है। हमने इस प्रणाली को सदा यथार्थ पाया है और उन विद्वानो के मतानुकूल भी, जिन पर हमको विश्वास है।

नाई है वह मनोरंजक भी है और युक्तिसंगत भी। प्रकृति के नियमों के अनुसार हम जीवन को सात भागों में विभाजित करते हैं। यही नियम हमने रेखाओं पर काल-निर्णय के लिए नियत किया है। पुस्तक में उपयुक्त स्थान पर हम इस विषय पर समुचित प्रकाश डालेंगे।

(2)

हाथ में रेखायें

हाथ में सात प्रधान रेखायें होती है और सात अन्य रेखायें होती है (चित्र संख्या 13)। निम्नलिखित रेखायें प्रधान रेखायें मानी जाती हैं—

(1) जीवन रेखा (Line of Life) जो शुक्र क्षेत्र को घेरे हुए होती है।

(2) शीर्ष रेखा (Line of Head) जो करतल के मध्य में एक सिरे से दूसरे सिरे की ओर जाती है।

(3) हृदय रेखा (Line of Heart) जो अंगुलियों के मूल स्थान के नीचे शीर्ष रेखा के समानान्तर चलती है।

(4) शुक्र मुद्रिका (Girdle of Venus) जो हृदय रेखा से ऊपर होती है और अधिकतर सूर्य और शनि क्षेत्रों को घेरे हुए होती है।

(5) स्वास्थ्य रेखा (Line of Health) जो बुध क्षेत्र से आरंभ होकर हाथ में नीचे की ओर जाती है।

(6) सूर्य रेखा (Line of Sun) जो प्राय: करतल के मध्य (जिसे मंगल स्थल—Plain of Mars कहते हैं) से ऊपर चढ़ती हुई सूर्य क्षेत्र को जाती है।

(7) भाग्य रेखा (Line of Fate) जो हाथ के मध्य में होती है और मणिबन्ध से आरंभ होकर शनि क्षेत्र को जाती है।

अन्य सात रेखायें हैं—

(1) मंगल रेखा (Line of Mars) जो प्रथम मंगल-क्षेत्र से आरंभ होकर जीवन रेखा के भीतरी भाग में जाती है।

(2) वासना रेखा (Via Lasciva) जो स्वास्थ्य रेखा के समानान्तर होती है।

(3) अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा (Line of Intuition) जो एक अर्द्धवृत्त के रूप में बुध क्षेत्र से चन्द्र क्षेत्र को जाती है।

(4) विवाह रेखा (Line of Marriage) जो बुध क्षेत्र पर एक आड़ी रेखा रूप में होती है।
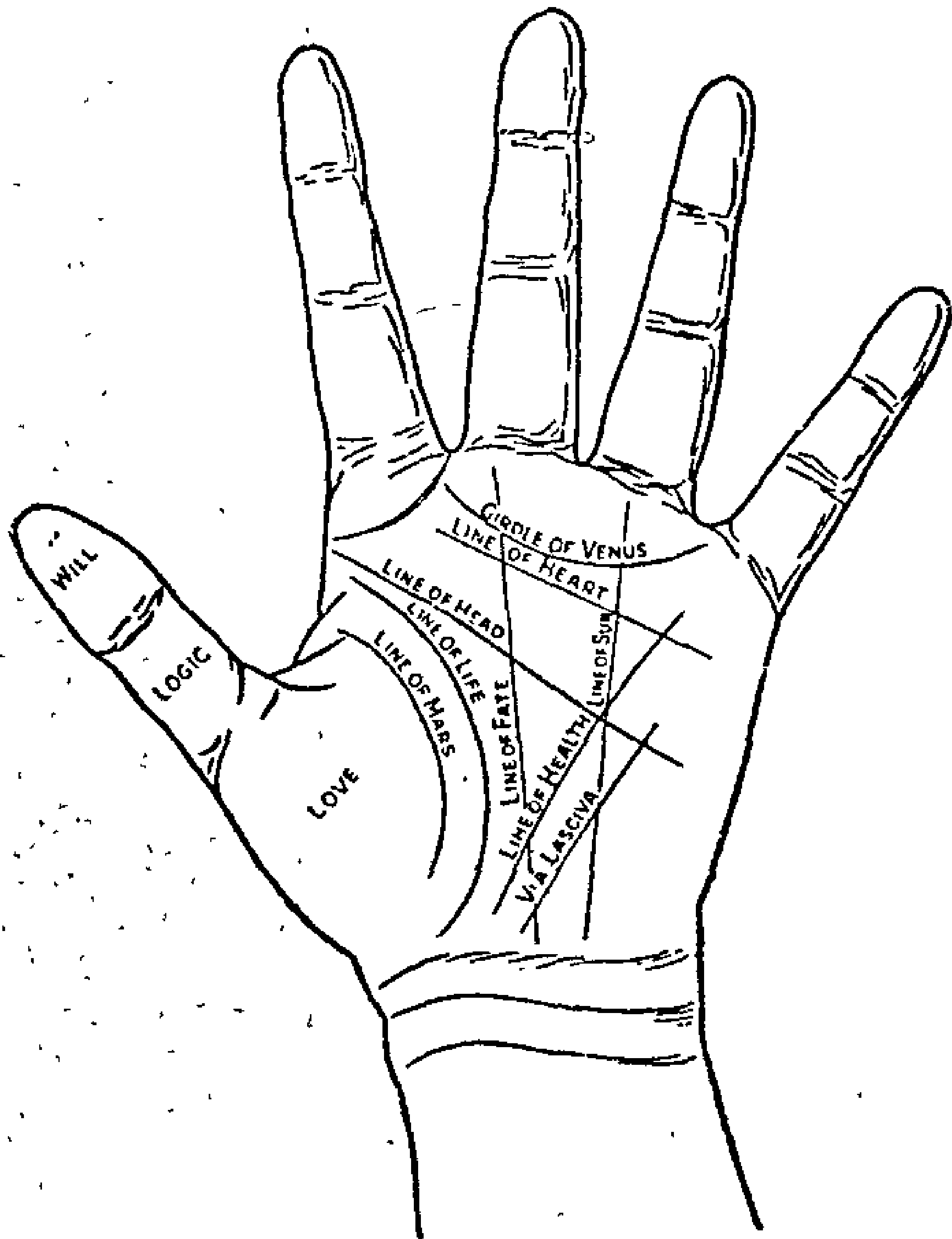
चित्र-13 —हाथ का नक्शा

(5) तीन मणिबन्ध रेखायें (The three bracelets) जो मणिबन्ध पर होती हैं।

जीवन रेखा को आयु या जीवनी शक्ति रेखा भी कहते हैं। शीर्ष रेखा को मस्तक रेखा भी कहते हैं। भाग्य रेखा को शनि रेखा भी कहते हैं। सूर्य रेखा को प्रतिभा रेखा का नाम दिया गया है।

हिन्दू हस्त-शास्त्र के अनुसार जो इन रेखाओं के नाम हैं उन्हें हम उचित स्थान पर देंगे।

शीर्ष रेखा द्वारा हाथ दो भागों में या अर्द्ध गोलों (hemispheres) में विभाजित हो जाता है। ऊपरी भाग (upper hemisphere) में अंगुलियां, बृहस्पति, शनि, सूर्य, बुध और मंगल क्षेत्र होते हैं। यह भाग बौद्धिक और मानसिक क्षमता का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा भाग (Lower hemisphere) जो शीर्ष रेखा से नीचे हाथ के मूल स्थान तक होता है, सांसारिक रुचियों और भावनाओं का प्रतीक होता है। इन दो भागों को अपना मार्ग-दर्शक बनाकर हस्तविज्ञान के छात्र को जातक के स्वभाव की जानकारी तुरन्त प्राप्त हो सकती है। इस विभाजन की ओर बहुत कम ध्यान दिया गया है, परन्तु यह अत्यन्त महत्त्व का है और इस पर विचार न करना बहुत बड़ी गलती होगी।

(3)

हाथ की रेखाओं की विशेषतायें

रेखाओं के सम्बन्ध में नियम यह है कि वे स्पष्ट सुअंकित होनी चाहिए। उनको न तो चौड़ी होना चाहिए न रंग की पीली। उनमें टूट-फूट, द्वीप-चिन्ह और अन्य किसी प्रकार की अनियमिततायें होना अशुभ होता है।

यदि रेखायें बहुत निस्तेज होती हैं तो सबल स्वास्थ्य की कमी होती है और न तो स्फूर्ति होती है न निर्णय लेने की क्षमता।

यदि रेखायें लाल वर्ण की होती हैं तो जातक उत्साही, आशावादी, स्थिर स्वभाव का और सक्रिय होता है।

यदि रेखायें पीले रंग की हों तो जातक में पित्त-प्रकृति प्रधान होती है और उसको जिगर-विकार की सम्भावना होती है। वह अपने आप में रमा हुआ, कम बोलने वाला और कम मिलने-जुलने वाला तथा घमण्डी होता है।

यदि रेखायें गहरे रंग की हों (बिल्कुल काली-सी) तो जातक गम्भीर और उदासीन होता है। वह हठधर्मी भी होता है और बदले की भावना उसके मन से कभी नहीं हटती। वह सरलता से किसी को क्षमा नहीं करता।

रेखायें बनती रहती, धुंधली पड़ती रहती हैं और प्रायः मिट भी जाती हैं। हाथ की परीक्षा में इस तथ्य को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। हस्त-शास्त्री का ... है कि जातक के हाथ के अशुभ लक्षणों को देखकर उसे उसकी अनिष्टकर प्रवृ... के कारण आने वाले संकटों के सम्बन्ध से सावधान कर दे। यह जातक की

इच्छा शक्ति पर निर्भर है कि वह उन प्रवृत्तियों को सुधार सकता है या नहीं। यदि अपने गत जीवन में वह ऐसा नहीं कर सका है तो हस्त-शास्त्री उसको बता सकता है कि भविष्य में भी वह ऐसा करने में समर्थ होगा या नहीं। हाथ की परीक्षा में केवल एक ही अशुभ लक्षण देखकर निर्णय नहीं लेना चाहिये। यदि अशुभ लक्षण महत्त्वपूर्ण है तो लगभग प्रत्येक प्रधान रेखा में उसका प्रभाव प्रदर्शित होगा और यह भी आवश्यक है कि अन्तिम निर्णय लेने से पहले दोनों हाथों की परीक्षा की जाये। केवल एक लक्षण प्रवृत्ति का संकेत देता है। यदि उसकी पुष्टि अन्य रेखाओं से हो जाये, तो यह समझना चाहिये कि उस लक्षण से प्रदर्शित संकट निश्चित रूप से आयेगा। क्या लोग हाथ से प्रदर्शित संकटों या मुसीबत से बच सकते हैं? हमारा उत्तर है कि यदि वे प्रयत्न करें तो निश्चित रूप से अपनी रक्षा कर सकते हैं; परन्तु हम पूरे विश्वास से कह सकते हैं कि वह बचने के उपाय नहीं करेंगे और आने वाले संकट का शिकार बनकर रहेंगे। हमने अपने अनुभव में ऐसे सैकड़ों लोगों को देखा है जिन्हें हमने आने वाले संकटों की चेतावनी दी; परन्तु उन्होंने उसकी परवाह नहीं की और अन्त में संकटों को झेलने को विवश हुए। जब हमने हस्त परीक्षा का काम आरम्भ ही किया था तभी एक ऐसी घटना हुई थी जो हमें अभी तक याद है। उस समय घोड़ा-गाड़ियों का ही चलन था। एक समाज की प्रतिष्ठित महिला हमारे पास आई। हमने उसके हाथों की परीक्षा करके उसे चेतावनी दी कि पशुओं द्वारा वह एक दुर्घटना का शिकार बनेंगी जिसके फलस्वरूप वह जीवन भर के लिए चलने फिरने को मोहताज हो जायेंगी और यह दुर्घटना उसी अवस्था में घटित होगी जो उनकी उस समय थी। वह यह कहकर चली गयी कि वह सावधान रहेगी। एक सप्ताह बाद रात को जब सघन कोहरे के कारण प्रकाश धूमिल हो रहा था तभी उन्होंने कहीं जाने के लिए घोड़ा-गाड़ी तैयार करने का आदेश दिया। उनके पति ने उन्हें बहुत समझाया कि ऐसे वातावरण में घोड़ा-गाड़ी पर जाना संकटपूर्ण होगा। परन्तु उनके सिर पर तो होनी सवार थी, वह न मानी। वह तब भी न रुकी जब उनको बताया गया कि गाड़ी चलाने वाला गम्भीर रूप से बीमार था। उन्होंने दूसरी गाड़ी चलाने वाले को चलने का आदेश दिया। हुआ वही जो होना था। अंधकार के कारण भीषण दुर्घटना हुई और उन महिला को इतनी अधिक चोट लगी कि वह सदा के लिए अपंग हो गयीं। इसीलिए हम भवितव्यता पर कुछ अधिक विश्वास करते हैं। चेतावनी पाकर लोग चाहें तो सावधानी से काम लेकर या अपनी मनोवृत्ति को सुधारकर अशुभ प्रभावों से अपनी रक्षा कर सकते हैं, परन्तु भवितव्यता उनको ऐसा नहीं करने देती।

जब किसी प्रधान रेखा के साथ कोई सहायक रेखा (चित्र संख्या 16 a-a) हो; अर्थात् ऐसी रेखा हो जो उसके साथ चल रही हो; तो उससे प्रधान रेखा को अतिरिक्त बल मिलता है। ऐसी परिस्थिति में यदि प्रधान रेखा कहीं पर टूटी हुई हो तो

मिलता है वह मिट जाता है। ऐसी सहायक रेखा या रेखायें प्रायः जीवन अतिरिक्त यदि किसी रेखा के अन्त में दो शाखायें (fork) बन जाते हैं तो वह अधिक बलयुक्त हो जाती है। जैसे यदि शीर्ष रेखा के अन्त में दो शाखायें बन तो मानसिक शक्ति में वृद्धि होती है, परन्तु जातक दो स्वभाव वाला भी हो है (चित्र संख्या 16)।

जब रेखा गोपुच्छ रूप (चित्र संख्या 16 b-b) में अन्त होती है तो यह कमजोरी का द्योतक है, और इसके कारण उस रेखा का सद्गुण नष्ट हो जाता यदि ऐसा प्रारूप जीवन के अन्त में हो तो जातक के स्नायुतंत्र-कमजोर और हो जाते हैं।

यदि किसी रेखा से शाखायें ऊपर की ओर उठती हों (चित्र संख्या 14 a तो इससे उस रेखा को बल प्राप्त होता है। नीचे जाने वाली शाखायें विपरीत देती हैं।

जब यह विचार करना हो कि जातक का विवाह सफल होगा या नहीं, हृदय रेखा के आरम्भ में ये शाखायें अत्यन्त महत्त्व की होती हैं। ऊपर उठती शाखायें प्रेम की गरिमा की द्योतक होती हैं (चित्र संख्या 17 a-a)। नीचे जाने वाली शाखायें विपरीत फल देती हैं।

शीर्ष रेखा पर ऊपर उठती हुई शाखायें (चित्र संख्या 17 c-c) चतुरता, प्रवीणता और महत्त्वाकांक्षा का संकेत देती हैं। भाग्य रेखा पर उठती शाखायें व्यवसाय में सफलता की प्रतीक होती हैं। जब कोई शाखा ऊपर उठती हो तो जीवन की उस अवस्था में जातक को अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होती है।

किसी रेखा का शृंखलाकार होना (चित्र संख्या 14) उसे निर्बल बनाता है। रेखा का किसी स्थान पर टूटना असफलता का द्योतक होता है। (चित्र संख्या 17 c-c)

यदि रेखा लहरदार हो तो वह निर्बल होती है (चित्र संख्या 17 b-b)।

केशकीय रेखायें (Capillary lines) वे सूक्ष्म रेखायें होती हैं जो प्रधान रेखा के साथ-साथ चलती हैं। कभी-कभी वे उससे जुड़ भी जाती हैं, कभी-कभी प्रधान रेखा से जुड़कर नीचे की ओर चली जाती हैं। (चित्र संख्या 14)। इस प्रकार की रेखायें प्रधान रेखा को बलहीन कर देती हैं।

यदि सारा करतल लगभग सब दिशाओं की ओर जाने वाली अनेकों रेखाओं से भरा हो तो यह समझना चाहिए कि जातक चिंतापूर्ण स्वभाव का है, जल्दी ही घबरा जाता है और साधारण-सी बातों से उसकी भावनाओं पर आघात लगता है।

कण-कण एकत्रित होकर पर्वत का रूप धारण करते हैं। उसी प्रकार छोटी-- बातों का ध्यानपूर्वक ग्रहण करने से हस्त विज्ञान मे दक्षता प्राप्त होती है।

प्लेट—6 जोसेफ़ चैम्बर लेन, एम. पी.
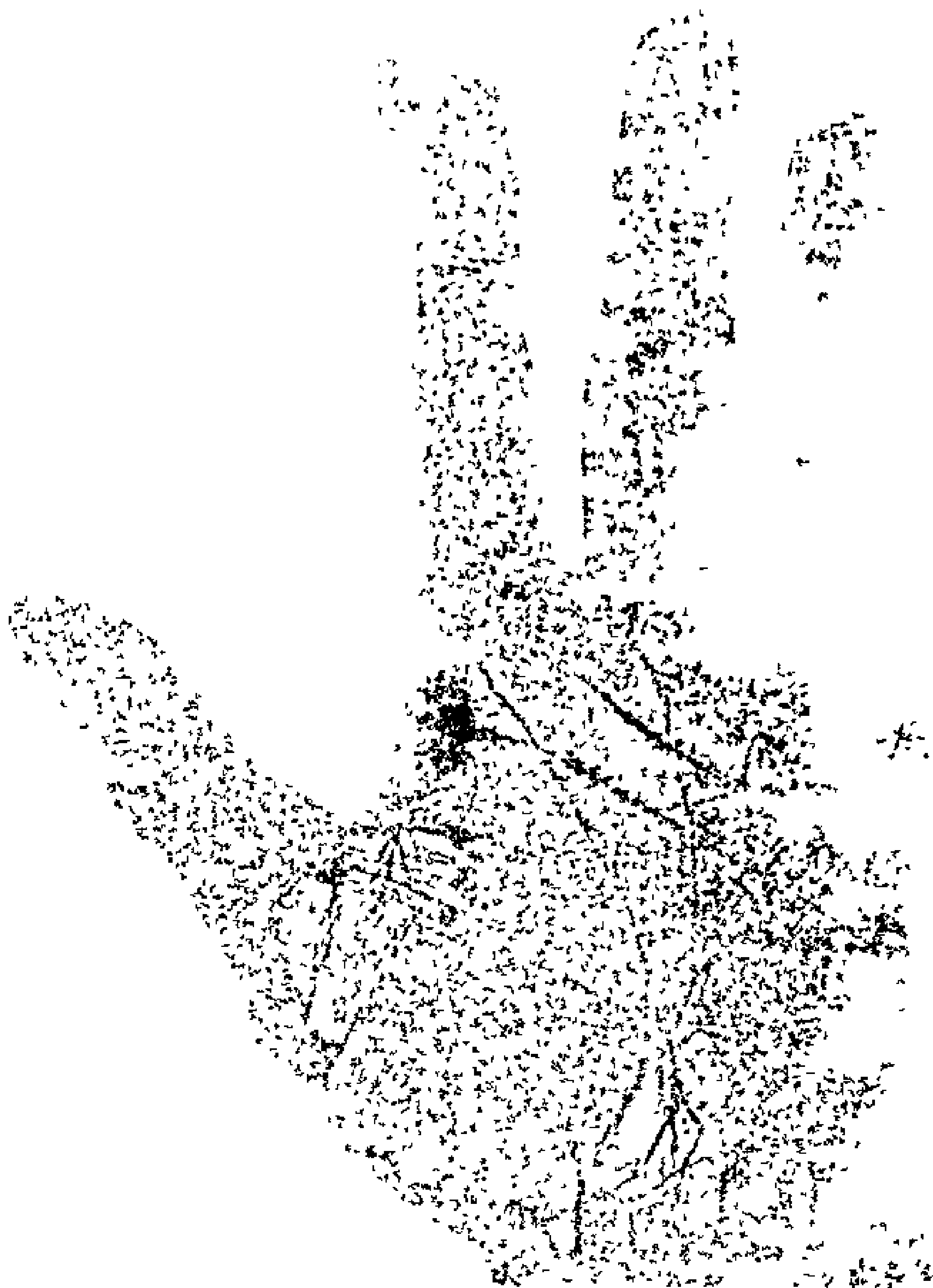
रेखाओं के प्रारूपों और करतल में पाये जाने वाले चिन्हों का परिचय
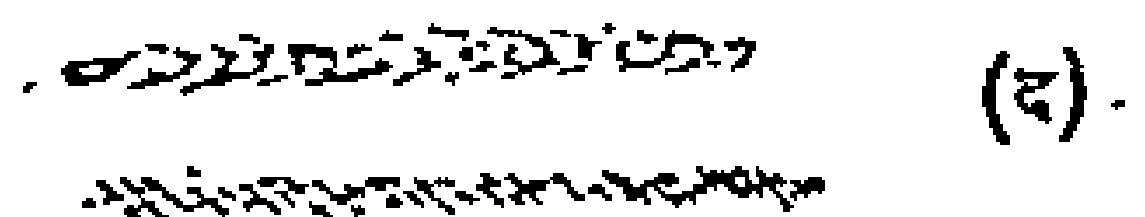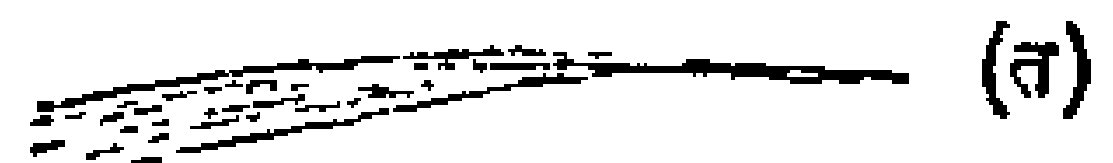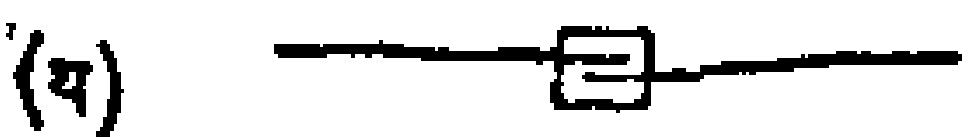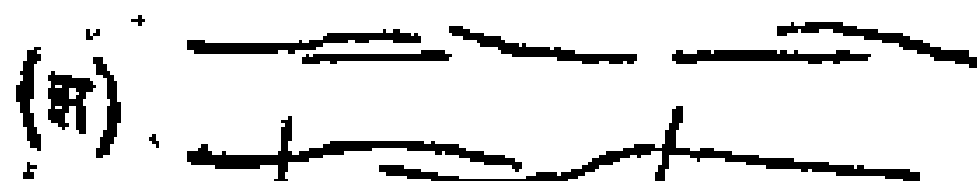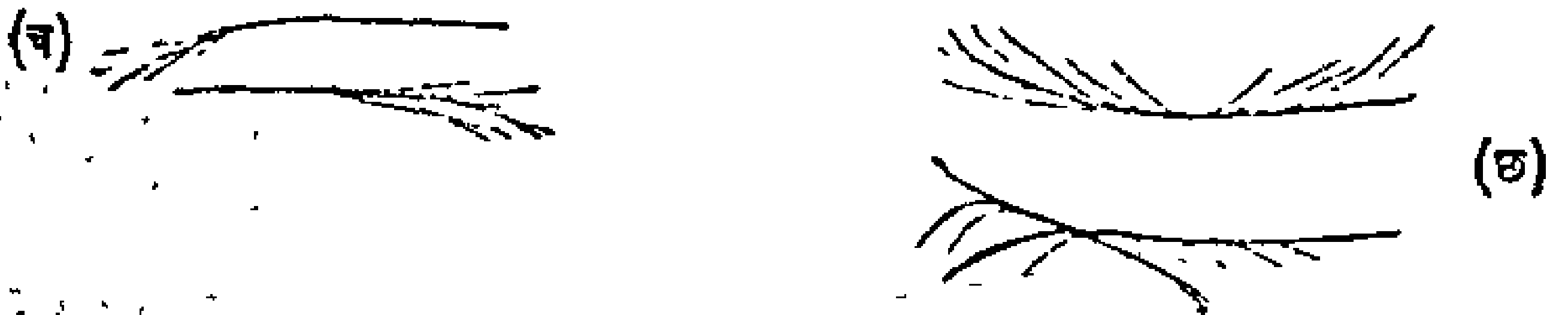
चित्र संख्या—14. रेखाओं के विभिन्न रूप

(क) द्विशाखा वाली रेखा
(ख) सहायक रेखायें
(ग) रेखा पर बिन्दु
(घ) रेखा में द्वीप
(च) गोपुच्छ रेखा
(छ) रेखा पर ऊपर और नीचे जाने वाली शाखायें।
(ज) लहरदार
(झ) टूटी-फूटी रेखा
(त) केशकीय रेखायें
(थ) रेखा पर वर्ग
(द) शृंखलाकार रेखा।
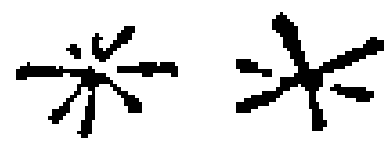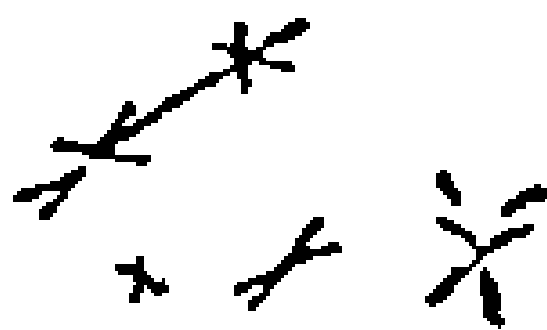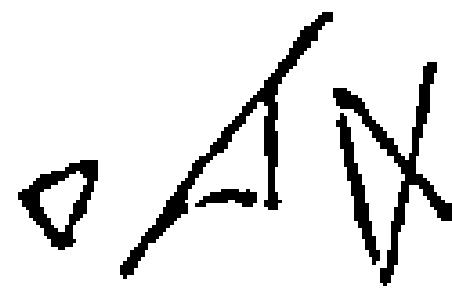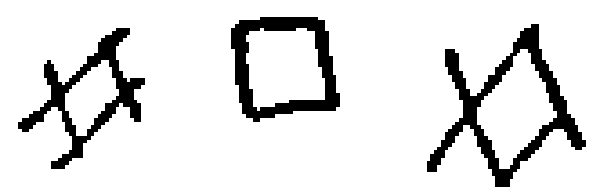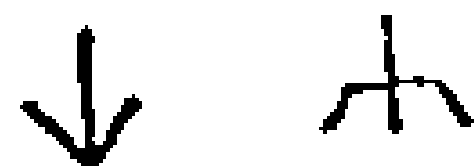
चित्र संख्या 15—करतल में चिन्ह

(4)

दाहिना और बायां हाथ

दाहिने और बायें हाथ के अन्तर को समझना भी हस्त परीक्षा में बहुत महत्त्वपूर्ण है। जो भी देखेगा वह विस्मय करेगा कि एक ही व्यक्ति के दोनों हाथ एक-दूसरे से बिल्कुल विभिन्न होते हैं। यह भिन्नता अधिकतर रेखाओं के रूपों, उनकी स्थितियों चिन्हों में होती है।

हमने जो नियम अपनाया है उसके अनुसार दोनों हाथों की परीक्षा करनी चाहिये, परन्तु दाहिने हाथ से मिली सूचना को अधिक विश्वसनीय मानना चाहिए। ऐसा कहा जाता है—"The left is the hand we are born with, the right is the hand we make." (अर्थात् बायां वह हाथ है जो हमें जन्म से मिला है, दाहिना वह हाथ है जो हम स्वयं बनाते हैं)। सिद्धान्त भी यह सही है और इसी का अनुपालन करना चाहिए। बायां हाथ जातक के प्राकृतिक स्वभाव को प्रदर्शित करता है और दाहिने हाथ में जन्म होने के बाद पाये हुए प्रशिक्षण, अनुभव और जीवन में जिस वातावरण का सामना किया हो उसके अनुसार रेखायें और चिन्ह होते हैं। मध्य-कालीन युग में बायें हाथ को देखने की प्रथा थी, क्योंकि ऐसा विश्वास किया जाता था कि हृदय से निकट स्थित होने के कारण वह जातक के जीवन का प्रतिबिम्ब दिखाने का सच्चा दर्पण है। हम इसे अन्धविश्वास मानते हैं और इसके कारण हस्तविज्ञान की अवनति प्राप्त हुई थी। यदि हम युक्ति-संगत और वैज्ञानिक रूप से विवेचन करें तो पायेंगे कि मनुष्य अपने दाहिने हाथ ही को अधिक प्रयोग में लाता है, इस कारण बायें हाथ की अपेक्षा मांसपेशियों में तथा स्नायुओं में उसका अधिक विकास होता है। मस्तिष्क के विचारों और आदेशों का पालन जितना अधिक दाहिना हाथ करता है उतना बायां नहीं करता। जैसा कि प्रदर्शित हो चुका है, मनुष्य शरीर एक धीमे परन्तु नियमित विकास (Development) के दौर से गुजरता है, और जो भी परिवर्तन उसमें होता है उसके प्रभाव की छाप शरीर की सारी व्यवस्था पर पड़ती है। इसलिए यही युक्तिसंगत होगा कि उन परिवर्तनों को देखने के लिये दाहिने हाथ की परीक्षा करनी चाहिए—क्योंकि भविष्य मे जब भी विकास से या अविकास से परिवर्तन होंगे वे उसी हाथ द्वारा प्रदर्शित होंगे।

अतः हमारा मत यह है कि 'साथ-साथ' दोनो हाथो की परीक्षा करना उचित होगा। इस प्रकार हम जान सकेंगे कि जातक के जन्म-जात गुण क्या थे और अब क्या हैं। परीक्षा से यह मालूम करने का प्रयत्न करना चाहिए कि जो परिवर्तन हुए हैं उनके क्या कारण हैं। भविष्य में क्या होगा, यह दाहिने हाथ की रेखाओं के विकास के द्वारा बताना सम्भव होगा।

जिन लोगों का बायां हाथ सक्रिय होता है (जो बायें हाथ से काम करने वाले होते हैं) उनका बायां हाथ ही रेखाओं आदि का विकास प्रदर्शित करेगा। उनके लिए दाहिने हाथ को जन्म-जात गुणों का हाथ समझना होगा। यह देखा गया है कि कुछ लोगो में परिवर्तन इतना अधिक होता है कि बायें हाथ की कोई भी रेखा दाहिने हाथ की रेखाओं से नहीं मिलती। कुछ लोगों मे परिवर्तन इतना धीमा होता है कि रेखाओं मे अन्तर बहुत कम दिखाई देता है। जिसके हाथों में परिवर्तन अधिक हो तो यह समझना चाहिए कि उस जातक का जीवन उस व्यक्ति से अधिक घटनापूर्ण रहा है जिसके हाथ में परिवर्तन कम हो। इस प्रकार से ध्यानपूर्वक हस्त-परीक्षा करने से,

जीवन-रेखा लम्बी, संकीर्ण, गहरी अनियमितताओं से रहित, बिना टूट-फूट और ह्रास चिन्हों से रहित होनी चाहिए। इस प्रकार की दोषहीन रेखा दीर्घायु, उत्तम स्वास्थ्य, जीवन शक्ति और सप्राणता (Vitality) की सूचक होती है।

संख्या 16—प्रधान रेखाओं में परिवर्तन
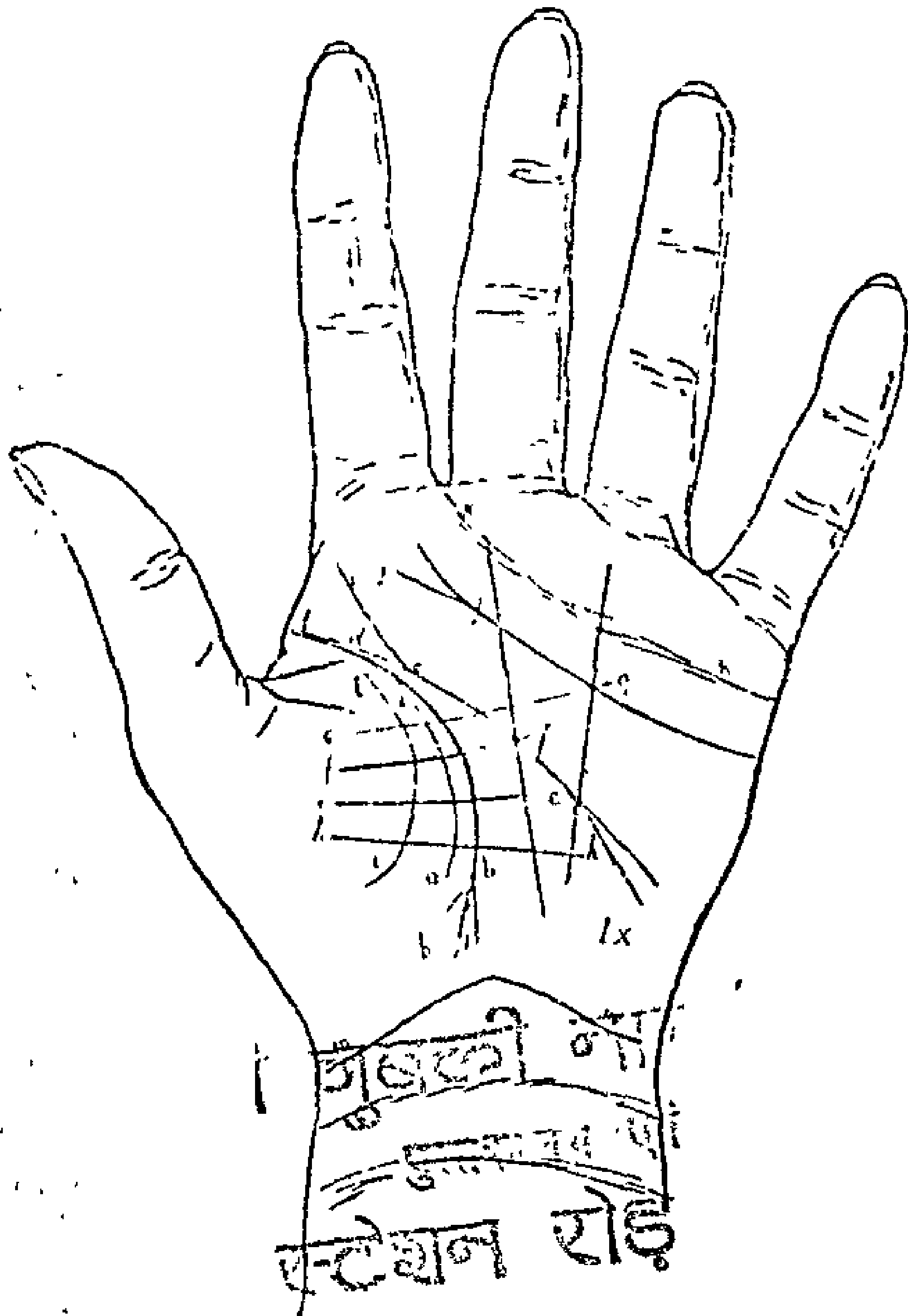
जातक के जीवन की घटनाओं के बारे में और उसके विचारों में तथा मानसिक
जो परिवर्तन आये हैं, उनके सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

(5)

जीवन रेखा (The Line of Life)

जैसा हम पहले कह चुके हैं कि प्रकृति ने जैसे हमारे मुख पर नाक-कान
स्थितियां निर्दिष्ट की हैं, उसी प्रकार हाथ मे जीवन रेखा, शीर्ष रेखा आदि तथा
चिन्हो के स्थान भी निश्चित किये हैं। इसीलिए यदि रेखायें अपने प्राकृतिक स्थानों
हटकर असाधारण स्थितिया ग्रहण करें तो असाधारण फलों की आशा करना युक्ति
संगत होगा। यदि मनुष्य के स्वाभाविक गुणों में इस प्रकार के परिवर्तन का प्रभा
पड़ सकता है, तो उसके स्वास्थ्य पर क्यों नहीं पड़ेगा। कुछ लोग हस्त-विज्ञान
कोई महत्त्व नही देते, इस बात पर विश्वास करने को तैयार नहीं होते कि हस्त-शा
रोग या मृत्यु के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर सकता है। परन्तु वास्तविक बात यह
कि हाथ की ध्यानपूर्वक परीक्षा से ऐसा फलादेश करना बिलकुल संभव है। यह स्
कार किया जाता है कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर में ऐसे कीटाणु या प्रवृत्तियां होती
जो किसी समय उसकी मृत्यु का कारण बन सकती हैं। फिर कौन इस बात
अस्वीकार कर सकता है कि ये कीटाणु अपनी उपस्थिति से स्नायुओं के तरल सो
को दूषित करते हैं और उनका प्रभाव स्नायुओं के माध्यम से हाथ पर पड़ता है
बिना इस बात पर जोर दिये कि शरीर मे सर्व शक्तिमान आत्मा या जीवनी शक्ति
होती है, यदि हम अज्ञात, निश्चेष्ट और सक्रिय मस्तिष्क के रहस्यों को स्वीकार
तो हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि रोग का छोटे से छोटा कीटाणु या शरी
की व्यवस्था की किसी कमजोरी की स्थिति और अवस्था से मस्तिष्क अवगत हो
और वह स्नायु सम्बन्ध द्वारा उसकी सूचना हाथ तक पहुंचा देगा। इस प्रका
सम्बन्धित रेखा या चिन्ह के विकास या अविकास से हस्त-शास्त्री यह बताने में सम
होगा कि कौन-सा रोग किस समय उग्र रूप धारण करेगा और उसका क्या परिणा
होगा। इन बातों को ध्यान में रखकर हम जीवन-रेखा की परीक्षा की ओर अग्रस
होते हैं।

जीवन-रेखा (चित्र सख्या 13) बृहस्पति क्षेत्र के नीचे से प्रारम्भ होकर बी
की ओर जाती है और शुक्र क्षेत्र को घेर लेती है। इस रेखा पर समय (काल,
बीमारी और मृत्यु अंकित होती है और अन्य रेखाओं से जो घटनाओ का पूर्वाभा
प्राप्त होता है, जीवन-रेखा उसकी पुष्टि करती है।

जीवन-रेखा लम्बी, संकीर्ण, गहरी अनियमितताओं से रहित, बिना टूट-फूट और खास चिन्हों से रहित होनी चाहिए। इस प्रकार की दोषहीन रेखा दीर्घायु उत्तम स्वास्थ्य, जीवन शक्ति और सप्राणता (Vitality) की सूचक होती है।
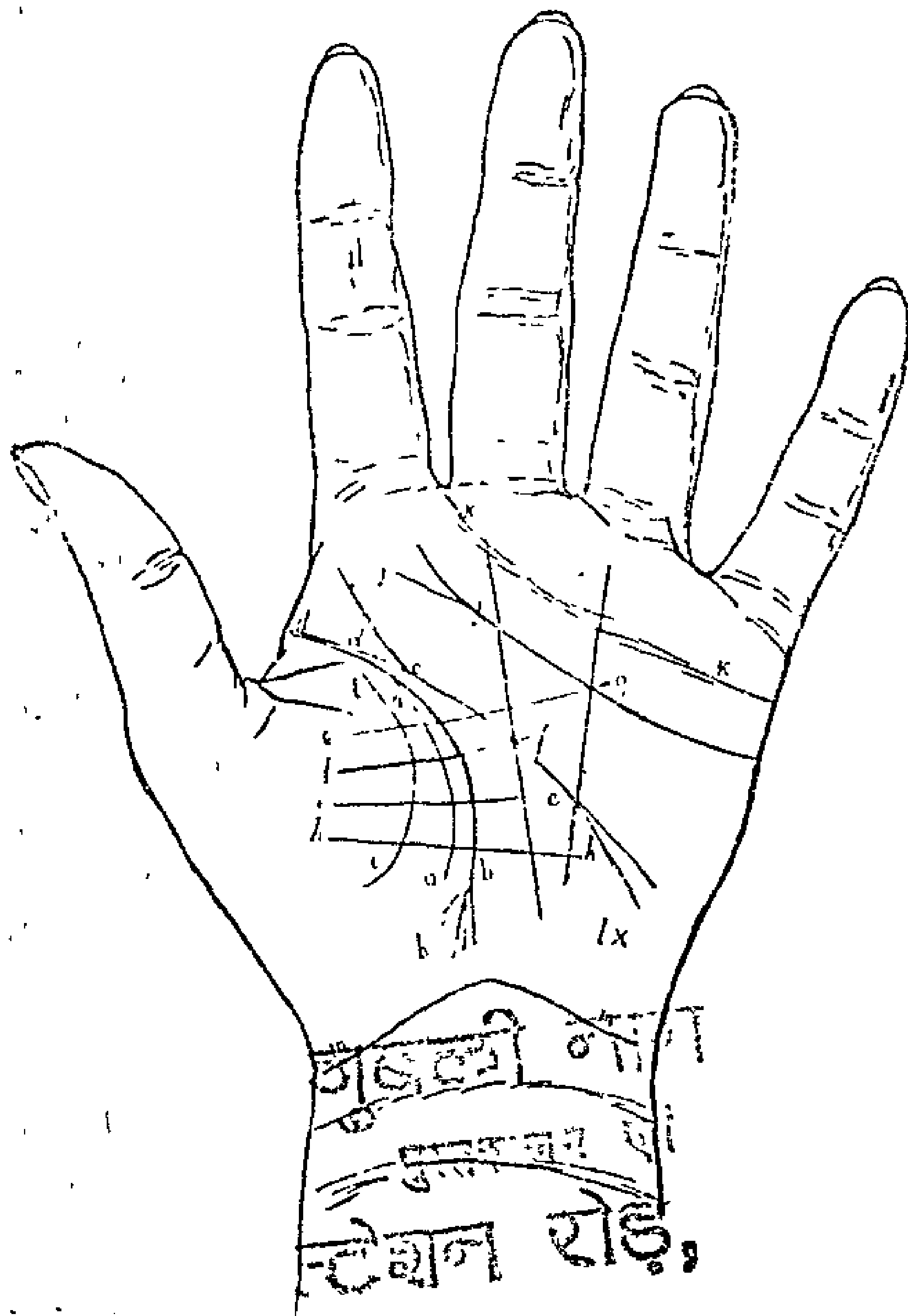
चित्र संख्या 16—प्रधान रेखाओं में परिवर्त

जब जीवन-रेखा शृंखलाकार या जंजीराकार [चित्र संख्या 14 (द)] होती तो वह निर्बल स्वास्थ्य की द्योतक होती है, विशेषकर जब हाथ मुलायम हो। फिर नियमित या सम हो जाती है तो स्वास्थ्य ठीक हो जाता है।
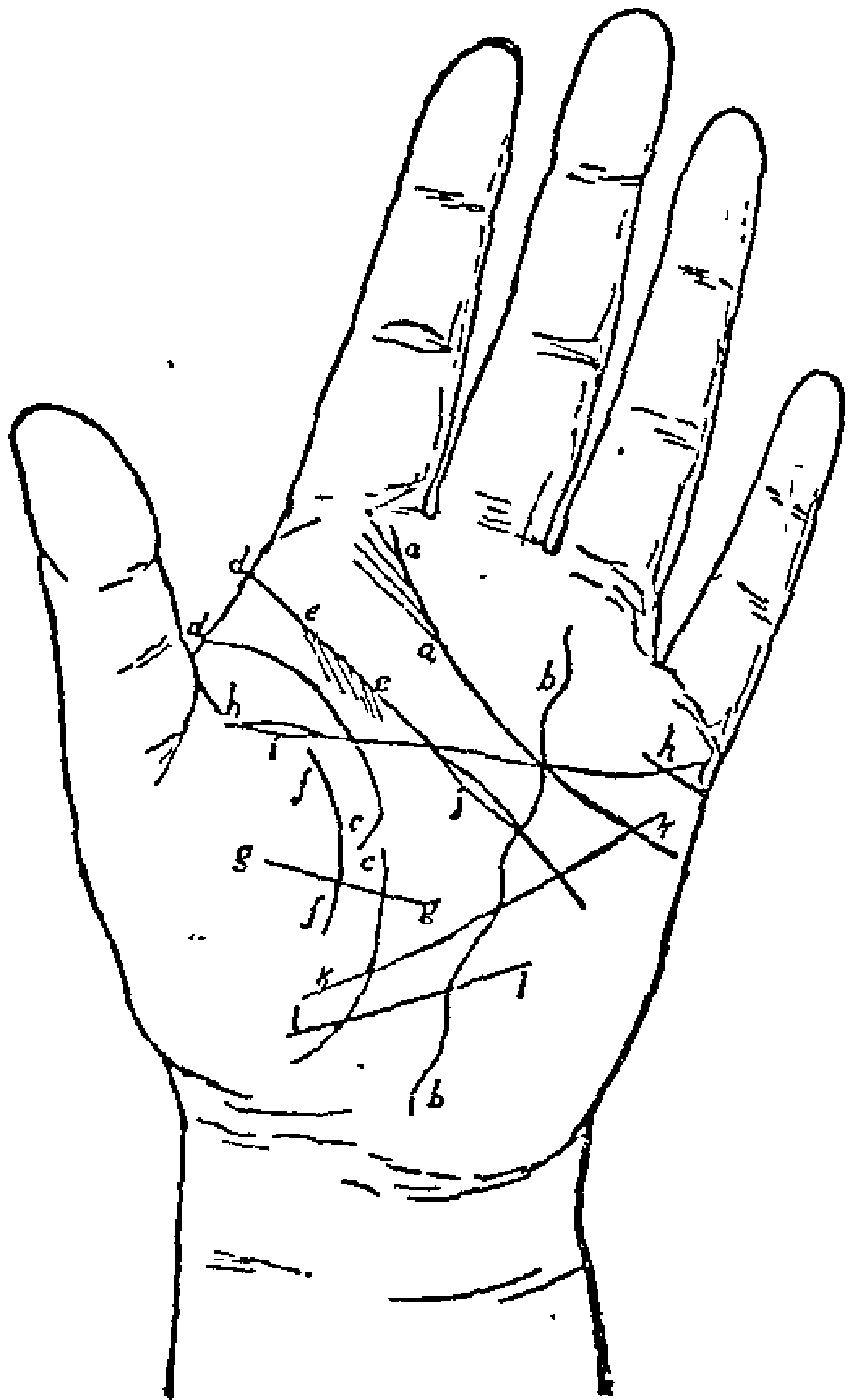
चित्र संख्या 17—प्रधान रेखाओं में परिवर्तन

यदि जीवन-रेखा बायें हाथ में टूटी हो और दाहिने हाथ में सम्पूर्ण हो (अर्थात् बिना इस दोष के हो), तो यह किसी गम्भीर बीमारी की सूचक होती है। यदि दोनों हाथों में टूटी हुई हो तो प्रायः मृत्यु की सूचक होती है। यदि एक टूटा

हुआ भाग शुक्र क्षेत्र के अन्दर की ओर मुड़ जाये तो मृत्यु होना निश्चित है (चित्र-संख्या 17 c-c)।

यदि जीवन रेखा हाथ के अन्दर की ओर के बजाय बृहस्पति क्षेत्र के मूल स्थान से प्रारम्भ हो तो यह समझना चाहिए कि जातक आरम्भ से महत्वाकांक्षी है।

यदि जीवन रेखा अपनी प्रारम्भिक अवस्था में शृंखलाकार हो तो वह जीवन के प्रारम्भिक भाग में अस्वस्थता की सूचक होती है।

जब जीवन रेखा घनिष्ठता से शीर्ष रेखा से जुड़ी हो तो जीवन का मार्गदर्शन युक्ति-संगतता और बुद्धिमानी से होता है; परन्तु जातक उन सब बातों मे और कामों मे सतर्कता बरतता है जिनका सम्बन्ध उसके अपने आप से होता है। (चित्र संख्या 16 d-d)

जब जीवन रेखा और शीर्ष रेखा के बीच मे फासला मध्यम हो तो जातक अपनी योजनाओं और विचारों को कार्यान्वित करने में अधिक स्वतंत्र होता है। ऐसी स्थिति जातक को स्फूर्तिवान और जीवट वाला बनाती है। (चित्र संख्या 17 d-d)।

परन्तु यदि यह फासला बहुत चौड़ा हो तो जातक को बहुत अधिक आत्म-विश्वास होता है और वह दु:साहसी, आवेशात्मक, जल्दबाज बन जाता है और युक्ति सगतता उसके लिए कोई अर्थ नहीं रखती।

जीवन रेखा, शीर्ष रेखा और हृदय रेखा का एक साथ जुड़ा होना (चित्र-संख्या 18 a-a) हाथ मे अत्यन्त दुर्भाग्यसूचक चिन्ह है। वह इस बात की सूचना देता है कि अपनी बुद्धिहीनता से या आवेश में आकर जातक अपने आपको संकट और महा विपत्ति में डाल लेगा। यह चिन्ह इस बात का भी द्योतक है कि जातक को अपने ऊपर आने वाले संकटों की या उन संकटों की जो दूसरों के साथ व्यवहार करने से आ सकते हैं, बिल्कुल अनुभूति नहीं है।

जब जीवन रेखा अपने मध्य में विभाजित हो जाती है और शाखा चन्द्र-क्षेत्र के मूल स्थान को जाती है (18 e-e) तो एक अच्छी बनावट के दृढ़ हाथ का जातक अस्थिर और अधीर होता है। वह एक स्थान में टिककर नहीं बैठ सकता। यात्रायें करके ही उसे चैन मिलता है। यदि इस प्रकार का योग पिलपिले मुलायम हाथ मे हो जिसमे झुकी हुई शीर्ष रेखा हो, तो भी जातक अस्थिर और अधीर होता है और वह उत्तेजनापूर्ण अवसरों के लियें लालायित रहता है; परन्तु इस प्रकार की उत्तेजना किसी दुष्कर्म या मद्यपान आदि से शान्त होती है।

यदि बाल की तरह सूक्ष्म रेखायें जीवन रेखा से नीचे की ओर गिरती हों या उससे जुड़ी हो; तो जिस आयु में वे दिखाई दें उस आयु मे जीवन शक्ति में कमी होती है। अधिकतर ऐसी रेखायें जीवन रेखा के अन्त में दिखाई देती है और तब वे जातक की जीवन शक्ति के विघटन की सूचक होती हैं।

जो रेखायें जीवन रेखा से निकलकर ऊपर की ओर जाती हैं वे जातक के अधिकार बढने, आर्थिक लाभ और सफलता की द्योतक होती हैं।

यदि ऐसी कोई रेखा वृहस्पति क्षेत्र को चली जाये (चित्र संख्या 18 cc) तो जिस आयु पर ऐसा योग बने, उसमें जातक को पद में या अपने व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा योग जातक की महत्त्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने वाला होता है। यदि ऐसी रेखा शनि क्षेत्र की ओर चली जाये और भाग्य रेखा के बराबर
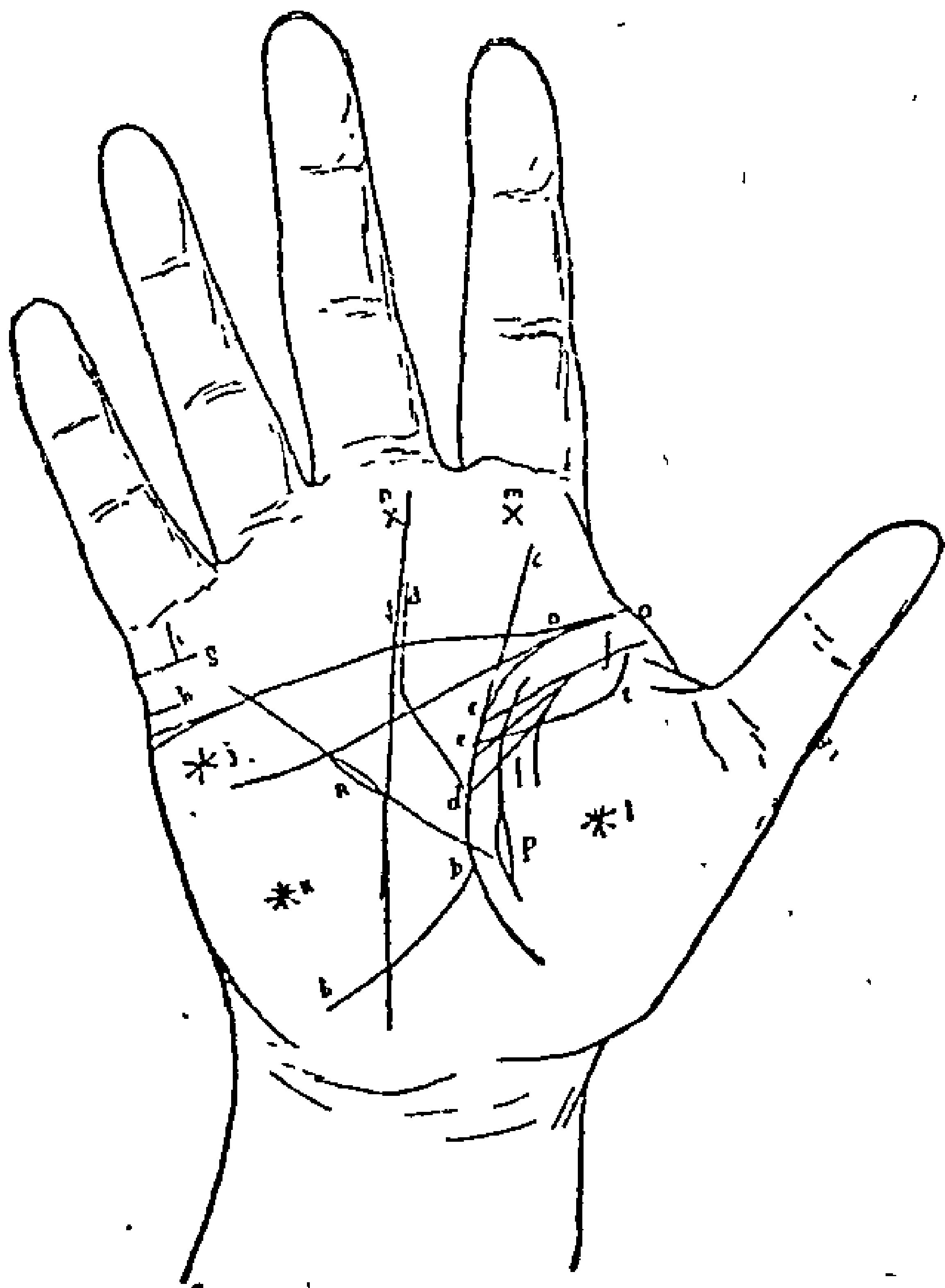
चित्र संख्या 18—प्रधान रेखाओं में परिवर्तन

लने लगे तो जातक को धन-लाभ होता है और उसकी सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति
ती है। परन्तु ऐसा फल जातक के परिश्रम और दृढ़ निश्चय द्वारा ही प्राप्त होता
(चित्र संख्या 18 d-d)।

यदि ऊपर जाती हुई रेखा जीवन रेखा से निकलकर सूर्य क्षेत्र की ओर चली
ये तो हाथ के गुणों के अनुपात में जातक को विशिष्टता (Distinction) प्राप्त
ती है।

यदि ऐसी रेखा बुध क्षेत्र को चली जाये तो हाथ के गुणो और बनावट (वर्गा-
र, चमसाकार या कोनिक) के अनुसार व्यापारिक तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में सफलता
प्त होती है। वर्गाकार हाथ में ऐसा योग व्यापारिक या वैज्ञानिक क्षेत्र में सफलता
लाता है। चमसाकार हाथ वाला जातक किसी आविष्कार या खोज में सफलता प्राप्त
रता है। कोनिक हाथ वाले को आर्थिक मामलो में सफलता मिलती है। उसको ऐसी
फलता जुए, सट्टे या व्यापार में रिस्क से प्राप्त होती है।

जब जीवन रेखा अपने अन्त पर दो शाखाओ में विभाजित हो जाये और दोनों
ाखाओं के बीच में बहुत फासला हो तो जातक की मृत्यु अपने जन्म स्थान से कहीं
र होती है (चित्र संख्या 19 a-a)।

जब जीवन रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो जब तक वह बना रहता है तब
क जातक किसी रोग से पीडित रहता है। (चित्र संख्या 19 b)। यदि द्वीप चिन्ह
ीवन रेखा के आरम्भ में हो तो यह समझना चाहिये कि जातक के जन्म के सम्बन्ध
कोई रहस्य छिपा हुआ है।

जब जीवन रेखा पर वर्ग हो तो वह मृत्यु से रक्षा करता है। यदि द्वीप वर्ग
घिरा हुआ हो तो अस्वस्थता से भी रक्षा होती है। जब करतल मध्य (Plain of
lars) से आती हुई कोई रेखा जीवन रेखा को काटे और काट के स्थान को वर्ग ने
र लिया हो तो दुर्घटना से रक्षा होती है।

जीवन रेखा पर किसी भी स्थान पर वर्ग चिन्ह का होना एक अत्यन्त शुभ और
ुरक्षा का लक्षण है।

जीवन रेखा की सहायक रेखा (चित्र संख्या 13) जो अन्दर की ओर होती है
और जिसे मंगल रेखा कहते हैं, उसका विवेचन हम बाद में करेंगे। यहां पर हमने
उसका जिक्र इसलिए किया है कि जो रेखायें जीवन रेखा में से निकलती हैं उनको
मंगल रेखा न समझ लिया जाये। (मंगल रेखा मंगल क्षेत्र से आरम्भ होती है) इसी
प्रकार शुक्र क्षेत्र से निकलने वाली रेखायें भी मंगल रेखा से भिन्न होती हैं। इस संबंध
में सबसे सरल नियम यह पालन करना चाहिये कि जो सुघटित सम् रेखायें जीवन
रेखा के साथ चलती हैं वे जीवन पर शुभ प्रभाव डालती हैं (चित्र संख्या 17 f-f);
परन्तु जो आड़ी या तिरछी रेखायें जीवन रेखा को काटती हैं वे विरोधियों और जातक

के जीवन में हस्तक्षेप करने वालों के कारण उत्पन्न चिन्ताओं और बाधाओं की सू
होती हैं। (चित्र संख्या 17 g-g) इन रेखाओं का अन्त कहां और किस प्रकार ह
है, इस पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। जब वे केवल जीवन रेखा को काटतं
(चित्र संख्या 17 g-g) तो यह समझना चाहिये कि जातक के सम्बन्धी उनके गृ
जीवन में हस्तक्षेप करके उसे परेशान कर रहे हैं। जब वे जीवन रेखा को काट
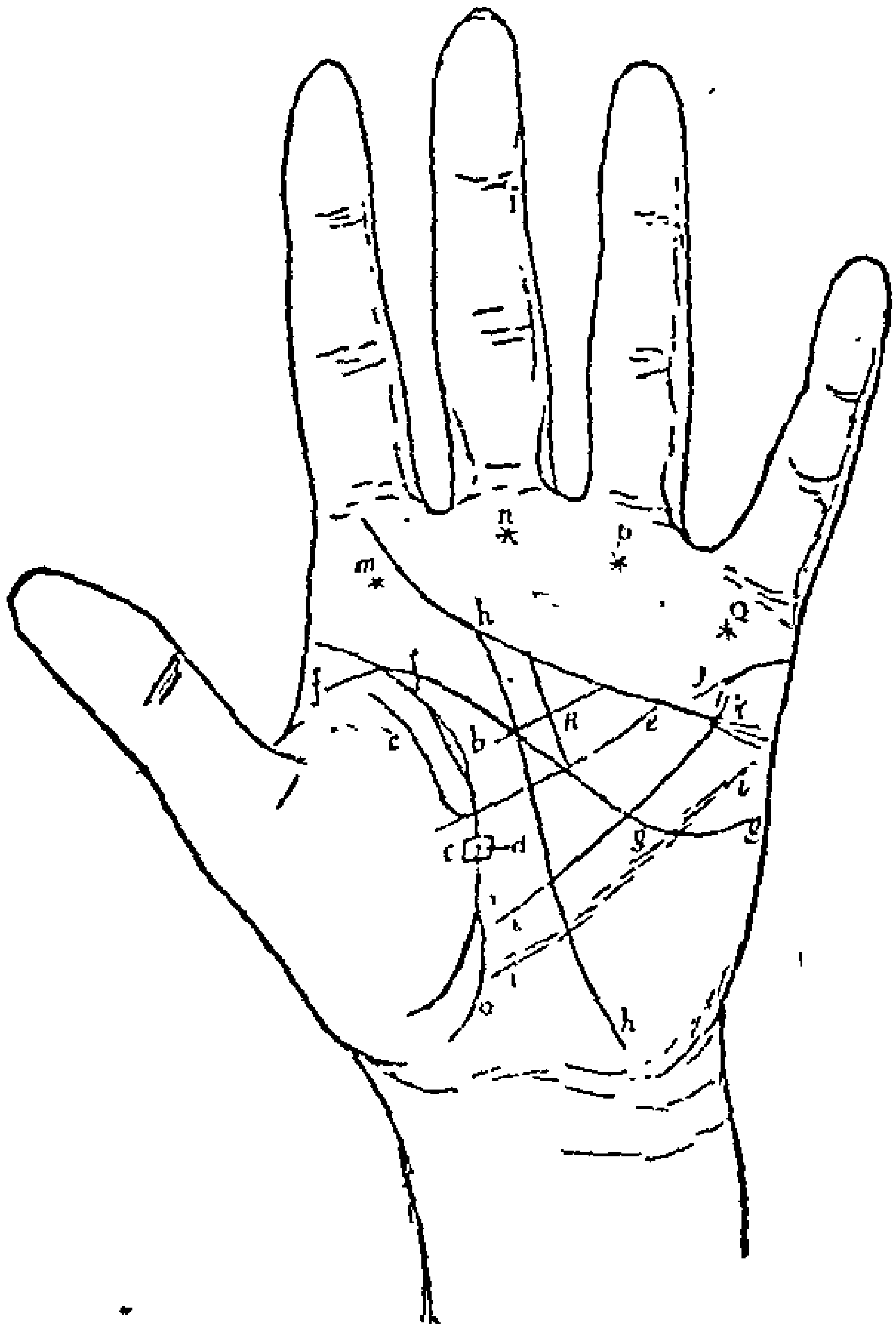
भाग्य रेखा पर आक्रमण करती हैं (चित्र संख्या 16 e-e) तो यह समझना चाहिये कि ये सम्बन्धी व्यावसायिक क्षेत्र तथा अन्य सांसारिक मामलों मे जातक का विरोध करेंगे और उसे क्षति पहुंचायेंगे। किस अवस्था मे ऐसा होगा यह उस स्थान को देखने से होगा जहां रेखा काटती है।

यदि ऐसी रेखायें शीर्ष रेखा तक पहुंच जायें (चित्र संख्या 16 f-f) तो यह निष्कर्ष निकालना चाहिये कि वे विरोधी जातक के मत और विचारों पर प्रभाव डालेंगे।

यदि वे रेखायें आगे बढ़कर हृदय रेखा को काट दें (चित्र संख्या 16 g-g) तो यह समझना चाहिए कि जातक के विरोधी उसके प्रेम के मामलों में हस्तक्षेप करेंगे और बाधायें डालेंगे। किस समय यह घटना होगी उसकी गणना जीवन रेखा के कटने के स्थान से करनी चाहिये।

जब ऐसी रेखायें सूर्य रेखा को काटें तो वे इस बात की सूचक होती हैं कि विरोधी जातक की प्रतिष्ठा को क्षति पहुंचायेंगे और उसके कारण जातक की बदनामी होगी और उसको असम्मान का सामना करना पड़ेगा। ऐसा कब होगा इसका ज्ञान उस स्थान से निश्चित करना चाहिए जहां सूर्य रेखा कटती हो (चित्र संख्या 16 h-h)।

जब इस प्रकार की प्रभाव रेखा सारे हाथ को पार करके विवाह रेखा को स्पर्श करती है (चित्र संख्या 17 h-h), तो यह जातक के वैवाहिक सम्बन्ध को विच्छेद कर देती है।

यदि ऐसी रेखा मे द्वीप या द्वीप के समान चिन्ह हों तो समझना चाहिये कि इस रेखा को धारण करने वाले व्यक्ति को जीवन में भी बदनामी, विरोध या अपमान का सामना करना पड़ा है (चित्र संख्या 17-i)।

परन्तु यदि ऐसी रेखायें जीवन-रेखा के समानान्तर चलती हों, तो समझना चाहिये कि जातक का जीवन दूसरों से अत्यन्त प्रभावित हुआ है।

इस सम्बन्ध में हम हिन्दुओं की हस्त-विज्ञान की पद्धति की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जिसका कि उन लोगों में अविस्मरणीय समय से अनुकरण किया जा रहा है। जो मुख्य बातें हम नीचे देने जा रहे हैं वे हिन्दुओं की पद्धति के सिद्धान्तों के अनुसार और कुछ तो ताम्रपत्रों की लिखित सामग्री का अनुवाद मात्र हैं।

यदि कोई रेखा मंगल क्षेत्र (प्रथम) से निकलकर (चित्र संख्या 18 e-e) नीचे आये और जीवन रेखा को स्पर्श करे या काटे, तो स्त्री के हाथ मे यह योग इस बात का सूचक है कि उस स्त्री का पहले किसी के साथ अनुचित सम्बन्ध था जो उसके लिए चिन्ता-मुसीबत का कारण बना हुआ है। यदि मंगल क्षेत्र से आने वाली वह रेखा अपनी सूक्ष्म शाखायें जीवन रेखा को भेजती है (चित्र संख्या 18 f-f) तो यह योग वैसे ही प्रभाव का सूचक है और उस प्रभाव के कारण समय-समय पर उस स्त्री
चिन्तित होना पड़ता है। इस प्रकार की रेखा से यह भी ज्ञात होता है कि

उसकी चिन्ता का कारण है यह कामुक और पाशविक प्रवृत्ति का है।

यदि कोई छोटी रेखा जीवन के अन्दर की ओर उसके बराबर ही चलती हो (चित्र संख्या 17 f-f) तोयह योग स्त्री के हाथ में इस बात का सूचक है कि जो पुरुष उसके जीवन में प्रवेश करता है वह नम्र स्वभाव का है और वह उसे पर्याप्त मात्रा में प्रभावित करेगा।

यदि कोई छोटी रेखा जो कही से भी प्रारम्भ हुई हो, जीवन रेखा के साथ चलती-चलती शुक्र क्षेत्र के अन्दर मुड़ जाये तो यह योग यह संकेत देता है कि जिस पुरुष से वह स्त्री सम्बन्धित है धीरे-धीरे उसका उस स्त्री के प्रति आकर्षण कम होता जायेगा और अन्त में वह पुरुष उस स्त्री को बिल्कुल भुला देगा (चित्र संख्या 16 i-i)। यदि यह रेखा किसी द्वीप चिन्ह में प्रविष्ट हो जाये या स्वयं द्वीप के रूप में परिणित हो जाये तो यह समझना चाहिये कि उस पुरुष के साथ सम्बन्ध के कारण उसे समाज में कलंकित होना पड़ेगा। यदि वह रेखा किसी स्थान पर मुरझा जाये और फिर सजीव हो उठे तो इसका फल यह होगा कि उस पुरुष का प्रेम कुछ समय तक शान्त होकर पुन: जागृत हो उठेगा। यदि यह रेखा बिल्कुल ही फीकी पड़ जाये तो यह सूचना मिलती है कि उस पुरुष की मृत्यु हो जायेगी या किसी अन्य कारण से प्रेम सम्बन्ध बिल्कुल टूट जायेगा।

इस प्रकार की रेखाओं में से कोई रेखा यदि जीवन रेखा को काटती हुई किसी आड़ी रेखा से मिल जाये तो यह समझना चाहिये किसी अन्य व्यक्ति के षड्यन्त्र या बहकावे से उस पुरुष का प्रेम घृणा में परिवर्तित हो जायेगा और इससे स्त्री जातक को उस आयु में क्षति पहुंचेगी जब यह रेखा जीवन रेखा, शीर्ष रेखा या हृदय रेखा को स्पर्श करेगी (चित्र संख्या 19 e-e)।

इस प्रकार की प्रभाव रेखायें जितनी जीवन रेखा से दूर हों उतना ही जातक पर दूसरो का प्रभाव कम पड़ेगा।

वास्तव में ऐसी प्रभाव रेखायें जातक के जीवन पर काफी प्रभाव डालती हैं, परन्तु महत्व की वही होती हैं जो जीवन रेखा से निकट हों।

यदि जीवन रेखा हाथ में दूर तक फैल जाती है तो शुक्र क्षेत्र बड़ा हो जाता है। इसके फलस्वरूप जातक की शारीरिक शक्ति बहुत अच्छी होती है और वह दीर्घायु होता है।

यदि जीवन-रेखा के कारण शुक्र का क्षेत्र संकीर्ण हो गया हो तो स्वास्थ्य निर्बल होता है, शारीरिक शक्ति भी कम होती है। जीवन रेखा जितनी छोटी हो, आयु उतनी ही कम होती है।

हम यह स्वीकार करते हैं कि जीवन रेखा मे सदा यह नही जाना जा सकता है कि मृत्यु किस आयु मे होगी। जीवन रेखा केवल यह बताती है कि सम्भावित आयु

है। ऐसा भी होता है कि दूसरी रेखाओं पर घातक चिन्ह जीवन रेखा से सूचित सम्भावित आयु को कम कर देते हैं। उदाहरण के लिए शीर्ष रेखा यदि टूटी हुई हो तो मृत्यु के सम्बन्ध में उसका दुष्ट प्रभाव होता है। इस सम्बन्ध में स्वास्थ्य रेखा की बनावट भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। स्वास्थ्य रेखा के विषय में हम उपयुक्त स्थान पर विवेचन करेंगे। यहां पर हम केवल इतना ही कहेंगे कि जब स्वास्थ्य रेखा लम्बाई में जीवन रेखा के बराबर हो तो जहां वह जीवन रेखा से मिले वहीं मृत्यु का समय होता है, चाहे जीवन रेखा उसके बाद भी चलती रहे। मृत्यु का कारण स्वास्थ्य रेखा से ज्ञात होगा।

हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

जीवन रेखा को हिन्दू हस्त-शास्त्र में पितृ रेखा का नाम दिया गया है। इसको 'कुल रेखा' या 'गोत्र रेखा' भी कहा गया है। यह अंगूठे और तर्जनी के मध्य से आरम्भ होकर गोलाई लिये शुक्र क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध या उसके समीप तक आती है।

'सामुद्रिक जातक सुधाकर' के अनुसार यदि यह रेखा पुष्ट, सुन्दर और खूब गोलाई लिए हुए हो तो मनुष्य स्वरूप, दीर्घायु और ऐश्वर्य युक्त होता है। यदि खंडित हो तो उसके जीवन में असफलता और अपमान प्राप्त होता है। यदि यह रेखा सम्पूर्ण न हो तो ऐसा मनुष्य सदा दुःखी रहता है। यदि ऐसी रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो मनुष्य को सुन्दर सवारी प्राप्त होती है।

'सामुद्रिक रहस्य' के अनुसार पितृ रेखा और मातृरेखा (पाश्चात्य मत में जो शीर्ष रेखा कहलाती है) यदि परस्पर मिली न हों तो मनुष्य वर्ण शंकर होता है। दोनों यदि टेढ़ी, छोटी और छिन्न-भिन्न हों तो मनुष्य को माता-पिता का सुख नहीं मिलता। ये रेखायें यदि सुन्दर और स्पष्ट हों तो मनुष्य मातृ-पितृ सुख से युक्त होता है।

पितृ रेखा यदि मलिन, छिन्न-भिन्न हो तो मनुष्य मन्द बुद्धि इत्यादि दुर्गुणों के कारण दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। यह जिस वर्ष में कटी हो, उसमें महाकष्ट प्राप्त होता है और मृत्यु भी हो सकती है। कहीं छिन्न और कहीं सूक्ष्म हो तो जातक अव्यवस्थित चित्त का होता है।

मातृ-पितृ रेखा यदि परस्पर मिली न हों और किसी शाखा से युक्त भी न हों तो मनुष्य असत्यवादी, लालची, अपमानी, निर्दयी और क्षणिक बुद्धि वाला होता है।

पितृ रेखा यदि लम्बी और स्पष्ट हो तो मनुष्य दीर्घजीवी और सदाचारी होता है।

पितृ रेखा के लघु या भग्न होने से मनुष्य अल्पजीवी होता है।

पितृ रेखा मणिबन्ध से बृहस्पति क्षेत्र को जाये तो मनुष्य उच्चाभिलाषी और दीर्घजीवी होता है और अपने शुभ कर्मों तथा सदाचार द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

पितृ रेखा से कोई रेखा उगकर शुभ रूप से शुक्र क्षेत्र को जाये तो मनुष्य किसी स्त्री का उत्तराधिकारी होकर सम्पत्तिशाली बनता है।

पितृ रेखा यदि दोहरी (अपारा) हो तो मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त करता है।

'सामुद्रिक जातक सुधाकर' नामक ग्रन्थ के अनुसार पितृ या कुल रेखा ग्यारह प्रकार की होती है—

(1) संगूढ रेखा—यह रेखा कहीं भी छिन्न-भिन्न नहीं होती। यह सुन्दर, स्पष्ट और समरूप से अंकित, मोटी, गोल और शुक्र स्थान को घेरती हुई अर्द्ध वृत्त बनाती है। यह किसी अन्य रेखा को न स्पर्श करती, न किसी से कटी हुई होती है। जातक अपने माता-पिता द्वारा सब प्रकार के सुख प्राप्त करता है। वह उच्च कुल का और दीर्घायु होता है। वह बिल्कुल स्वस्थ रहता है तथा धनवान और सम्मानित होता है।

(2) विगूढ देही रेखा—यह रेखा गोल तो होती है, परन्तु सीधी करतल में उतर जाती है। यह सुन्दर होती है और स्पष्ट और समरूप से अंकित और मोटी होती है। ऐसी रेखा वाला जातक सद्‌गुणी और सौभाग्यशाली होता है।

(3) गौरी रेखा—यदि यह रेखा मातृ रेखा की ओर मुड़कर फिर नीचे सुचारु रूप से चली जाती है और निर्दोष होती है तो जातक सौभाग्यशाली, धनवान और सुख भोगने वाला होता है।

(4) राम रेखा—यह रेखा शुक्र स्थान को घेरने में अपने रास्ते के नीचे भाग में सिकुड़ जाती है। यह भी निर्दोष हो तो शुभ फलदायक होती है।

(5) परगूढ रेखा—यदि संगूढ रेखा मणिबन्ध पर पहुंचने पर अन्य रेखाओं से सम्बन्धित हो जाती है तो उसे परगूढ रेखा कहते हैं। यह रेखा भी शुभ मानी जाती है और सौभाग्यशाली होती है और उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

(6) निगूढ रेखा—जो पितृ रेखा अंगूठे और तर्जनी के बीच से आरम्भ होकर अन्य रेखाओं से सम्बन्धित हो, वह निगूढ रेखा कहलाती है। ऐसी रेखा वाला जातक सौभाग्यशाली होता है। उसे सम्पत्ति और सन्तान का सुख प्राप्त होता है।

(7) लक्ष्मी रेखा—यदि पितृ रेखा में संगूढ और निगूढ रेखाओं दोनों के गुण हों तो उसे अति लक्ष्मी रेखा कहते हैं। ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त धनवान होता है।

(8) सुख भोग रेखा—यदि पितृ रेखा अपने आरम्भ और अन्त में अन्य रेखाओं से सम्बन्धित हो तो यह सुख-भोग रेखा कहलाती है। ऐसी रेखा का जातक सुखी और धनवान होता है।

उसको यह नाम दिया जाता है। ऐसी रेखा वाला जातक दुर्बुद्धि का होता है और उसका जीवन संघर्षपूर्ण होता है। वह दुराचारी होता है और अपने दुष्कर्मों के कारण कष्ट उठाता है।

(10) सर्व-सुख-नाश रेखा—यदि पितृ रेखा अपने मध्य भाग में ही स्पष्ट हो और आरम्भ और अन्त में फीकी हो तो जातक को जीवन में कोई सुख नहीं प्राप्त होता।

(11) गज रेखा—यदि पितृ रेखा पर किसी स्थान पर तिल हो तो उसे गज रेखा कहते हैं। इस प्रकार का जातक सब प्रकार के सुख भोगता है।

हिन्दू हस्त-शास्त्रियों का मत है कि यदि प्रथम प्रकार की रेखा बिल्कुल निर्दोष हो तो जातक अपने पिता की सहायता से सब प्रकार के सुख प्राप्त करता है और यदि यह रेखा सुन्दर मातृ रेखा (शीर्ष रेखा) से और आयु रेखा (हृदय रेखा) से सम्बन्धित हो तो धनवान और दीर्घायु होता है। उनका यह भी मत है कि यदि पितृ रेखा और मातृ रेखा जुड़ी हुई हों और निर्दोष हों तो वह नये मकान बनवाता है और जुड़ी न हों तो वह अपने मकान बेच देता है। (पाठक देखेंगे कि 'सामुद्रिक रहस्य' और इस ग्रन्थ में मतान्तर है। ऊपर दिया हुआ मत अधिक युक्तिसंगत है। अधिकतर हाथों में मातृ रेखा (शीर्ष रेखा) और पितृ रेखा जुड़ी हुई होती हैं। ऐसा कहना कि इसके कारण जातक वर्णसंकर होगा, उचित नहीं लगता। पाश्चात्य हस्त-शास्त्रियों ने, जिनमें कीरो भी सम्मिलित हैं, ऐसे योग को अशुभ नहीं माना है)।

(6)

मंगल-रेखा (The Line of Mars)

मंगल रेखा (चित्र संख्या 13) जीवन रेखा की सहायक रेखा होती है और इसको अन्दर की जीवन रेखा भी कहा जा सकता है। यह मंगल क्षेत्र (प्रथम) से निकलती है और नीचे उतरकर जीवन रेखा के साथ-साथ चलती है। परन्तु जीवन रेखा के अन्दर की ओर होने वाली जिन रेखाओं का हमने पिछले प्रकरण में जिक्र किया है, वे मंगल रेखा से भिन्न होती हैं।

मंगल रेखा में एक विशेष गुण यह होता है कि वर्गाकार और चौड़े हाथों में वह स्वास्थ्य की प्रबलता सूचित करती है। ऐसे लोग युद्धजीवी (martial) हो जाते हैं और सेना या पुलिस के काम के प्रति उनकी रुचि होती है। एक तरह से स्वास्थ्य की प्रबलता इनमें इतनी गर्मी भर देती है कि वे हर जगह अपना रोब दिखाते हैं और

झगड़ा करने को तैयार हो जाते हैं। किसी सेनानी के हाथ में इस प्रकार की रेखा सौभाग्यसूचक होती है।

जब मंगल की रेखा से कोई शाखा चन्द्र की ओर जाती है (चित्र संख्या 20 b-b), तो जातक मद्यपान तथा अन्य प्रकार के नशों में पड़ जाते हैं।

सम्बे संकीर्ण (narrow) हाथ में जो मंगल रेखा पाई जाती है वह प्रायः ऐसी जीवन रेखा के साथ होती है जो निर्बल और फीकी होती है। ऐसी परिस्थिति में यह जीवन रेखा की सबल सहायक होती है और जीवन रेखा की कमी पूरी करती है। यदि कहीं पर जीवन रेखा पर छिन्नता होती है तो मंगल रेखा उस दोष का निवारण करती है। साधारणतया यदि जीवन रेखा कहीं पर टूटी हो तो यह मृत्यु की सूचक होती है, पर यदि मंगल की रेखा उस टूटे स्थान पर पुष्ट रूप में मौजूद हो तो मृत्यु की सम्भावना नहीं रहती।

(7)
शीर्ष-रेखा (The Line of Head)

शीर्ष रेखा का मुख्यतया मनुष्य की मनोवृत्ति, विचारधारा या विचार पद्धति से सम्बन्ध होता है। यह बौद्धिक शक्ति या निर्बलता और जातक की प्रवृत्ति की किसी प्रकार की योग्यता या क्षमता से सम्बन्ध को, और उस योग्यता के गुण की दिशा को सूचित करती है।

विभिन्न प्रकार के हाथों में शीर्ष रेखा की विलक्षणताओं पर ध्यान देना बहुत महत्व रखता है। उदाहरण के लिए उस शीर्ष रेखा को लीजिए जो एक बहुत नोकीले या कोनिक हाथ में नीचे की ओर झुककर चलती है। इस प्रकार के हाथों में यह वर्गाकार हाथ की अपेक्षा आधी भी प्रभावशाली नहीं होती।

शीर्ष रेखा तीन स्थानों से आरम्भ हो सकती है—बृहस्पति क्षेत्र के मध्य से, जीवन रेखा के आरम्भ से और जीवन रेखा के अन्दर मंगल क्षेत्र से।

यदि शीर्ष रेखा बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ हो (चित्र संख्या 20 c-c), जीवन रेखा को स्पर्श करती हो और लम्बी हो, तो अत्यन्त सबल मानी जाती है। ऐसे जातक में महत्वाकांक्षा होगी और उसको पूर्ण करने के लिए स्फूर्ति, क्षमता, योग्यता, युक्ति-संगतता और दृढ़ निश्चय होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरों के ऊपर शासन करता है और अपनी छोटी या बड़ी योजनाओं पर सावधानी से काम करता है। दूसरों पर अपनी प्रशासन क्षमता पर उसे गर्व होता है। यद्यपि वह अनुशासनप्रिय होता है; परन्तु किसी

इस रेखा की एक विविधता है जो उस रूप में भी पूरी सबल होती है। यह रेखा वृहस्पति क्षेत्र से ही निकलती है; परन्तु जीवन रेखा से कुछ अलग रहती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्तियों में गुण तो पूर्ववत् होंगे; परन्तु उनमें प्रशासन की योग्यता और कूटनीति का गुण कम होगा। ऐसे व्यक्ति में उतावलापन होगा और वह निर्णय लेने में जल्दबाजो करेगा। धैर्य की मात्रा उसमें कम होगी। संकट काल में ऐसे व्यक्ति को अपने नेतृत्व की क्षमता दिखाने का पूर्ण अवसर मिलता है। वह अपने शीघ्र निर्णय
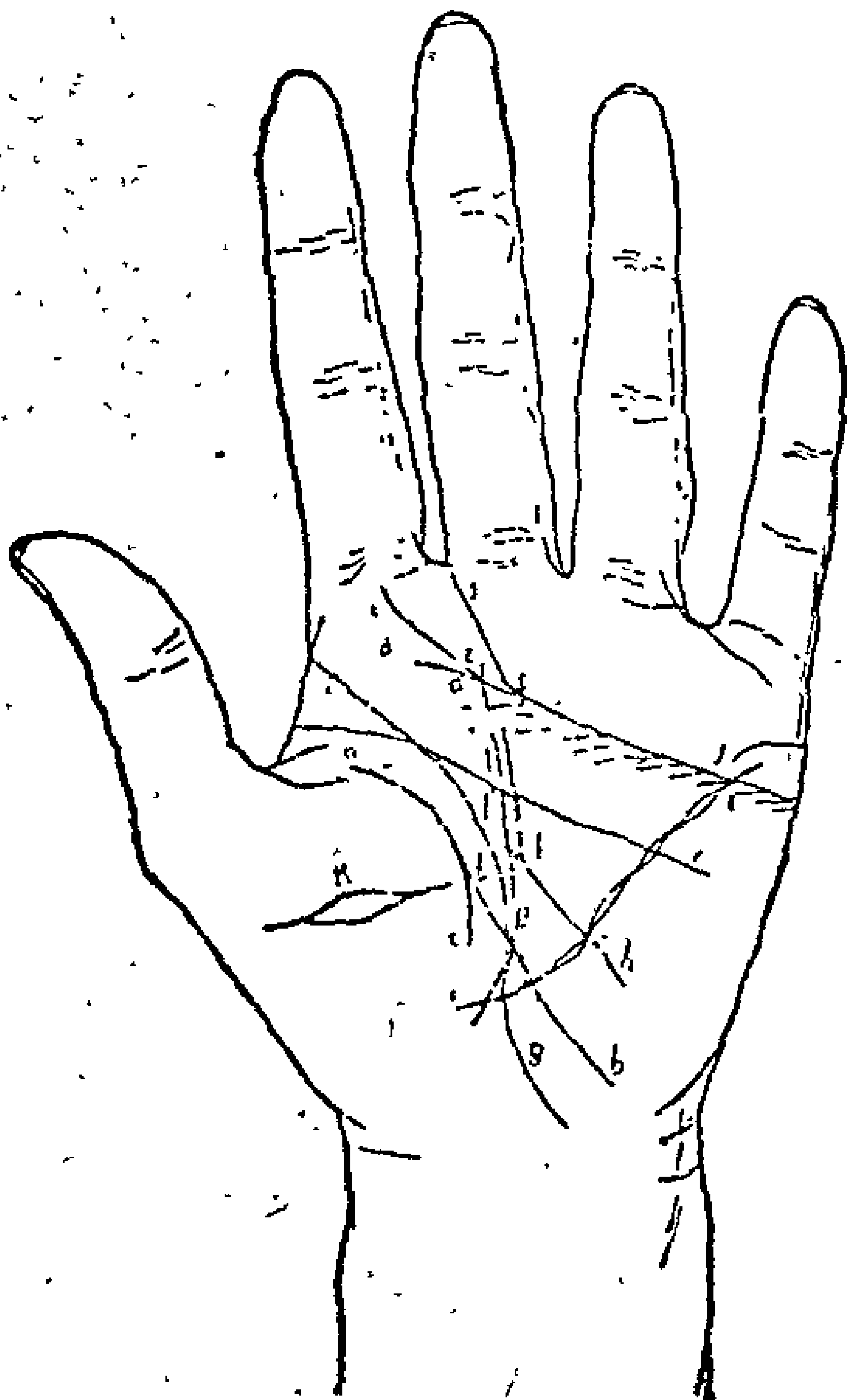
चित्र संख्या 20—प्रधान रेखाओं में परिवर्तन

लेने की प्रवृत्ति के कारण बिगड़ती हुई स्थिति को अविलम्ब नियन्त्रण में लाने में समर्थ और सफल होता है। परन्तु यदि शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच में फासला अधिक हो तो जातक दुःसाहसी और अहम्‌वादी होगा और बिना सोचे-समझे संकट में कूद पड़ेगा।

यदि जीवन रेखा के आरम्भ में शीर्ष रेखा उससे जुड़ी हो (चित्र संख्या 16 d-d) तो जातक संवेदनशील और नरवस मिजाज का होता है। यह हर बात में सावधानी बरतता है और बहुत अधिक सोच-विचारकर किसी काम में हाथ डालता है।

यदि शीर्ष रेखा मंगल क्षेत्र (प्रथम) अर्थात् जीवन रेखा के अन्दर से आरम्भ हो (चित्र संख्या 19 f-f) तो विशेष शुभ नहीं मानी जाती। ऐसी रेखा वाला जातक चिड़चिड़े मिजाज का, चिन्ता करने वाला, अस्थिर स्वभाव का और अस्थिरता से ही काम करने वाला होता है। कीरो के शब्दों में—"The Shifting sands of the sea are more steadfast than the ideas of such a man." (समुद्र तट की खिसकती बालू भी ऐसे व्यक्ति के अस्थिर विचारों से अधिक स्थिर होती है)। ऐसा व्यक्ति अपने पड़ोसियों से लड़ता-झगड़ता रहता है और उसे दूसरों की हर बात में कोई-न-कोई दोष दिखाई देता है।

जब शीर्ष रेखा सीधी और स्पष्ट हो तो जातक मे व्यावहारिक बौद्धिकता होती है और वह कल्पना से अधिक वास्तविकता मे विश्वास रखता है।

यदि शीर्ष रेखा पहले सीधी चले और फिर हल्का-सा ढलान ले ले तो व्यावहारिकता और कल्पना मे संतुलन स्थापित हो जाता है। ऐसा व्यक्ति न तो कल्पना की धारा में बह जायेगा और न ही व्यावहारिकता पर अड़ा रहेगा।

जब सम्पूर्ण शीर्ष रेखा ढलान लिए हो तो जातक का झुकाव उन्हीं कार्यों के प्रति होगा जिनमें कल्पना शक्ति की आवश्यकता होती है। वह किस कार्य में रुचि लेगा—अर्थात् साहित्य, चित्रकारी, कल-पुरजों का आविष्कार—यह उसके हाथ की बनावट पर निर्भर होगा। जब शीर्ष रेखा में ढलान बहुत अधिक हो तो जातक रोमांटिक तबियत का और अरूढ़िवादी हो जाता है। जब शीर्ष रेखा ढलान के साथ चन्द्र क्षेत्र पर अपने अन्त में दोमुखी होकर समाप्त हो तो जातक अपनी कल्पना शक्ति की सहायता मे साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

यदि शीर्ष रेखा अत्यन्त सीधी और लम्बी होकर करतल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुंच जाये तो यह समझना चाहिए कि जातक में सामान्य से अधिक बौद्धिक क्षमता होगी, परन्तु उस क्षमता को केवल अपने स्वार्थ के लिए ही उपयोग में लायेगा।

यदि यह रेखा [illegible] में सीधी जाकर मगल के क्षेत्र (द्वितीय) पर कुछ ऊपर की ओर मुड़ जाती हो (चित्र संख्या 19 g-g) तो जातक को व्यापार के क्षेत्र मे आशातीत सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति पैसे की कद्र को जानने वाला होता है और

शीघ्रता से धन संचय करता है; परन्तु यह अपने नीचे काम करने वालों से कठिन परिश्रम करवाता है।

जब शीर्ष रेखा छोटी हो, कठिनता से करतल के मध्य में पहुंचे तो जातक में सांसारिकता ही दिखती हैं। ऐसे व्यक्ति में कल्पना-शक्ति की कमी होगी; परन्तु वह पूर्ण रूप से व्यावहारिक होगा।

जब शीर्ष रेखा असाधारण रूप से छोटी हो तो जातक अल्पजीवी होता है और उसकी मृत्यु किसी मानसिक रोग से होती है।

यदि शीर्ष रेखा शनि क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो जातक की मृत्यु युवावस्था में ही सहसा हो जाती है।

यदि शीर्ष रेखा शृंखलाकार हो या छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो (जंजीर के समान) तो जातक का मन स्थिर नहीं होता और उसमें निर्णय लेने की क्षमता नहीं होती।

यदि शीर्ष रेखा में छोटे-छोटे द्वीप हों और सूक्ष्म रेखायें हों तो सिर मे तीव्र पीड़ा एक स्थायी रोग का रूप धारण कर लेती है और किसी प्रकार के मस्तिष्क रोग से पीड़ित होने की आशंका होती है।

यदि शीर्ष रेखा अपने सामान्य स्थान से ऊंची स्थित हो और उसमें और हृदय रेखा में दूरी बहुत कम हो तो मन का हृदय पर पूर्ण आधिपत्य होगा।

यदि शीर्ष रेखा अपने अन्त पर मुड जाये या यदि नीचे की ओर जाते समय उसमें से कोई शाखा किसी ग्रह क्षेत्र मे चली जाये तो जिस क्षेत्र मे वह जायेगी उसके गुण शीर्ष रेखा में समाविष्ट हो जायेंगे। यदि वह चन्द्र क्षेत्र की ओर जायेगी तो कल्पना-शक्ति, रहस्यवादिता बढ़ेगी और निगूढ़ विज्ञान (Occult Sciences) के प्रति झुकाव होगा। यदि बुध क्षेत्र को जायेगी तो विज्ञान और व्यापार की ओर रुचि उत्पन्न करेगी। यदि सूर्य क्षेत्र को जायेगी तो कुख्यात होने की ओर झुकाव होगा (अर्थात् दुष्कर्म करने की प्रवृत्ति होगी)। यदि शनि क्षेत्र की ओर जायेगी तो संगीत, धर्म और विचारों में गम्भीरता के प्रति झुकाव होगा। बृहस्पति क्षेत्र की ओर जाने से आत्माभिमान और अधिकार प्राप्त करने की आकांक्षा उत्पन्न होगी।

यदि शीर्ष रेखा से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा से मिल जाये तो जातक के मन में किसी के प्रति इतना अधिक आकर्षण या प्रेम उत्पन्न होगा कि जातक उस समय बुद्धिमानी या युक्तिसंगतता का परित्याग कर देगा और संकट की भी परवाह न करेगा।

दोहरी मस्तिष्क रेखा बहुत कम देखने में आती है; परन्तु यदि किसी के हाथ में दो शीर्ष रेखायें हों तो मस्तिष्क और मानसिक शक्ति द्विगुणित हो जाती है। ऐसे व्यक्ति दो स्वभाव के हो जाते हैं। एक स्वभाव नम्र और संवेदनशील और दूसरा आत्मविश्वासपूर्ण, गरिमारहित और क्रूर होता है। ऐसे व्यक्तियों में विशेष रूप से

सर्वतोमुखी गुण होते हैं, भाषा पर उनको पूर्ण अधिकार होता है और उनमें प्रबल इच्छाशक्ति और दृढ़ निश्चय होता है।

यदि शीर्ष रेखा दोनों हाथों में टूटी हो तो वह किसी हिंसात्मक आघात या दुर्घटना का पूर्वाभास देती है जिसमें सिर चोट का केन्द्र होता है।

द्वीप निर्बलता का चिन्ह होता है (चित्र संख्या 17-J)। यदि शीर्ष रेखा पर द्वीप हो और रेखा उससे आगे न बढ़े, तो जातक अपने मानसिक रोग से कभी मुक्ति नहीं पायेगा।

यदि शीर्ष रेखा स्वयं या उसकी कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र पर किसी नक्षत्र चिन्ह से मिल जाये, तो जातक की समस्त योजनायें और सब प्रयास सफलतापूर्वक कार्यान्वित होते हैं।
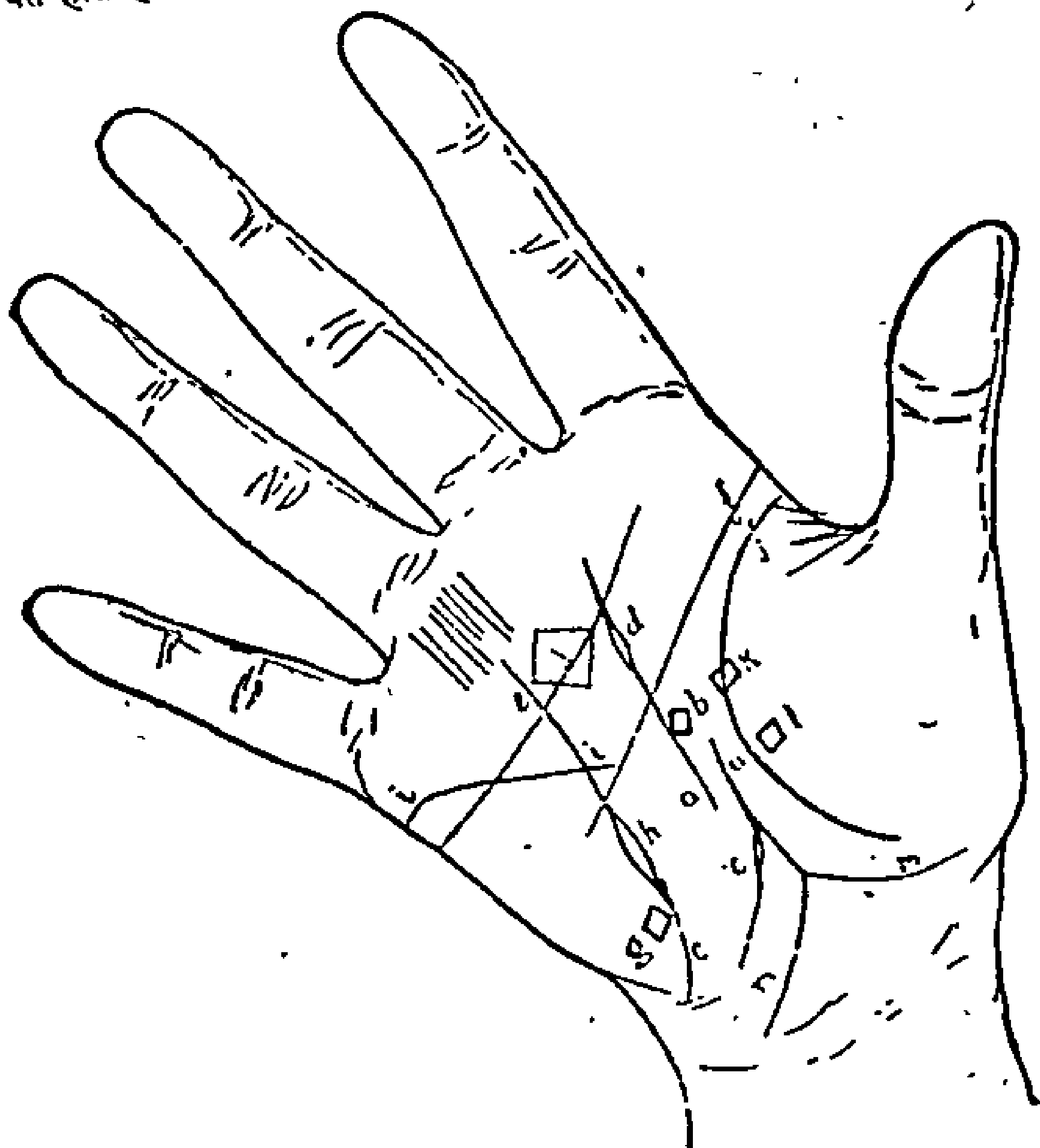
चित्र संख्या 21—प्रधान रेखाओं में परिवर्तन

जब अनेकों सूक्ष्म रेखायें शीर्ष-रेखा पर से हृदय रेखा की ओर उठें तो यह समझना चाहिए कि प्रेम का ढकोसला मात्र होगा, वास्तविक प्रेम नहीं होगा।

जब शीर्ष रेखा पर वर्ग चिन्ह हो तो किसी हिंसात्मक आघात से या दुर्घटना से जातक की रक्षा अपने साहस या चैतन्यता द्वारा होगी।

जब शीर्ष और जीवन रेखा के बीच में फासला अधिक न हो तो शुभ होता है। जब मध्यम हो तो जातक में अद्भुत स्फूर्ति और आत्म-विश्वास होता है—तथा उसकी विचार-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है (चित्र संख्या 21 f)। वकीलों, अभिनेताओं, धार्मिक उपदेशकों आदि के हाथ में ऐसा योग अत्यन्त शुभ सिद्ध होता है। परन्तु ऐसे व्यक्तियों को किसी विषय पर तुरन्त निर्णय नहीं लेना चाहिए; क्योंकि उनके स्वभाव में जो जल्दीबाजी, आत्म-विश्वास और अधीरता होती है उससे काम बिगड़ सकता है। जब शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच मे फासला बहुत अधिक होता है तो जातक दुःसाहसी और उतावला होता है और आत्म-विश्वास की मात्रा सीमा का उल्लंघन कर जाती है।

यदि शीर्ष रेखा जीवन रेखा से घनिष्ठता से जुड़ी (अर्थात् कुछ फासले तक दोनों रेखाएं एक-दूसरे से जुड़ी हों) और यह जुड़ाव हाथ मे नीचे की ओर हो तो जातक में आत्म-विश्वास की बहुत कमी होती है। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक संवेदनशीलता से कष्ट उठाते हैं और छोटी-से-छोटी बातों से उनका मन दुःखी हो जाता है।

नोट—शीर्ष रेखा के सम्बन्ध में कुछ और तथ्य हैं जो हम पाठकों के लाभार्थ नीचे दे रहे हैं।

शीर्ष रेखा न अत्यन्त गहरी होनी चाहिए न इतनी उथली कि अस्पष्ट हो। यदि यह रेखा लम्बी किन्तु अस्पष्ट हो और बुध का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत और उन्नत हो तो जातक धोखेबाज होता है। यदि बुध क्षेत्र इस प्रकार से उन्नत न हो तो जातक में यह अवगुण नहीं होता।

यदि शीर्ष रेखा बहुत गहरी हो तो स्नायविक शक्ति पर अधिक दबाव पड़ता है। जिन कारणों से ऐसा हो रहा हो उन्हें रोकना चाहिए; नहीं तो स्वभाव पर हानिप्रद प्रभाव पड़ सकता है।

यदि शीर्ष रेखा लहरदार हो और हाथ में ऊंची लहरदार होते हुए सूर्य क्षेत्र या बुध क्षेत्र के नीचे, हृदय रेखा के बिल्कुल समीप पहुंच जाये तो यह पागलपन का लक्षण है।

यदि शीर्ष रेखा लहरदार हो और हृदय रेखा और उसके बीच मे अन्तर कम हो तथा बुध क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बेईमान होता है।

यदि शीर्ष रेखा बहुत छोटी और अंगूठा भी बहुत छोटा है तो जातक बुद्धिहीन होता है।

यदि शीर्ष रेखा शनि क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो समय से पूर्व आकस्मिक मृत्यु की सम्भावना होती है।

यदि शीर्ष रेखा अच्छी न हो (छोटी, अस्पष्ट, शृंखलाकार या द्वीपयुक्त हो), हृदय रेखा न हो और स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तो हृदय (Heart) कमजोर होता है। हृदय में प्रेम की भावना या मोह की अधिकता तथा मस्तिष्क की निर्बलता से जातक ऐसे काम कर बैठता है जिनसे हानि होती है।

यदि शीर्ष रेखा लम्बी और सुन्दर हो और शुक्र क्षेत्र अति उच्च न हो तो जातक का प्रेम अपनी पत्नी (या पति) तक ही सीमित रहता है।

यदि शीर्ष रेखा लम्बी और सुन्दर हो और मंगल, बुध तथा बृहस्पति के क्षेत्र उन्नत तथा विस्तृत हों तो एकाग्रचित्तता का गुण होता है।

यदि शीर्ष रेखा लम्बी और चन्द्र क्षेत्र की ओर घूमी हुई हो, बृहस्पति क्षेत्र अति उच्च हो और इस पर जाल चिन्ह हो तो जातक प्रसिद्ध राजनैतिक वक्ता होता है। परन्तु वह जो कहता है उसमें ढकोसला अधिक, सत्यता कम होती है।

यदि शीर्ष रेखा और हृदय रेखा दोनों लम्बी और सुन्दर हों, जीवन रेखा के अन्तिम भाग पर त्रिकोण चिन्ह हो तो जातक में नीतिज्ञता और बुद्धिपूर्वक कार्य सम्पन्न करने की योग्यता होती है।

यदि शीर्ष रेखा के अन्त में दो शाखायें हो जाएं (एक प्रधान रेखा तथा एक छोटी-सी शाखा) तो कल्पना पर व्यावहारिक बुद्धि का नियन्त्रण रहता है।

यदि शीर्ष रेखा अन्त में शाखायुक्त हो जाये—एक शाखा हृदय रेखा को काटती हुई बुध क्षेत्र पर जाये और दूसरी नीचे की ओर चन्द्र क्षेत्र पर, तो जातक चालाक होता है और व्यापार में (ईमानदारी या बेईमानी से भी) धन कमाने वाला होता है।

यदि शीर्ष रेखा की एक शाखा चन्द्र क्षेत्र पर जाए और दूसरी आकर हृदय रेखा से मिल जाए तो जातक प्रेम के लिए सर्वस्व बलिदान करने को तैयार हो जाता है।

यदि शीर्ष रेखा लहरदार हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तो सिर को सांघातिक चोट लगती है। यदि क्रास के स्थान में एक छोटी गहरी आड़ी रेखा से शीर्ष रेखा कटी हो तो भी सिर पर चोट लगती है।

यदि शीर्ष रेखा प्रारम्भ में जीवन रेखा से मिली हो तथा कुछ आगे चलकर शीर्ष रेखा से निकलकर कोई छोटी रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर क्रास के चिन्ह से योग करे तो जातक की महत्वाकांक्षा पूर्ण नहीं होती।

यदि शीर्ष रेखा पर काला दाग हो और शुक्र क्षेत्र के निचले भाग से अथवा जीवन रेखा से आरम्भ होकर कोई रेखा चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र के चिन्ह पर समाप्त हो जाए तो सन्निपात, बेहोशी आदि के रोग होते हैं।

यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे शीर्ष रेखा पर काला दाग हो तो नेत्र रोग होते हैं।

शीर्ष रेखा पर कहो पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो सिर में चोट लगने की सम्भावना होती है। यदि रेखा दोनों हाथों मे एक-से ही लक्षण की हो तो ऐसी चोट से मृत्यु भी हो सकती है।

यदि शीर्ष रेखा नीचे की ओर घूमकर चन्द्र के क्षेत्र के नीचे पिछले भाग तक जाये और वहां पर नक्षत्र के चिन्ह से योग करे तो आत्म-हत्या या पानी मे डूबने से मृत्यु होती है।

किन्तु यदि शीर्ष रेखा मणिबन्ध तक जाए और वहां क्रास या नक्षत्र के चिन्ह हो तो प्रबल भाग्योदय का योग बनता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे शीर्ष रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटकर आगे जाए और दोनों के मिलन के स्थान पर नक्षत्र चिन्ह हो तो ऐसी स्त्री वंध्या होती है या प्रसव के समय उसकी मृत्यु की संभावना होती है।

यदि शीर्ष रेखा पर वृत्त चिन्ह हो और स्वास्थ्य रेखा पर क्रास चिन्ह हो तो जातक वृद्धावस्था में अन्धा हो जाता है।

यदि शीर्ष रेखा सीधी होकर सारे करतल को पार कर जाये और हृदय रेखा सामान्य हो तो जातक में मस्तिष्क शक्ति का भावनाओं पर पूर्ण अधिकार होगा। वह हर काम में व्यावहारिक होगा और अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने में सफल होगा। यदि ऐसी शीर्ष रेखा हो और हृदय रेखा हाथ से गायब हो तो जातक कठोर हृदय, क्रूर, कंजूस, लालची और दूसरों से जबरदस्ती धन वसूल करने वाला होगा। यदि यह रेखा लाल रंग की हो तो वह और अधिक आक्रामक होगा। यदि पीली हो तो नीच प्रकृति और अधिक होगी।

यदि करतल में अन्य रेखाएं गहरी और सुस्पष्ट हो और शीर्ष रेखा छोटी और पतली हो तो जातक को कोई भी बुद्धू बनाने में सफल होगा।

जब शीर्ष रेखा किसी ग्रह क्षेत्र के नीचे पहुंचकर कुछ ऊपर को उठ जाती है तो जातक में उस ग्रह क्षेत्र के गुण भी आ जाते हैं।

यदि शीर्ष रेखा उठकर शनि क्षेत्र मे पहुंच जाए तो जातक अल्पजीवी होता है और शनि क्षेत्र से सम्बद्ध रोगों (जैसे पक्षाघात) से उसकी मृत्यु होती है। यदि रेखा के अन्त पर क्रास, नक्षत्र या बिन्दु का चिन्ह हो तो मृत्यु से किसी प्रकार रक्षा नहीं हो सकती।

यदि हृदय रेखा को काटती हुई शीर्ष रेखा सूर्य क्षेत्र में पहुंच जाए तो जातक हृदय रोग का शिकार होता है।

यदि शीर्ष रेखा बुध क्षेत्र में पहुंच जाए तो धन अर्जित करने की प्रेरणा और योग्यता मे वृद्धि होती है। ऐसे योग में जातक धन प्राप्त करने के लिए अपने स्वास्थ्य की परवाह न करेगा और सब कुछ बलिदान करने को तैयार हो जाएगा। परन्तु यदि ऐसी रेखा के अन्त पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो सहसा मृत्यु की सम्भावना होती है।

हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

'सामुद्रिक रहस्य' के अनुसार इसका नाम 'मातृ रेखा' है। मातृ रेखा यदि उत्तम हो तो मनुष्य बुद्धिमान, विचार में निपुण, प्रभावशाली और मानसिक बल से युक्त होता है। पितृ और मातृ रेखाएं यदि सुन्दर और स्पष्ट हों तो मनुष्य मातृ-पितृ सुख से युक्त होता है। पितृ रेखा और मातृ रेखा परस्पर मिली न हों और किसी शाखा से युक्त न हो तो मनुष्य असत्यवादी, लालची, अभिमानी, निर्दयी और क्षणिक बुद्धि वाला होता है। मातृ रेखाए यदि दो हों तो मनुष्य अव्यवस्थित चित्तवाला होता है, अर्थात् कभी दयालु, कभी क्रूर। मातृ रेखा शृंखलाकार हो तो मनुष्य प्रतिज्ञा शून्य और चंचल होता है। मातृ रेखा यदि छोटी-छोटी रेखाओं से छिन्न-भिन्न हो और गहरे झुकाव के साथ मणिबन्ध तक चली जाए तो मनुष्य आत्मघात करता है। मातृ रेखा यदि दो शाखाओं में विभाजित हो जाए और उसकी एक शाखा चन्द्र स्थान को जाए तो जातक के अभीष्ट की पूर्ति होती है। यदि दूसरी शाखा करतल के किनारे तक चली जाए तो जातक की कल्पना-शक्ति तीव्र होती है और वह गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। मातृ रेखा यदि स्वास्थ्य रेखा (यह पाश्चात्य मत के अनुसार ही है) से मिलकर त्रिकोण बनाए तो मनुष्य कीर्तिवान, गुप्त विद्याओं में विद्वान और दैवी बुद्धि वाला होता है (यह एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योग है)। मातृ रेखा यदि लम्बी और सूक्ष्म हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त होता है और विश्वास करने योग्य नहीं होता। मातृ रेखा यदि चौड़ी और कृष्ण वर्ण हो तो मनुष्य लोभी, उदर रोग से पीड़ित और आलसी होता है। मातृ रेखा पितृ रेखा से जुड़ी हो, शुद्ध हो और उसमें शाखाएं हों तो जातक साहित्य के गूढ़ विषयों का ज्ञाता, नयी रचनाओं को जन्म देने वाला और निपुण होता है। मातृ रेखा यदि शनि क्षेत्र के नीचे से आरम्भ हो और छोटी हो तो अकाल मृत्यु होती है। मातृ रेखा के अन्त में यदि यव (द्वीप) का चिन्ह हो तो असवर्ण पुरुष के प्रति स्त्री और असवर्ण स्त्री के प्रति पुरुष आकर्षित होता है।

अन्य हिन्दू हस्त-शास्त्र के ग्रन्थों के अनुसार शीर्ष रेखा धन और सांसारिक सुखों से सम्बन्ध रखती है। उसको उन्होंने मातृ रेखा, धन रेखा, व्याघ्र विलास रेखा (जातक को सब प्रकार के सुख दिलाने वाली) का नाम दिया है। इस मत के अनुसार वही व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है जिसकी जीवन रेखा (पितृ रेखा), शीर्ष रेखा (मातृ रेखा या धन रेखा) और हृदय रेखा (आयु रेखा) करतल पर स्पष्ट रूप से अंकित हों और अपने स्वाभाविक रूप में स्थित हों। साथ-ही-साथ मणिबन्ध से ऊपर उठने वाली चारों ऊर्ध्व या ऊपर जाने वाली रेखायें सबल, सुस्पष्ट और सुस्थित हों।

शीर्ष रेखा, धन रेखा या मातृ रेखा अत्यन्त महत्व की मानी गयी है। यह 18 प्रकार की होती हैं।

यदि यह रेखा सुन्दर, मोटी, अटूट, अच्छे रंग की, गहरी, अन्य रेखाओं से कटी न हो और उस पर कोई अशुभ चिन्ह न हो तो जातक को सुख के सब सांसारिक पदार्थ

प्राप्त होते हैं, वह समृद्ध होता है और उसकी माता होती है। 18 प्रकार की रेखाओं का वर्णन नीचे दिया जाता है—

(1) यदि यह रेखा छिन्न न हो और उपयुक्त मोटाई की हो तो उसे 'मृग गति' कहते हैं। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति सौभाग्यशाली और सुखी होता है और उसके विचार शुद्ध होते है।

(2) जब रेखा शुभ नही होती तो उसे 'नागी' (nagi) कहते हैं।

(3) जब रेखा अपने स्वाभाविक पथ से ऊपर उठी हो तो उसे 'वराटिका' कहते हैं। यह धनहीनता का चिन्ह है।

(4) जब यह रेखा अपने अन्त पर अन्य रेखाओं से सम्बन्धित हो तो इसे 'कुमुखी' कहते हैं। ऐसी रेखा होने से धनहानि और मातृहानि होती है और विचार शक्ति निर्बल होती है।

(5) यदि आरम्भ मे यह रेखा किसी अन्य रेखा से जुड़ी हो तो 'कृष्टिण कच' कहते है। धनहीनता और मातृसुख से वंचित होना ऐसी रेखा का फल होता है।

(6) जब यह रेखा अपनी बायी ओर उठ जाए तो इसे 'सुभद्र रेखा' कहते हैं। यह शुभ और अनुकूल मानी जाती है।

(7) यदि रेखा छिन्न न हो और अपने पथ के मध्य में ऊपर की ओर उठ जाए और बाद में सुन्दर और सीधी हो तो उसे 'पसुली' कहते हैं। ऐसा व्यक्ति भोग-विलास प्रिय और पर स्त्रियों के प्रति रुचि रखने वाला होता है।

(8) यदि कोई रेखा आरम्भ से मध्य तक ऊपर उठी हो और फिर नीचे की ओर झुक जाए तो उसे 'विरत मृति' कहते हैं। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति धनवान, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होता है।

(9) यदि कोई रेखा अपने आरम्भ में और अन्त में अन्य रेखाओं से जुड़ी हो उसे 'अवन्ति' कहते हैं। ऐसी रेखा शुभ नही मानी जाती।

(10) यदि कोई रेखा अपने आरम्भ में ही टूटी हुई हो तो उसे 'बंशु धरिणी' कहते है। ऐसी रेखा वाला अल्पजीवी होता है।

(11) यदि कोई रेखा अपने अन्त पर टूटी हो तो उसे 'बृहन्ति मति' कहते हैं। ऐसे व्यक्ति की मानसिक शक्ति निर्बल होती है और वह संशयी स्वभाव का होता है।

(12) यदि कोई रेखा मध्य मे टूटी हो तो उसे 'सुशीलवती' कहते हैं। नाम कुछ भी हो यह रेखा शुभ नही होती।

(13) यदि रेखा आरम्भ में, मध्य में और अन्त मे टूटी हुई हो तो उसे 'निकृष्ट' कहते हैं। ऐसी रेखा वाला सदा धनहीन रहता है।

(14) यदि किसी रेखा के आरम्भ में तिल का चिन्ह हो तो उसे 'स्वल्पवती' कहते हैं। ऐसी रेखा शुभ मानी जाती है।

(15) यदि रेखा के मध्य में ऐसा चिन्ह हो तो उसे 'मतुंगी' कहते हैं।

(16) यदि ऐसा चिन्ह अन्त में हो तो उसे 'मरंगी' कहते हैं।

(17) यदि तीनों स्थानों पर ऐसा चिन्ह हो तो ऐसी रेखा को 'सयुंजी' कहते हैं।

(18) ऐसी रेखा को 'सारिभूमि' भी कहते हैं। ये तिल के चिन्ह वाली सब रेखाए शुभ फलदायक मानी जाती हैं। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति बुद्धिमान, धनवान, समाज मे सम्मानित और उच्च पदाधिकारी होता है।

(8)

हाथ के विभिन्न आकार और उनके अनुसार शीर्ष-रेखा का फल

प्रायः जिस प्रकार की हाथ की बनावट होती है वैसी ही शीर्ष-रेखा होती है। व्यावहारिक हाथ में व्यावहारिक प्रभावयुक्त रेखा होती है और कलाप्रिय हाथ मे कल्पनात्मक प्रभावशाली रेखा पायी जाती है। यदि शीर्ष रेखा हाथ की बनावट के अनुसार न हो तो उसके कैसे प्रभाव होंगे यह जानना महत्वपूर्ण है। शीर्ष रेखा की इस प्रकार की विविधताएं तभी होती हैं जब मस्तिष्क अपने स्वाभाविक नियम के अनुसार काम न करे। मस्तिष्क की कार्यशीलता मनुष्य के विकास के साथ बदलती रहती है। मनुष्य की बीस वर्ष की अवस्था में जो मस्तिष्क का विकास होता है, उसके कारण उसके तीस वर्ष की अवस्था मे पहुंचने पर, उसके सारे जीवन में परिवर्तन हो सकता है। मस्तिष्क का यह विकास स्नायु-जाल के द्वारा हाथ पर प्रभाव डालता है। इस प्रकार विचार धारा या कार्यशीलता की प्रवृत्ति का संकेत हाथ में वर्षों पूर्व दिखाई दे जाता है।

निम्न श्रेणी के हाथ मे स्वाभाविक शीर्ष रेखा छोटी, सीधी और भारी होगी। अतः उसमे यदि कोई असाधारण रूप से विकास हो तो जातक में भी असाधारण गुण दिखाई देंगे। जैसे यदि शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र की ओर झुक जाए तो जातक मे कल्पनाशीलता आ जाएगी जिसके कारण उसमें अन्धविश्वास की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जायेगी जो क्रूर और पाशविक प्रवृत्तियों के प्रतिकूल होगी। यही कारण है कि आदिम जातियो के लोगों में अन्धविश्वास की मात्रा अधिक होती है।

शीर्ष-रेखा और वर्गाकार हाथ

जैसा हम पहले बता चुके हैं कि वर्गाकार हाथ उपयोगी और व्यावहारिक होता है। युक्तिसंगतता, व्यवस्था, विज्ञान के प्रति रुचि आदि उसके विशेष गुण होते हैं।

इस प्रकार के हाथ में, हाथ के अनुरूप, स्वाभाविक शीर्ष-रेखा सीधी और लम्बी होती है। यदि ऐसे हाथ में शीर्ष-रेखा का नीचे की ओर झुकाव हो तो जातक में कल्पनाशीलता उस व्यक्ति की अपेक्षा अधिक आ जाएगी जिसका हाथ कुछ नोकीला (conic) या बहुत नोकीला (psychic) हो और जिसमें शीर्ष-रेखा में और भी अधिक झुकाव हो। परन्तु दोनों प्रकार के व्यक्तियों के काम की प्रणाली में उनकी मानसिक प्रवृत्तियों के कारण काफी अन्तर होगा। वर्गाकार हाथ में झुकी हुई शीर्ष-रेखा हो तो कल्पनाशीलता का भी मूलाधार होगा। दूसरे प्रकार के हाथों में शीर्ष-रेखा के झुकाव से जातक में कोरी कल्पनाशीलता और प्रेरणात्मक प्रवृत्तियां होंगी। यह अन्तर विशेष रूप से लेखकों, चित्रकारों, संगीतकारों आदि के हाथों में देखने में आता है।

शीर्ष-रेखा और चमसाकार हाथ

जैसा पाठक अब तक जान गए होंगे चमसाकार हाथ के विशेष गुण होते हैं—सक्रियता, आविष्कारक प्रवृत्ति, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और मौलिकता। ऐसे हाथ में स्वाभाविक रूप से शीर्ष रेखा लम्बी, सुस्पष्ट और कुछ झुकाव लेती हुई होती है। यदि इस प्रकार के हाथ में झुकाव की मात्रा बढ़ जाए तो उपर्युक्त गुण द्विगुणित हो जाते हैं। यदि इस प्रकार के हाथ में शीर्ष रेखा सीधी हो तो जातक के व्यावहारिक विचार और उसकी योजनाएं दूसरों पर इतना नियंत्रण रखेंगी कि उनका कार्यान्वित होना कठिन हो जाएगा। सीधी रेखा से जातक अधीर, चिड़चिड़ा और असंतुष्ट हो जाएगा।

शीर्ष-रेखा और दार्शनिक हाथ

इस प्रकार के हाथ के गुण होते हैं—विचारशीलता, मनन, पठन, ज्ञान का अनुसरण। परन्तु ऐसे हाथ के जातक उपर्युक्त गुणों के साथ-साथ अपने विचारों को कार्यान्वित करने में कल्पनाशील और सनकी होते हैं। इस प्रकार के हाथ में शीर्ष-रेखा स्वाभाविक रूप से लम्बी होती है, जीवन रेखा से जुड़ी होती है, हाथ में कुछ नीचे स्थित होती है और नीचे की ओर झुकी भी होती है। इसलिए यदि इस हाथ में रेखा सीधी हो और ऊपर की ओर स्थित हो तो जातक हर बात में दूसरों की आलोचना करने वाला, हर बात का विश्लेषण करने वाला (चाहे उसकी आवश्यकता हो या न हो) और दोषान्वेषी बन जाएगा। वह किसी विषय या अपने साथियों का अध्ययन करेगा, तो उसका उद्देश्य ज्ञान-वृद्धि नहीं, परन्तु उनमें कमी या दोष निकालना होगा।

उसका स्वभाव विचित्र प्रकार का हो जाएगा। जो वास्तविक न हो उसकी वह अवज्ञा करेगा और उसे हास्यास्पद समझेगा। जो वास्तविक हो उस पर वह हंसेगा। उसको किसी बात का भय न होगा। वह कभी व्यावहारिक बन जाएगा और कभी कल्पनाशील। वह एक प्रतिभाशाली और विशिष्ट व्यक्ति होगा, परन्तु उसी प्रकार के लोगों की अवहेलना और आलोचना करेगा। दार्शनिक होकर वह दर्शन-शास्त्र का उपहास उड़ायेगा।

शीर्ष-रेखा और कुछ नोकीला (कोनिक) हाथ

कोनिक हाथ के स्वामी कलाप्रिय, आवेशात्मक, विचारों के संसार में विचरते वाले और भावुक होते हैं। इस प्रकार के हाथ में शीर्ष-रेखा अपने स्वाभाविक रूप में धीरे-धीरे झुकती हुई चन्द्र क्षेत्र में पहुंच जाती है। शीर्ष-रेखा की ऐसी स्थिति से सौन्दर्योपासकों को खानाबदोशी, स्वेच्छाचारिता और रूढ़िमुक्त स्वभाव की पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाती है। वर्गाकार हाथ वालों से बिल्कुल विपरीत, कोनिक हाथ वालों में भावुकता, रोमांस और आदर्शवाद के गुण कूट-कूटकर भरे होते हैं। उन्हें कलाकृतियों के प्रति आकर्षण होता है, परन्तु वे अपने कलापूर्ण विचारों को साकार करने मे असमर्थ होते हैं। परन्तु जब इस प्रकार के हाथ मे शीर्ष-रेखा सीधी हो तो ये लोग भी व्यावहारिक बन जाते हैं और ये अपने विचारो और योग्यता को कार्यान्वित करने मे सफल होते है। उन्हें यह भिज्ञता होती है कि जनता क्या चाहती है। वे कला से अधिक धन की ओर आकर्षित होते है। वे अपनी इच्छा-शक्ति और दृढ़ निश्चय से अपनी आरामतलबी के स्वभाव को दबाने मे समर्थ हो जाते हैं। जबतक झुकी हुई शीर्ष-रेखा वाला एक चित्र बना पायेगा, ये लोग दस चित्र बना लेंगे और उनको बेचने में सफल होंगे, ऐसा इसलिए होगा कि सीधी शीर्ष-रेखा उन्हें आकाश से धरती पर ले आयेगी। व्यावहारिकता कोरी कल्पना का स्थान ले लेगी।

शीर्ष-रेखा और बहुत नोकीले (psychic) हाथ

इस प्रकार के हाथ में शीर्ष रेखा अपने स्वाभाविक रूप से बहुत ही झुकी हुई होती है जिसके कारण जातक स्वप्नों की दुनिया में विचरने वाले होते हैं। इस प्रकार के हाथों मे सीधी शीर्ष रेखा बहुत कम पाई जाती है और यदि दिखाई भी दे तो वह दाहिने हाथ में होगी, बायें मे नही। यदि सीधी रेखा हो तो यह समझना चाहिये कि परिस्थितियों के कारण जातक व्यावहारिक होने को विवश हो गया है। परन्तु सीधी शीर्ष-रेखा होने पर भी इस प्रकार के हाथ मे सांसारिकता और व्यापारिकता की कमी बनी रहेगी। परन्तु कला के क्षेत्र मे ऐसी सीधी रेखा उन्हे अपनी योग्यता को प्रदर्शित करने का पूर्ण अवसर प्रदान करेगी। तब भी अपनी कला की योग्यता को व्यावहारिक और व्यापारिक रूप देने के लिए जातकों को प्रोत्साहन की बहुत आवश्यकता होगी।

हमने जो कुछ इस प्रकरण में लिखा है उससे हस्त विज्ञान के छात्र समझ गये होंगे कि यदि विभिन्न प्रकार के हाथों मे जब शीर्ष-रेखा अपना स्वाभाविक रूप परिवर्तित करे तो उसके बदले हुए गुणों का किस प्रकार अर्थ निकालना चाहिए। ऊपर जो कुछ हमने बताया है वह तो उदाहरण मात्र है। शीर्ष-रेखा अनेकों रूप धारण कर सकती है और हमारे उदाहरणो को मूलाधार मानकर, उसके विभिन्न परिवर्तनो के कारण बदले हुए गुणों को समझने का प्रयत्न करना चाहिए। शीर्ष रेखा के परिवर्तित रूपो को हाथ के अन्य चिन्हों से अधिक महत्वपूर्ण समझना चाहिये।

(9)

शीर्ष रेखा द्वारा प्रदर्शित उन्माद रोग के लक्षण

उन्माद रोग से अधिक कोई प्रवृत्ति नहीं है जिसको हाथ पूर्ण स्पष्टता से प्रदर्शित करता है—रोग चाहे वंशानुगत (hereditary) हो या परिस्थितियोंवश उत्पन्न हुआ हो, इसका संकेत देने वाले रेखा के अनेकों प्रारूप हैं जिन सबका इस पुस्तक मे वर्णन करना सम्भव नहीं है। हम यहां वही लक्षण दे रहे हैं जो सामान्यतया पाये जाते हैं।

यह बात ध्यान देने योग्य है। यदि कोई बात सीमा का उल्लंघन कर जाती है तो वह असाधारण बन जाती है। इसी प्रकार यदि शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र में असाधारण रूप से झुक जाये तो जातक की कल्पनाशीलता असाधारण और अस्वाभाविक रूप धारण कर लेती है। शीर्ष रेखा का इस प्रकार का झुकना 'कोनिक' और 'साइकिक' बनावट के हाथों की अपेक्षा निम्न श्रेणी के वर्गाकार, चमसाकार और दार्शनिक हाथों मे अधिक महत्त्व रखता है। यदि बच्चे के हाथ में शीर्ष रेखा जब उपर्युक्त रूप से सीमा का उल्लंघन कर जाती है, तो वह बड़ा होने तक चाहे कितना ही संतुलित मस्तिष्क का रहे, पर कोई भी मानसिक आघात या मन पर किसी प्रकार का तनाव या दबाव उस संतुलन को तोड़ सकता है और जातक उन्माद रोग का शिकार हो सकता है।

यदि उसी प्रकार की शीर्ष रेखा के साथ असाधारण रूप से ऊंचा शनि का क्षेत्र भी हो तो जातक में आरम्भ से ही कल्पनाशीलता होती है (प्लेट 15)। इस प्रकार के जातक में खिन्नता, निराशावादिता, चिड़चिड़ापन, उदासी और उत्साहहीनता होती है और इन गुणों मे वृद्धि निरन्तर होती रहती है और अन्त में जातक अपना मानसिक संतुलन ही खो बैठता है।

यदि झुकती हुई शीर्ष रेखा के मध्य में संकीर्ण द्वीप चिन्ह हो तो उन्माद रोग अस्थायी होता है। अधिकतर इस प्रकार का चिन्ह मस्तिष्क के किसी रोग का संकेत होता है या 'ब्रेन फीवर' (brain fever) के फलस्वरूप अस्थायी रूप से उन्माद रोग होने का सूचक होता है।

जन्म से ही जो व्यक्ति जड़ मूर्ख (idiot) हो, उसका अंगूठा बिल्कुल अविकसित और बहुत छोटा होता है और शीर्ष रेखा चौड़ी रेखाओं से बनी हुई होती है जिसमें द्वीप चिन्हों की एक शृंखला होती है जैसे वह कोई जंजीर हो।

खण्ड 3, प्रकरण 5 में हमने इस विषय में कुछ और सामग्री दी है जिसमें हाथ में पागलपन की विभिन्न अवस्थाओं के सम्बन्ध में वर्णन किया है।

हाथ द्वारा प्रदर्शित हत्या करने की प्रवृत्ति

जैसे यदि कोई व्यक्ति आवेश में आकर या अपनी रक्षा करने में किसी दूसरे की जान ले ले, तो ऐसी हत्या की हाथ में कोई द्योतकता नहीं होती। केवल कभी-कभी जब जातक की संवेदनशीलता पर उसका प्रभाव पड़ा हो तो उसका संकेत दिखाई दे सकता है। परन्तु यदि जातक में अपराध की प्रवृत्ति मौजूद हो तो कब प्रवृत्ति सक्रिय रूप धारण कर लेगी यह हाथ से जाना जा सकता है।

यह हम बता चुके हैं कि जब शीर्ष रेखा किसी दिशा में असाधारण रूप धारण कर लेती है, तो उसमें प्रभाव के असाधारण गुण आ जाते हैं, जैसे पागलपन, निराशा, अत्यधिक उदासीनता, जिसके कारण ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं कि जातक अपना जीवन समाप्त कर बैठता है। इस प्रकार के प्रभाव झुकती हुई शीर्ष रेखा से उत्पन्न होते हैं। अब हम बतायेंगे कि शीर्ष रेखा के असाधारण रूप से ऊपर उठने के क्या परिणाम होते हैं।

पाठकों को याद होगा कि शीर्ष रेखा के विवेचन के आरम्भ में हमने बताया था कि यह रेखा हाथ को दो खण्डों में विभाजित कर देती है। एक खण्ड मानसिक भावनाओं का होता है और दूसरा सांसारिकता से सम्बन्ध रखता है। सांसारिकता को अधिक प्रभाव डालने का अवसर मिलता है तो जातक अपनी इच्छा पूर्ति करने में क्रूर और पाशविक बन जाता है। अपराध की दुनिया में रहने वालों के हाथ से यह तथ्य पूर्ण रूप से प्रमाणित हो चुका है, विशेषकर जब उनमें हत्या करने की प्रवृत्ति हो (प्लेट 14)।

जब हाथ में इस प्रकार की द्योतकता होती है तो शीर्ष रेखा अपना स्वाभाविक स्थान छोड़ देती है, ऊपर उठती है और हृदय रेखा पर अधिकार कर लेती है या उससे भी ऊपर चली जाती है। प्रश्न यह नहीं है कि ऐसे लोग एक हत्या करते हैं या बीस, बल्कि इस प्रकार की रेखा उनमें अपराध करने की असाधारण प्रवृत्तियां प्रदर्शित करती है। अपनी उद्देश्य-पूर्ति के लिए वे सब कुछ करने को उद्यत हो जाते हैं और साधारण

से भड़काने से या प्रलोभन से अपनी अपराधात्मक या हत्यात्मक प्रवृत्तियों को वास्तविक रूप दे डालते हैं। इस विषय के सम्बन्ध में एक असाधारण बात यह है कि वही रेखा वर्षों पूर्व यह पूर्वाभास दे देती है कि उसकी प्रवृत्तियां कब उसके जीवन को नष्ट कर देंगी। यदि शीर्ष रेखा का हृदय रेखा से शनि क्षेत्र के नीचे मिलन हो तो उपर्युक्त घटना जातक के पच्चीस वर्ष के होने से पूर्व घटित होगी। यदि इन रेखाओं का मिलन शनि और सूर्य क्षेत्रों के मध्य के नीचे हो तो ऐसा 35 वर्ष की अवस्था से पूर्व होगा। यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे हो तो ऐसा 45 वर्ष की अवस्था से पूर्व होगा। इसी प्रकार आगे की गणना करनी चाहिए। हाथ के अध्ययन में यह एक अत्यन्त मनोरंजक और महत्त्वपूर्ण बात है और इससे प्रमाणित हो जाता है कि जब भी शीर्ष रेखा अपनी स्वाभाविक या सामान्य स्थिति से ऊपर और नीचे हो तो जातक की इस प्रकार की जन्मजात प्रवृत्तियां स्पष्ट हो जाती हैं। इस प्रकार हाथ के अध्ययन द्वारा बच्चों को और युवकों को अनुकूल समय पर उचित प्रशिक्षण दिया जा सकता है, क्योंकि शीर्ष रेखा जीवन के आरम्भ से यह सूचना दे देती है कि जातक की प्रवृत्तियां किस प्रकार की होंगी।

हम इस बात को मान्यता नहीं देते कि मंगल के क्षेत्र पर लाल रंग का क्रास चिन्ह या शनि क्षेत्र पर काला बिन्दु हत्या से मृत्यु के सूचक होते हैं।

हमारे मत के अनुसार इस प्रकार के चिन्ह उस समय के अन्धविश्वास की उपज हैं जब हस्तविद्या का अध्ययन किसी वैज्ञानिक रूप से नहीं होता था।

(10)
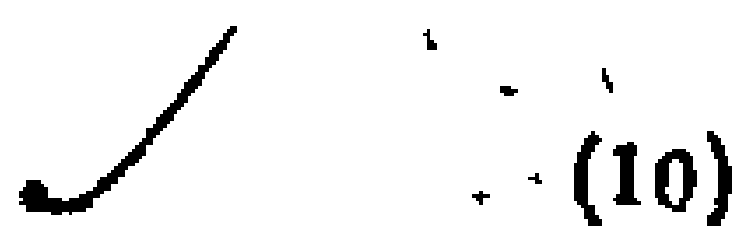
हृदय-रेखा (The Line of Heart)

हाथ के अध्ययन में हृदय रेखा को भी एक महत्त्वपूर्ण और आदर्शपूर्ण स्थान प्राप्त है। जीवन के नाटक में पुरुष का स्त्री के प्रति और स्त्री का पुरुष के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है। पुरुषों और स्त्रियों के परस्पर प्रेम की भावनाओं का परिचय हाथ से भी प्राप्त होता है और यह भूमिका अदा करती है हृदय रेखा (चित्र संख्या (13) जो वृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होकर हाथ के ऊपरी भाग में शनि और सूर्य क्षेत्रों के मूल स्थान को पार करती हुई बुध क्षेत्र के मूल स्थान तक पहुंच जाती है।

हृदय रेखा को गहरी सुस्पष्ट और अच्छे रंग की होना चाहिए। उसके आरम्भ के स्थान सब हाथों में एक समान नहीं होते। कभी वह वृहस्पति क्षेत्र के मध्य से, कभी तर्जनी और मध्यमा के बीच से और कभी शनि क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होती है।

जब यह रेखा बृहस्पति क्षेत्र के मध्य से (चित्र संख्या 20 d-d) आरम्भ हो, तो जातक आदर्श प्रेमी होता है और अपने प्रेमपात्र की पूजा करता है। ऐसी रेखा वाला जातक प्रेम में दृढ़ और विश्वसनीय होता है। उसकी यह भी आकांक्षा होती है कि जिस स्त्री को वह प्रेम करता है या करे वह महान, कुलीन और प्रसिद्ध हो। ऐसा व्यक्ति अपने स्तर से नीचे की स्त्री से कभी विवाह नहीं करता और उस व्यक्ति की अपेक्षा, जिसके हाथ में हृदय रेखा शनि क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होती है, वह बहुत कम प्रणय सम्बन्ध स्थापित करता है।

कभी-कभी हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र से या तर्जनी के नीचे से आरम्भ होती है (चित्र संख्या 20 e-e)। जब रेखा की ऐसी स्थिति हो तो उपर्युक्त गुणों में अधिकता हो जाती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति प्रेम में अन्धा हो जाता है और उसे अपने प्रेम-पात्र में कोई कमी या कमजोरी दिखाई नहीं देती। प्रेम के मामलों में प्रायः इस प्रकार के लोग दुःख भोगते हैं और धोखा भी खाते हैं। जब वे देखते हैं कि जिसको वे प्रेम करते हैं उनका वह प्रेमपात्र उतना उत्कृष्ट नहीं है जैसा वे चाहते थे या समझते थे, उनके आत्माभिमान (जो उनका प्रधान गुण है) को ऐसा आघात पहुंचता है जिसके प्रभाव से वे कभी उभर नहीं पाते।

यदि हृदय रेखा तर्जनी और मध्यमा के बीच से आरम्भ हो (चित्र संख्या 20 f-f) तो जातक प्रेम तो सच्चे मन से करता है, परन्तु शान्त रहता है और उसके लिए बेचैन या अधीर नहीं होता। ऐसे लोग बृहस्पति क्षेत्र के आदर्श और आत्माभिमान तथा शनि क्षेत्र की दी हुई उत्तेजना और गरिमा, दोनों के बीच के गुण ग्रहण करते हैं। न उनमें अधिक गरिमा होती है और न ही बृहस्पति क्षेत्र की उच्च अभिलाषा।

जब हृदय रेखा शनि क्षेत्र से आरम्भ होती है तो जातक का प्रेम वासनापूर्ण अधिक होता है और इसलिये वह अपने प्रेम के मामलो मे स्वार्थी होता है। घरेलू जीवन मे वह अपने प्रेम का उतना प्रदर्शन नही करता जितना बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखा वाले करते हैं। यदि हृदय रेखा मध्यमा के मूल स्थान से आरम्भ हो तो जातक की वासना और रतिक्रिया की ओर प्रवृत्ति अत्यधिक हो जाती है। यह मान्यता है कि वासना से वशीभूत लोग स्वार्थी होते हैं—ऐसी रेखा वालों मे यह दुर्गुण भी बहुत बढ़ जाता है।

यदि हृदय रेखा अपनी स्वाभाविक लम्बाई से अधिक लम्बी हो और करतल के एक छोर से दूसरे छोर तक चली जाये, तो प्रेम की भावनाओं मे अत्यधिकता आ जाती है और जातक में ईर्ष्या की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। यह प्रवृत्ति और भी बढ जाती है जब हृदय रेखा आरम्भ से उठकर तर्जनी के मूल स्थान मे पहुंच जाये।

जब अनेको रेखायें हृदय रेखा के नीचे से आकर उस पर आक्रमण करें (चित्र संख्या.20) तो जातक इधर-उधर प्रेम का जाल फेंकता फिरता है, वह किसी के साथ [illegible] सकता और व्यभिचारी हो जाता है।

प्लेट—8 कीरो (CHEIRO)
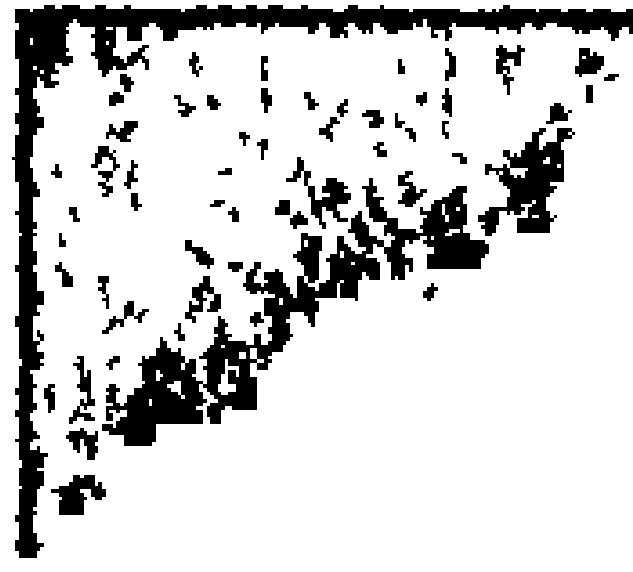
प्लेट –9 शिशु का हाथ

यदि शनि क्षेत्र से आरम्भ हुई रेखा चौड़ी और शृंखलाकार हो तो जातक पुरुष हो तो स्त्री के प्रति आकर्षित नही होता और स्त्री हो तो उसका पुरुष के प्रति कोई आकर्षण नही होता। वास्तव में वे एक-दूसरे को नफरत की दृष्टि से देखते है।

यदि हृदय रेखा चमकते हुए लाल वर्ण की होती है तो वासना हिंसात्मक हो जाती है। इसका अर्थ यह लेना चाहिये कि अपनी वासनापूर्ति के लिए जातक हिंसा (जैसे बलात्कार) भी कर सकता है।

जब हृदय रेखा नीची हो और शीर्ष रेखा के निकट हो तो हृदय मन की कार्यशीलता में (विचारों में) हस्तक्षेप करता है।

यदि हृदय रेखा फीके रंग की हो तो जातक नीरस स्वभाव का होता है और प्रेमादि में उसे विशेष दिलचस्पी नहीं होती।

यदि हृदय रेखा ऊंची हो और शीर्ष रेखा उठकर हृदय रेखा के निकट पहुंच जाये तो विपरीत फल होता है। ऐसी परिस्थिति मे हृदय की भावनाओं को मन नियंत्रित करने में समर्थ होगा और फलस्वरूप जातक हृदयहीन, ईर्ष्यालु और अनुदार होगा।

यदि हृदय रेखा छिन्न-भिन्न हो तो प्रेम में निराशा होती है। यदि शनि क्षेत्र के नीचे हृदय रेखा टूटी हो तो प्रेम सम्बन्ध (जातक की इच्छा के विरुद्ध) टूट जाता है। परिणाम में दुःख पहुंचाने वाले प्रेम का यह लक्षण है। यदि रेखा सूर्य क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो आत्माभिमान के कारण प्रेम-सम्बन्ध मे बाधा पड़ती है। यदि रेखा बुध क्षेत्र के नीचे टूटी हो तो प्रेम-सम्बन्ध मे कटुता या विच्छेद जातक की मूर्खता, लालच और विचारों की संकीर्णता के कारण होती है।

यदि हृदय रेखा वृहस्पति क्षेत्र पर दो छोटी शाखाओं (fork) के साथ आरम्भ हो (चित्र संख्या 16 J-J) तो जातक निःसन्देह सच्चे दिल का, ईमानदार और प्रेम मे उत्साही होता है।

यह देखना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हृदय रेखा हाथ में ऊंचाई या नीचाई पर स्थित है। ऊंचाई सर्वोत्तम होती है क्योंकि इससे जातक प्रसन्नचित होता है।

यदि हृदय रेखा नीची हो और शीर्ष रेखा की ओर ढलान लिए हो तो जातक को प्रेम में अप्रसन्नता प्राप्त होती है— विशेष कर जीवन के प्रथम भाग मे।

जब हृदय रेखा आरम्भ मे शाखावत् हो जाये, उसकी एक शाखा वृहस्पति क्षेत्र पर हो और दूसरी तर्जनी और मध्यमा के बीच चली गई हो तो जातक संतुलित, प्रसन्नचित्त, सौभाग्यशाली और प्रेम मे सुखी होता है। यदि एक शाखा वृहस्पति क्षेत्र पर रहे, और दूसरी शनि क्षेत्र को चली जाये तो जातक का स्वभाव अनिश्चित होता है और स्वयं अपने ही कारण वह अपने वैवाहिक जीवन को कण्टकपूर्ण बना देता है।

जब हृदय रेखा शाखाहीन हो और पतली हो तो जातक रूखे स्वभाव का होता है और उसके प्रेम में गरिमा नही होती।

यदि बुध क्षेत्र के नीचे करतल के किनारे पर जहां हृदय रेखा समाप्त होती है, उसमें शाखायें न हों तो जातक मे सन्तानोत्पादक क्षमता नहीं होती (वह सन्तान-हीन होता है)।

यदि पतली रेखायें शीर्ष रेखा से निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श करें तो यह समझना चाहिये कि वे उन व्यक्तियों का या उन प्रभावों का प्रतिनिधित्व करती हैं जिनका जातक के हृदय सम्बन्धी विषयों पर प्रभाव पड़ता है। यदि ऐसी रेखाएं हृदय-रेखा को काट दें तो वे जातक के प्रेम-सम्बन्धों पर कुप्रभाव डालकर उसे हानि पहुंचाती हैं।

यदि हृदय रेखा, शीर्ष रेखा और जीवन रेखा तीनों परस्पर जुड़ी हों तो यह एक अत्यन्त अशुभ लक्षण होता है। इस प्रकार के योग में जातक अपने प्रेम सम्बन्धों में अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिए सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

जिसके हाथ में हृदय रेखा न हो या नाम मात्र को हो तो उसमें घनिष्ट प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने की क्षमता नहीं होती। यदि हाथ मुलायम हो तो ऐसा जातक अत्यन्त वासनापूर्ण हो सकता है। यदि हाथ कठोर हो तो वासना तो नहीं होगी, परन्तु जातक प्रेम के मामलों में नीरस होगा।

यदि किसी के हाथ में अच्छी-भली हृदय रेखा हो परन्तु वह बाद मे बिल्कुल फीकी हो जाये तो ऐसा समझना चाहिये कि जातक को प्रेम में भीषण निराशाओं का सामना करना पड़ा है जिसके कारण वह हृदयहीन और प्रेम के विषय से विमुख हो गया है।

नोट—हमने हृदय रेखा के सम्बन्ध मे अन्यत्र से कुछ और सामग्री संकलित की है जो हम पाठकों के लाभार्थ नीचे दे रहे हैं।

किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अनुमान लगाने के लिए हृदय रेखा की शुक्र क्षेत्र की स्थिति के साथ परीक्षा करनी चाहिये। हृदय रेखा जातक की कामुक प्रवृत्तियों और प्रेम की भावनाओं को प्रदर्शित करती है। शुक्र क्षेत्र भी इन्हीं गुणों का द्योतक है। अगूठा और शीर्ष रेखा जातक की मनोवृत्ति, भावुकता और इच्छा शक्ति के सूचक हैं। मनुष्य के व्यक्तित्व का ज्ञान हृदय रेखा से प्राप्त होता है। यह पुरुषों और स्त्रियों के एक-दूसरे के प्रति आकर्षण को प्रकट करती है और इसी पर समाज का संविन्यास आधारित है और उससे सम्बन्धित है वह पवित्र संस्था जिसको हम विवाह कहते हैं, जिसकी रेखाएं बुध क्षेत्र पर हृदय रेखा के समानान्तर स्थित होती हैं। हिन्दुओं ने इसी कारण इस रेखा का एक नाम 'शील गुण रेखा' भी रखा है, क्योंकि इस रेखा से अधिक किसी अन्य रेखा से जातक के आचरण का ज्ञान नही प्राप्त होता।

सर्वगुण-सम्पन्न हृदय रेखा वह होती है जो सकीर्ण, गहरी, अच्छे रंग की, स्पष्ट रूप से अंकित हो और लहरदार न हो। वह लम्बी तो हो; परन्तु बृहस्पति क्षेत्र

के शिरो बिन्दु (opex) से आगे नहीं जानी चाहिये। यदि यह उस बिन्दु को पार कर जाती है तो जातक अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिये पागल हो उठता है। हस्त-विज्ञान के प्रकाण्ड पंडित Desborolles का मत है कि यदि हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र को घेरती हुई करतल के किनारे तक पहुंच जाये तो जातक अपने प्रेम में असफल हो जाने पर अपने प्राण तक दे डालता है। यह योग वास्तविक रूप धारण कर लेता है यदि अंगूठा निर्बल हो; चन्द्र क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो और शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो।

यदि हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र के मूल स्थान पर मुड़कर नीची हो गई हो तो जातक को अपने प्रेम और मैत्री सम्बन्धो मे निराश होना पड़ता है। वास्तव में ऐसे व्यक्ति सच्चे प्रेमी होते हैं; परन्तु उनका प्रेम ऐसे के साथ हो जाता है जो उनके प्रेम का प्रतिदान नहीं करता या ऐसे से जो उनके सामाजिक और आर्थिक स्तर से बहुत नीचे होता है।

जब हृदय रेखा या उसकी कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र के स्थान से नीचे की ओर मुड़कर कभी-कभी शीर्ष रेखा को छूती हुई मंगल क्षेत्र मे प्रविष्ट हो जाती है (जीवन रेखा के अन्दर की ओर) तो जातक के प्रेम सम्बन्ध मे कटुता रहती है और यदि वह विवाहित है तो उसका दाम्पत्य जीवन सुखी नही होता।

यदि हृदय रेखा और शीर्ष रेखा दोनों सीधी और समानान्तर होकर करतल को पार कर जायें तो यह समझना चाहिये कि जातक अपने आप ही में केन्द्रित है। यह एक असाधारण योग है और इसके होने पर जातक हर क्षेत्र में चरम पन्थी (extremist) होता है। ऐसे लोग अपना ध्येय प्राप्त करने मे न तो विरोध सहन कर सकते हैं और न उन्हें किसी संकट की परवाह होती है, न अपने प्राणों की।

जब हृदय रेखा की शाखाओं द्वारा बृहस्पति क्षेत्र पर त्रिशूल का चिन्ह बन जाये तो जातक अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है।

कभी-कभी (बहुत कम) ऐसा होता है कि किसी व्यक्ति के हाथ में हृदय रेखा होती ही नहीं है। ऐसे जातक पाशविक वृत्ति के होते हैं और यदि शुक्र क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो वे सदा कामोत्तेजना से उन्मत्त रहते हैं।

यदि हृदय रेखा टूटी हुई हो तो जातक जिसको तन-मन से प्रेम करता है उसको खो बैठता है और इस आघात से कभी उसका सुधार नही होता। यदि शीर्ष रेखा और जीवन रेखा निर्दोष हों तो वह जीवित रहता है, परन्तु उसका दिल टूटा ही रहता है और वह अन्धकारपूर्ण जीवन ही व्यतीत करता रहता है।

यदि हाथ में दोहरी हृदय रेखा (दो रेखायें) हों और हाथ के अन्य लक्षण शुभ हों, तो जातक पवित्र मन का और ईश्वर का भक्त होता है।

यदि कोई रेखा हृदय रेखा से निकल कर आये और भाग्य रेखा को काटती

हुई शीर्ष रेखा को स्पर्श करे, तो उस व्यक्ति की मृत्यु की सूचक होती है जिसको जातक बहुत प्रेम करता हो। कुछ का मत है कि यह पति के हाथ में पत्नी की मृत्यु का और पत्नी के हाथ में पति की मृत्यु योग है।

यदि हृदय रेखा शीर्ष रेखा की ओर इस प्रकार झुक जाये कि दोनों के बीच मे फासला बिल्कुल संकीर्ण हो जाये तो यह समझना चाहिये कि जातक में दमे के रोग की प्रवृत्ति है। इसकी पुष्टि स्वास्थ्य रेखा की निर्बलता करती है।

यदि हृदय रेखा और शीर्ष रेखा शाखाहीन हों और दोनों के बीच में अधिक फासला हो तो यह अर्थ निकालना चाहिए कि जातक दूसरों के स्नेह से वंचित रहेगा।

कलकत्ता के अत्यन्त अनुभवी हस्त परीक्षक और प्रसिद्ध लेखक डा० के० सी० सेन ने अपनी मान्यता प्राप्त पुस्तक 'हस्त सामुद्रिक शास्त्र' में यह मत प्रकट किया है कि यदि हृदय रेखा सीधी हो, अंगूठा लचीला हो, अंगुलियां पतली और नोकीली हों और शीर्ष रेखा का नीचे की ओर ढलान हो तो जातक में अप्राकृतिक और हस्त मैथुन की प्रवृत्ति होती है। यदि हृदय रेखा सीधी हो और बृहस्पति क्षेत्र पर दो शाखाओं से युक्त हो गई हो, अंगूठा सबल हो और शीर्ष रेखा सीधी स्पष्ट या कुछ झुकाव लिये हुए हो तो जातक पवित्र मन का और स्वार्थहीन होता है। वह सदाचारी होता है और केवल एक ही स्त्री से प्रेम करता है। कुत्सित सम्बन्धों से वह दूर रहता है।

यदि हृदय रेखा तर्जनी और मध्यमा के बीच से या शनि क्षेत्र से आरम्भ हो और एक गहरा मोड़ लेकर करतल के दूसरे किनारे तक पहुंच जाये तो जातक सहानुभूतिपूर्ण और सहृदय होता है। परन्तु यदि इस प्रकार की रेखा के साथ अंगूठा निर्बल हो, शुक्र मुद्रिका स्पष्ट रूप से अंकित हो, नोकीली अंगुलियां हों और झुकाव वाली शीर्ष रेखा हो तो जातक काम-वासना के वशीभूत हो जाता है और अपने ऊपर नियत्रण रखने मे असमर्थ होता है।

हृदय-रेखा के सम्बन्ध में हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

हिन्दू हस्त-शास्त्र ने हृदय-रेखा को आयु रेखा का नाम दिया है। उसके अनुसार यह बुध क्षेत्र के नीचे से आरम्भ होकर बृहस्पति क्षेत्र की ओर जाती है। 'गरुड़-पुराण', 'भविष्य पुराण', 'विवेक विलास' आदि ग्रन्थों में तथा समुद्र ऋषि, वराह मिहिर आदि सामुद्रिक शास्त्र के आचार्यों ने इस रेखा को आयु निर्णय के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण माना है। इसी कारण इसका नाम 'आयु रेखा' रखा गया।

'गरुड़ पुराण' के अनुसार आयु रेखा यदि बुध क्षेत्र से आरम्भ हो तथा तर्जनी के नीचे तक (बृहस्पति क्षेत्र को) जाये तो 100 वर्ष की आयु समझना चाहिए। समुद्र

ऋषि का मत है कि यह रेखा कनिष्ठिका से तर्जनी तक 'अक्षता' होनी चाहिये। यदि ऐसा हो तो मनुष्य 120 वर्ष तक जीवित रहता है। यदि यह रेखा मध्यमा के मूल तक जाये तो 80 वर्ष की आयु होती है। यदि अनामिका तक ही पहुंचे तो 60 वर्ष की आयु समझना चाहिए।

आचार्य वराह मिहिर का मत है कि यदि आयु रेखा तर्जनी तक जाये तो आयु 100 वर्ष की मानना चाहिये। यदि रेखा छिन्न हो तो पेड़ से गिरने का भय होता है। (अर्थात् दुर्घटना की आशंका होती है।) यदि मध्यमा तक जाये तो 75 वर्ष की आयु होगी।

'सामुद्रिक रहस्य' ने इस रेखा को 'आयु रेखा' का नाम दिया है। आयु रेखा यदि निर्मल और शुद्ध हो तो मनुष्य शान्त-चित्त और दयालु होता है। यह रेखा मलिन और शृंखलाकार हो तो मनुष्य धूर्त और ठग होता है। शाखाओं से रहित होकर यदि शनि स्थान तक जाये तो मनुष्य अल्पायु होता है। यह रेखा यदि अनामिका के मूल से उठे और सूक्ष्म हो तो मनुष्य सदा कष्ट भोगता है और अधिक परिश्रम से द्रव्योपार्जन करता है। आयु रेखा गुरु और शनि स्थान के बीच में होने से मनुष्य आजन्म सौभाग्यशाली रहता है। आयु रेखा सूर्य स्थान तक जाये और भाग्य रेखा कृश हो तो मनुष्य भाग्यहीन होता है।

यह आश्चर्य की बात है कि 'सामुद्रिक रहस्य' ने इस रेखा का नाम तो 'आयु रेखा' दिया है परन्तु इससे आयु का क्या सम्बन्ध है यह नही बताया।

अन्य हिन्दू मत

आयु कितनी होगी, आयु रेखा से इस बात का निर्णय करने के लिए यह मान लेना चाहिए कि यह बुध स्थान के नीचे करतल से आरम्भ होकर यदि तर्जनी तक पहुंच जाये तो आयु 100 वर्ष की होगी। जितनी लम्बाई कम होगी उसी अनुपात से आयु कम होगी। यदि यह रेखा केवल कनिष्ठिका तक पहुंचे तो आयु 25 वर्ष होगी। अनामिका तक पहुंचने पर 50 वर्ष, मध्यमा तक 75 वर्ष और तर्जनी तक पहुंचने से आयु 100 वर्ष होगी।

यदि आयु रेखा बायी ओर से आने वाली किसी लहरदार रेखा से काटी जाये तो जातक की मृत्यु जल में डूबने से होती है। यदि किसी सीधी रेखा से काटी जाये तो शस्त्राघात से मृत्यु होगी। यदि दाहिनी ओर से आने वाली किसी लहरदार रेखा से काटी जाये तो सर्प-दशन या अग्नि से मृत्यु होती है। यदि आयु रेखा बायी ओर दाहिनी ओर से आने वाली दो रेखाओं द्वारा काटी जाये तो मृत्यु किसी साघातिक रोग से होती है। यदि रेखा के अन्त पर अर्थात् बृहस्पति क्षेत्र पर आयु रेखा किसी लहरदार रेखा से काटी जाये तो घोड़े पर से गिरने से मृत्यु होती है। यदि आयु रेखा पर काले बिन्दु का चिन्ह हो तो विष के द्वारा मृत्यु होने की आशंका होती है।

यदि आयु रेखा मातृ-रेखा से जुड़ जाती है तो मित्रों से उत्पात की आशंका होती है।

'कर लक्षण' के अनुसार कनिष्ठिका से तर्जनी तक रेखा के अनुसार बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी और नब्बे वर्ष की आयु समझना चाहिये। कनिष्ठिका के आरम्भ में समाप्त हो जाने वाली रेखा बीस वर्ष की आयु सूचित करती है और उसके अंत तक जाने वाली तीस वर्ष की। इसी प्रकार अनामिका के आरम्भ तक जाने वाली चालीस और अन्त तक जाने वाली पचास वर्ष की आयु बताती है। मध्यमा के आरम्भ तक जाने वाली रेखा से साठ और अन्त तक जाने वाली सत्तर वर्ष आयु का संकेत देती है। तर्जनी के आरम्भ तक जाने वाली अस्सी और अन्त तक नब्बे वर्ष की आयु की सूचक होती है। कनिष्ठिका से आरम्भ होने वाली रेखा यदि तर्जनी को पार कर जाये और अखंडित हो तो सौ वर्ष की आयु समझना चाहिये।

हृदय-रेखा और हृदय-रोग

जब हृदय-रेखा शनि क्षेत्र पर जाने से पूर्व ही सहसा रुक जाये तो यह हृदय की धड़कन सहसा रुक जाने की सूचक होती है, परन्तु यदि जीवन रेखा निर्दोष और सबल हो तो हृदय रोग हो सकता है, जीवन समाप्त नहीं होता।

यदि हृदय रेखा अत्यधिक गहरी हो तो पक्षाघात तथा रक्तचाप बढ़ने का रोग होता है।

यदि हृदय रेखा बहुत चौड़ी हो तो हृदय रोग की सम्भावना होती है। प्रायः आहारादि के संयम नियम न रखने से जब हृदय समस्त शरीर का शीघ्रता के साथ रक्त वितरण नहीं कर पाता तो हृदय शिथिल हो जाने से हृदय रेखा चौड़ी और पीली हो जाती है।

यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार हो तो यह समझना चाहिये कि हृदय की क्रिया-शीलता मे अनियमितता आ गई है। ऐसी स्थिति में हृदय रोग होने की सम्भावना होती है।

भाग्य रेखा जहां हृदय रेखा को काटे, हृदय रेखा का वह भाग श्रृंखलाकार हो तो हृदय रोग होता है या दुखान्त प्रेमाधिक्य के कारण जातक के भाग्योदय तथा वृत्ति मे विघ्न पड़ जाता है।

यदि हृदय रेखा दोनों हाथों में शनि क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तो रक्त प्रवाह के दोष के कारण साघातिक बीमारी (प्राय. हृदय रोग) होती है। परन्तु यदि दोनों टुकड़े एक-दूसरे के ऊपर हों तो बीमारी के बाद जातक बच जाता है।

यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे हृदय रेखा टूटी हो तो यह चिन्ह हृदय रोग का लक्षण है। यदि दोनों हाथों में इस स्थान पर हृदय रेखा टूटी हो तो हृदय रोग के कारण मृत्यु भी हो सकती है। ऐसा चिन्ह होने पर जीवन रेखा की परीक्षा करना भी

आवश्यक है। यदि वह सबल और निर्दोष हो तो कुशल इलाज से जीवन की रक्षा हो जाती है।

यदि बुध क्षेत्र के नीचे हृदय रेखा टूटी हुई हो तो यकृत दोष के कारण हृदय अपना काम ठीक प्रकार से नही करता। ऐसी स्थिति मे कभी-कभी हृदय रोग होने की सम्भावना होती है।

यदि जीवन रेखा से कोई रेखा या रेखायें निकलकर हृदय रेखा पर आए तो हृदय रोग के कारण या प्रेम मे निराशा पाने के कारण जातक कष्ट भोगता है।

यदि हृदय रेखा को छोटी-छोटी आरी की नोकों की तरह रेखाएं आड़ी काटें तो इसे हृदय रोग का लक्षण समझना चाहिए। ऐसी स्थिति मे यकृत के ठीक काम न करने से स्नायविक विकार हो जाते हैं जिनका हृदय पर कुप्रभाव पड़ता है।

यदि हृदय रेखा पर बिन्दु चिन्ह हो तो या तो यह प्रेम मे निराशा का द्योतक है या हृदय की तेज धड़कन का (एक प्रकार का हृदय रोग)।

यदि हृदय रेखा पर लम्बा लाल दाग हो तो रक्तचाप जनित मूर्छा की आशंका होती है। रक्तचाप पर नियन्त्रण न हो तो हृदय रोग भी हो सकता है।

यदि हृदय रेखा पर छोटा-सा वृत्त चिन्ह हो तो हृदय की कमजोरी का द्योतक होता है।

अनुभव के आधार पर हम कह सकते हैं कि हृदय रेखा में टूट-फूट, द्वीप, क्रास और नक्षत्र सब हृदय रोग का पूर्वाभास देने वाले चिन्ह होते हैं। द्वीप से हृदय रोग सांघातिक नहीं होगा। द्वीप की अवधि समाप्त होने पर दशा में सुधार हो जाता है। टूट-फूट, क्रास और नक्षत्र सांघातिक हृदय रोग दे सकते हैं; परन्तु यदि जीवन रेखा सबल हो और उसमें कोई मृत्यु कारक चिन्ह न हो और भाग्य रेखा पूरी हो तो जातक मृत्यु से बच जाता है; परन्तु रोग से बिल्कुल विमुक्त नही होता।

यदि हृदय रेखा में हृदय रोग के कारण मृत्यु के संकेत हों और हाथ का रंग बहुत लाल हो तो भी मृत्यु की सम्भावना बढ जाती है, क्योंकि हाथ के बहुत लाल होने से रक्तचाप पर कुप्रभाव पड़ता है और रक्तचाप का बढ़ना और बढ़ा रहना प्रायः हृदय रोग को निमंत्रण देता है। बृहस्पति क्षेत्र यदि अत्यधिक उन्नत हो या सूर्य क्षेत्र दूषित हो और अंगुलियों के नीचे के भाग काफी मोटे हो तो रक्तचाप के बढ़ने और बढे रहने की सम्भावना रहती है।

(11)

भाग्य रेखा (The Line of Fate)

यों तो कीरो ने अपना हर प्रकरण अपनी कविता से आरम्भ किया है; परन्तु हमने उन कविताओं को अपने प्रकरणों में देना आवश्यक नही समझा; परन्तु भाग्य रेखा

के प्रकरण में जो कविता उन्होंने दी है वह अत्यन्त सरल और अर्थपूर्ण है, इसलिए उसे हम नीचे दे रहे हैं :

"And what is fate ?
A perfect law that shapes all things for good;
And thus, the men may have just reward
For doing what is right, not caring should
No earthly crown be theirs, but in accord
With what is true, and high and great.
And in the end—the part as to the whole
To shall be, in the success of all
So shall be ; in the success of all
So shall all share, for all-conscious soul
Notes even the sparrow's feeble fall.
......And such is fate.'

भाग्य रेखा (चित्र संख्या 13) भवितव्यता की रेखा (Line of destiny) और शनि रेखा के नाम से भी जानी जाती है। यह करतल में नीचे से ऊपर तक जाने वाली रेखा होती है।

इस रेखा पर विचार करने में हाथ की बनावट का अत्यन्त महत्व होता है। जैसे अत्यन्त सफल लोगो के हाथों मे, निम्न श्रेणी के, वर्गाकार और चमसाकार हाथों मे, दार्शनिक, कोनिक और बहुत नोकीले हाथों की अपेक्षा कम अंकित होती है। यह नीचे से ऊपर जाने वाली रेखा ऊपर दी हुई दूसरी श्रेणी के लिए अधिक उपयुक्त है और इसलिए उन पर कम महत्व रखती है। इसलिए यदि कोई कोनिक हाथ पर जैसा प्राय: होता है, काफी सबल भाग्य रेखा देखे, तो उसे स्मरण रखना चाहिए कि जितना सांसारिक सफलता का सम्बन्ध है, ऐसी रेखा वर्गाकार हाथ की अपेक्षा, आधा भी महत्व नही रखती। हमे यह कहते हुए दुःख होता है कि इस विशेष रूप से महत्वपूर्ण तथ्य पर अन्य लेखकों ने समुचित ध्यान नही दिया है। होता क्या है कि हस्त-विज्ञान का छात्र कोनिक या बहुत नोकीले हाथ मे लम्बी और सबल रेखा को देखकर उसे सौभाग्य और सफलता की कुंजी समझ बैठता है और वर्गाकार हाथ पर छोटी भाग्य रेखा मे यह निर्णय लेता है कि जातक को जीवन में कोई सफलता प्राप्त नहीं होगी। वास्तविकता यह है कि पहली श्रेणी के हाथों में उसका वर्गाकार हाथ की छोटी रेखा की अपेक्षा लम्बी रेखा का बहुत कम महत्व होता है। फिर आश्चर्य की क्या बात है कि गलत धारणा के कारण परीक्षक का फलादेश भी गलत निकलता।

एक विचित्र और रहस्यपूर्ण बात यह है कि दार्शनिक, कोनिक और बहुत नोकीले हाथों के स्वामी, जिनके भाग्य रेखा लम्बी और स्पष्ट रूप से अंकित होती है, भाग्य या भवितव्यता में विश्वास करने वाले होते हैं जबकि वर्गाकार और चमसाकार

हाथों के स्वामी भाग्य में नहीं, कर्म-फल में आस्था रखते हैं। इसलिए हस्त-विज्ञान के छात्र को हाथों की परीक्षा करते समय इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को सदा ध्यान में रखना चाहिए।

भाग्य-रेखा मनुष्य के सांसारिक जीवन से सम्बन्ध रखती है। हमको सफलता प्राप्त होगी या असफलता, कौन लोग हमारी जीवन वृत्ति (Career) को प्रभावित करेंगे, उनके प्रभाव शुभ होंगे या अशुभ, हमारे जीवन पथ में किस प्रकार की बाधाएं और कठिनाइयां उपस्थित होंगी, इन सबका परिणाम हमारी जीवन वृत्ति पर क्या होगा—यही सब सूचना हमें भाग्य रेखा से मिलती है।

भाग्य रेखा का उदय मुख्यतया जीवन रेखा से, मणिबन्ध से, चन्द्र क्षेत्र से, शीर्ष रेखा से या हृदय रेखा से होता है।

यदि भाग्य रेखा जीवन रेखा से आरम्भ हो और उसी स्थान से सबल हो, तो सफलता और धनादि जातक की वैयक्तिक योग्यता से प्राप्त होता है। परन्तु भाग्य रेखा बहुत नीचे मणिबन्ध के पास जीवन रेखा से जुड़ी हुई ऊपर उठे तो यह समझना चाहिए कि जातक के जीवन का आरम्भिक भाग उसके माता-पिता या सम्बन्धियों की इच्छाओं पर आधारित होगा (चित्र 20 g-g)।

यदि भाग्य रेखा मणिबन्ध से आरम्भ हो और सीधी अपने गन्तव्य स्थान अर्थात् शनि क्षेत्र तक पहुंच जाए, तो वह अत्यन्त सौभाग्य और सफलता की सूचक होती है।

यदि भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से उदय हो, तो जातक का भाग्य और सफलता, दूसरों की उसके प्रति रुचि और झुकाव और उनकी मौज पर निर्भर होती है। अर्थ यह है कि दूसरों की सहायता या प्रोत्साहन से ऐसी रेखा वाले को सफलता मिल सकती है। प्रायः राजनीतिज्ञों और सामाजिक कार्यकर्त्ताओं के हाथों में इस प्रकार की रेखा पाई जाती है।

यदि भाग्य रेखा सीधी जा रही हो और चन्द्र क्षेत्र से उठकर कोई रेखा उसमें जुड़ जाए तो यह दूसरा व्यक्ति पुरुष या स्त्री उसको उसकी जीवनवृत्ति में अपनी इच्छानुसार सफलता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करेगा। इस प्रकार के योग में और ऊपर दी हुई चन्द्र क्षेत्र से उठने वाली रेखा के सम्बन्ध में प्रश्न यह उठता है कि इनमें वैयक्तिक योग्यता और परिश्रम का कोई महत्व है या नहीं। हम तो यह समझते हैं कि वैयक्तिक योग्यता और परिश्रम के बिना दूसरों की सहायता भी निरर्थक सिद्ध होगी। इसलिए जिनके हाथ में इस प्रकार की रेखा हो उन्हें अपना प्रयास और परिश्रम आवश्यक समझना चाहिए, केवल दूसरों की सहायता पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के हाथ में चन्द्र क्षेत्र से आने वाली इस प्रकार की रेखा यदि भाग्य रेखा के पास पहुंचकर उसके साथ ऊपर की ओर चलने लगे तो यह समझना

चाहिए कि उसका किसी धनवान व्यक्ति से विवाह होगा या उस प्रकार के व्यक्ति से अपनी उन्नति के लिए सहायता प्राप्त होगी (चित्र संख्या 20 h-h)।

यदि जीवन रेखा के पथ में से किसी स्थान से कोई शाखा निकलकर शनि को छोड़कर किसी अन्य ग्रह क्षेत्र को चली जाए तो यह समझना चाहिए कि उस क्षेत्र के गुण जातक के जीवन पर प्रभुत्व रखेंगे। अर्थात् जातक का जीवन उन गुणों के अनुसार प्रगति करेगा।

यदि भाग्य रेखा स्वयं शनि क्षेत्र या किसी अन्य ग्रह क्षेत्र को चली जाए तो जातक को उस क्षेत्र के गुणों से इंगित दिशा में सफलता प्राप्त होगी।

यदि भाग्य रेखा बृहस्पति क्षेत्र को पहुंच जाए तो जातक को अपने जीवन में विशिष्टता और अधिकार प्राप्त होता है। वह प्रशासन में उच्च पदाधिकारी बनता है और उसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। राजनैतिक क्षेत्र में हो तो मंत्री, प्रधानमंत्री, राज्यपाल या राष्ट्रपति बनता है—यदि हाथ में अन्य लक्षण भी शुभ हों और सहायक हों। यदि इस प्रकार की रेखा का अन्त त्रिशूल के रूप में हो तो बहुत शक्तिशाली राजयोग बनता है।

यदि भाग्य रेखा की कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र को पहुंच जाए तो जातक की जिस अवस्था में वह जीवन रेखा से जन्म लेगी, उस समय असाधारण रूप से अपनी जीवन वृत्ति में सफलता प्राप्त होगी।

यदि भाग्य रेखा शनि क्षेत्र पर पहुंचकर मुड़े और बृहस्पति क्षेत्र में पहुंच जाए तो वह एक अति उत्तम योग होता है और जातक की महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होती हैं।

यदि भाग्य रेखा करतल को पार करके मध्यमा में पहुंच जाए तो यह एक शुभ लक्षण नहीं माना जाता; क्योंकि इसके कारण जातक हर बात में सीमा का उल्लंघन कर जाता है। जैसे यदि कोई सेना कमाण्डर हो तो उसके नीचे काम करने वाले सेनानी उद्दण्ड व्यवहार के कारण उसके आदेशों की अवहेलना करेंगे और बजाय शत्रुओं पर आक्रमण करने के अपने कमाण्डर ही पर टूट पड़ेंगे।

जब भाग्य रेखा हृदय रेखा पर ही रुक जाए तो सफलता में जातक की प्रेम भावनाओं के कारण बाधा पड़ेगी। परन्तु यदि ऐसी रेखा हृदय रेखा से जुड़कर बृहस्पति क्षेत्रों को पहुंच जाए तो अपने प्रेम सम्बन्ध की सहायता से वह अपनी उच्चतम अभिलाषा पूर्ण करने में समर्थ होगा (चित्र संख्या 19 h-h)।

यदि भाग्य रेखा शीर्ष रेखा द्वारा आगे बढ़ने से रोक दी जाए तो यह समझना चाहिए कि जातक की मूर्खता या उसकी भीषण गलती से सफलता में बाधा पड़ेगी।

यदि भाग्य रेखा मंगल के मैदान (करतल मध्य या Plain of Mars) से आरम्भ हो तो जातक को अनेकों कठिनाइयों, संघर्षों और मुसीबतों का सामना करना

पड़ता है, परन्तु यदि वह आगे बढ़ती हुई शनि क्षेत्र पर चली जाए [तो] जातक कठिनाइयों और बाधाओं पर विजय पाने में समर्थ होगा और उसका शेष जीवन बाधाहीन बीतेगा। जब रेखा इस प्रकार की हो तो जातक को सफलता कठिन परिश्रम, धैर्य और लगन के द्वारा ही मिलती है।

यदि भाग्य-रेखा शीर्ष-रेखा से आरम्भ हो तो सफलता जीवन में देर से प्राप्त होती है। ऐसे योग में भी जातक को सफलता लगन, धैर्य और परिश्रम तथा योग्यता के कारण ही प्राप्त होगी। ऐसा लगभग 35 वर्ष की अवस्था के बाद होगा।

यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा से आरम्भ हो तो जातक को सफलता कठिन परिश्रम और संघर्ष करके और भी अधिक विलम्द से प्राप्त होती है। ऐसा लगभग 50 वर्ष की आयु के बाद होगा।

जब भाग्य रेखा के आरम्भ में उसकी एक शाखा चन्द्र क्षेत्र में और दूसरी शुक्र में हो तो जातक का भाग्य एक ओर कल्पनाशीलता पर और दूसरी ओर प्रेम और आवेशात्मक भावनाओं पर आधारित होगा (चित्र संख्या 21 m m)।

जब भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न और अनियमित हो तो जातक की जीवन-वृत्ति (Career) अनिश्चित होगी और जीवन उतार-चढ़ाव से परिपूर्ण होगा।

यदि भाग्य रेखा किसी स्थान पर टूटी हो तो जहां पर टूटी हो आयु की उस अवस्था में जातक को दुर्भाग्य और आर्थिक क्षति उठानी पडती है। परन्तु यदि टूटी हुई रेखा का दूसरा भाग पहले भाग से पीछे आरम्भ हो तो जातक के जीवन में बिल्कुल नया परिवर्तन आता है, और यदि रेखा का दूसरा भाग सबल हो और स्पष्ट हो तो यह समझना चाहिए कि परिवर्तन जातक की इच्छा से हुआ है और वह अपने नये क्षेत्र में पर्याप्त सफलता प्राप्त करेगा। (चित्र संख्या 21 a-a)।

यदि भाग्य रेखा दोहरी हो तो यह एक अत्यन्त शुभ लक्षण माना जाता है। ऐसे योग में जातक दो प्रकार के विभिन्न कैरियर अपनायेगा। इस प्रकार की रेखा से सफलता अधिक प्राप्त होती है जब दो रेखायें भिन्न-भिन्न क्षेत्रों पर जाएं और प्रायः होता भी ऐसा ही है।

यदि भाग्य रेखा पर वर्ग चिन्ह हो तो जातक की व्यापार और व्यवसाय में तथा अन्य प्रकार की आर्थिक क्षति से रक्षा होती है। यदि भाग्य रेखा को स्पर्श करता हुआ वर्ग चिन्ह मंगल के मैदान में जीवन रेखा की ओर होता है तो वह घरेलू जीवन में किसी दुर्घटना का पूर्वाभास देता है (चित्र संख्या 21-b)। यदि वर्ग चिन्ह चन्द्र क्षेत्र की ओर हो तो यात्रा में दुर्घटना की सभावना होती है। इन्ही स्थानों पर यदि क्रास का चिन्ह हो तो भी वही फल होता है। यदि क्रास भाग्य रेखा पर भी हो तो वह अशुभ फलदायक होता है।

भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह दुर्भाग्य, हानि और जीवन में दुःखद परिवर्तनों का सूचक होता है (चित्र संख्या 21-d)। कभी-कभी द्वीप चिन्ह चन्द्र रेखा से आने

वाली किसी प्रभाव रेखा से जुड़ा होता है। इसका अर्थ यह होता है कि विवाह या किसी प्रेम सम्बन्ध या किसी अन्य प्रकार के दुष्प्रभाव से जातक के जीवन मे कठिनाइयां उपस्थित होती है जिससे उसको काफी हानि पहुंचती है—व्यवसाय में भी और धन मे भी। ऐसी स्थिति में जातक को कलंक भी मिल सकता है।

पाठकों को विचित्र-सा तो लगेगा परन्तु ऐसा भी देखा जाता है कि वे व्यक्ति जिनके हाथ में भाग्य रेखा का नाम भी नही होता वे अपने जीवन में काफी सफल होते हैं, परन्तु इनके जीवन में कोई विशेष चमक-दमक या सरसता नहीं होती। ये लोग खाते, पीते और सो जाते हैं। परन्तु उनको सुखी नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उनमें भावुकता नाममात्र को भी नहीं होती।

नोट—हस्त-विज्ञान के विद्वान कुछ अन्य लेखकों ने भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में कुछ और सूचना दी है जो पाठकों के लाभार्थ हम नीचे दे रहे हैं:

भाग्य-रेखा मनुष्य के जीवन में उसके भाग्य के पथ की सूचक है। निम्न श्रेणी के हाथो में, अधिकतर यह उन लोगों के हाथों मे नही पाई जाती जो भाग्य को नहीं देखते। बस, हर गुजरते क्षण के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करते हैं। उन धन कुबेरों के हाथों में भी प्राय: यह रेखा नही होती जिनको अपने दैनिक जीवन के लिए किंचित् मात्र भी चिन्ता की आवश्यकता नहीं होती। हाथ में भाग्य रेखा के होने मात्र से जातक धनी और सफल नहीं होता। ऐसा भी देखा जाता है कि लोगों के हाथो में लम्बी भाग्य रेखा होती है, तब भी वे बिल्कुल गरीब और दुर्भाग्यशाली होते हैं। ऐसे हाथों मे यह देखा जाता है कि अंगूठा, अंगुलियां और ग्रह क्षेत्र अविकसित होते हैं और वे लोग उनके शुभ प्रभावों से वंचित रह जाते हैं।

कीरो काल के बाद श्रीमती सेन्ट मेरी हिल ने हस्त-विज्ञान मे प्रसिद्धि प्राप्त की। उसके मतानुसार भाग्य रेखा के स्वामी अपनी परिस्थितियों, वंशानुगत प्रभावों और अपने स्वभाव और गुणों के वशीभूत होते हैं। उनका कैरियर उनके सम्मुख होता है। वह उसको बना सकते है या बिगाड़ सकते हैं। रास्ता उनके सामने होता है, उस पर चलकर आगे बढ़ें या नही, यह उनके ऊपर निर्भर होता है। यह तब ही होता है जब भाग्य रेखा दोनों हाथों में होती है। यदि एक हाथ मे लम्बी हो और दूसरे हाथ में टूटी हुई हो तो जातक को परिस्थितियो के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है। आड़ी रेखाओं से कटी रेखा से भाग्य रेखा का न होना श्रेयस्कर होता है।

एक अच्छी भाग्य रेखा तब ही धन, मान-सम्मान, उच्च पद या सामाजिक प्रतिष्ठा दे सकती है, जब हाथ मे नीचे दिये हुए गुण मौजूद हो।

(1) करतल समरूप से सन्तुलित हो और हाथ मे गहरा गड्ढा न हो।

(2) अंगुलियां समुचित रूप मे विकसित हों और वे लम्बी और सीधी हों। वे समतल होकर करतल से जुड़ी हों। ग्रह क्षेत्र भी समुचित रूप से उन्नत हों और निर्दोष हों।

(3) शीर्ष रेखा समरूप से अंकित हो, लम्बी, सीधी और गहरी हो और बृहस्पति क्षेत्र से उदय हुई हो और जीवन रेखा को स्पर्श करती हो।

(4) अंगूठे में इच्छा शक्ति और तर्क शक्ति का समुचित संतुलन हो।

(5) सूर्य रेखा, जिसकी सहायता के बिना सफलता मिलना कठिन होता है, भी हाथ में मौजूद हो।

(6) जिसमें शाखायें हों जो बुध, बृहस्पति या सूर्य के क्षेत्रों में जाती हों। बिना शाखा की भाग्य रेखा किसी काम की नहीं होती। वास्तव में शाखाहीन भाग्य रेखा जातक को हानि पहुंचाती है। शाखायें भी ऐसी हों जो ऊपर को जाती हों।

भाग्य रेखा यदि छोटी हो तो कैरियर में कमी की, लहरदार हो तो बेईमानी की, आड़ी रेखाओं से कटी हो तो मुसीबतों और बाधाओं की, द्वीपयुक्त हो तो आर्थिक दुर्बलताओं की और नक्षत्र युक्त हो तो दुर्घटना की सूचक होती है।

जैसा कीरो ने भी कहा है कि जब भाग्य रेखा जीवन रेखा से निकलती है तो जातक का प्रारम्भिक जीवन घरेलू प्रभावों के दबाव मे रहता है, वह स्वतंत्रता से काम करने मे असमर्थ होता है और उसे संघर्षों का सामना करना पड़ता है। योग्यता होने पर और परिश्रम करने पर भी उसको उसका समुचित फल नहीं प्राप्त होता। एक प्रकार से उसका जीवन तभी आरम्भ होता है जब भाग्य रेखा जीवन रेखा को छोड़ती है। एक बात और है। ऐसा व्यक्ति यदि किसी धनी परिवार का होता है तो उसका प्रारम्भिक जीवन सुख से व्यतीत होता है। यदि वह गरीब परिवार का हो तो उन्ही के समान रहता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति स्वतन्त्र कैरियर ग्रहण कर लेने के पश्चात् भी अपने माता-पिता या अन्य सम्बन्धियों से आर्थिक सहायता प्राप्त करते रहते हैं।

यदि भाग्य-रेखा जीवन-रेखा के अन्दर से आरम्भ होती है तो जातक का जीवन स्त्री हो तो पुरुष के, और पुरुष हो तो स्त्री के प्रेम पर आधारित होता है। वास्तव में जातक यदि स्त्री हो तो पति या प्रेमी की और पुरुष हो तो पत्नी या प्रेमिका की सहायता से जीवन व्यतीत करता है और इसका परिणाम शुभ नहीं होता।

यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा से जुड़ जाये तो प्रेम विवाह होता है और उसके कारण जातक के सौभाग्य मे वृद्धि होती है। इस प्रकार की रेखा के सम्बन्ध मे एक मत यह भी है कि यदि भाग्य-रेखा हृदय के पास रुक जाये तो जीवन की उस अवस्था में जातक के कैरियर को भीषण आघात पहुचता है या कैरियर समाप्त हो जाता है। हम इस दूसरे मत को अधिक मान्यता देते हैं क्योंकि भाग्य रेखा का गन्तव्य स्थान शनि क्षेत्र है और उससे पूर्व उसका रुक जाना भाग्य रेखा के गुणो को रुकने के स्थान पर समाप्त कर देता है।

क्षेत्र को पहुंच जाती है तो यह समझना चाहिए कि जातक पुरुष हो तो कोई स
और यदि जातक स्त्री हो तो कोई पुरुष जातक को अपने वैयक्तिक लाभ के लि
इस्तेमाल करेगा (प्रेमी, प्रेमिका या मित्र बनकर) और अपने अभीष्ट पूर्ण हो जाने प
उसका साथ छोड़ देगा।

चन्द्र क्षेत्र से निकलने वाली भाग्य रेखा के जातक, एक मत के अनुसार,
समाज में लोकप्रिय होते हैं और उन व्यवसायों में सफलता प्राप्त करते हैं जिनमें उन
जन-साधारण के सम्पर्क मे आने का अवसर प्राप्त होता है।

जब भाग्य रेखा की कोई शाखा बृहस्पति क्षेत्र को पहुंचती है तो जातक की
महत्वाकांक्षा पूर्ण होती है और उसे उत्तरदायित्व और अधिकार का पद प्राप्त होता
है। सामाजिक जीवन में भी उसको एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त होता है।

जब भाग्य रेखा की शाखा सूर्य क्षेत्र को पहुंचती है तो सार्वजनिक क्षेत्र में
जातक को सफलता, समृद्धि और ख्याति प्राप्त होती है।

यदि शाखा बुध क्षेत्र को जाती है तो जातक को व्यापार और वैज्ञानिक क्षेत्र
में आशातीत उन्नति प्राप्त होती है।

यदि भाग्य रेखा एक छाया के समान हो (धुंधली) या छोटे-छोटे टुकड़ों से
बनी हो, तो जातक को अपने जीवन में केवल असफलतायें ही मिलती हैं।

यदि एक छोटी रेखा चन्द्र क्षेत्र से आकर भाग्य रेखा में समागम कर लेती है
तो वह विवाह की सूचक होती है। यदि यह रेखा भाग्य रेखा से न मिले तो विवाह
की बातचीत चलती है; परन्तु विवाह नही होता। यदि वह भाग्य रेखा के साथ चलती
रहे तो प्रेम सम्बन्ध की सूचक होती है। यदि ऐसी रेखा भाग्य रेखा को काटकर मंगल
क्षेत्र (प्रथम) में चली जाए तो प्रेम घृणा में परिवर्तित हो जाएगा, जिसके फलस्वरूप
जातक के कैरियर को क्षति पहुंचेगी।

यदि भाग्य रेखायें दो या तीन हों और भिन्न-भिन्न ग्रह क्षेत्रों को जाती हो तो
जितनी रेखायें हों उतने ही भिन्न-भिन्न व्यवसाय जातक करेगा।

जब हाथ मे भाग्य रेखा न हो, परन्तु शीर्ष रेखा सबल हो तथा हाथ मे अन्य
लक्षण भी अनुकूल हों, तो जातक को अपनी बौद्धिक योग्यता द्वारा सफलता प्राप्त होती
है। परन्तु यदि शीर्ष रेखा और अंगूठा निर्बल हो तो जातक का जीवन बिल्कुल
साधारण रूप से व्यतीत होता है।

भाग्य रेखा पर नक्षत्र चिन्ह का होना एक अत्यन्त अशुभ लक्षण है। इसके
होने से एक धनवान व्यक्ति भी फकीर बन जाता है।

वर्ग का चिन्ह कैरियर पर आने वाले संकटो से रक्षा करता है। पर वर्ग चिन्ह
रेखा के ऊपर होना चाहिये। पाठकों को याद होगा कि कीरो के अनुसार यदि वर्ग-
चिन्ह भाग्य रेखा से चन्द्र क्षेत्र या शुक्र क्षेत्र की ओर हों तो वे शुभ
होते।

द्वीप चिन्ह आर्थिक कठिनाइयों और विश्वासघात का शिकार होने का सूचक है। यदि भाग्य रेखा के अन्त पर द्वीप चिन्ह हो तो जातक का कैरियर अत्यन्त निराशा-जनक परिस्थितियों में समाप्त होता है।

यदि शुक्र और मंगल क्षेत्र से आने वाली रेखायें भाग्य रेखा को काटें तो जातक को परेशानियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मंगल क्षेत्र की रेखायें शत्रुओं और विरोधों की सूचक होती हैं। शुक्र क्षेत्र से आने वाली रेखायें जातक के विरोधी सम्बन्धियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

ऐसा प्रायः होता है कि भाग्य-रेखा से छोटी-छोटी सूक्ष्म रेखायें निकलती हैं। कुछ ऊपर की ओर उठी होती हैं, कुछ नीचे की ओर। प्रथम श्रेणी की रेखायें शुभ फलदायक होती हैं और भाग्य रेखा को बल प्रदान करती हैं। द्वितीय श्रेणी की रेखायें अवनति सूचक होती हैं और भाग्य रेखा को निर्बल बनाती हैं।

भाग्य-रेखा के सम्बन्ध में हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

हिन्दू हस्त-शास्त्र के अनुसार मनुष्य के भाग्य को बताने वाली निम्नलिखित रेखायें और चिन्ह होते हैं—

(1) ऊर्ध्व रेखायें—जो मणिबन्ध से उठकर बृहस्पति, शनि, सूर्य या बुध क्षेत्र को जाती हैं।

(2) वृक्ष रेखा—यह वह ऊर्ध्व रेखा होती है जिसमें अनेकों शाखायें होती हैं।

(3) हल रेखा—यह रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होकर शीर्ष रेखा (मातृ रेखा) तक जाती है।

(4) मत्स्य रेखा—मछली के आकार की होती है।

(5) मगर का चिन्ह।

(6) कमल या त्रिशूल, जो भाग्य, हृदय और सूर्य रेखा पर होता है।

(7) शंख का चिन्ह—यह चिन्ह मणिबन्ध या बृहस्पति क्षेत्र पर हो तो, अत्यन्त शुभ माना जाता है।

ऊर्ध्व रेखाओं का फल इस प्रकार होता है,

(1) यदि रेखा मणिबन्ध से उठकर अंगूठे तक जाती हो तो जातक राजा होता है।

(2) यदि रेखा तर्जनी को जाती है तो जातक राजकुमार या मंत्री होता है।

(3) यदि रेखा मध्यमा को जाती है तो जातक एक प्रसिद्ध और प्रतिभाशाली नेता या सेनाध्यक्ष होता है।

(4) यदि रेखा अनामिका को जाती है तो जातक अत्यन्त धनवान और वाहनों से युक्त होता है।

(5) यदि रेखा कनिष्ठिका को जाती है तो जातक एक महान् पुरुष बनता है और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

ऊर्ध्व रेखायें ही भाग्य रेखा कहलाती हैं। यदि भाग्य रेखा चारों अंगुलियों की ओर जाये (शाखाओं के द्वारा) तो जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है, उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं और वह एक अत्यन्त उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन होता है। वह बहुत सौभाग्यशाली होता है। इसके अतिरिक्त जातक ज्ञानी-मानी और विद्वान् होता है और अनेकों उस पर आश्रित होकर अपना उदर पालन करते हैं।

यह रेखा उपर्युक्त फल तभी देती है जब अच्छे रंग की हो, स्पष्ट रूप से अंकित हो, छिन्न-भिन्न न हो और उसमें और भी किसी प्रकार का दोष न हो।

जब किसी की जन्म कुण्डली में शनि (यदि सगेश न हो) प्रथम, चतुर्थ, अष्टम या दशम में हो तो हमने देखा है कि भाग्य रेखा कई स्थानों पर आड़ी रेखाओं से कटी होती है, जिस कारण कैरियर में विघ्न और बाधायें उपस्थित होती हैं।
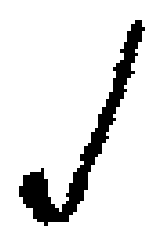
(12)

सूर्य रेखा (The Line of Sun)

सूर्य-रेखा (चित्र संख्या 13) को प्रतिभा रेखा और सफलता रेखा भी कहते हैं। इसके प्रभाव और गुणों में भी भाग्य रेखा के समान, हाथ की बनावट के अनुसार भिन्नता होती है। ऐसा देखा गया है कि दार्शनिक, कोनिक और अत्यन्त नोकीले हाथ में भारी रूप से अंकित होती है; परन्तु उतनी प्रभावशाली नहीं होती जितनी वह वर्गाकार और चमसाकार हाथों में होती है। इसलिए जो नियम इस सम्बन्ध में भाग्य रेखा के विषय में दिये जा चुके हैं, वे सूर्य रेखा पर भी लागू होते हैं।

सूर्य-रेखा एक अच्छी भाग्य-रेखा से प्रदत्त सफलता में वृद्धि करती है और जातक को प्रसिद्धि और विशिष्टता दिलवाती है। परन्तु यह तभी होता है जबकि वह हाथ की अन्य रेखाओं से इंगित कैरियर और कार्यक्षेत्र के अनुसार हो। यदि ऐसा न हो तो वह जातक की उस मनोवृत्ति से सम्बन्ध रखती है जो कला की ओर झुकी होती है।

सूर्य-रेखा के आरम्भ होने के मुख्य स्थान हैं—जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र, मंगल का मैदान (करतल मध्य), शीर्ष और हृदय रेखा।

यदि हाथ में कलाप्रियता के लक्षण हों, तो सूर्य रेखा के जीवन रेखा से आरम्भ होने से यह ज्ञात होता है कि जातक पूर्णरूप से सौन्दर्योपासक होगा। यदि अन्य रेखायें शुभ हों तो ऐसे जातक को कला क्षेत्र में काफी सफलता प्राप्त होती है।

प्लेट—10 मैडम सारा बर्नहार्ट

प्लेट 11 डेम मेल्बा (आस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध गायिका)

यदि सूर्य-रेखा भाग्य-रेखा से आरम्भ हो तो वह भाग्य-रेखा से व्यक्त सफलता में वृद्धि करती है और आयु के उस वर्ष से जब यह रेखा भाग्य रेखा से उठे तो जातक को अधिक विशिष्टता और कैरियर में उन्नति प्राप्त होती है। किसी भी व्यक्ति के लिए यह एक विशिष्ट राज योग के समान गुणकारी है।

इस रेखा को प्रतिभा रेखा या सफलता रेखा कहना बहुत उपयुक्त होगा। शीर्ष रेखा द्वारा प्रदर्शित योग्यता और मनोवृत्ति तथा हाथ की श्रेणी को ध्यान में रखकर यह निश्चय किया जा सकता है कि यह रेखा कला के क्षेत्र में सफलता देगी या जातक को धनवान और समृद्ध बनाने में सहायता देगी।

यदि यह रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ हो तो विशिष्टता और सफलता दूसरों की सहायता के ऊपर निर्भर होती है। ऐसी रेखा से सफलता सदा निश्चित नही होती क्योंकि जातक उन लोगों के सहयोग पर निर्भर होता है जिनके सम्पर्क में वह आता है (चित्र संख्या 21 e-e)।

यदि शीर्ष रेखा चन्द्र क्षेत्र पर झुकी हो तो सफलता प्रायः काव्य, साहित्य उपन्यास लिखने जैसे विषयों में होती है जिनमे प्रेरणा कल्पनाशीलता से मिलती है।

यदि सूर्य-रेखा करतल मध्य से आरम्भ हो तो कठिनाइयों और संघर्ष के पश्चात् सफलता प्राप्त होती है।

यदि सूर्य-रेखा शीर्ष-रेखा से आरम्भ हो तो जातक को केवल अपनी बौद्धिक योग्यता के आधार पर सफलता प्राप्त होती है, परन्तु यह सफलता जीवन के दूसरे भाग में (लगभग 35 वर्ष के बाद) मिलती है।

यदि सूर्य रेखा हृदय रेखा से आरम्भ हो तो जातक को विशिष्टता और प्रतिभा जीवन के अन्तिम भाग में (लगभग 50 वर्ष के बाद) प्राप्त होती है।

यदि अनामिका लम्बाई मे मध्यमा के बराबर हो और सूर्य रेखा भी लम्बी हो तो जातक अपनी योग्यता, धन और जीवन में प्राप्त अवसरो के साथ जुआ खेलेगा। हर काम मे रिस्क लेने का गुण ऐसे लोगो की नस-नस में भरा होता है।

सूर्य रेखा की मुख्य विशेषता यह होती है कि यदि स्पष्ट रूप से अंकित हो तो जातक में संवेदनशीलता के प्रति बहुत प्रवृत्ति होती है, परन्तु यदि हाथ मे शीर्ष रेखा बिल्कुल सीधी हो तो इन लोगो मे (ऐसी रेखाओं वालों में) धनवान होने तथा सामाजिक क्षेत्र मे मान-सम्मान और अधिकार प्राप्त करने के प्रति बहुत झुकाव बढ़ जाता है।

यदि सूर्य क्षेत्र पर अनेको रेखायें हों तो जातक अत्यन्त कला-प्रिय तो होता है, परन्तु उसके मस्तिष्क में इतनी कल्पनाओं और योजनाओं की भरमार होती है कि वह किसी को भी कार्यान्वित नही कर पाता (चित्र संख्या 21)।

इस रेखा पर नक्षत्र का होना एक अत्यन्त शुभ लक्षण माना जाता है। इसके

होने से जातक को चिरकालीन प्रतिभा, सुख, सौभाग्य और सफलता निश्चित रूप
प्राप्त होती है।

सूर्य रेखा पर यदि वर्ग चिन्ह हो तो जातक की मान-प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाने का प्रयत्न करने वाले उसके विरोधियों और शत्रुओं से उसकी रक्षा होती है (चित्र सख्या 21-g)।

यदि सूर्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो तो द्वीप की अवधि तक जातक पदच्युत होता है और उसकी मान-मर्यादा को क्षति पहुंचती है। द्वीप के अदृश्य हो जाने पर यदि रेखा सबल बनी रहे तो वह अपनी मान प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त कर लेता है (चित्र संख्या 21-h)।

यदि सूर्य रेखा पर गड्ढा हो तो वह बिल्कुल बलहीन हो जाती है।

यदि हाथ में सूर्य-रेखा न हो तो जातक कितना भी परिश्रम करे उसकी योग्यता को मान्यता नहीं प्राप्त होती। ऐसे लोग यद्यपि मान-सम्मान के अधिकारी और योग्य होते हैं, परन्तु उससे वंचित रह जाते हैं। सम्भव है उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी कद्र हो, परन्तु जब तक वे जीवित रहते हैं उनको अपने गुणों का और योग्यता और परिश्रम का पारितोषिक नहीं मिलता।

नोट—अब हम सूर्य रेखा के सम्बन्ध में कुछ और महत्त्वपूर्ण तथ्य नीचे दे रहे हैं—

सूर्य रेखा उन गरीब लोगों के हाथ में नहीं पाई जाती जिनके अस्तित्व को भी समाज स्वीकार नहीं करता। भाग्यवानों के हाथ में ही सूर्य रेखा होती है। यह इस बात का संकेत देती है कि जातक का स्वभाव और उसके गुण असाधारण होंगे और उसका कैरियर विशिष्ट और सुव्यवस्थित होगा और उसकी योग्यता को मान्यता प्राप्त होगी।

सूर्य-रेखा सौभाग्य की सूचक होती है और ऐसा भी होता है कि वे व्यक्ति जिनके हाथ में निर्बल शीर्ष और भाग्य रेखायें और निर्बल अंगूठा और अंगुलियां हो वल सूर्य रेखा के बल पर अपने से अधिक योग्य लोगों से बाजी मार ले जाते हैं।

क्योंकि सूर्य-रेखा सूर्य क्षेत्र पर समाप्त होती है, इसलिए बहुधा ऐसी रेखा वाले व्यक्ति प्रसन्नचित और उत्साहपूर्ण होते हैं। वे दूसरों का मन जीत लेते हैं क्योंकि उनके व्यक्तित्व मे आकर्षण शक्ति होती है। वे लोग कलाकार न हों, परन्तु कलाप्रिय अवश्य होते हैं और वे सुन्दरता के बीच में रहना पसन्द करते हैं। सूर्य रेखा ऐसे व्यक्तियों के हाथ में देखी जाती है जिन्होंने बड़ी-बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों का ामना किया हो, परन्तु अपने कैरियर मे वे प्रमुख और असाधारण रहे हों।

हाथ मे सूर्य रेखा होने का यह अर्थ नहीं लेना चाहिए कि हर एक ऐसा व्यक्ति जा बन जायेगा। वास्तव मे सूर्य रेखा धन उतना नहीं देती है जितनी वह मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि या दूसरों के मुकाबले में प्रमुखता देती है। इसलिये

के स्तर को देखकर कहना चाहिए। यदि कोई संसद सदस्य हो तो बलवान सूर्य रेखा उसे मन्त्री या प्रधानमन्त्री बना सकती है। यदि कोई अधिकारी हो तो उच्च से उच्च पद तक पहुंच सकता है। यदि कोई व्यापारी हो तो वह व्यापार के क्षेत्र मे प्रमुख बन सकता है, परन्तु यदि कोई साधारण मजदूर हो तो यही समझना चाहिए कि वह मजदूरों का प्रमुख या ठेकेदार बन सकता है। यद्यपि ऐसे भी बहुत उदाहरण पाये जाते हैं कि फैक्ट्री का एक साधारण कर्मचारी अपनी योग्यता द्वारा उसका स्वामी बन गया। कई देशों में ऐसे राष्ट्रपति हुए हैं जिन्होंने अपना कैरियर सड़कों पर समाचार-पत्र बेचकर आरम्भ किया था। ऐसे व्यक्तियों के हाथों मे सूर्य रेखा का प्रबल प्रभाव अवश्य रहा होगा और हाथ के अन्य लक्षण भी अत्यन्त शुभ होंगे, परन्तु यह याद रहे कि इस प्रकार के संघर्ष करके उन्नति करने वालों के हाथ में सूर्य रेखा प्रायः करतल मध्य से आरम्भ होती है। कहा जाता है कि विश्वविख्यात उद्योगपति हैनरी फोर्ड इसी श्रेणी के व्यक्ति थे।

यह रेखा सफलता की रेखा भी कहलाती है और समृद्धि देने वाली होती है। यह आवश्यक नही कि ऐसी रेखा वालों में सफलता और समृद्धि प्राप्त करने की योग्यता भी हो।

यदि बुध और बृहस्पति के क्षेत्र समुचित रूप से विकसित हों और उन पर उनको दूषित करने वाले कोई चिन्ह न हो, अंगुलियां भी ठीक हो तो हाथ में स्पष्ट गहरी और पूर्ण सूर्य रेखा जातक को असाधारण योग्यतायें, बौद्धिक क्षमता, निपुणता, बुद्धिमानी और उच्चाभिलाषा प्रदान करती है जिसके द्वारा जातक महान सफलता प्राप्त करता है। यदि शुक्र और चन्द्र के क्षेत्र शुभ हों और सूर्य रेखा सबल हो तो साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले व्यक्ति को सफलता और ख्याति प्राप्त होती है।

सूर्य-रेखा का भाग्य-रेखा से निकलना बहुत शुभ होता है। जब ऐसा योग हो तो जीवन में सफलता अप्रत्याशित तथा असाधारण और विस्मयजनक रूप से आती है। जिस समय पर वह रेखा भाग्य रेखा से उठती है उसी समय सफलता का क्रम आरम्भ हो जाता है। कुछ विद्वानों का मत है कि ऐसे योग से सफलता परिश्रम से मिलती है। हमारा अनुभव यह सिद्ध करता है कि यदि यह रेखा न हो तो जातक को सफलता के लिये परिश्रम करना पड़ता है, इस रेखा के होने में परिश्रम में सौभाग्य का मिश्रण हो जाता है। इस रेखा के बिना सफलता मिलने में विलम्ब भी होता है। जीवन रेखा से सूर्य रेखा के निकलने से भी जातक को असाधारण रूप से सफलता प्राप्त होती है और वह जिस व्यवसाय में भी हो शिखर पर पहुंच जाता है।

यदि सूर्य रेखा मंगल के क्षेत्र (बुध क्षेत्र के नीचे वाला) से उदय होती है तो जातक सेना में उच्च पद प्राप्त करके मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

यदि सूर्य रेखा स्वास्थ्य रेखा से (इसको कुछ विद्वान बुध रेखा भी कहते हैं)

निकले तो जातक में व्यापारिक योग्यता आ जाती है और इसी क्षेत्र में वह सफलता प्राप्त करता है।

कीरो के मतानुसार (जो हम ऊपर दे चुके हैं) सूर्य रेखा यदि चन्द्र क्षेत्र से उठे तो जातक को सफलता के लिये दूसरों की सहायता पर निर्भर होना पड़ता है। इस सम्बन्ध में कीरो काल के बाद के अनुभवी विद्वानों ने यह मत प्रकट किया है कि ऐसी रेखावालों को सफलता अपनी योग्यता के अनुसार मिलती है। ऐसे लोग जनता के सम्पर्क में रहने के कारण लोकप्रिय होते हैं और अपने परिवार के बाहर के लोगों से उन्हें सहायता प्राप्त होती है। प्राय: स्त्रियों की सहायता से भी उनको उन्नति मिलती है। विद्वानों का मत है कि इस प्रकार की रेखा से वैदेशिक व्यापार में भाग्य बनता है। ऐसी रेखा प्राय: आयात और निर्यात करने वाले व्यापारियों, वकीलों, बैरिस्टरों, डाक्टरों और राजनैतिक नेताओं के हाथ में पाई जाती है।

यदि रेखा मंगल क्षेत्र (प्रथम जीवन रेखा के अन्दर) से उदय हो तो जातक को सफलता केवल कठिन परिश्रम से ही मिलती है। सौभाग्य ऐसी रेखावालों को बिल्कुल सहायता नही देता (ऐसे लोगों को विरासत में धन या सम्पत्ति कभी नहीं मिलती)। यदि ऐसी रेखा कटी हुई हो, लहरदार हो या द्वीप युक्त हो तो जातक को जीवन-भर दुर्भाग्य का ही सामना करना पड़ता है।

यदि सूर्य रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में सूर्य क्षेत्र पर समाप्त हो, तो जातक को असफलता ही प्राप्त होगी।

यदि सूर्य रेखा शनि क्षेत्र मे समाप्त हो तो जातक को सफलता मिली भी तो वह सूर्य क्षेत्र पर पहुंचने वाली रेखा की अपेक्षा बहुत कम होगी जिसके कारण जातक हतोत्साह हो जायेगा।

यदि सूर्य रेखा बुध क्षेत्र पर समाप्त हो तो जातक हर कार्य धन प्राप्ति के दृष्टिकोण से करेगा। यदि वह चित्रकार है तो अपने चित्रों से धन अर्जित करने का प्रयास करेगा। यदि वह लेखक है तो प्रसिद्धि में कम, धन अर्जित करने मे अधिक रुचि लेगा। यदि सूर्य रेखा त्रिशूल के रूप मे समाप्त हो तो एक शाखा सूर्य क्षेत्र पर हो, दूसरी बुध क्षेत्र पर और तीसरी शनि क्षेत्र पर तो जातक को अतुल धन प्राप्त होता है और उतनी ही प्रसिद्धि भी। शनि क्षेत्र के प्रभावानुसार उसे अचल सम्पत्ति (भूमि, मकान) भी प्राप्त होती है।

यदि सूर्य रेखा का अन्त दो लहरदार शाखाओं के रूप में हो तो सब महत्वाकांक्षायें मिट्टी में मिल जाती हैं।

यदि सूर्य रेखा त्रिशूल के रूप में सूर्य क्षेत्र ही पर समाप्त हो तो धन, प्रसिद्धि मान-सम्मान सब-कुछ प्राप्त होता है।

यदि सूर्य क्षेत्र पर समाप्त होने पर सूर्य रेखा के अन्त पर नक्षत्र चिन्ह हो तो धन, मान-प्रतिष्ठा सब-कुछ मिलता है पर मन मे शान्ति नही होती।

यदि सूर्य रेखा में ऊपर उठती हुई सूक्ष्म शाखायें हों जो उसे एक वृक्ष का रूप दे दें तो असाधारण रूप से सफलता प्राप्त होती है और सौभाग्य जातक के चरण चूमता है। नीचे की ओर जाने वाली शाखायें असफलता, निराशा और अवनति की सूचक होती हैं।

यदि सूर्य रेखा को विवाह रेखा काट दे, तो वैवाहिक सम्बन्ध के कारण जातक की मान-प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है। यदि विवाह की रेखा या उसकी कोई शाखा सूर्य रेखा से मिल जाती है (काटती नही) तो जातक का विवाह किसी प्रतिष्ठित परिवार की स्त्री से होता है।

यदि शुक्र क्षेत्र से आने वाली कोई रेखा सूर्य रेखा को स्पर्श करती है (काटती नहीं), तो सफलता और आर्थिक उत्थान जातक को अपने परिश्रम या अपने परिजनों की सहायता से प्राप्त होता है। यदि ऐसी रेखा सूर्य रेखा को काट दे तो परिजनों के विरोध के कारण जातक की बदनामी होती है और उसे धन की हानि उठानी पड़ती है।

यदि सूर्य रेखा के हृदय रेखा को काटने के स्थान पर काला बिन्दु होता है तो उस अवस्था में जातक के दृष्टिहीन होने की सम्भावना होती है।

यदि सूर्य रेखा पर बुध क्षेत्र की ओर क्रास का चिन्ह हो तो यह समझना चाहिए कि जातक में व्यापारिक योग्यता न होने के कारण सफलता नहीं प्राप्त होगी। यदि ऐसा चिन्ह शनि क्षेत्र की ओर हो तो जातक का स्वभाव गम्भीर होता है और उसका मन पवित्र होता है। उसकी प्रवृत्ति भी धर्म की ओर होती है।

यदि सूर्य रेखा के दोनों ओर उसके समानान्तर गहरी रेखायें चलती हों तो वे असीमित सफलता की सूचक होती है।

यदि शुक्र क्षेत्र से आकर कोई रेखा सूर्य रेखा के बराबर चलने लगे तो वह किसी सम्बन्धी से विरासत में धन-सम्पत्ति मिलने की सूचक होती है।

हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

सूर्य रेखा भी एक प्रकार की ऊर्ध्व रेखा है जो अनामिका के नीचे समाप्त होती है। इसे धर्म रेखा नाम भी दिया गया है। यह रेखा पद और सासारिक सुख और सुविधायें प्राप्त कराने वाली होती है।

कुछ हिन्दू विद्वानों के अनुसार यह रेखा मणिबन्ध या अन्य स्थान से नहीं, वरन् सूर्य क्षेत्र से आरम्भ होकर नीचे की ओर जाती है। जब यह सूर्य क्षेत्र से आरम्भ हो और गहरी हो तो यह ज्ञान या विद्या या सरस्वती रेखा का नाम धारण करती है और ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त ज्ञानवान और विद्वान होता है। सूर्य-क्षेत्र को भी उन विद्वानों ने [illegible]

आधुनिक हस्त-विज्ञान के अनुसार सूर्य-रेखा और भाग्य-रेखा के फलों में समानता।

एक मत यह है कि क्योंकि सूर्य रेखा बहुत-से हाथों में होती नही, बहुत-से हाथों में होती है; किन्तु अस्पष्ट और छोटी। इस प्रकार सूर्य रेखा एक प्रकार से भाग्य रेखा की सहायक रेखा होती है। यदि भाग्य रेखा टूटी हो और सूर्य रेखा पुष्ट हो तो भाग्य रेखा के दोष को कम करती है। जिस अवस्था में भाग्य रेखा टूटी हो, उसी अवस्था में सूर्य रेखा पुष्ट और सुन्दर हो तो निश्चयपूर्वक यह कहा जा सकता है कि जातक का वह जीवनकाल, भाग्य रेखा के टूटे रहने पर भी यश और मान से पूर्ण होगा। भाग्य रेखा के खण्डित होने पर, उसके पास कोई सहायक समानान्तर रेखा थोड़ी दूर चलकर खण्डित होने के दोष को जितना दूर करती है, उसकी अपेक्षा स्वतंत्र सूर्य रेखा का इस काम मे कहीं अधिक महत्त्व है। जिसके हाथ में भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा दोनों लम्बी और सुन्दर हों, तो निश्चय ही वह समाज मे अग्रगण्य होगा। किन्तु यदि एक भी रेखा पूर्ण और सुन्दर हो तो जातक अन्य साधारण व्यक्तियो की अपेक्षा विशेष महत्वशाली जीवन व्यतीत करेगा। भाग्य रेखा और सूर्य रेखा दोनो जीवन मे महत्व और उत्कर्ष, भाग्य-वृद्धि और प्रतिष्ठा प्रकट करती हैं। बस, दोनों मे एक विशेप अन्तर यह है कि भाग्य रेखा में सौभाग्य की वह मात्रा नही होती जो सूर्य रेखा प्रदान करती है। यश, मान और प्रतिष्ठा भी सूर्य रेखा के न होने से अपेक्षाकृत कम प्राप्त होते हैं। इसलिए जीवन मे कुछ बनने के लिए भाग्य-रेखा के साथ सूर्य रेखा का होना भी अत्यन्त आवश्यक है।

(13)

स्वास्थ्य रेखा (The Line of Health)

मृत्यु का कारण बन जाते हैं ।

स्वास्थ्य रेखा (चित्र संख्या 13) वही अच्छी मानी जाती है जो एक सीधी रेखा के रूप में नीचे की ओर जाती है ।

हाथ में स्वास्थ्य रेखा का न होना, बहुत शुभ माना जाता है । इसके न होने से जातक का स्वास्थ्य सबल होता है और शरीर की गठन पुष्ट होती है । जब रेखा होगी तो उसमें स्वास्थ्य बिगाड़ने के दोष भी होंगे, जब रेखा हो ही नही तो दोषों का प्रश्न ही नहीं उठेगा ।

जब यह रेखा करतल को पार करके किसी स्थान पर जीवन रेखा को स्पर्श करे तो यह समझना चाहिये कि शरीर में किसी रोग ने जड़ जमा ली है जिसके कारण स्वास्थ्य और शरीर की गठन पर कुप्रभाव पड़ेगा (चित्र 17 k-k) ।

यदि स्वास्थ्य रेखा बुध क्षेत्र के नीचे हृदय रेखा से आरम्भ हो और नीचे आकर जीवन रेखा को काट दे तो इसे हृदय की कमजोरी या हृदय रोग का पूर्वाभास समझना चाहिए । यदि रेखा फीकी और चौड़ी हो तो हृदय की कमजोरी और रक्त-संचार में दोष की सूचक होती है । यदि यह रेखा लाल रंग की हो और नाखून छोटे और चपटे हों तो यह समझना चाहिये कि हृदय का रोग सक्रिय है । यदि यह रेखा स्थान-स्थान पर लाल रंग की हो तो जिगर विकार की सूचक होती है ।

यदि यह रेखा उमठी हुई अनियमित हो तो पित्त दोष और जिगर की खराबी की सूचक होती है ।

यदि स्वास्थ्य रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है (चित्र संख्या 19 i-i) ।

यदि स्वास्थ्य रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों और नाखून बादाम की तरह उठे हुए हों तो यह छाती और फेफड़ों की कमजोरी की ओर संकेत करती है (चित्र संख्या 20 i-i) ।

यदि स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट रूप से अंकित होकर शीर्ष और हृदय रेखाओं से मिलती हो, और किसी स्थान पर न हो तो मानसिक ज्वर (Brain fever) होने की सम्भावना होती है ।

यदि स्वास्थ्य रेखा आड़ी न जाकर सीधी नीचे उतर जाये तो अशुभ नही होती । ऐसी स्वास्थ्य रेखा अत्यन्त सबल शारीरिक गठन नही देती, परन्तु स्वास्थ्य को सामान्य रूप से ठीक रखती है ।

यद्यपि स्वास्थ्य रेखा से स्वास्थ्य के सम्बन्ध में सूचना मिलती है, परन्तु जीवन रेखा, शीर्ष रेखा और हृदय रेखा से अधिक स्वास्थ्य सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त होता है । इस विषय में आवश्यक सामग्री हम इन रेखाओं वाले प्रकरणों में दे चुके हैं । इन रेखाओं पर रोग के चिन्ह दिखाई दें तो स्वास्थ्य रेखा पर भी दृष्टि डाल लेने से लाभ होता है ।

नोट—हम स्वास्थ्य रेखा के सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त लाभदायक सामग्री नीचे दे रहे हैं :—

कीरो का मत है कि स्वास्थ्य रेखा बुध के क्षेत्र से आरम्भ होकर नीचे की ओर आती है। कीरो से पूर्व एक प्रसिद्ध हस्त-विज्ञान के विद्वान हुए हैं—सेन्ट जरमेन। उनका मत है कि स्वास्थ्य रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होती है और वह यदि पूर्ण हो तो बुध क्षेत्र तक पहुंचती हैं। हमें कीरो का मत अधिक युक्तिसंगत लगता है, क्योंकि रेखा यदि मणिबन्ध से आरम्भ हो और उसका मुख बुध क्षेत्र की ओर हो तो उसका जीवन रेखा से सगम नहीं हो सकता।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा से जुड़ी न हो और मणिबन्ध की रेखायें स्पष्ट रूप से अंकित हों तो जातक दीर्घायु होता है और उसकी शारीरिक गठन में रोगों को दबाने की संचित क्षमता होती है। यदि चन्द्र क्षेत्र उन्नत हो और स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट रूप से अंकित हो तो जातक को समुद्री यात्राओं के अवसर मिलते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा लाल रंग की हो और शीर्ष रेखा पर काले बिन्दु या धब्बे हों तो जातक प्रायः ज्वर से पीड़ित होता है। यदि यह रेखा मोटी और भारी हो तो जातक अनेक रोगों का शिकार बनता है—विशेषकर जब जीवन रेखा शृंखलाकार हो।

जब गहरी स्वास्थ्य रेखा शीर्ष रेखा से नीचे की ओर जीवन रेखा की ओर जाती है तो यह समझना चाहिए कि स्नायुमंडल पर बहुत दबाव पड़ा है। ऐसी परिस्थिति में जातक को अपने स्वास्थ्य पर ध्यान रखना आवश्यक होता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा या उसकी कोई शाखा जीवन रेखा को स्पर्श करती हो तो उसको गम्भीर बीमारी का और यदि दोनों रेखायें मिल जाती हों तो मृत्यु का पूर्वाभास समझना चाहिए।

यदि स्वास्थ्य रेखा मे कोई द्वीप हो जो कि शीर्ष रेखा के ऊपर पड़ता हो तो नजले का और गले का रोग होता है।

यदि इस प्रकार का द्वीप इतना बड़ा हो कि शीर्ष रेखा के ऊपर और नीचे दोनों ओर हो तो फेफड़ों और छाती के रोगों की सम्भावना होती है—विशेषकर जब नाखून लम्बे, संकीर्ण और बादाम के आकार के हों और उन पर धारियां हों। ऐसी स्थिति मे 'न्यूराइटिस' (Neuritis) नाम की स्नायुओं की बीमारी की आशंका होती है।

जब स्वास्थ्य रेखा अनियमित रूप से बनी हो या लहरदार हो और उस पर लाल या नीले रंग के धब्बे हों तो वह हृदय रोग की सूचक होती है।

यदि दोनों हाथो मे स्वास्थ्य रेखा और शीर्ष रेखा एक-दूसरे को काटकर क्रास का रूप धारण करें तो जातक को निगूढ़ विद्याओं (Occult sciences) में योग्यता प्राप्त होती है।

यदि शीर्ष रेखा, स्वास्थ्य रेखा और भाग्य रेखा द्वारा त्रिकोण बन जाये तो जातक को अतीन्द्रिय और दिव्य दृष्टि प्राप्त होती है और निगूढ़ विद्याओं के प्रति उसे रुचि होती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई शाखा सूर्य क्षेत्र को जाये तो जातक को व्यापार से लाभ देने वाला परिवर्तन होता है (यहां पर स्वास्थ्य रेखा बुध रेखा का कार्य करती है)।

यदि स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक में सन्तानोत्पादन की शक्ति नहीं होती।

यदि हाथ में सूर्य रेखा न हो, भाग्य रेखा कटी-फटी हो और स्वास्थ्य रेखा द्वीप युक्त हो तो जातक दीवालिया होता है।

हिन्दू हस्त-शास्त्र के विद्वानों ने स्वास्थ्य रेखा के विषय में कुछ नहीं बताया है। उनके अनुसार तो एक ऊर्ध्व रेखा होती है जो मणिबन्ध से बुध क्षेत्र को जाती है। उसके पूर्ण और सबल होने से जातक को आशातीत सफलता प्राप्त होती है। उन विद्वानों ने इस रेखा का स्वास्थ्य से कोई सम्बन्ध होने का संकेत नहीं दिया है।

एक स्वस्थ हाथ के लक्षण

अच्छा स्वास्थ्य देने वाला हाथ वह होता है जिसमें निम्नलिखित लक्षण हों—

(1) बनावट सुघड़ हो और कोई भी भाग असाधारण रूप से उन्नत न हो।

(2) करतल दृढ़ और लचीला हो।

(3) त्वचा साफ हो—सूखी हो—उसमें नमी न हो (पसीना न आता हो)।

(4) नाखून बड़े, चमकीले, ताम्र रंग के हों और भंगुर न हों।

(5) नाखूनों में छोटे-छोटे अर्द्ध चन्द्र हों।

(6) ग्रह क्षेत्र और अंगुलियां दृढ़ हों। ग्रह क्षेत्रों के पिलपिले होने से स्वास्थ्य में गड़बड़ी हो सकती है।

(7) समस्त करतल का रंग एक समान हो।

(8) हाथ में बहुत अधिक रेखायें न हों।

(9) शीर्ष, हृदय, जीवन और भाग्य रेखायें स्पष्ट रूप से अंकित हों और अपने सामान्य स्थानों पर स्थित हों। उनमें किसी प्रकार के दोष न हों।

(10) हाथ में अनेकों प्रकार की रेखाओं के होने से जातक के शरीर और मस्तिष्क पर कुप्रभाव पड़ता है।

(11) रेखाएं उल्टी-सीधी, एक-दूसरे को काटती हुई न हों, बिन्दु और अन्य अशुभ चिन्ह ग्रह क्षेत्रों पर और मुख्य रेखाओं पर न हों।

जब ऊपर दिये हुए लक्षण न हों तो अच्छे स्वास्थ्य की आशा नहीं रखनी चाहिए।

(14)

वासना रेखा (The Via Lasciva) और अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा (Line of Intuition)

वासना रेखा को स्वास्थ्य रेखा की सहायक रेखा के रूप में देखा जाता है यह एक छोटी-सी रेखा होती है और कम हाथों में पायी जाती है। यह करतल के नी के भाग से मणिबन्ध में चली जाती है। यह एक शुभ रेखा नहीं मानी जाती और का वासना तथा मद्य-पान आदि की वृत्ति को बढ़ावा देती है। यदि यह जीवन रेखा व काटकर शुक्र क्षेत्र में चली जाये तो जातक अधिक कामुकता या मद्यपान आदि कारण अपने जीवन की अवधि को कम कर देता है (चित्र संख्या 13)।

नोट—इसको कुछ अंग्रेजी लेखकों ने Line of Intemparance का नाम दिया है। उनके अनुसार यह शुक्र क्षेत्र से चन्द्र क्षेत्र को जाती है।

उन्होंने भी इसका कीरो के मतानुसार ही फल बताया है।

अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा (चित्र संख्या 12),

यह रेखा अधिकतर दार्शनिक, कोनिक और अत्यन्त नोकीले (Psychic) हाथ में पाई जाती है। अन्य श्रेणी के हाथों में यह कम देखी जाती है। यह अर्द्धवृत्त आकार की होती है और बुध क्षेत्र से चन्द्र क्षेत्र तक जाती है। कभी-कभी यह रेखा स्वास्थ्य रेखा के साथ-साथ चलती है और कभी उसे काट देती है और यदि हाथ में होती है तो स्पष्ट दिखाई देती है। यह अत्यन्त संवेदनशील और प्रभाव्य स्वभाव की सूचक होती है। जातक अपने चारों तरफ के वातावरण और प्रभावों के अनुभव करने में अत्यन्त तीक्षण होता है और उसे किसी अज्ञात शक्ति या ज्ञान के द्वारा दूसरों के ऊपर घटनाओं के घटित होने का पूर्वाभास हो जाता है। उसको प्रायः स्वप्नों में या ध्यानमग्नता में इसी प्रकार की घटनाओं का पूर्व ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

नोट—इस रेखा के सम्बन्ध में कुछ और तथ्य नीचे दिये जा रहे हैं:—

(1) यदि यह रेखा सुन्दर और स्पष्ट हो, शीर्ष रेखा और हृदय रेखा के बीच में कुछ बड़ा क्रास का चिन्ह हो तो ज्योतिष आदि विद्याओं में ऐसा व्यक्ति बहुत प्रवीण होता है। उसकी भविष्यवाणी सदा सत्य निकलती है।

(2) यदि यह रेखा सुन्दर और स्पष्ट हो और चन्द्र क्षेत्र का ऊपरी भाग विशेष उच्च हो तो मनुष्य सम्मोहन शक्ति (Mesmerism) आदि द्वारा इससे गहरा प्रभाव डाल सकता है।

(3) चन्द्र क्षेत्र पर जितने अधिक ऊपर के भाग में यह रेखा आरम्भ होगी उतना ही अधिक यह विशेष ज्ञान मनुष्य में देगी।

(4) यदि यह रेखा मंगल के क्षेत्र (बुध क्षेत्र के नीचे) पर समाप्त हो तो उपर्युक्त (2) में बताया हुआ फल विशेष मात्रा में होगा।

(5) यदि यह रेखा छोटी, लहरदार या शाखा युक्त हो तो मनुष्य सदैव अस्थिर और अशांत रहता है। ऐसे व्यक्ति को प्रसन्न करना कठिन होता है।

(6) यदि कई स्थानों में खंडित हो तो कभी तो इससे सम्बंधित विशेष ज्ञान का उदय बहुत अधिक मात्रा में हो जाता है—कभी बिल्कुल नहीं होता।

(7) यदि भाग्य रेखा, शीर्ष रेखा और इस रेखा द्वारा त्रिकोण बनता हो तो ऐसा व्यक्ति गुप्त विद्याओं में बहुत प्रवीण होता है।

इस पुस्तक के लेखक कीरो के हाथ में इस प्रकार की रेखा थी और साथ ही दो शीर्ष रेखायें थीं। उनका अतीन्द्रिय ज्ञान अत्यन्त तीव्र था और उनके विश्वविख्यात भविष्य वक्ता बनने में इस रेखा का भी काफी हाथ था (प्लेट 8)।

(15)

शुक्र मेखला (The Girdle of Venus) शनि मुद्रिका (The Ring of Saturn) और मणिबन्ध रेखायें (The Three Bracelets)

शुक्र मेखला (चित्र 13)

शुक्र मेखला एक टूटी हुई या अटूटी अर्द्धवृत्त के आकार की रेखा होती है जो तर्जनी और मध्यमा के मध्य से आरम्भ होकर अनामिका और कनिष्ठिका के मध्य में समाप्त होती है।

यहां पर हम स्पष्ट रूप से बता देना चाहते हैं कि हमने अपने अनुभव में किसी सामान्य हाथ पर इस रेखा द्वारा कामुकता में वृद्धि करने के अवगुण को कभी नहीं पाया है, यद्यपि अनेकों लेखकों ने मनुष्य में कामुकता के आधिक्य का दोष इस रेखा को दिया है। यदि हाथ मोटा हो तो यह रेखा इस प्रकार का अवगुण अवश्य प्रदर्शित करती है।

अधिकतर यह रेखा कोनिक और अत्यन्त नोकीले (Psychic) हाथों में देखी जाती है। इस रेखा का प्रधान गुण यह है कि जातक में संवेदनशीलता का आधिक्य हो जाता है। इस रेखा के प्रभाव के कारण जातक की मनोदशा (मूड) परिवर्तनशील बन जाता है। वह साधारण-सी बात का बुरा मान जाता है और तुनुक मिजाज हो जाता है। इस प्रकार के व्यक्ति की नसों में तनाव बना रहता है, वह अकारण या

न्चे और पक्के होते हैं। विवाह के मामले में अधिकतर उनकी पसन्द गलत निकलती इसलिए इनका विवाह कुछ विलम्ब से करना चाहिये, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि स वर्ष की अवस्था के पश्चात् इसका प्रभाव बहुत बदल जाता है।

श्रीमती मेरी हिल के कथन में बहुत सत्यता है। यद्यपि इस रेखा के जातकों संवेदनशीलता की मात्रा बहुत अधिक होती है, परन्तु हाथ यदि अच्छा हो तो जातक बौद्धिक तीक्ष्णता होती है। अनेक प्रसिद्ध कवियों और साहित्यकारो के हाथो में रेखा पाई जाती है। परन्तु यदि हाथ में अशुभ लक्षणों की बहुतायत हो, हृदय ता नैतिक दुर्बलता प्रदर्शित करती हो, शुक्र क्षेत्र अत्यधिक गरिमा और वासना के गुण व्यक्त करती हो, चन्द्र क्षेत्र भी उसी प्रकार उन्नत और कल्पनाशीलता मे वृद्धि ता हो, अंगूठा लचीला हो और इच्छा तथा तर्कशक्ति दोनों की कमी दिखाता हो, शुक्र मेखला अवश्य जातक मे पूरी मात्रा में वे दुर्गुण देगी जिनका विवरण ऊपर गा गया है।

यदि भाग्य-रेखा और सूर्य रेखा शुक्र मेखला द्वारा कट गयी हों तो जातक की मुकता की अधिकता और व्यभिचार में लिप्त होने के कारण, सारी सफलता, उच्चता ा मान-प्रतिष्ठा नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। कहा जाता है कि शराब और औरत के रण बड़े-बड़े राज्य नष्ट हो जाते हैं। ऐसे राज्यों के स्वामियों के हाथों में अवश्य र दिये हुए अशुभ लक्षण होते होंगे।

यदि शुक्र मेखला एक ही गोलाई लिये हुए रेखा हो और शुद्ध, अखंडित और ट हों तो जातक मे घबराहट या चिन्ता का लक्षण नही समझना चाहिये। यह विशेष प-विकार का ही लक्षण है।

यदि शुक्र मेखला पर दोहरी तीन सम्पूर्ण रेखायें—एक के ऊपर एक हों, ऐसी रेखा के, जैसे हाथ में जो दोष बताये गये हैं, वे अधिक मात्रा में होते हैं। रेखा गहरी हो तो भी काम-वासना अधिक मात्रा में होती है।

यदि शीर्ष रेखा घूमकर चन्द्र क्षेत्र के नीचे के भाग पर जाती हो और वहां रेखा पर नक्षत्र, बिन्दु क्रास या द्वीप का चिन्ह हो, साथ ही शुक्र मेखला टूटी हो हाथ बहुत-सी रेखाओ से युक्त हो, तो जातक पागल हो जाता है। ऐसे पागल ों में भी काम-वासना अधिक होती है।

न मुद्रिका

शनि-मुद्रिका (चित्र संख्या 12) बहुत कम हाथों में पाई जाती है। यह रेखा नी और मध्यमा अंगुली के बीच से आरम्भ होकर गोलाई लिये हुए शनि क्षेत्र को ती हुई अनामिका और मध्यमा के बीच में समाप्त होती है। यह रेखा शुभ लक्षण

साधारण कारणवश चिन्तित हो जाता है, और यदि यह रेखा अटूटी हो तो जातक निश्चित रूप से निराशावादी हो जाता है, उदासीनता उसे सदा घेरे रहती है और वह हिस्टीरिया जैसे रोगों का शिकार बन जाता है।

इस रेखा में एक विशेष गुण है कि यह लोगों को एक क्षण में तो जोश और उत्साह से भर देती है और दूसरे क्षण वे एकदम हतोत्साह हो जाते हैं। वे कभी एक ही मनोदशा में नहीं रह पाते।

यदि शुक्र मेखला हाथ के किनारे की ओर बढ़ कर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित कर ले (चित्र संख्या 16 k-k), तो जातक के स्वभाव की विविधताओं और परिवर्तनशीलता के कारण दाम्पत्य सुख नष्ट हो जाता है। इस प्रकार के लोगों का साथ निबाहना अत्यन्त कठिन होता है। यदि ऐसी रेखा किसी पुरुष के हाथ में हो तो वह अपनी पत्नी में उतने सद्गुण देखना चाहेगा जितने आकाश में तारे होते हैं।

शुक्र मेखला के सम्बन्ध में अन्य मत

एक प्राचीन फ्रांसीसी हस्त विज्ञान के विद्वान Desborroles के मतानुसार एक अनिष्टकर, अशुभ, अमंगल, झूठी महत्त्वाकांक्षा, असत्यवादी होने तथा कामु देने वाली रेखा है।

एक अन्य मत है कि Desborroles ने जो अवगुण बताये है वे तभी होते हैं जब रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो और सूक्ष्म रेखाएं उसको स्थान-स्थान पर काटती हों।

शुक्र मेखला, जैसा हम बता चुके हैं कि मध्यमा और तर्जनी से अर्द्ध वृत्ताकार रूप में आरम्भ होती है और अनामिका और कनिष्ठिका के मध्य में समाप्त होती है। परन्तु कभी-कभी यह रेखा हृदय-रेखा के समानान्तर भी पाई जाती है। जब हमें किसी व्यक्ति के प्रेम स्वभाव का अनुमान लगाना हो तो शुक्र मेखला की ध्यान से परीक्षा करना उचित होगा। इस रेखा का प्रभाव जातक में नैतिक कमजोरी लाता है और उसके स्वभाव को स्वार्थी बना देता है। उसके प्रेम में अधीरता आ जाती है। श्रीमती **सेन्ट मेरी हिल** के मतानुसार यह रेखा अपने स्वामी के प्रेम सम्बन्ध को शान्तिपू नहीं रहने देती यह संवेदनशीलता में बहुत वृद्धि करती है, जातक अति ईर्ष्यालु हो जाता है और उसकी काम-वासना विकृत हो जाती है। वह जिससे प्रेम करता है उसमें इतनी अधिकता होती है कि वह अपनी प्रेयसी को अपनी सम्पत्ति बनाना चाहता है जिसकी ओर किसी का नजर डालना भी उसे पसन्द नहीं होता। ऐसे व्यक्ति को सन्तुष्ट करना अत्यन्त कठिन होता है। इनको अपने प्रेम में कभी सुख नहीं मिलता। यद्यपि इनके साथ निर्वाह करना कठिन होता है, ऐसी रेखा वाले अपने प्रेम में

न्वे और पक्के होते हैं। विवाह के मामले में अधिकतर उनकी पसन्द गलत निकलती है, इसलिए इनका विवाह कुछ विलम्ब से करना चाहिये, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि तीस वर्ष की अवस्था के पश्चात् इसका प्रभाव बहुत बदल जाता है।

श्रीमती मेरी हिल के कथन में बहुत सत्यता है। यद्यपि इस रेखा के जातकों में संवेदनशीलता की मात्रा बहुत अधिक होती है, परन्तु हाथ यदि अच्छा हो तो जातक में बौद्धिक तीक्ष्णता होती है। अनेक प्रसिद्ध कवियों और साहित्यकारों के हाथों में यह रेखा पाई जाती है। परन्तु यदि हाथ में अशुभ लक्षणों की बहुतायत हो, हृदय रेखा नैतिक दुर्बलता प्रदर्शित करती हो, शुक्र क्षेत्र अत्यधिक गरिमा और वासना के अवगुण व्यक्त करती हो, चन्द्र क्षेत्र भी उसी प्रकार उन्नत और कल्पनाशीलता में वृद्धि करता हो, अंगूठा लचीला हो और इच्छा तथा तर्कशक्ति दोनों की कमी दिखाता हो, तो शुक्र मेखला अवश्य जातक में पूरी मात्रा में वे दुर्गुण देगी जिनका विवरण ऊपर दिया गया है।

यदि भाग्य-रेखा और सूर्य रेखा शुक्र मेखला द्वारा कट गयी हों तो जातक की कामुकता की अधिकता और व्यभिचार में लिप्त होने के कारण, सारी सफलता, उच्चता तथा मान-प्रतिष्ठा नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। कहा जाता है कि शराब और औरत के कारण बड़े-बड़े राज्य नष्ट हो जाते हैं। ऐसे राज्यों के स्वामियों के हाथों में अवश्य ऊपर दिये हुए अशुभ लक्षण होते होंगे।

यदि शुक्र मेखला एक ही गोलाई लिये हुए रेखा हो और शुद्ध, अखंडित और स्पष्ट हो तो जातक में घबराहट या चिन्ता का लक्षण नहीं समझना चाहिये। यह विशेष काम-विकार का ही लक्षण है।

यदि शुक्र मेखला पर दोहरी तीन सम्पूर्ण रेखायें—एक के ऊपर एक हों, तो ऐसी रेखा के, जैसे हाथ में जो दोष बताये गये हैं, वे अधिक मात्रा में होते हैं। यदि रेखा गहरी हो तो भी काम-वासना अधिक मात्रा में होती है।

यदि शीर्ष रेखा घूमकर चन्द्र क्षेत्र के नीचे के भाग पर जाती हो और वहां शीर्ष रेखा पर नक्षत्र, बिन्दु क्रास या द्वीप का चिन्ह हो, साथ ही शुक्र मेखला टूटी हो और हाथ बहुत-सी रेखाओं से युक्त हो, तो जातक पागल हो जाता है। ऐसे पागल लोगों में भी काम-वासना अधिक होती है।

शनि मुद्रिका

शनि-मुद्रिका (चित्र संख्या 12) बहुत कम हाथों में पाई जाती है। यह रेखा तर्जनी और मध्यमा अंगुली के बीच से आरम्भ होकर गोलाई लिये हुए शनि क्षेत्र को

साधारण कारणवश चिन्तित हो जाता है, और यदि यह रेखा अटूटी हो तो जातक निश्चित रूप से निराशावादी हो जाता है, उदासीनता उसे सदा घेरे रहती है और वह हिस्टीरिया जैसे रोगों का शिकार बन जाता है।

इस रेखा में एक विशेष गुण है कि यह लोगों को एक क्षण में तो जोश और उत्साह से भर देती है और दूसरे क्षण वे एकदम हतोत्साह हो जाते हैं। वे कभी एक ही मनोदशा में नहीं रह पाते।

यदि शुक्र मेखला हाथ के किनारे की ओर बढ़ कर विवाह रेखा से सम्पर्क स्थापित कर ले (चित्र संख्या 16 k-k), तो जातक के स्वभाव की विविधताओं और परिवर्तनशीलता के कारण दाम्पत्य सुख नष्ट हो जाता है। इस प्रकार के लोगों का साथ निबाहना अत्यन्त कठिन होता है। यदि ऐसी रेखा किसी पुरुष के हाथ में हो तो वह अपनी पत्नी में उतने सद्गुण देखना चाहेगा जितने आकाश में तारे होते हैं।

शुक्र मेखला के सम्बन्ध में अन्य मत

एक प्राचीन फ्रांसीसी हस्त विज्ञान के विद्वान Desborroles के मतानुसार यह एक अनिष्टकर, अशुभ, अमंगल, झूठी महत्त्वाकांक्षा, असत्यवादी होने तथा कायरता देने वाली रेखा है।

एक अन्य मत है कि Desborroles ने जो अवगुण बताये हैं वे तभी होते हैं जब रेखा छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो और सूक्ष्म रेखाएं उसको स्थान-स्थान पर काटती हों।

शुक्र मेखला, जैसा हम बता चुके हैं कि मध्यमा और तर्जनी से अर्द्ध वृत्ताकार रूप में आरम्भ होती है और अनामिका और कनिष्ठिका के मध्य में समाप्त होती है। परन्तु कभी-कभी यह रेखा हृदय-रेखा के समानान्तर भी पाई जाती है। जब हमें किसी व्यक्ति के प्रेम स्वभाव का अनुमान लगाना हो तो शुक्र मेखला की ध्यान से परीक्षा करना उचित होगा। इस रेखा का प्रभाव जातक में नैतिक कमजोरी लाता है और उसके स्वभाव को स्वार्थी बना देता है। उसके प्रेम में अधीरता आ जाती है। **श्रीमती सेन्ट मेरी हिल** के मतानुसार यह रेखा अपने स्वामी के प्रेम सम्बन्ध को शान्तिपूर्ण नहीं रहने देती यह संवेदनशीलता में बहुत वृद्धि करती है, जातक अति ईर्ष्यालु हो जाता है और उसकी काम-वासना विकृत हो जाती है। वह जिससे प्रेम करता है उसमें इतनी अधिकता होती है कि वह अपनी प्रेयसी को अपनी सम्पत्ति बनाना चाहता है जिसको और किसी का नजर डालना भी उसे पसन्द नहीं होता। ऐसे व्यक्ति को सन्तुष्ट करना अत्यन्त कठिन होता है। इनको अपने प्रेम में कभी सुख नहीं मिलता। परन्तु यद्यपि इनके साथ निर्वाह करना कठिन होता है, ऐसी रेखा वाले अपने प्रेम में

सच्चे और पक्के होते है। विवाह के मामले मे अधिकतर उनकी पसन्द गलत निकलती है, इसलिए इनका विवाह कुछ विलम्ब से करना चाहिये, क्योंकि ऐसी मान्यता है कि तीस वर्ष की अवस्था के पश्चात् इसका प्रभाव बहुत बदल जाता है।

श्रीमती मेरी हिल के कथन में बहुत सत्यता है। यद्यपि इस रेखा के जातकों में संवेदनशीलता की मात्रा बहुत अधिक होती है, परन्तु हाथ यदि अच्छा हो तो जातक मे बौद्धिक तीक्ष्णता होती है। अनेक प्रसिद्ध कवियो और साहित्यकारो के हाथों में यह रेखा पाई जाती है। परन्तु यदि हाथ में अशुभ लक्षणों की बहुतायत हो, हृदय रेखा नैतिक दुर्बलता प्रदर्शित करती हो, शुक्र क्षेत्र अत्यधिक गरिमा और वासना के अवगुण व्यक्त करती हो, चन्द्र क्षेत्र भी उसी प्रकार उन्नत और कल्पनाशीलता मे वृद्धि करता हो, अंगूठा लचीला हो और इच्छा तथा तर्कशक्ति दोनों की कमी दिखाता हो, तो शुक्र मेखला अवश्य जातक में पूरी मात्रा में वे दुर्गुण देगी जिनका विवरण ऊपर दिया गया है।

यदि भाग्य-रेखा और सूर्य रेखा शुक्र मेखला द्वारा कट गयी हों तो जातक की कामुकता की अधिकता और व्यभिचार में लिप्त होने के कारण, सारी सफलता, उच्चता तथा मान-प्रतिष्ठा नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। कहा जाता है कि शराब और औरत के कारण बड़े-बड़े राज्य नष्ट हो जाते हैं। ऐसे राज्यों के स्वामियों के हाथो मे अवश्य ऊपर दिये हुए अशुभ लक्षण होते होंगे।

यदि शुक्र मेखला एक ही गोलाई लिये हुए रेखा हो और शुद्ध, अखंडित और स्पष्ट हो तो जातक में घबराहट या चिन्ता का लक्षण नही समझना चाहिये। यह विशेष काम-विकार का ही लक्षण है।

यदि शुक्र मेखला पर दोहरी तीन सम्पूर्ण रेखायें—एक के ऊपर एक हों, तो ऐसी रेखा के, जैसे हाथ मे जो दोष बताये गये हैं, वे अधिक मात्रा में होते हैं। यदि रेखा गहरी हो तो भी काम-वासना अधिक मात्रा में होती है।

यदि शीर्ष रेखा घूमकर चन्द्र क्षेत्र के नीचे के भाग पर जाती हो और वहां शीर्ष रेखा पर नक्षत्र, बिन्दु क्रास या द्वीप का चिन्ह हो, साथ ही शुक्र मेखला टूटी हो और हाथ बहुत-सी रेखाओ से युक्त हो, तो जातक पागल हो जाता है। ऐसे पागल लोगों में भी काम-वासना अधिक होती है।

शनि मुद्रिका

शनि-मुद्रिका (चित्र संख्या 12) बहुत कम हाथों में पाई जाती है। यह रेखा तर्जनी और मध्यमा अंगुली के बीच से आरम्भ होकर गोलाई लिये हुए शनि क्षेत्र को घेरती हुई अनामिका और मध्यमा के बीच में समाप्त होती है। यह रेखा शुभ लक्षण

मानी नहीं मानी जाती । हमने उन लोगों पर ध्यान रक्खा जिनके हाथ में ऐसी रेखा हमने देखी । हमने ऐसे किसी व्यक्ति को सफल होते नहीं देखा । यह शनि क्षेत्र (जिसको हम भाग्य क्षेत्र भी कहते हैं) को इस प्रकार से काट देती है कि लोगों का परिश्रम व्यर्थ जाता है और उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं होती । इनका स्वभाव ऐसा हो जाता है कि यद्यपि उनके मस्तिष्क में बड़ी-बड़ी योजनायें बनती हैं, परन्तु विचारों में तारतम्यता की कमी से वे जो काम भी आरम्भ करते हैं, उसको अधूरा छोड़ देते हैं । (इस सम्बन्ध में प्लेट 15 भी देखिये) ।

इस रेखा के सम्बन्ध में कुछ अतिरिक्त सूचना

आड़ी रेखायें प्रायः बाधक रेखायें होती हैं । शनि मुद्रिका इसी प्रकार की आड़ी रेखा है और शनि क्षेत्र के स्वाभाविक गुणों को नष्ट करती है । शनि क्षेत्र यदि गुणयुक्त हो तो मनुष्य दूरदर्शी, गम्भीरता से विचार करने वाला और परिश्रमी होता है । यदि इन गुणों की मनुष्य में कमी हो जावे तो स्वभावतः जीवन में सफलता नहीं मिलती । यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण हो तो मनुष्य में अपराध करने की प्रवृत्ति हो जाती है ।

कभी-कभी शनि मुद्रिका पूर्ण वृत्त के रूप में नहीं होती और कभी टुकड़ों के रूप में होती है जो शनि क्षेत्र को काटते हैं । प्रसिद्ध हस्त-विज्ञान के विद्वान विलियम जी० बैनहम ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक—'The Laws of Scientific Hand Reading' में लिखा है—"शनि मुद्रिका स्वयं जीवन में असफलता को आवश्यक नहीं बनाती, परन्तु हमने इसे बहुत से व्यक्तियों के हाथ में देखा है जो असफल रहे हैं। हमने ऐसी रेखा जेल में कैदियों के हाथों में देखी है जिनमें कुछ तो पक्के अपराधी थे । हमने इसे आत्महत्या करने वाले व्यक्तियों के हाथ में देखा है ।"

बैनहम के मतानुसार क्योंकि शनि क्षेत्र इस रेखा के द्वारा पृथक हो जाता है, इसके गुण बुद्धिमानी, गम्भीरता और जीवन में संतुलन लाने वाले गुण अवगुणों में परिवर्तित हो जाते हैं । शनि क्षेत्र के गुणों से वंचित होकर ऐसी रेखा वाले व्यक्ति पक्के अपराधी बन जाते हैं । वे किसी कार्य को लग्न और तारतम्यता से करने में असमर्थ होने के कारण असफल होते हैं ।

शनि मुद्रिका के साथ यदि बुध क्षेत्र के नीचे वाला मंगल का क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत न हो, अंगूठा छोटा और स्वास्थ्य रेखा दोष पूर्ण हो (उसमें द्वीप और नक्षत्र चिन्ह हों) तो जातक निरुत्साह होकर या तो पागल हो जाएगा या आत्महत्या कर लेगा । मुलायम या पिलपिले हाथों का, लहरदार शीर्ष रेखा का, निर्बल अंगूठों का, दबे हुए मंगल क्षेत्रों का और अति उन्नत चन्द्र का, शनि मुद्रिका के साथ अत्यन्त

अशुभ योग बनता है। यदि शनि मुद्रिका के साथ शीर्ष रेखा मुड़कर एक विस्तृत चन्द्र क्षेत्र पर जिस पर जाल का चिन्ह हो, चली जाये, तो जातक की कल्पनाशीलता चरम सीमा पर पहुंच जायेगी, वह बिल्कुल अधीर हो जायेगा और इतना परिवर्तनशील मति का हो जायेगा कि वह किसी काम के योग्य न रहेगा। यदि शनि मुद्रिका के साथ भाग्य रेखा में बाधाओं के चिन्ह हों तो यह ज्ञात होता है कि जातक में तारतम्यता की कमी से उसका कैरियर नष्ट हो गया है।

यदि शीर्ष रेखा टूटी हो या उसमें द्वीप का चिन्ह हो तो जातक का मन डांवाडोल रहता है (वह कोई निर्णय नहीं ले पाता)। यदि ऐसी शीर्ष रेखा के साथ हाथ में शनि मुद्रिका भी हो तो उसके उपर्युक्त अवगुण में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है और उसका स्वभाव इतना अधिक परिवर्तनशील हो जाता है कि वह किसी भी बात पर स्थिर नहीं रह सकता। ऐसे हाथों में सूर्य और भाग्य रेखाओं पर बाधा के चिन्ह भी होंगे।

यदि शनि मुद्रिका टूटी हो और शनि क्षेत्र को पूर्ण रूप से न घेरती हो तो उसका कुप्रभाव कम हो जाता है। यदि शनि मुद्रिका इस प्रकार टूटी हो कि एक टुकड़ा दूसरे को काटकर क्रास का चिन्ह बनाता हो तो ऐसी स्थिति में इस रेखा का वही फल होगा जो शनि क्षेत्र पर क्रास चिन्ह होने से होता है। बेनहम कहते हैं कि उन्होंने इस प्रकार की शनि मुद्रिका कई ऐसे व्यक्तियों के हाथों में देखी थी जिन्होंने आत्महत्या की थी।

यदि अंगूठा सुदृढ़ हो और बलवान इच्छा शक्ति दिखाता हो और शीर्ष रेखा सबल हो तो जातक शनि मुद्रिका के कुप्रभाव से अपनी रक्षा करने में समर्थ हो सकता है।

बृहस्पति मुद्रिका

तर्जनी और मध्यमा अंगुलियों के बीच के भाग से आरम्भ होकर गोलाई लिए हुए बृहस्पति क्षेत्र को अंगूठी के समान घेरती है। इसको अंग्रेजी में Ring of Solomon कहते हैं। यह सब हाथों मे नहीं पाई जाती। जिनके हाथ में यह रेखा होती है वे गुप्त विद्याओं के अध्ययन में विशेष रुचि रखते हैं और उनमें विद्वान होते हैं। शनि मुद्रिका के समान होते हुए भी इस रेखा में उसके समान अवगुण नहीं होते।

हिन्दू मत के अनुसार इस रेखा को दीक्षा रेखा कहते हैं। एसी मान्यता है कि जिसके हाथ मे यह रेखा होती है उसमे सांसारिक सुखों से विरक्ति होती है। यह रेखा जातक में वैराग्य की प्रवृत्ति देती है। महात्मा गांधी के हाथ में इस प्रकार की रेखा थी।

मणिबन्ध की रेखायें

कीरो मणिबन्ध की रेखाओं का (चित्र संख्या 13) कोई विशेष महत्व की नहीं मानते। वह कहते हैं—*मणिबन्ध के सम्बन्ध में एक बात ऐसी है जिसको हमने अनुभव* में सत्य पाया है। वह है प्रथम मणिबन्ध रेखा के सम्बन्ध में। जब यह रेखा करतल की ओर ऊपर उठी हुई हो और मेहराब का रूप धारण कर ले (चित्र संख्या 16m-m) तो शरीर के आन्तरिक अंगों में विकार की सूचक होती है। स्त्री के हाथ मे इस प्रकार की रेखा इस बात की सूचक है कि सन्तानोत्पादन तथा प्रसव में कष्ट और कठिनाई होती है। पहले हम इस प्रकार के संकेत को अन्धविश्वास समझते थे, परन्तु जब अनुभव में हमने इसे सत्य पाया तो हमने इस पुस्तक में इसका उल्लेख आवश्यक समझा। एक बात हमने जो यथार्थ पाई, वह यह है कि यदि तीनो मणिबन्ध रेखायें स्पष्ट रूप से अंकित हों तो जातक का स्वास्थ्य बहुत अच्छा होता है और उसके शरीर की गठन (Constitution) सशक्त होती है।

अन्य मत

बैनहम का कहना है कि उन्होंने अपने अनुभव में अधिकतर तीन से अधिक मणिबन्ध रेखायें बहुत कम देखी। कभी तो उन्हें केवल एक ही स्पष्ट रेखा देखने को मिली। उनका कहना है कि प्राचीन विद्वानों के अनुसार प्रत्येक मणिबन्ध रेखा जातक को तीस वर्ष की आयु देती है, परन्तु अपने व्यावहारिक अनुभव में इस बात की पुष्टि नही मिली। बैनहम का मत है कि यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा पुष्ट और स्पष्ट हो तो सबल शारीरिक गठन की सूचक होती है, परन्तु इसकी पुष्टि के लिए गहरी और निर्दोष जीवन रेखा का होना आवश्यक है। यह कह कर बैनहम इस बात को स्वीकार करते हैं कि मणिबन्ध रेखायें यदि शृंखलाकार हों, चौड़ी और उथली हों तो जातक की शारीरिक गठन निर्बल होती है। यदि मणिबन्ध रेखाओं से छोटी रेखायें ऊपर उठती हों तो ये जातक की अपने वर्तमान स्तर से ऊंचे उठने की आकांक्षाओं की सूचक होती हैं। यदि लम्बी शाखायें चन्द्र क्षेत्र मे जायें तो उनको यात्रा रेखायें समझा जाता है। *चन्द्र गुणी (चन्द्र क्षेत्र से प्रभावित) व्यक्तियों में जो स्वाभाविक अधीरता और* यात्रा करने की रुचि होती है, ये रेखायें उन गुणों की वृद्धि करती हैं।

सेन्ट जरमेन

सेन्ट जरमेन हस्त-विज्ञान के अत्यन्त प्रसिद्ध विद्वान थे और उनकी सबसे अधिक प्रामाणिक पुस्तक 'The Study of Palmistry For Professional Purposes' को बहुत मान्यता प्राप्त है। मणिबन्ध के विषय में कुछ लिखने से पूर्व उन्होंने

प्लेट –12 लाइं लिटन

चित्र १२ बंधक मातृकर्म

अपने गुरु Desborroles के निम्नलिखित कथन पर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है—

"The Bracelet (मणिबन्ध) is traced in that portion of the hand which is devoted to material instincts, and therefore, all lines inside the palm that go down to it are debased thereby and lose much of their intellectual and moral meanings" (मणिबन्ध हाथ के उस भाग में अंकित होता है जो सांसारिक भावनाओं को अर्पित है। अर्थात् जो बिल्कुल सांसारिक प्रवृत्तियों से सम्बन्धित है और इसलिए करतल से जो रेखायें नीचे की ओर झुककर मणिबन्ध में जाती हैं, बहुत कुछ अपनी बौद्धिक और नैतिक गुणों को खो बैठती हैं)।

सेन्ट जरमेन का कहना है कि ऐसा प्रभाव विशेषकर और अधिकतर शीर्ष रेखा ही के साथ होता है। परन्तु यह निष्कर्ष उन रेखाओं पर नहीं लागू होता जो मणिबन्ध से ऊपर उठती हैं। वे शुभ फलदायक होती हैं।

सेन्ट जरमेन ने मणिबन्ध रेखाओं से जातक की आयु का अनुमान भी दिया है। उनके मतानुसार यदि एक रेखा स्पष्ट हो और टूटी न हो तो आयु 23 से 28 वर्ष तक की होती है। यदि दो ऐसी रेखायें हों तो आयु 46 से 57 वर्ष तक की होती है। यदि तीन रेखायें ऐसी हों तो आयु 69 से 84 वर्ष तक की होती है। वे कहते हैं कि कितने ही वृद्ध लोगों के हाथ में चार मणिबन्ध रेखायें भी देखीं, परन्तु वे निश्चय नहीं कर सके कि वह चौथी रेखा वास्तविक थी या नहीं, क्योंकि वृद्धावस्था में त्वचा में इतनी झुर्रियां पड़ जाती हैं कि यह स्पष्ट जानना कठिन हो जाता है कि यह मणि-बन्ध रेखा है या त्वचा की सिकुड़न मात्र है।

सेन्ट जरमेन ने यह भी लिखा है कि पुरानी (उनकी नहीं) मान्यता है कि यदि जीवन रेखा निर्बल हो और तीन मणिबन्ध रेखायें पुष्ट और स्पष्ट हों, तो जातक को सौभाग्य और सफलता तो मिलती है, परन्तु दुर्बल स्वास्थ्य में रहने के कारण उसका सुख भोगने मे असमर्थ होता है।

सेन्ट जरमेन ने कीरो के इस मत की पुष्टि की है कि यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा किसी स्त्री के हाथ में मेहराब के समान ऊपर उठ जाती है तो प्रसव में कठिनाई और कष्ट होता है।

सेन्ट जरमेन के अनुसार यदि तीनों मणिबन्ध रेखायें बिल्कुल [illegible] अंकित हों और उनका रंग फीका न हो तो जातक स्वस्थ, धनवान और [illegible] होता है और उसका जीवन बिना बाधा और कठिनाइयों के व्यतीत होता है। [illegible] तीन रेखायें दोषपूर्ण हों तो जातक फिजूलखर्च [illegible] होता है और अपने स्वास्थ्य का नाश कर देता है। यदि [illegible]

जातक को परिश्रम तो बहुत करना पड़ता है, परन्तु अन्त में उसे सफलता अवश्य प्राप्त होती है।

सेन्ट जरमेन ने इस विषय पर लिखते हुए मणिबन्ध का अन्य ग्रह क्षेत्रों से सम्बन्ध और उसके जातक पर प्रभाव का भी जिक्र किया है। यदि कोई रेखा मणिबन्ध से वृहस्पति क्षेत्र को जाये तो एक लम्बी परन्तु सफल यात्रा की सूचक होती है।

यदि रेखायें शनि क्षेत्र को जायें और एक दूसरे को काटती हों तो जातक लम्बी यात्रा पर जाता है, परन्तु जीवित नहीं लौटता।

यदि कोई लम्बी रेखा मणिबन्ध से सूर्य क्षेत्र को जाये तो यह समझना चाहिये कि जातक उन लोगों के सहयोग से, जो उन यात्राओं के समय मिले हों, मान-प्रतिष्ठा और ख्याति प्राप्त करता है।

यदि कोई लम्बी रेखा मणिबन्ध से बुध क्षेत्र को जाये तो आकस्मिक रूप से काफी धन प्राप्त करता है (यह लाटरी जीतने का योग मालूम होता है)।

यदि तीनों मणिबन्ध रेखायें एक ही स्थान पर, एक-दूसरे के ऊपर टूटी हों और यह स्थान शनि क्षेत्र के नीचे पड़ता हो तो जातक में प्रचुर मात्रा में मिथ्या अभिमान होता है, वह असत्यवादी होता है और अपने इन दुर्गुणों के कारण मुसीबत में पड़ता है।

यदि कोई लहरदार रेखा मणिबन्ध से उठकर स्वास्थ्य रेखा को काटे तो जातक का समस्त जीवन दुर्भाग्यपूर्ण व्यतीत होता है।

यदि सुस्पष्ट और बिना टूटी मणिबन्ध की प्रथम रेखा के मध्य में क्रास का चिन्ह हो तो जातक का जीवन कठिनाइयों से पूर्ण होता है, परन्तु अन्त में उसे सुख-शान्ति और सौभाग्य प्राप्त होता है।

यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा से कोई सीधी रेखा वृहस्पति क्षेत्र को जाये (शुक्र क्षेत्र से होती हुई) और उस मणिबन्ध रेखा पर क्रास या कोण का चिन्ह हो तो सफल यात्रा से अतुल धन प्राप्त होता है।

यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा के मध्य में कोण (∠) का चिन्ह हो तो जातक को विरासत में धन प्राप्त होता है और वृद्धावस्था में उसे सम्मान मिलता है।

यदि प्रथम मणिबन्ध रेखा के मध्य में त्रिकोण हो और उसके अन्दर क्रास का चिन्ह हो तो जातक को विरासत में इतना धन मिलता है कि उसका भाग्य ही बदल जाता है।

यदि प्रथम म[illegible] रेखा के मध्य में [illegible] और हाथ के अन्य लक्षण शुभ हों तो विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त [illegible] हाथ अशुभ लक्षणों वाला हो तो यह चिन्ह जातक के [illegible]

यह सब बताते हुए सेन्ट जरमेन ने इन [illegible] या पुरानी मान्य-

ताओं के अनुसार उल्लेख किया है और उनके गुरु Desborroles ने भी उनको मान्यता प्रदान की है।

सेन्ट जरमेन ने यह भी लिखा है कि वे मणिबन्ध की प्रथम रेखा को महत्त्वपूर्ण समझते हैं। दूसरी और तीसरी रेखाओ की वास्तविकता से वह सन्तुष्ट नहीं हैं। उनके अनुसार वे रेखायें भी हो सकती हैं और त्वचा की सिकुड़नें भी।

मणिवन्ध के सम्बन्ध में हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

हाथ जहां आरम्भ होता है, वहां कलाई के भीतर की ओर (करतल की तरफ) जो रेखायें होती हैं उस भाग को मणिबन्ध कहते हैं। यदि कलाई का यह भाग मांसल, पुष्ट, अच्छी सन्धि सहित हो तो जातक भाग्यशाली होता है। यदि ऐसा लगे कि हाथ और बाहु का कलाई के पास जो जोड़ है वह ढीला, लटकता हुआ, असुन्दर और निर्बल हो और हाथ हिलाने से कुछ आवाज हो तो मनुष्य निर्धन होता है और यदि अन्य अशुभ लक्षण हों तो जातक राजदण्ड पाता है। 'गरुड़ पुराण' और 'वाराही संहिता' के अनुसार मणिबन्ध की हड्डियां दिखाई नही देनी चाहिएं और वह जोड़ दृढ़ होना सौभाग्य का लक्षण है।

'सामुद्रिक तिलक' के अनुसार यदि कलाई के चारों ओर तीन रेखायें पूर्ण हों (खण्डित न हों) तो जातक धन, (सोना) और रत्नो का स्वामी होता है। यदि इन तीन रेखाओं मे निरन्तर यवमाला हो तो जातक राजा होता है। यदि दो रेखायें इस प्रकार की हों तो जातक धन-धान्य से पूर्ण होता है और उसे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

स्त्रियों के मणिवन्ध के सम्बन्ध मे 'भविष्य पुराण' का कहना है कि मणिबन्ध यदि तीन रेखा युक्त, सम्पूर्ण और सुन्दर हो तो वह स्त्री भाग्यशालिनी होती है और वह हाथ में रत्न जड़ित स्वर्ण के आभूषण धारण करने वाली होती है।

'सामुद्रिक रहस्य' के अनुसार मणिबन्ध में तीन रेखायें होती हैं—प्रथम धन की, दूसरी शास्त्र की और तीसरी भक्ति की होती है। उनमे जो रेखा स्वच्छ, सरल, गम्भीर, स्निग्ध हो और अछिन्न हो, वह बलवती होती है और उसका फल भी उत्तम होता है। यदि तीन से अधिक रेखायें हों तो वे दरिद्रता और दुर्भाग्य की सूचक होती हैं। तीनों रेखायें शुद्ध और उपर्युक्त गुणो से युक्त हों तो मनुष्य विद्वान्, धनी, सुन्दर, स्वस्थ शरीर वाला और भाग्यशाली होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। तीनों यदि शृंखलाकार हो तो मनुष्य अत्यन्त परिश्रम करके और कठिनाइयो का सामना करके धन अर्जित करता है। तीनों रेखायें यदि छिन्न-भिन्न हों तो मनुष्य ... आलसी और निरुद्योगी होता है। मणिबन्ध में यदि त्रिकोण चिन्ह हों तो मनु... का धन प्राप्त करता है (ऐसा विरासत में होता है)।

यदि रेखायें छिन्न-भिन्न हों और ऊर्ध्व रेखा (भाग्य रेखा) इनसे मिली हो तो मनुष्य पापी, दुष्टात्मा, मिथ्याभाषी और अहंकारी होता है। मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर चन्द्र स्थान तक जाए तो मनुष्य जलमार्ग से द्वीपान्तर यात्रा करता है। मणिबन्ध से कोई रेखा पितृ रेखा (पाश्चात्य मत से जीवन रेखा) को काटे तो मनुष्य विदेश यात्रा में मृत्यु प्राप्त करता है। यदि इसी प्रकार कोई रेखा उठकर बुध स्थान को जाए तो अनायास धन प्राप्त होता है। यदि कोई रेखा सूर्य स्थान को जाए तो दूसरों की सहायता से धन प्राप्त होकर सुख से जीवन व्यतीत होता है।

'कर लक्खण' के अनुसार जिसके मणिबन्ध में तीन रेखायें हों उसे धान्य, स्वर्ण (सोना) और रत्नों की प्राप्ति होती है, उसे अनेकों प्रकार के आभूषणों का उपभोग मिलता है तथा अन्त में उसका कल्याण होता है। यदि इन रेखाओं का रंग मधु(शहद) के समान पिंगल (लाल कत्थई रंग का) हो तो मनुष्य सुखी होता है। यदि रक्त के समान लाल हो तो उसका व्रत भंग नहीं होता। यदि सूक्ष्म हो (फीका हो) तो वह बुद्धिमान होता है। यदि रेखाओं का मूल स्थान सम हो तो वह स्वरूपवान और भाग्य-वान होता है। 'कर लक्खण' ने भी इस बात की पुष्टि की है कि जिसके मणिबन्ध में यवमाला की तीन धारायें हों वह धन से परिपूर्ण होता है और यदि वह क्षत्रिय हो तो राजा होता है। जिसके मणिबन्ध में यवमाला की दो धारायें हों, वह राजमन्त्री बनता है। जिसके एक ही धारा हो वह पुरुष धनेश्वर सेठ बनता है और लोग उसकी पूजा करते हैं (अर्थात् उसका आदर करते है)।

'कर लक्खण' के अनुसार मणिबन्ध से आरम्भ होकर जो रेखा अंगूठे और तर्जनी के बीच तक जाती है वह जातक को शास्त्र का ज्ञाता और विज्ञान में कुशल बनाती है।

मणिबन्ध से आरम्भ होकर जो रेखा तर्जनी तक जाती है वह बहुत से बंधुओं से युक्त कुल और वंश की द्योतक होती है।

यदि वह रेखा इतनी लम्बी हो कि बिल्कुल तर्जनी तक जाये तो कुल और वंश उच्च श्रेणी का होता है। यदि रेखा छोटी हो तो कुल वंश ओछा (नीच) होता है। यदि रेखा छिन्न हो तो कुल वंश भी छिन्न-भिन्न हो जाता है।

मणिबन्ध से आरम्भ होकर यदि कोई रेखा मध्यमा तक जाये तो मनुष्य को धन-समृद्ध और प्रसिद्ध आचार्य बनाती है (पाठकों को याद होगा कि सेन्ट जरमेन ने इस रेखा को अशुभ बताया है। उसके अनुसार ऐसी रेखा होने पर जातक लम्बी यात्रा पर जाता है और जीवित नहीं लौटता)। हम 'कर लक्खण' के बताये हुए फल पर अधिक आस्था रखते हैं, क्योंकि वास्तव में यह भाग्य रेखा होगी।

मणिबन्ध से आरम्भ होकर यदि कोई रेखा अनामिका को जाती हो तो जातक राजाओं के समूह का प्रमुख होता है।

मणिबन्ध से आरम्भ होकर यदि कोई रेखा कनिष्ठिका को जाती हो तो जातक को यशस्वी बनाती है और जातक यदि व्यापारी हो तो उसके वैभव की वृद्धि होती है (अन्य लेखकों ने ऐसी रेखा को अनायास धन दिलाने वाली बताया है)।

(16)

विवाह रेखा (The Line of Marriage)

हस्त-विज्ञान पर बहुत-सी पुस्तकें लिखी गयी है; परन्तु हमें दुःख के साथ कहना पड़ता है कि किसी ने भी इस महत्त्वपूर्ण और मनोरंजक विषय की वास्तविकता को नही समझा और इस पर आवश्यक ध्यान नही दिया है। हमारा यही प्रयत्न होगा कि हम इस विषय पर विस्तारपूर्वक अपने विचार पाठकों के सम्मुख रखें जिससे उनको इसकी वास्तविकता की भिज्ञता हो जाये।

विवाह रेखा के नाम से जानी जाने वाली रेखायें बुध क्षेत्र पर अंकित पाई जाती हैं(चित्र संख्या 13) यहां पर हम स्पष्ट कर देते हैं कि हाथ केवल विवाह संस्कार को, चाहे वह धार्मिक रीति से सम्पन्न हो या कोर्ट में लिखा-पढ़ी से हो, मान्यता नही देता। वह केवल हमारे जीवन पर दूसरे लोगों के प्रभावों को अंकित करता है। वह यह भी व्यक्त करता है कि ये प्रभाव किस प्रकार के हैं और उनका क्या परिणाम होता है। विवाह किसी भी व्यक्ति के जीवन में एक प्रभावशाली और महत्त्वपूर्ण घटना है। यदि जातक के जीवन में अन्य घटनाओं के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सकती है तो हाथ में विवाह से सम्बन्धित कोई चिन्ह या योग अंकित होता है जिसके आधार पर पहले से बताया जा सकता है कि विवाह कब होगा। और हमने अन्य प्रेम सम्बन्धी प्रभाव रेखाओं मे विवाह की वास्तविक रेखा को भी पाया है। यह अवश्य है कि कभी-कभी रेखा ऐसे सम्बन्ध की भी सूचक होती है जो कि विवाह के समान ही बलवान और घनिष्ठ हो। जीवन मे विवाह होने या न होने के लिए समय क्यों निश्चित होता है, इसका उत्तर वही रहस्य दे सकते हैं जिन्होंने हमारे जीवन को आच्छादित कर रखा है। क्यो कमरे में एक स्थायी चुम्बक पत्थर (magnet) रखने से हर एक लोहे की वस्तु मे चुम्बक शक्ति द्रवित हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति यह बता सकता है कि यह शक्ति क्या है और उससे लोहे की वस्तुओं का क्या सम्बन्ध है, तो वह यह भी बता सकता है कि विवाह के लिए भवितव्यता ने कोई समय क्यों निश्चित किया है। जब तक हम प्रकृति के समस्त नियमो और उसकी शक्तियों का रहस्योद्घाटन करने में असमर्थ रहेंगे तब तक हमे यही स्वीकार करना होगा कि ऐसा ही होना है और ऐसा ही होता है।

विवाह के सम्बन्ध मे विचार करने के लिए विवाह रेखाओं के साथ हाथ के अन्य चिन्हों और संकेतो को भी अपनी विचार परिधि में लाना आवश्यक है। इस सम्बन्ध मे खण्ड दो प्रकरण 11 में हमने भाग्य रेखा को आने वाली प्रभाव रेखाओं का जिक्र किया था। ऐसा ही हमने जीवन रेखा की ओर आने वाली प्रभाव रेखाओं के विषय में लिखा था (खण्ड दो, प्रकरण 5)।

अब हम बुध क्षेत्र पर अंकित विवाह रेखाओं पर आते हैं। विवाह रेखायें या तो बुध क्षेत्र पर किनारे की ओर से निकलकर आती हैं या बुध क्षेत्र पर ही स्थित होती हैं।

केवल लम्बी रेखायें ही विवाह की सूचक होती हैं (चित्र संख्या 18-g)। छोटी रेखायें केवल किसी के प्रेम का आकर्षण या विवाह करने की इच्छा को प्रदर्शित करती हैं (चित्र संख्या 18-h)। यदि विवाह होना है तो भाग्य रेखा या जीवन रेखा पर इसकी पुष्टि मिलती है और वहां पर भी सूचना प्राप्त होती है कि विवाह से जीवन में और जीवन स्थिति में कैसा परिवर्तन आयेगा। बुध क्षेत्र पर स्थित विवाह रेखा से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि विवाह किस अवस्था में होने की सम्भावना है। जब विवाह रेखा हृदय रेखा के बिल्कुल निकट हो तो विवाह 14 से 18 वर्ष की अवस्था मे होना चाहिए। यदि विवाह रेखा बुध क्षेत्र के मध्य में हो तो 21 से 28 वर्ष की अवस्था में होता है। यदि वह बुध क्षेत्र पर तीन चौथाई ऊचाई पर हो तो विवाह 28 से 35 वर्ष की अवस्था में होता है। परन्तु इस सम्बन्ध में भाग्य रेखा या जीवन रेखा से यह अधिक यथार्थता से जाना जा सकता है कि जीवन में परिवर्तन किस अवस्था में होगा।

जब बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा पुष्टता मे अंकित हो और कोई प्रभाव रेखा चन्द्र क्षेत्र से आकर भाग्य रेखा में मिले तो जातक विवाह के बाद धनवान हो जाता है। परन्तु जब रेखा पहले चन्द्र पर सीधी चढ़ जाये और फिर मुड़कर भाग्य रेखा से मिले तो विवाह सम्बन्ध में सच्चे प्रेम की भावनायें नही होंगी, केवल दिखावा मात्र होगा। जब प्रभाव रेखा जातक की भाग्य रेखा से अधिक बलवती हो तो वह व्यक्ति पुरुष या स्त्री जिससे जातक विवाह करेगा, उससे अधिक प्रभावशाली होगा और उसका व्यक्तित्व भी जातक से अधिक उच्च स्तर का होगा।

भाग्य रेखा पर सबसे अधिक वैवाहिक सुख प्रदान करने वाली वह प्रभाव रेखा होती है जो भाग्य रेखा के बिल्कुल निकट स्थित होती है और उसके साथ-साथ चलती है (चित्र संख्या 20 I-i)।

बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा सीधी, बिना टूट-फूट के या खास चिन्ह के या अनियमितता के होनी चाहिए।

जब वह नीचे मुड़कर हृदय रेखा की ओर चली जाती है तो इस बात की सूचक होती है कि जातक के जीवन साथी (या संगिनी) की पहले मृत्यु होगी (चित्र

संख्या 20-j) स्त्रियों के हाथ में ऐसी रेखा वैधव्य का और पुरुष के हाथ मे विधुरता का योग बनाती है।

यदि विवाह रेखा ऊपर की ओर मुड़ जाती है तो जातक अविवाहित रहता है।

जब विवाह रेखा स्पष्ट हो और उसमें बाल के समान सूक्ष्म रेखायें हृदय रेखा की ओर गिरती दिखाई दें तो जातक के जीवन साथी की अस्वस्थता की सूचक होती हैं।

जब विवाह रेखा नीचे की ओर एकदम झुक जाये और उसके मोड़ पर क्रास का चिन्ह हो तो वह जीवन साथी की दुर्घटना या सहसा मृत्यु की सूचक होती है। जब यह रेखा धीरे-धीरे नीचे की ओर मुड़े तो जीवन साथी की कुछ समय तक अस्वस्थ रहने के बाद मृत्यु होती है।

यदि विवाह रेखा के मध्य या किसी अन्य स्थान पर द्वीप चिन्ह हो तो वैवाहिक जीवन में विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है और जब तक द्वीप बना रहता है उनमें विछोह बना रहता है।

जब विवाह रेखा अपने अन्त पर हाथ के मध्य तक पहुंच जाये और द्विशाखा वाली हो जाये तो आपस में तलाक हो जाता है (चित्र संख्या 19-j)। यह बात और भी अधिक निश्चित हो जाती है जब एक शाखा मंगल के मैदान (Plain of Mars) में पहुंच जाये (चित्र संख्या 19-k-k)।

जब विवाह रेखा द्वीप चिन्हों से भरी हो और उनमें से सूक्ष्म रेखायें नीचे की ओर गिरती हों, तो ऐसी रेखा वाले को कभी विवाह नहीं करना चाहिए। ऐसे चिन्हो के प्रभाव से वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुःखदायी होता है। जब रेखा द्वीपों से भरी हो और अन्त में द्विमुखी हो जाये तो भी वैवाहिक जीवन अत्यन्त दुःखद होता है।

यदि रेखा के दो टुकड़े हो जायें तो वैवाहिक बन्धन सहसा टूट जाता है।

यदि विवाह रेखा की कोई शाखा सूर्य क्षेत्र को चली जाये और सूर्य रेखा से मिल जाये तो जातक विशिष्ट व्यक्ति से विवाह करता है। इसके विपरीत यदि वह रेखा नीचे जाकर सूर्य रेखा को काट दे तो विवाह के बाद वह अपने उच्च पद को खो बैठता है।

यदि कोई गहरी रेखा बुध क्षेत्र के ऊपर के भाग से नीचे उतरकर विवाह रेखा को काट दे तो विवाह में बहुत बाधा पड़ती है और उसका बहुत विरोध होता है (चित्र संख्या 18-i)।

यदि कोई बहुत पतली रेखा जो विवाह रेखा को लगभग स्पर्श करती हुई उसके समानान्तर चलती हो तो जातक विवाह के पश्चात् अपने जीवन साथी को बहुत प्रेम करता है।

विवाह रेखा के सम्बन्ध में कुछ और तथ्य

यदि विवाह रेखा के अन्त में दो शाखायें उत्पन्न हो जायें और उनमें से एक हृदय रेखा की ओर नीचे झुकी हुई हो, तो यह समझना चाहिए कि एक सुखहीन वैवाहिक सम्बन्ध जातक के क्रूर व्यवहार और हृदयहीनता के कारण समाप्त हो जाएगा।

जब विवाह रेखा से कोई रेखा नीचे आकर शीर्ष रेखा से मिल जाये तो यह समझना चाहिए कि जातक और उसकी पत्नी में गम्भीर मतान्तर के कारण वैवाहिक सम्बन्ध का दुःखद अन्त होगा।

विवाह रेखा यदि अपने अन्त पर दो शाखाओं में विभाजित हो जाये और उनमें से एक रेखा निकलकर द्वीप चिन्ह से युक्त हो और सूर्य रेखा को स्पर्श करे तो यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण चिन्ह माना जाता है। ऐसे योग से वैवाहिक बन्धन की समाप्ति बहुत अपमानजनक परिस्थिति में होती है और जातक की मान-प्रतिष्ठा को गहरा आघात लगता है।

यदि विवाह रेखा द्वीप चिन्ह से आरम्भ हो तो स्त्री के हाथ में इससे आभास मिलता है कि उसको फंसाकर और धोखा देकर उसके साथ विवाह हुआ है या होगा।

बहुत से हाथों में दो-तीन से अधिक विवाह रेखायें पाई जाती हैं। तब भी जातक अविवाहित रहता है। ऐसा देखकर कई विद्वानों ने यह मत प्रकट किया कि ये रेखायें केवल प्रेम रेखायें होती हैं और इनके प्रभाव से जातक कई स्त्रियों से (स्त्रियों के हाथ में हों तो पुरुषों से) प्रेम सम्बन्ध स्थापित करता है।

हस्त सामुद्रिक शास्त्र के प्रसिद्ध विद्वान डा० के० सी० सेन का मत है कि क्योंकि भारतीयों की संस्कृति और रिवाज पाश्चात्य देशों के निवासियों से बिल्कुल भिन्न हैं, जो विवाह रेखायें पाश्चात्य लोगों के हाथों में पाई जाती हैं वे हिन्दुओं के हाथ में पाई जाने वाली रेखाओं से भिन्न होती हैं। यहां तो बुध क्षेत्र पर जो रेखायें होती हैं, वे ही विवाह की सूचक होती हैं।

यदि कोई रेखा या रेखायें जीवन रेखा से निकलकर अन्दर की ओर उसके बराबर ही शुक्र के क्षेत्र में चली जायें तो यह समझना चाहिए कि जातक यदि स्त्री है तो उस पर किसी पुरुष का और यदि वह पुरुष है तो उस पर किसी स्त्री का महत्त्व-पूर्ण प्रभाव पड़ेगा, कुछ लेखकों का मत है कि यदि यह रेखा बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा से किसी प्रकार जुड़ जाये तो विवाह होता है। परन्तु हमने अपने अनुभव में ऐसा कम देखा है। यदि यह रेखा जीवन रेखा से दूर चली जाये (शुक्र क्षेत्र में अन्दर) तो जातक पर से उस व्यक्ति का प्रभाव भी दूर हो जाता है। यदि यह प्रभाव रेखा किसी आड़ी रेखा से कटती हो, टूटी हो या उस पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो प्रभाव डालने वाले व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है।

कुछ लेखकों ने वैधव्य या विधुरता के निम्नलिखित योग दिये हैं :—

(1) बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा झुक जाये और नीचे जाकर हृदय रेखा से मिल जाये या उसके बिल्कुल निकट पहुंच जाये।

(2) विवाह रेखा पर काले रंग का बिन्दु हो।

(3) विवाह रेखा मुड़कर नीचे झुके और उसके अन्त पर क्रास का चिन्ह हो।

(4) जीवन रेखा से निकलती और शुक्र क्षेत्र मे जाती हुई प्रभाव रेखा के अन्त पर नक्षत्र का चिन्ह हो या प्रभाव रेखा किसी आड़ी रेखा से कटी हो।

(5) हृदय रेखा से निकलकर कोई रेखा भाग्य रेखा को काटती हुई शीर्ष रेखा पर समाप्त हो जाये।

अन्य पाश्चात्य मत

सेंट जरमेन—इस विद्वान और लेखक हस्तशास्त्री के अनुसार बुध क्षेत्र पर जिन रेखाओं को विवाह रेखायें माना जाता है वे प्राय: वैवाहिक बन्धन सूचक नहीं होतीं—ये प्रेम सम्बन्धों की अधिक सूचना देती हैं। इनके अनुसार विवाह रेखा वह होती है जो स्पष्ट और गहरी होती है और उसके साथ-साथ चन्द्र क्षेत्र पर से उठती हुई प्रभाव रेखायें भाग्य रेखा और कभी-कभी सूर्य रेखा से योग करके उसकी पुष्टि करती हैं।

यदि विवाह रेखा के आरम्भ में दो शाखाएं हों तो जातक के दोष के कारण वैवाहिक सम्बन्ध टूट जाता है या पति-पत्नी एक-दूसरे से अलग रहते हैं। अन्त में ऐसी रेखा हो तो विच्छेद तो होता है, परन्तु उसमें जातक का कोई दोष नहीं होता।

यदि विवाह रेखा नीची होकर चलती हुई शुक्र क्षेत्र पर पहुंच जाए—तो यदि रेखा केवल बाएं हाथ में हो तो तलाक की सम्भावना होती है। यदि दोनो हाथों में हो तो तलाक निश्चित रूप से होता है। यही फल उस समय भी होता है जब कोई प्रभाव रेखा जीवन रेखा से या शुक्र क्षेत्र से आकर विवाह रेखा से मिल जाती है।

यदि कोई रेखा विवाह रेखा से उठकर ऊपर को सूर्य क्षेत्र में जाए तो सौभाग्य-पूर्ण विवाह होता है। यदि कोई रेखा विवाह रेखा से नीचे की ओर जाकर सूर्य रेखा को काटे तो अनुपयुक्त विवाह होता है जो दुर्भाग्य भी लाता है।

यदि विवाह रेखा टूटी हुई हो, परन्तु दोनों टुकड़े एक-दूसरे के ऊपर हों तो सम्बन्ध विच्छेद होकर पति-पत्नी में फिर समझौता हो जाता है।

यदि कोई रेखा शुक्र क्षेत्र से उठे और शीर्ष और हृदय रेखा को काटती हुई विवाह रेखा को भी काट दे तो सम्बन्धियों की विरोधी गतिविधियों के कारण जातक का वैवाहिक जीवन कष्टपूर्ण बन जाता है।

यदि शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा आरम्भ हो, जीवन रेखा से उठी हुई एक शाखा

को काटे और विवाह रेखा मे मिल जाये तो वैवाहिक सम्बन्ध टूट जाता है।

यदि कनिष्ठिका के मूल स्थान से कोई खड़ी रेखा विवाह रेखा को काटे तो वैवाहिक सम्बन्ध के प्रति बहुत विरोध होता है।

यदि विवाह रेखा मे द्वीप चिन्ह हो तो वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होता है।

यदि एक हलकी रेखा विवाह रेखा के निकट और समानान्तर हो तो यह बताती है कि जातक का किसी अन्य व्यक्ति से प्रेम सम्बन्ध था और विवाह के बाद भी यह बना हुआ है या बना रहेगा।

यदि विवाह रेखा स्पष्ट हो, लम्बी हो और बृहस्पति क्षेत्र पर त्रास या नक्षत्र का चिन्ह हो तो विवाह में विलम्ब नही होता, वैवाहिक जीवन अत्यन्त सुखी होता है और पति-पत्नी दोनों सौभाग्यशाली होते हैं।

चैनहम

बुध क्षेत्र के किनारे से जो आड़ी रेखायें बुध क्षेत्र पर आती हैं वे विवाह रेखायें या अनुराग रेखायें (Lines of Atraction) कहलाती हैं। अविस्मरणीय समय से हस्त-शास्त्री इनको विवाह का या विवाह से सम्बन्धित चिन्ह मानते आये हैं। किसी हाथ मे कई रेखायें होती हैं और किसी के हाथ में ऐसी एक भी रेखा नहीं होती। हमारा विचार और अनुभव यह है कि ये रेखायें विवाह की सूचक तो होती हैं; परन्तु उनका निश्चित फल दूसरी रेखाओं और चिन्हों के साथ ही जाना जा सकता है। यदि केवल इन्हीं रेखाओं को देखकर फलादेश किया जाये तो गलत हो सकता है।

विवाह का प्रभाव लोगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। कुछ लोग ऐसे होते हैं जो विवाह को एक ऐसी घटना समझते हैं जो उनके जीवन में घटित हो होनी थी। वे इस सम्बन्ध को भी अपनी दिनचर्या का एक अंग समझते हैं। बहुत सम्भव है ऐसे लोगों के हाथ में विवाह रेखा एक भी न हो। दूसरे लोग ऐसे होते हैं जो वैवाहिक सम्बन्ध मे अपना मन और आत्मा समर्पित कर देते हैं। इस प्रकार के लोगों के हाथों में गहरी विवाह रेखायें होती हैं।

इन रेखाओं का महत्त्व जातक के उसके हाथ के अनुसार गुणों से बढ़ता और घटता है। बृहस्पति गुणों वाले व्यक्ति (वे व्यक्ति जिनका बृहस्पति का क्षेत्र और अंगुली बलवान होती है) के लोग विवाह की संस्था को मान्यता देते हैं और इसलिए वे कम अवस्था मे विवाह करते हैं। इसलिए इन लोगों के हाथ में विवाह रेखा वास्तव में विवाह की सूचक होती है।

शनि गुणी विवाह के नाम से चिढ़ते हैं। जब तक कोई व्यक्ति बहुत ही अधिक प्रभाव न डाले वे विवाह नही करते। इसलिए शनि गुणी वालों के हाथ में विवाह की रेखा बलवती और मध्यावस्था में विवाह की सूचक होनी चाहिये। ऐसे हाथ मे अन्य रेखायें विवाह की सूचक नही होती। यदि शनि गुणी हाथ के व्यक्ति में शुक्र क्षेत्र

कामवासना की अधिकता दिखाये तो भी ये व्यक्ति विवाह के झगड़े में नहीं पड़ेंगे, अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए कोई और उपाय ढूंढ़ लेंगे। सूर्य गुणी और बुध गुणी लोग विवाह कम अवस्था में करते हैं। उनके हाथ में स्पष्ट रेखा को विवाह की रेखा माना जा सकता है। चन्द्र गुणी विचित्र स्वभाव के होते हैं और उनके हाथ में विवाह रेखा बहुत लम्बी हो तो वह विवाह की सूचक मानी जा सकती है। शुक्र गुणी व्यक्तियों में इतना आकर्षण होता है कि उनको कोई अविवाहित रहने ही नही देता। उनके हाथों में एक छोटी-सी विवाह रेखा विवाह की सूचक होती है।

बुध क्षेत्र पर अनेकों रेखायें होती हैं। प्रत्येक रेखा को विवाह की रेखा कहना गलत होगा।

विवाह रेखा के सम्बन्ध में हिन्दू हस्त-शास्त्र का मत

हिन्दू विद्वानों के अनुसार करतल को दो स्थानों पर रेखाओं और चिन्हों द्वारा विवाह के सम्बन्ध में अनुमान लगाया जाता है—

(1) बुध क्षेत्र पर कनिष्ठिका के मूल स्थान से और हृदय रेखा के बीच के क्षेत्र से।

(2) दूसरा क्षेत्र हृदय रेखा और मणिबन्ध के बीच में होता है।

प्रथम क्षेत्र के विषय में यह कहा गया है कि बुध क्षेत्र के किनारे से निकलती हुई जितनी आड़ी रेखायें लम्बी, बिना टूटी, अच्छे रंग की और सुन्दर होती हैं उतने ही जातक के विवाह होंगे *(प्राचीन काल में जितने विवाह होते थे उतने ही ऊंचे स्तर का व्यक्ति समझा जाता था)*। यदि ये रेखायें छोटी हों और कटी हों तो विवाह का जीवन संक्षिप्त और कष्टपूर्ण होता है।

दूसरे क्षेत्र के विषय मे 'शिव सामुद्रिक' में उल्लेख है कि हृदय रेखा और मणिबन्ध के बीच के स्थान में जितनी स्पष्ट रूप से अंकित रेखायें हों उतने ही विवाह होते हैं। यहां यह स्पष्ट नहीं है कि लेखक किन रेखाओं के विषय में कह रहा है, क्योंकि हृदय रेखा और मणिबन्ध के बीच के क्षेत्र में अनेकों प्रकार की रेखायें होती हैं जिनमें भाग्य रेखा, सूर्य रेखा, जीवन रेखा आदि भी सम्मिलित हैं। सम्भवत: लेखक का मन्तव्य उन प्रभाव रेखाओं से हो जो चन्द्र क्षेत्र और शुक्र क्षेत्र से उठती हैं और जिनका पाश्चात्य लेखकों ने वर्णन किया है। क्योंकि यह बात स्पष्ट नहीं है, अतः इस मत को महत्त्व नहीं दिया जा सकता।

अन्य विद्वानों ने बुध क्षेत्र की रेखाओं को विवाह रेखायें माना है।

यदि बुध क्षेत्र पर स्थित कोई रेखा, किसी स्त्री के दाहिने हाथ में नीचे को उतर आये और हृदय रेखा (आयु रेखा) और जीवन रेखा (पितृ रेखा) को काट दे, तो इसे वैधव्य का लक्षण समझना चाहिए।

पुरुषों और स्त्रियों के हाथों में वे इस बात की सूचक होतीं हैं कि उनके जीवन-साथी सुन्दर, स्वस्थ और अच्छे आचरण के होंगे। यदि रेखायें छोटी हों और छिन्न-भिन्न हों तो जीवन साथी अच्छे आचरण के नहीं होंगे।

हिन्दू मत के अनुसार विवाह रेखा की परीक्षा पुरुष के बायें हाथ से तथा स्त्री के दाहिने हाथ से करना चाहिए। यदि पुरुष के हाथ में विवाह रेखा की कोई शाखा उसकी दाहिनी ओर हो तो वह सुखी और परिपूर्ण दाम्पत्य जीवन व्यतीत करता है। यदि शाखा बांई ओर हो तो दाम्पत्य जीवन सुखद नही होता।

दीक्षा रेखा—तर्जनी के मूल स्थान पर यदि कोई रेखा ऐसी हो जो एक अर्द्धवृत्त के रूप मे मूल स्थान को घेर ले तो ऐसी रेखा को दीक्षा रेखा या संन्यास रेखा कहते हैं। यदि हाथ में सुस्पष्ट विवाह रेखा हो तो दीक्षा रेखा के उपस्थित होने पर जातक अविवाहित रहता है। ऐसा भी सम्भव है कि विवाहित होने के बाद वह वैराग्य ले ले।

साधुओं और संन्यासियों के हाथों में वे रेखाएं जिन्हें हम विवाह रेखाएं कहते हैं, उनके शिष्यों और भक्तों की सूचक होती हैं।

प्राचीन काल मे हिन्दुओं में एक से अधिक पत्नियों को रखने की प्रथा मान्य थी। अतः उस काल के अनुसार जितनी विवाह रेखाएं हों उतने विवाह होने का फलादेश देना मान्य था। परन्तु अब हिन्दुओं और ईसाइयों को कानून के अनुसार केवल एक ही कानूनी और मान्य विवाह करने का अधिकार है। इसलिए विवाह रेखाओ के सम्बन्ध में फलादेश, समय, काल और स्थानीय प्रथाओ, रस्मो और रिवाजों को देखकर करना चाहिए।

क्योंकि हिन्दू हस्त-शास्त्र उस समय लिखा गया था जब लोगों को कई पत्नियां रखने का अधिकार था। अतः इन रचनाओं में सौतन का योग भी दिया है। स्त्री के दाहिने हाथ में विवाह रेखा से जितनी शाखाएं ऊपर की ओर उठती हों, तो उसकी उतनी ही सौतन होना कहा जाता था। अब हम इस चिन्ह से कह सकते हैं कि उसके पति की उतनी ही प्रेमिकायें होंगी।

हिन्दू विद्वानों ने कुछ ऐसी रेखाओं का भी जिक्र किया है जो कुत्सित सम्बन्धों की सूचक होती हैं। उनके अनुसार पुरुष के हाथ में शुक्र क्षेत्र पर अंगूठे के मूल स्थान से जितनी रेखाएं जीवन रेखा (पितृ रेखा) की ओर जाती हों उतनी ही स्त्रियों से उसका कुत्सित सम्बन्ध होता है। यही रेखाएं स्त्रियों के हाथ में उसके पर पुरुषों से सम्बन्ध की सूचक होती हैं। हमारा मत यह है कि हाथ के अन्य लक्षणों को देखकर इस प्रकार का निष्कर्ष निकालना चाहिए।

हिन्दु विद्वानों के अनुसार यदि आप किसी स्त्री के सम्बन्धियों, सन्तान और पति के भाग्य के विषय में जानना चाहते हैं तो उस स्त्री के हाथ में आयु रेखा (हृदय रेखा) से पति के विषय मे, मातृ रेखा से पति की माता के विषय में और पितृ रेखा

से पति के पिता के विषय में ज्ञान प्राप्त होगा। हमने यह लिख तो दिया है, परन्तु हमें विश्वास नहीं होता कि इन रेखाओं के विषय में जो बताया गया है वह ज्ञान प्राप्त हो सकता है। स्त्री के हाथ में उसकी मातृ रेखा उसकी अपनी माता के सम्बन्ध में और पितृ रेखा अपने पिता के सम्बन्ध में ज्ञान दे यह तो कुछ अर्थ भी रखता है; परन्तु वे रेखाएं पति की माता-पिता के सम्बन्ध में सूचना दे सकती हैं, यह हमें सम्भव नहीं लगता। तब भी पाठक अपने अनुभव की कसौटी पर इस विषय की परीक्षा कर सकते हैं। इसी प्रकार हिन्दू विद्वानों ने यह मत प्रकट किया है कि पुरुष के बांये हाथ की पितृ और मातृ रेखाओं से पत्नी के पिता और माता के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

सौभाग्यवती स्त्री के लक्षण

भारत में प्रत्येक हिन्दू स्त्री की अभिलाषा होती है कि वह आजीवन सौभाग्यवती रहे। अर्थात् उसकी मृत्यु उसके पति के जीवित रहते ही हो जाये। ऐसी स्त्री के हाथ सुन्दर और कोमल होते हैं। अंगुलियां छोटी, सुगठित और सीधी होती हैं। हाथ में रेखाएं अधिक नहीं होती हैं और वे पतली, गहरी, स्पष्ट रूप से अंकित और अच्छे रंग की होती हैं। हाथ में प्रायः मछली, स्वस्तिक और कमल के चिन्ह पाये जाते हैं। भाग्य रेखा लम्बी, बिना टूटी हुई और अशुभ चिन्हों से हीन होती है। करतल मध्य ऊंचा उठा होता है (उसमें गड्ढा नहीं होता)। अंगूठे के मध्य में तथा उसके मूल स्थान पर यव के चिन्ह होते हैं। अंगुलिया एक-दूसरे से बिल्कुल सटी होती हैं। नाखून स्वस्थ रंग के होते हैं। हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र पर त्रिशूल के रूप में समाप्त होती है। विवाह रेखा लम्बी और स्पष्ट रूप से अंकित होती है।

विधवा के लक्षण

(1) हाथ में अनेकों रेखाएं होती हैं। वे लाल रंग की होती हैं और छिन्न-भिन्न होती हैं।

(2) भाग्य रेखा टूटी हुई होती है।

(3) अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व होते हैं।

(4) विवाह रेखा हृदय रेखा के ऊपर मुड़ जाती है; उस पर अशुभ चिन्ह होते हैं या टूटी-फूटी होती है।

(5) उसका मुख लम्बा और पीले रंग का होता है, कन्धे बैल के समान होते हैं। स्तन लम्बे होते हैं और नीचे की ओर लटके होते हैं। शरीर मोटा और भद्दा होता है।

से सूचक बच्चा माता-पिता के जीवन में अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक महत्त्व का होगा।

यदि पुरुष के हाथ में सन्तान रेखाएं उतनी ही स्पष्ट हों जितनी उसकी पत्नी के हाथ में हों, तो पुरुष अपने बच्चों से बहुत प्यार करता है और वह अत्यन्त स्नेही स्वभाव का होता है। परन्तु स्त्री के हाथ में प्रायः सन्तान रेखाएं अधिक स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं। स्थान के अभाव के कारण इस सम्बन्ध में और अधिक सामग्री नहीं दी जा सकती; परन्तु जो कुछ सूचना हमने ऊपर दी है उसकी सहायता से पाठक अपने अनुभव द्वारा इस सम्बन्ध में अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं।

यदि किसी व्यक्ति की हृदय रेखा बुध क्षेत्र पर दो या तीन शाखाओं में विभाजित हो जाए तो वह सन्तानहीन नहीं होता।

जिस स्त्री के हाथ में मछली का चिन्ह स्पष्ट रूप से अंकित हो वह सन्तानहीन नहीं होती। जब यह चिन्ह न हो, शुक्र क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो, हृदय रेखा शनि क्षेत्र से आरम्भ हो, और नीचे की ओर ढलान लेती हो, साथ में शुक्र मेखला भी अंकित हो, कोनिक अंगुलियां हों और अंगूठा निर्बल इच्छा शक्ति का सूचक हो, तो वह स्त्री व्यभिचारिणी और संतानहीन होगी। पुरुष और स्त्री जिनके करतल चौड़े होते हैं और सब प्रधान रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं, सन्तानहीन नहीं होते।

हिन्दू-हस्त शास्त्र का मत

एक विद्वान का मत है कि सन्तान रेखाएं शुक्र क्षेत्र पर अंगूठे के मूल स्थान पर स्थित होती हैं। लम्बी, मोटी और स्पष्ट रेखाएं पुत्रों की सूचक होती हैं और छोटी और पतली रेखायें पुत्रियों की। यदि रेखाएं आड़ी रेखाओं से कटी न हों, टूटी न हों और हर प्रकार से निर्दोष हो तो सन्तान दीर्घजीवी होती है। यदि रेखाएं दोषपूर्ण हों तो सन्तान अल्पजीवी होती है। (अपने अनुभव में हमने इसको ठीक पाया है। इस स्थान में रेखायें स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं और दोष आदि साफ दिखाई दे जाते हैं। बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा के साथ जो रेखायें होती हैं वे प्रायः इतनी सूक्ष्म होती हैं कि उनकी परीक्षा करना कठिन होता है)।

एक दूसरा हिन्दू मत यह है कि जहां अंगूठा करतल से जुड़ता है वहां यव चिन्ह होते हैं। यवों की संख्या के अनुसार सन्तान की संख्या होती है। बड़े यव पुत्रों के सूचक होते हैं और छोटे पुत्रियों के।

एक मत यह भी है कि ऊपर बताए स्थान पर अर्थात् अंगूठे के नीचे एक बड़ा यव होता है तो जातक को निश्चित रूप से पुत्र रत्न होता है (यह चिन्ह पाश्चात्य मत

(17)
सन्तान रेखायें (Children)

बिल्कुल ठीक-ठीक यह बताना कि किसी व्यक्ति के कितने बच्चे हो चुके हैं और कितने और भविष्य में होंगे विस्मयजनक लगता होगा; परन्तु हम समझते हैं कि प्रधान रेखाओं द्वारा जो कुछ बताया जा सकता है, वह इससे भी अधिक विस्मयजनक होता है। परन्तु ऐसा करने के लिए ध्यानपूर्वक अध्ययन, अनुभव और सूक्ष्म परीक्षा की आवश्यकता होती है।

इस विषय में जो सफलता हमें प्राप्त हुई उसी के कारण लोगों के निरन्तर अनुरोध पर हम इस पुस्तक को लिखने को बाध्य हुये हैं। हमारा प्रयत्न रहा है कि हर साधारण और छोटी-सी बात को हम पाठकों के सम्मुख रखें जिससे इस पुस्तक के अध्ययन के बाद उनके ज्ञान में कोई कमी न रहे।

सन्तान के सम्बन्ध में विचार करते समय हाथ के अन्य सम्बन्धित भागों की परीक्षा करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए यदि शुक्र क्षेत्र जीवन रेखा के कारण संकीर्ण हो गया और समुचित रूप से उन्नत न हो तो जातक में उस व्यक्ति की अपेक्षा जिसका शुक्र क्षेत्र विस्तृत और उन्नत हो सन्तानोत्पादन शक्ति कम होती है।

हाथ में सन्तान रेखाएं वे होती हैं जो विवाह रेखा के अन्त में उसके ऊपर स्थिर होकर सीधी ऊपर जाती हैं। कभी-कभी तो ये रेखाएं इतनी सूक्ष्म होती हैं कि उनकी परीक्षा के लिए मेगनीफाइंग ग्लास की सहायता की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु ये रेखाएं बहुत फीकी होती हैं तो हाथ की अन्य रेखाएं भी प्रायः फीकी होती हैं। इन रेखाओं की स्थिति से और यह देखने से कि वे ग्रह क्षेत्र के किस भाग को स्पर्श करती हैं, यह ठीक तरह से ज्ञात हो सकता है कि जातक की सन्तान कोई प्रभावशाली या महत्व की भूमिका अदा करेगी या नहीं। यह भी मालूम हो सकता है कि बच्चे स्वस्थ होंगे या निर्बल, और सन्तान पुत्र होगा या पुत्री।

इस सम्बन्ध मे ध्यान देने योग्य मुख्य बात ये हैं—

(1) चौड़ी रेखाएं पुत्र की सूचक होती हैं और संकीर्ण पतली रेखाए पुत्रियों की।

(2) यदि रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित हों तो बच्चे स्वस्थ होते हैं; यदि वे फीकी और लहरदार हों तो इसके विपरीत होता है।

(3) यदि रेखा के प्रथम भाग में द्वीप चिन्ह हो तो बच्चे अपने आरम्भिक जीवन मे बहुत निर्बल होंगे और यदि बाद में स्पष्ट रूप में अंकित हों तो स्वस्थ हो जाएंगे।

(4) यदि रेखा के अन्त में द्वीप चिन्ह हो तो बच्चा जीवित नहीं रहेगा।

(5) जब एक रेखा अन्य रेखाओं से बड़ी और अधिक सशक्त हो तो उस रेखा

से सूचक बच्चा माता-पिता के जीवन में अन्य बच्चों की अपेक्षा अधिक महत्त्व का होगा।

यदि पुरुष के हाथ में सन्तान रेखाएं उतनी ही स्पष्ट हों जितनी उसकी पत्नी के हाथ में हों, तो पुरुष अपने बच्चों से बहुत प्यार करता है और वह अत्यन्त स्नेही स्वभाव का होता है। परन्तु स्त्री के हाथ में प्रायः सन्तान रेखाएं अधिक स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं। स्थान के अभाव के कारण इस सम्बन्ध में और अधिक सामग्री नहीं दी जा सकती; परन्तु जो कुछ सूचना हमने ऊपर दी है उसकी सहायता से पाठक अपने अनुभव द्वारा इस सम्बन्ध में अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं।

यदि किसी व्यक्ति की हृदय रेखा बुध क्षेत्र पर दो या तीन शाखाओं में विभाजित हो जाए तो वह सन्तानहीन नहीं होता।

जिस स्त्री के हाथ में मछली का चिन्ह स्पष्ट रूप से अंकित हो वह सन्तानहीन नहीं होती। जब यह चिन्ह न हो, शुक्र क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो, हृदय रेखा शनि क्षेत्र से आरम्भ हो, और नीचे की ओर ढलान लेती हो, साथ में शुक्र मेखला भी अंकित हो, कोनिक अंगुलियां हों और अंगूठा निर्बल इच्छा शक्ति का सूचक हो, तो वह स्त्री व्यभिचारिणी और संतानहीन होगी। पुरुष और स्त्री जिनके करतल चौड़े होते हैं और सब प्रधान रेखाएं स्पष्ट रूप से अंकित होती हैं, सन्तानहीन नहीं होते।

हिन्दू-हस्त शास्त्र का मत

एक विद्वान का मत है कि सन्तान रेखाएं शुक्र क्षेत्र पर अंगूठे के मूल स्थान पर स्थित होती हैं। लम्बी, मोटी और स्पष्ट रेखाएं पुत्रों की सूचक होती हैं और छोटी और पतली रेखायें पुत्रियों की। यदि रेखाएं आड़ी रेखाओं से कटी न हों, टूटी न हों और हर प्रकार से निर्दोष हों तो सन्तान दीर्घजीवी होती है। यदि रेखाएं दोषपूर्ण हों तो सन्तान अल्पजीवी होती है। (अपने अनुभव मे हमने इसको ठीक पाया है। इस स्थान में रेखायें स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं और दोष आदि साफ दिखाई दे जाते हैं। बुध क्षेत्र पर विवाह रेखा के साथ जो रेखायें होती हैं वे प्रायः इतनी सूक्ष्म होती हैं कि उनकी परीक्षा करना कठिन होता है)।

एक दूसरा हिन्दू मत यह है कि जहां अंगूठा करतल से जुड़ता है वहां यव चिन्ह होते हैं। यवों की संख्या के अनुसार सन्तान की संख्या होती है। बड़े यव पुत्रों के सूचक होते हैं और छोटे पुत्रियों के।

एक मत यह भी है कि ऊपर बताए स्थान पर अर्थात् अंगूठे के नीचे एक बड़ा यव होता है तो जातक को निश्चित रूप से पुत्र रत्न होता है (यह चिन्ह पाश्चात्य मत के द्वीप चिन्ह के समान होता है)।

एक अन्य हिन्दू मत के अनुसार हृदय रेखा और शीर्ष रेखा के बीच में करतल

के किनारे पर जो आड़ी रेखाएं होती हैं उनको सन्तान रेखायें मानना चाहिए। (अनुभव मे यह प्रायः ठीक नहीं निकलता।)

एक और मत भी है। उसके अनुसार कनिष्ठिका के दूसरे पर्व और मध्यमा के दूसरे पर्व मे जो स्पष्ट रूप से अंकित ऊपर से नीचे जाती हुई सीधी रेखायें होती हैं वे सन्तान सूचक होती हैं (अनुभव में हमने इसे भी ठीक नहीं पाया है। हमारे अपने बायें और दाहिने दोनों हाथों में कनिष्ठा के दूसरे पर्व में और मध्यमा के दूसरे पर्व में, दोनों में छः सात इस प्रकार की रेखायें हैं। ईश्वर की कृपा से हमारे केवल दो ही बच्चे हैं)।

यदि पितृ रेखा (जीवन रेखा) स्पष्ट रूप से अंकित होकर एक विस्तृत शुक्र क्षेत्र को गोलाई के साथ घेर ले, और वह वृहस्पति क्षेत्र पर पहुँचकर दो शाखाओं में विभाजित हो जाए, तो यह निश्चय के साथ कहा जा सकता है कि जातक सन्तान सुख प्राप्त करेगा और उसका परिवार बड़ा होगा।

यदि मणिबन्ध से ऊर्ध्व रेखा ऊपर जाती हुई शाखाओं में विभाजित होकर अंगुलियों के मूल स्थान के निकट पहुंच जाए, स्पष्ट रूप से अंकित और निर्दोष हो तो जातक पुत्रों और पौत्रों का सुख भोगता है।

नोट—ऊपर हमने पाश्चात्य मत और हिन्दू मत के अनुसार सन्तान के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त करने के चिन्ह और योग दिए हैं। हस्त-विज्ञान के छात्रों को चाहिए कि इन सब सकेतों और योगों को अपने व्यावहारिक अनुभव की कसौटी पर परीक्षा करें और जो संकेत उन्हें ठीक उत्तर दें उन्हीं को सत्य और प्रमाणित मानें। वास्तव में यह एक अत्यन्त कठिन काम है। सन्तान की उत्पत्ति के लिए पति-पत्नी दोनों के हाथों में सन्तान सूचक शुभ चिन्ह होने चाहिए। प्रायः ऐसा देखने में आता है कि जब सन्तान न हो तो ऐसा सम्भव है कि पति का कोई विवाह पहले भी हुआ हो और उसकी प्रथम पत्नी से बच्चे हुए हों और उसका किसी अन्य स्त्री से प्रेम सम्बन्ध हो और उस स्त्री के सन्तान उत्पन्न हुई हो। यही उस परिस्थिति में भी सम्भव हो सकता है जब पत्नी के हाथ मे उत्पन्न रेखायें हों और पति के हाथ में न हों।

एक बात और ध्यान देने योग्य है। परिवार नियोजन की योजना ने भी सन्तान रेखाओं के परिणाम को गलत बना दिया है। हाथ में पांच छः बच्चों के संकेत होते हैं। जातक दो या तीन बच्चे होने के बाद आपरेशन करवा लेता है और फिर बच्चे होने की सम्भावना नही रह जाती। इसका अर्थ यह लेना चाहिए कि भाग्य ने तो उसे पांच छः बच्चे दिए थे और वह चाहता तो हो सकते थे; परन्तु जातक ने जान-बूझकर जमाने का हाल देखकर ईश्वर की कृपा को स्वीकार नही किया। आप देखते ही होंगे कि परिवार नियोजन अधिक शिक्षित वर्ग के लोग ही करते हैं और परिणाम स्वरूप उनके कम सन्तान होती हैं। अशिक्षित वर्ग परिवार नियोजन पैसे के

प्लेट—14 दोषी-निर्णित हत्यारा

प्लेट 15 आत्म हत्या करने वाली

में पड़कर कर लें तो हो जाता है अन्यथा उन लोगों के छोटी ही अवस्था में पांच छः बच्चे हो जाना एक साधारण बात है।

हिन्दू हस्त-शास्त्र के विद्वानों ने हाथ से माता-पिता और भाई-बहिनो के सबंध में कुछ ज्ञान प्राप्त करने की सामग्री प्रदान की है। उनके अनुसार यदि पितृ रेखा और मातृ रेखा बलवती और निर्दोष हो तो जातक के माता-पिता दीर्घायु और समृद्ध होते हैं और उनके द्वारा जातक को भी सुख प्राप्त होता है। यदि इन रेखाओ पर अशुभ चिन्ह हों तो वे पिता और माता के लिए अशुभ फलदायक होते हैं। जब ये रेखाएं किसी स्थान में, विशेषकर अपने आरम्भ से मध्य तक, फीकी होती हों तो पिता-माता के दुर्बल स्वास्थ्य की सूचक होती हैं। यदि कोई रेखा टूटी हो तो वह मृत्यु की सूचक होती है (पिता की या माता की)।

यदि हृदय रेखा (आयु रेखा) का अन्त वृहस्पति क्षेत्र पर त्रिशूल के रूप में हो और मणिबन्ध पर मछली का चिन्ह हो तो जातक को अपने माता-पिता से बहुत सहारा और आर्थिक सहायता प्राप्त होती है।

एक मत के अनुसार वृहस्पति क्षेत्र पितृ स्थान होता है और पितृ रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर तर्जनी तक जाती है। यदि यह रेखा अपने आरम्भ मे बिल्कुल फीकी और धुंधली हो तो पिता की मृत्यु जातक के शैशव काल में ही हो जाती है।

एक पाश्चात्य विद्वान् श्रीमती राबिन्सन के अनुसार शुक्र क्षेत्र पर जो आड़ी रेखायें होती हैं वे भाइयों और बहिनों की सूचक होती हैं। उनके अनुसार अंगूठे के मूल स्थान से जो रेखायें जीवन रेखा की ओर आती हैं वे भाई-बहिनो का प्रतिनिधित्व करती हैं।

हिन्दू मत के अनुसार यदि पितृ रेखा वृहस्पति क्षेत्र में शाखाओं में विभाजित हो जाए तो शाखाएं भाई-बहिनों की सूचक होती हैं। (अनुभव में हमने इसे ठीक नहीं पाया है)। एक अन्य हिन्दू मत के अनुसार आयु रेखा (हृदय रेखा) और मणिबन्ध पर करतल के किनारे पर आड़ी रेखाएं भाई-बहिनों की सूचक होती हैं।

हमने यह सूचना पाठकों के ज्ञानार्थ दे दी है। क्योंकि मतों में भिन्नता है इसलिए केवल अनुभव से ठीक निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है। हमने हस्त-शास्त्रियों को सन्तान और भाई-बहिनों की संख्या बिल्कुल ठीक बताते देखा है। वे उनकी आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में भी बता देते हैं। इस सम्बन्ध मे बहुत कुछ ज्ञान अभी तक प्रकाश में नही आया है।

(18)
नक्षत्र चिन्ह (The Star)

हाथ में नक्षत्र की स्थिति अत्यन्त महत्व की होती है। हम इस मत के नहीं कि यह चिन्ह सदा संकट ही का सूचक होता है और ऐसा संकट जिससे रक्षा नही हो सकती। वास्तव में एक-दो स्थानों के अतिरिक्त यह चिन्ह सौभाग्य ही सूचित करता है। उसकी शुभता और अशुभता उसकी स्थिति पर आधारित होती है।

जब वृहस्पति क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह हो तो उसकी स्थिति के अनुसार उसके दो अर्थ होते हैं। जब नक्षत्र ग्रह क्षेत्र के उच्चतम स्थान पर स्थित हो तो जातक को उच्च प्रकार की प्रतिष्ठा, उच्च अधिकार आर उच्च पदवी प्राप्त होती है। वह किसी भी क्षेत्र में कार्य करता हो, वह मान प्राप्त करते हुए शिखर पर पहुंच जाता है। उसकी महत्वाकांक्षायें पूर्ण होती हैं और उसकी अपनी योजनाओं में पूर्ण रूप से सफलता मिलती है (चित्र 19-m)। यदि इस नक्षत्र चिन्ह के साथ शीर्ष, भाग्य और सूर्य रेखाएं भी सबल हों तो जातक की उन्नति और सफलता इतनी अधिक होगी कि उसकी कोई सीमा नही निर्धारित की जा सकती। यह चिन्ह प्रायः अत्यन्त महत्वाकांक्षी स्त्रियों और पुरुषों के हाथ मे पाया जाता है जिनका ध्येय उच्चतम स्थान और अधिक से अधिक अधिकार प्राप्त करने का होता है।

वृहस्पति क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह का दूसरा स्थान या तो तर्जनी के मूल स्थान में होना है या हाथ के किनारे पर या उसके भी कुछ आगे होता है। क्योंकि इन परिस्थितियों से नक्षत्र चिन्ह वृहस्पति क्षेत्र को कम प्रभावित करता है; इसलिए उसके फलस्वरूप जातक महत्वाकांक्षी होता है और उसका विशिष्ट व्यक्तियों के साथ सम्पर्क भी होता है, पर महत्वपूर्ण या विशेष रूप से सफलता तभी प्राप्त होती है यदि हाथ के अन्य लक्षण शुभ हो और उसके सहायक हों।

शनि क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि नक्षत्र चिन्ह शनि क्षेत्र के मध्य पर स्थिति हो तो यह जातक के भयानक रूप से भवितव्यता का दास होने का सूचक होता है (चित्र संख्या 19-n)। यह चिन्ह जातक को विशिष्टता भी प्राप्त करता है; परन्तु वह विशिष्टता भयावह होती है। पुराने हस्त-शास्त्रियों ने इस प्रकार के चिन्ह को हत्या का चिन्ह बताया है, परन्तु हम इसमे सहमत नही हैं। हमारे अनुसार इसका अर्थ यह होना चाहिए कि जातक भयानक रूप से भाग्य के हाथ मे एक खिलौना होगा। दूसरे शब्दो में यह समझना चाहिए कि भाग्य या वि[illegible] ने उसे किसी विशेष भूमिका को अदा करने के लिए जन्म दिया है, परन्तु उसका समस्त जीवन और कैरियर एक दुःखान्त नाटक की तरह [illegible]नक रूप से अपने अन्तिम चरणों में पहुंचेगा। वह प्रतिभाशाली होगा, राजा होगा

परन्तु उसका सब कुछ नष्ट हो जाएगा। (कीरो के ये शब्द हैं—"But all his work and life and career will have some dramatic and terrible climax, some unrivalled brilliancy, some position resplendent with the majesty of death a king for the moment but crowned with doom) ।"

शनि क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह की दूसरी स्थिति है क्षेत्र के बाहर, उसके किनारे पर या अंगुलियों को काटते हुए। इस प्रकार के बृहस्पति क्षेत्र के नक्षत्र चिन्ह के समान, इसका फल यह होगा कि जातक ऐसे लोगों के सम्पर्क में आयेगा जो इतिहास बनाते हैं; परन्तु वह विशिष्टता भयानक भाग्य के खेल द्वारा ही पाएगा !

सूर्य क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि सूर्य क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह हो (चित्र संख्या 19-p) तो जातक को प्रतिभा, पद और धन तो प्राप्त होते हैं; परन्तु वह सुख और शांति से वंचित होता है। धन या प्रतिष्ठा इतने विलम्ब से प्राप्त होते हैं कि तब तक स्वास्थ्य बिगड़ जाता है और मन की शांति समाप्त हो जाती है। यह निश्चित है कि ऐसा चिन्ह अतुल धन देता है; परन्तु न तो वह सुख देता है न तृप्ति। यदि नक्षत्र क्षेत्र के किनारे पर हो तो जातक धनी और प्रतिभाशाली लोगों के सम्पर्क में तो आता है; परन्तु वह स्वयं धनी और प्रतिभाशाली नही बनता।

जब नक्षत्र चिन्ह सूर्य रेखा से जुड़ा हो या उससे बना हो तो जातक को अपनी योग्यता और अपनी कला द्वारा बहुत प्रसिद्धि प्राप्त होती है। परन्तु ऐसा नक्षत्र हाथ में ऊंचे पर नही होना चाहिए। रेखा के मध्य के कुछ ऊपर इसकी श्रेष्ठतम स्थिति है। (इस सम्बन्ध में प्लेट 10 देखिए)।

बुध क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि नक्षत्र बुध क्षेत्र के मध्य मे स्थित हो (चित्र संख्या 19-q) तो जातक व्यापार या विज्ञान के क्षेत्र में प्रतिभाशाली होता है और अपूर्व सफलता प्राप्त करता है। यह ओजस्वी वक्ता होने का भी लक्षण है। यदि नक्षत्र क्षेत्र के किनारे पर हो तो जातक केवल ऊपर दिए क्षेत्रों मे सफल लोगो के सम्पर्क मे आता है।

मंगल क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

यदि नक्षत्र चिन्ह बुध क्षेत्र के नीचे वाले मंगल क्षेत्र पर अंकित हो (चित्र संख्या 18-j) तो जातक सन्तोष, धैर्य और सहनशीलता के साथ परिश्रम करके उच्चतम स्थान और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

यदि बृहस्पति क्षेत्र के नीचे वाले मंगल क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक को

ऐसे नक्षत्र चिन्ह होने पर सेनानी परमवीर चक्र; अशोक चक्र जैसे उच्च श्रेणी के मैडिल प्राप्त करते हैं।

चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

हमारे मत के अनुसार यदि चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह होता है (चित्र संख्या 18-k) तो जातक अपनी कल्पना शक्ति के गुणों द्वारा बहुत ख्याति प्राप्त करता है। अन्य लेखकों ने इस चिन्ह को जल में डूबकर मृत्यु हो जाने का सूचक बताया है। हम उनसे सहमत नहीं हैं। हां, हम इसकी अशुभता को इस स्थिति में मान सकते हैं जबकि शीर्ष रेखा झुककर चन्द्र क्षेत्र में आ गई हो और उसके अन्त में नक्षत्र का चिन्ह हो। ऐसी दशा में कल्पना शक्ति सीमा का उल्लंघन कर जाती है और जातक अपने मानसिक सन्तुलन को खो देता है और पागल हो जाता है। आत्म-हत्या करने वालों के हाथों में इस प्रकार का योग देखा गया है। आत्महत्या के लिए लोग आजकल जल की शरण कम लेते हैं, बड़ी मात्रा में नींद की गोलियां खाने जैसे उपाय अब अधिक प्रचलित हो गए हैं। इसलिए चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र को जल में डूबने का चिन्ह नहीं मानना चाहिए।

शुक्र क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह

शुक्र क्षेत्र के उच्चतम स्थान (शिखर) पर नक्षत्र का चिन्ह (चित्र संख्या 18-l) शुभ होता है और सफलता दिलवाता है,—प्रेम के मामलों में, धन प्राप्ति में नहीं। पुरुष और स्त्री दोनो के हाथों में प्रेम सम्बन्धी मामलों में यह अपूर्व सफलता का चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रेम में विजय के लिए समस्त विरोध और ईर्ष्या को कुचल देते हैं। यदि नक्षत्र का चिन्ह क्षेत्र के किनारे पर हो तो जातक उन लोगों के सम्पर्क में आता है जो प्रेम में विजयी होते हैं।

अंगुलियों पर नक्षत्र चिन्ह

यदि अंगुलियों के सिरे पर (टिप पर) या प्रथम पर्व पर नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक जिस काम में हाथ लगाए उसमे उसे सफलता प्राप्त होती है। जब अंगूठे के प्रथम पर्व मे नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक अपनी इच्छा शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करता है।

नक्षत्र चिन्ह के द्वारा किसी निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए हाथ में प्रदर्शित प्रवृत्तियों और अन्य लक्षणों की परीक्षा करना अत्यंत आवश्यक है। जैसे किसी हाथ में यदि शीर्ष रेखा और अंगूठा कमजोर हों तो शुभ नक्षत्र चिन्ह निरर्थक होता है। वास्तव में हस्त परीक्षा में किसी एक शुभ चिन्ह से जातक का भविष्य उज्ज्वल नहीं कहना चाहिए। सारे हाथ की ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के बाद ही फलादेश करना उचित होता है।

(19)

क्रास चिन्ह (The Cross)

क्रास चिन्ह का गुण नक्षत्र चिन्ह से विपरीत होता है और बहुत कम स्थितियों में वह अनुकूल या शुभ फलदायक माना जाता है। यह चिन्ह कष्ट, निराशा, संकट और कभी-कभी जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन का सूचक होता है। परन्तु बृहस्पति क्षेत्र पर क्रास चिन्ह को अत्यन्त शुभ फलदायक माना जाता है (चित्र संख्या 18-m)। यहाँ यह इस बात का सूचक होता है कि जातक के जीवन मे एक वास्तविक और घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित होगा, विशेषकर जब भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होती हो। इस क्रास चिन्ह में एक विचित्र गुण यह होता है कि यह इस बात की सूचना देता है कि किस अवस्था मे प्रेम सम्बन्ध का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ेगा। जब क्रास जीवन रेखा के आरम्भिक स्थान के निकट होता है तो प्रेम सम्बन्ध का प्रभाव जीवन के प्रथम भाग में अनुभव होता है। जब क्रास चिन्ह क्षेत्र के शिखर पर हो तो मध्यावस्था में और जब चिन्ह क्षेत्र के मूल स्थान पर होता है तो प्रभाव जीवन के अन्तिम भाग में पड़ता है।

यदि क्रास चिन्ह शनि क्षेत्र पर हो (चित्र संख्या 18-n) और भाग्य रेखा को स्पर्श करता हो तो जातक का किसी दुर्घटना में हिंसात्मक अन्त होता है। यदि यों ही वह शनि क्षेत्र पर हो तो वह जातक को अत्यन्त भाग्यवादी, निरुत्साही और निराशावादी बनाता है।

क्रास का चिन्ह यदि सूर्य क्षेत्र पर हो तो जातक को अपने सब प्रयत्नों में असफलता प्राप्त होती है।

बुध क्षेत्र पर यदि क्रास का चिन्ह हो तो जातक बेईमान होता है। वह कहता कुछ है, करता कुछ है।

यदि बुध क्षेत्र के नीचे मंगल क्षेत्र में क्रास चिन्ह हो तो जातक को बहुत से शत्रुओं के विरोध का सामना करना पड़ता है। यदि बृहस्पति क्षेत्र के नीचे मंगल क्षेत्र में क्रास चिन्ह हो तो लड़ाई-झगड़े या हिंसात्मक आक्रमण में जातक की मृत्यु की संभावना होती है।

यदि शुक्र क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से अंकित क्रास का चिन्ह हो तो जातक किसी प्रेम सम्बन्ध के कारण इतना अधिक कष्ट पाता है कि उसके कारण उसकी मृत्यु भी हो सकती है। यदि क्रास चिन्ह छोटा हो और जीवन रेखा के निकट हो तो सम्बन्धियों के विरोध का सूचक होता है जिसके कारण जातक को कष्ट भोगना पड़ता है।

यदि चन्द्र क्षेत्र पर शीर्ष रेखा के नीचे क्रास चिन्ह हो तो कल्पनाशीलता के सांघातिक प्रभाव का सूचक होता है (चित्र संख्या 16-1)। ऐसा व्यक्ति स्वयं अपने

पड़ रहा है; परन्तु वर्ग चिन्ह के द्वारा उस दबाव के कारण जो क्षति पहुंचती, उससे उसकी रक्षा हो गई।

यदि शनि क्षेत्र के नीचे शीर्ष रेखा के ऊपर वर्ग चिन्ह हो तो जातक को किसी होने वाली दुर्घटना से संरक्षण प्राप्त होता है।

यदि हृदय रेखा किसी वर्ग चिन्ह से मिल जाती है तो प्रेम सम्बन्धों के कारण जातक पर कोई मुसीबत आती है। जब यह चिन्ह शनि क्षेत्र के नीचे हो तो जातक के प्रेम पात्र पर मुसीबत आती है। वह किसी दुर्घटना का शिकार होता है या उसकी मृत्यु हो जाती है (चित्र संख्या 21-j)।

यदि जीवन रेखा किसी वर्ग चिन्ह से गुजरती है तो जातक के जीवन की रक्षा होती है चाहे उस स्थान पर जीवन रेखा टूटी हुई ही क्यों न हो (चित्र संख्या 21-k)।

यदि जीवन रेखा के अन्दर शुक्र क्षेत्र पर वर्ग चिन्ह हो तो जातक पर उसकी कामुक प्रवृत्ति के कारण यदि कोई मुसीबत आने वाली होती है तो जातक की उससे रक्षा होती है (चित्र संख्या 21-1)। यदि वर्ग चिन्ह शुक्र क्षेत्र के मध्य में हो तो जातक अपनी अनैतिक और कामुक प्रवृत्ति के कारण तरह-तरह के संकटों मे पड़ता है; परन्तु उसकी रक्षा हो जाती है।

परन्तु यदि वर्ग जीवन रेखा के बाहर (परन्तु निकट) मंगल के मैदान में हो तो जातक को या तो कारावास भोगना पड़ता है या ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती हैं जिनके कारण अपने परिवार और समाज से अलग होकर एकान्तवास करना पड़ता है।

जब वर्ग चिन्ह किसी ग्रह क्षेत्र पर अंकित होता है तो क्षेत्र के अत्यधिक गुणों के कारण जातक को हानि से बचाता है।

बृहस्पति क्षेत्र पर अत्यधिक महत्वाकांक्षा से रक्षा करता है। शनि क्षेत्र पर जातक की भवितव्यता पर अधिक विश्वास को नियंत्रित करता है।

सूर्य क्षेत्र पर ख्याति प्राप्ति की उच्चाभिलाषा को नियन्त्रित करता है।

बुध क्षेत्र पर अधीरता और जल्दबाजी को नियंत्रित करता है।

मंगल क्षेत्र पर युद्ध में तथा शत्रुओं से रक्षा करता है।

चन्द्र क्षेत्र पर अत्यधिक कल्पनाशीलता के कारण होने वाली क्षति से रक्षा करता है।
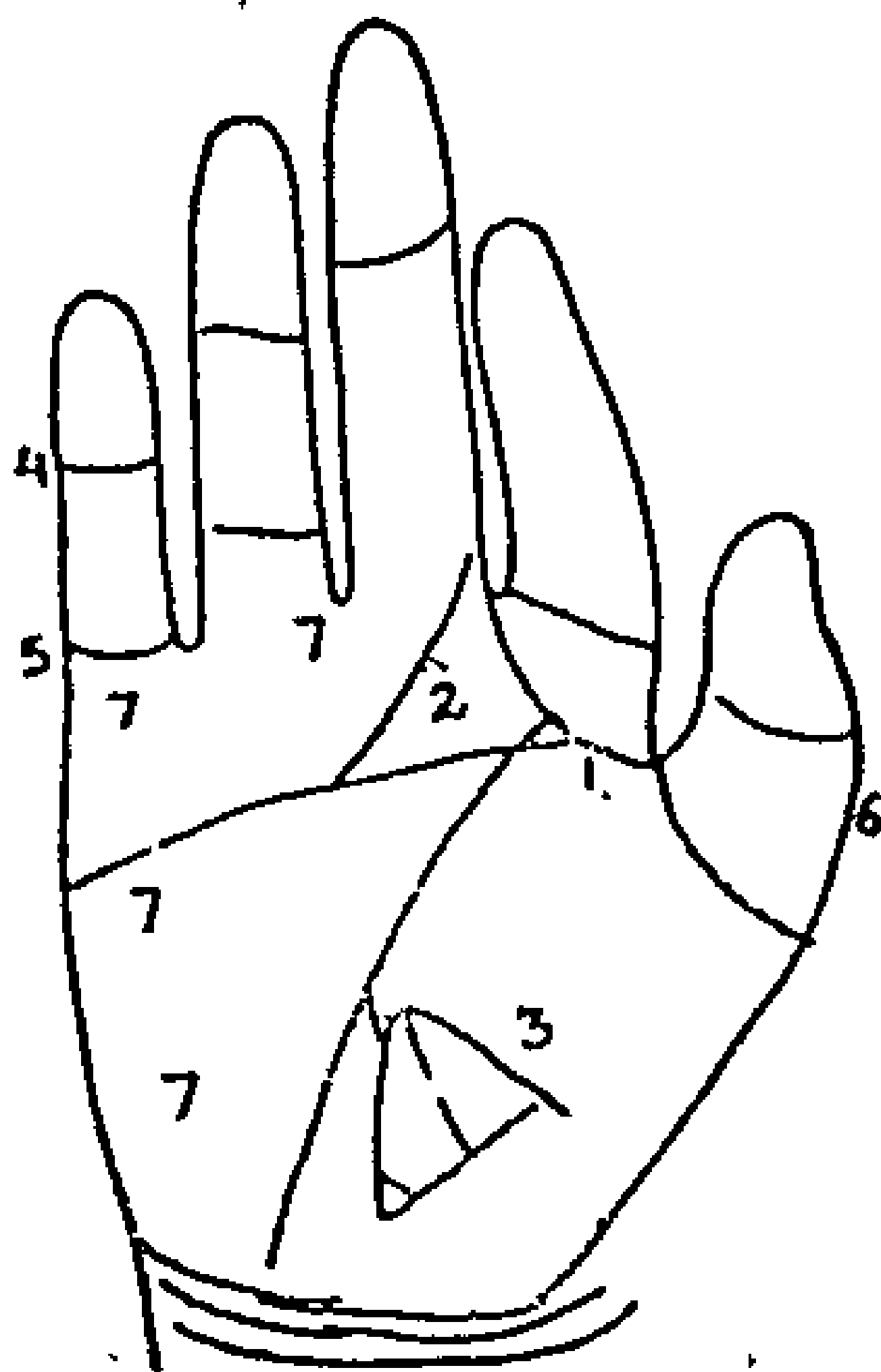
प्लेट—16 महात्मा गांधी का हाथ

जिस ग्रह क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह होता है उसके गुणों को क्षति पहुंचती है।

वृहस्पति क्षेत्र में द्वीप चिन्ह आत्माभिमान और महत्वाकांक्षा को निर्बल करता है।

शनि क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह दुर्भाग्य लाता है।

सूर्य क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह कला की योग्यता और प्रतिभा को क्षति पहुंचाता है।

बुध क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह जातक में अत्यधिक परिवर्तनशीलता और अस्थिरता कर व्यापार या वैज्ञानिक क्षेत्र में उसकी सफलता में बाधा उपस्थित करता है।
गल क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह जातक को निरुत्साही, डरपोक और कायर बनाता है।

चन्द्र क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह कल्पना शक्ति को नष्ट करता है। शुक्र क्षेत्र पर द्वीप न्ह हो तो जातक सरलता से कामुकता के प्रभाव मे आ जाता है और नैतिक पतन जाता है (चित्र संख्या 20-k)

त चिन्ह

सूर्य क्षेत्र पर वृत्त चिन्ह शुभ फलदायक होता है। केवल इसी स्थिति में चिन्ह शुभ माना गया है। यहा यह जातक को सफलता प्राप्त करने में सहायता ा है।

चन्द्र क्षेत्र में वृत्त चिन्ह होने से जल में डूबने की आशंका होती है।

यदि वृत्त चिन्ह किसी रेखा को स्पर्श करता है तो यह प्रदर्शित करता है कि वन के उस भाग में जातक दुर्भाग्य के चक्कर से बाहर नही निकल पाता।

न्दु चिन्ह

बिन्दु चिन्ह सामान्यता अस्थायी बीमारी का सूचक होता है।

यदि शीर्ष रेखा पर चमकता हुआ लाल बिन्दु हो तो वह मानसिक आघात या र से सिर पर चोट खाने का पूर्वाभास देता है।

काला या नीला बिन्दु स्नायु तंत्र के रोग का सूचक होता है।

स्वास्थ्य और जीवन रेखा पर चमकदार लाल बिन्दु किसी प्रकार के ज्वर का सूचक होता है।

जीव माला
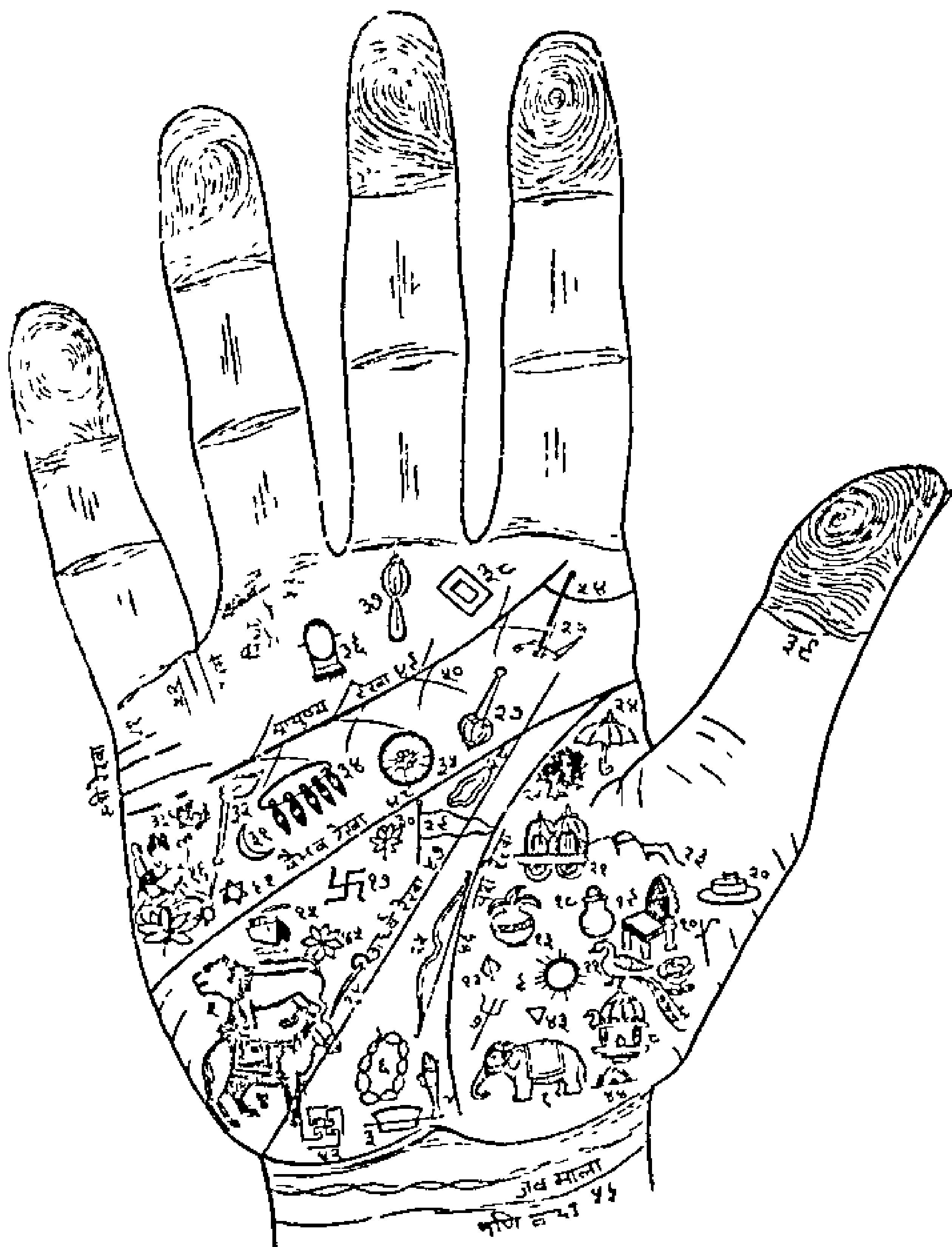
जिस ग्रह क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह होता है उसके गुणों को क्षति पहुचती है।

बृहस्पति क्षेत्र में द्वीप चिन्ह आत्माभिमान और महत्वाकांक्षा को निर्बल करता है।

शनि क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह दुर्भाग्य लाता है।

सूर्य क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह कला की योग्यता और प्रतिभा को क्षति पहुचाता है।

बुध क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह जातक में अत्यधिक परिवर्तनशीलता और अस्थिरता लाकर व्यापार या वैज्ञानिक क्षेत्र में उसकी सफलता में बाधा उपस्थित करता है। मंगल क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह जातक को निरुत्साही, डरपोक और कायर बनाता है।

चन्द्र क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह कल्पना शक्ति को नष्ट करता है। शुक्र क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह हो तो जातक सरलता से कामुकता के प्रभाव मे आ जाता है और नैतिक पतन हो जाता है (चित्र संख्या 20-k)

वृत्त चिन्ह

सूर्य क्षेत्र पर वृत्त चिन्ह शुभ फलदायक होता है। केवल इसी स्थिति में यह चिन्ह शुभ माना गया है। यहां यह जातक को सफलता प्राप्त करने में सहायता देता है।

चन्द्र क्षेत्र में वृत्त चिन्ह होने से जल मे डूबने की आशंका होती है।

यदि वृत्त चिन्ह किसी रेखा को स्पर्श करता है तो यह प्रदर्शित करता है कि जीवन के उस भाग मे जातक दुर्भाग्य के चक्कर से बाहर नही निकल पाता।

बिन्दु चिन्ह

बिन्दु चिन्ह सामान्यता अस्थायी बीमारी का सूचक होता है।

यदि शीर्ष रेखा पर चमकता हुआ लाल बिन्दु हो तो वह मानसिक आघात या ऊपर से सिर पर चोट खाने का पूर्वाभास देता है।

काला या नीला बिन्दु स्नायु तंत्र के रोग का सूचक होता है।

स्वास्थ्य और जीवन रेखा पर चमकदार लाल बिन्दु किसी प्रकार के ज्वर का पूर्वसूचक होता है।

जाल, त्रिकोण, रहस्यपूर्ण क्रास, बृहस्पति मुद्रिका,

(The Grille, The Triangle, La Croix Mystique The Ring of Solomon)

जाल चिन्ह (चित्र संख्या 15)

जाल चिन्ह सामान्यतया ग्रह क्षेत्रों पर पाया जाता है। वह उस ग्रह क्षेत्र द्वारा प्राप्त सफलता में बाधा पहुंचाता है। जिस जातक के हाथ में जाल चिन्ह पाया जाता है वह उसकी प्रवृत्तियों के कारण सफलता प्राप्त करने में बाधायें उपस्थित करता है। वृहस्पति क्षेत्र पर जाल चिन्ह जातक के अहम्, अभिमान और दूसरों पर प्रभुत्व रखने की प्रवृत्ति का सूचक है। शनि क्षेत्र पर यह चिन्ह दुर्भाग्य, उदासीन स्वभाव और निराशावादिता का आभास देता है।

सूर्य क्षेत्र पर यह चिन्ह मिथ्याभिमान, मूर्खता और किसी-न-किसी उपाय से ख्याति प्राप्त करने की प्रवृत्ति का सूचक होता है।

बुध क्षेत्र पर जाल चिन्ह यह प्रदर्शित करना है कि जातकअस्थिर स्वभाव का होगा और किसी भी सिद्धांत का पालन नही करेगा (वह अनैतिक होगा)।

चन्द्र क्षेत्र पर यह चिन्ह अधीरता, असंतोष और अशांति का सूचक होता है।

शुक्र क्षेत्र पर यह प्रेम सम्बन्धों में अस्थिरता का आभास देता है।

त्रिकोण चिन्ह (चित्र संख्या 15)

त्रिकोण हाथ में प्राय: स्वतंत्र रूप से बना हुआ पाया जाता है। जो त्रिकोण रेखाओं के एक-दूसरे को काटने से बनता है वह कोई प्रभाव नही रखता।

यदि वृहस्पति क्षेत्र पर स्पष्ट रूप से त्रिकोण चिन्ह अंकित हो तो जातक मे लोगों को संगठित करने की क्षमता को बढ़ाता है। ऐसा व्यक्ति एक सफल प्रबंधकर्ता या नेता बनने में सफल होता है।

शनि क्षेत्र पर त्रिकोण चिन्ह गुप्त विद्याओं (ज्योतिष, हस्त विज्ञान, सम्मोहन विद्या आदि) में पारंगत होने में सहायक होता है।

सूर्य क्षेत्र पर यदि त्रिकोण चिन्ह हो तो जातक कला का व्यापारिक रूप से उपयोग करके उससे लाभ उठाता है। सफलता से ऐसे व्यक्ति का सिर नही फिर जाता है (अर्थात् वह अभिमानपूर्ण नही हो जाता)। दूसरे शब्दों मे उसके पैर धरती ही पर रहते हैं।

बुध क्षेत्र पर त्रिकोण चिन्ह जातक की अधीरता को नियंत्रित करना है और व्यापारिक और आर्थिक मामलो में सफलता दिलाने मे सहायक होता है।

मंगल क्षेत्र पर यदि त्रिकोण का चिन्ह हो तो जातक संकट आने पर नहीं घबड़ाता और वह शान्तिपूर्वक मुसीबतों का सामना करता है।

चन्द्र क्षेत्र पर त्रिकोण चिन्ह जातक को अपनी कल्पना शक्ति का वैज्ञानिक नियमित रूप से उपयोग करने में सहायक होता है।

शुक्र क्षेत्र पर यदि त्रिकोण चिन्ह हो तो यह जातक को अपनी कामुकता और उससे सबंधित मनोभावों पर नियंत्रण रखने की क्षमता देता है।

त्रिशूल

यह चिन्ह जहां भी हो सफलता का चिन्ह माना जाता है।

नोट—यदि हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र पर त्रिशूल का रूप धारण कर ले तो इसको एक विशिष्ट राजयोग (धन, मान-प्रतिष्ठा, दीर्घायु देने वाला योग) समझना चाहिए।

यदि भाग्य रेखा अपने अन्त पर त्रिशूल का रूप धारण कर ले और उसकी शाखायें बृहस्पति, शनि और सूर्य क्षेत्र पर पहुंच जायें, तो यह भी एक विशिष्ट राजयोग है।

यदि सूर्य रेखा अपने अन्त पर त्रिशूल का रूप धारण कर ले तो भी एक विशिष्ट राजयोग होता है।

रहस्यपूर्ण क्रॉस (La Croix Mystique)

यह एक विचित्र चिन्ह है जो हृदय रेखा और शीर्ष रेखा के बीच के चतुष्कोण में पाया जाता है (चित्र संख्या 19-r)। यह स्वतंत्र रूप से भी बना होता है और भाग्य रेखा का हृदय रेखा से शीर्ष रेखा को आने वाली किसी रेखा से कटने पर भी बन सकता है।

जिसके हाथ में इस प्रकार का चिन्ह होता है वह निगूढ़ (Occult) विद्याओं के प्रति आकर्षित होता है और उनमें बहुत रुचि रखता है।

यदि यह चिन्ह बृहस्पति क्षेत्र की ओर हो तो जातक निगूढ़ विद्याओं में विश्वास रखता है। वह दूसरों के लिए उनका अध्ययन नहीं करता है। वह अपना भविष्य जानने को उत्सुक होता है और जानना चाहता है कि उसकी महत्त्वाकांक्षायें कब और किस प्रकार पूर्ण होंगी।

जब यह चिन्ह हृदय रेखा के निकट होता है तो जातक में अन्धविश्वास (Superstition) की प्रवृत्ति प्रचुर मात्रा में होती है।

यह प्रवृत्ति और भी अधिक हो जाती है यदि शीर्ष रेखा नीचे तीक्ष्णता से झुकती हुई हो और चिन्ह उसके मध्य भाग के बिल्कुल ऊपर रेखा जितनी छोटी होगी, अन्धविश्वास की प्रवृत्ति उतनी ही अधिक होगी।

यदि चिन्ह स्वतंत्र रूप से बना हुआ हो तो इसका प्रभाव अधिक होता है।

यदि यह चिन्ह भाग्य रेखा को स्पर्श करता हो, यदि उसकी सहायता से बना हो तो उसका प्रभाव जातक पर आजीवन रहता है।

बृहस्पति मुद्रिका

यह चिन्ह भी निगूढ़ विद्याओं के प्रति जातक के आकर्षण को प्रदर्शित करता है। यदि यह स्पष्ट रूप से अंकित हो और शीर्ष रेखा सबल हो, बृहस्पति क्षेत्र निर्दोष हो तो जातक इस प्रकार की विद्याओं में पारंगत होता है।

हिन्दू मत के अनुसार इसको एक रेखा माना जाता है जिसको दीक्षा रेखा' का नाम दिया गया है। यह जातक में वैराग्य की भावना उत्पन्न करती है।

नोट—हिन्दू हस्त-शास्त्र में भी करतल में अंकित चिन्हों को महत्त्व दिया गया है। ये चिन्ह स्वतन्त्र रूप से भी अंकित होते हैं और रेखाओं के एक-दूसरे के मिलन या काटने से भी बनते हैं।

वराह मिहिर के अनुसार यदि तीन रेखायें मणि बंध से प्रारम्भ होकर करतल के अन्त तक जायें तो मनुष्य राजा होता है। जिसके हाथ मे दो मछलियों के चिन्ह हों तो वह नित्य यज्ञ करने वाला और जिसके हाथ मे वज्र का चिन्ह हो तो वह धनी होता है। जिसके हाथ मे मछली की पूछ की तरह का आकार बनता हो वह विद्वान होता है। जिनके हाथ में शंख- छत्र, पालकी, हाथी, घोड़ा, कमल, कलश, पताका या अंकुश के आकार का चिन्ह हो वे प्रभावशाली, प्रतिभाशाली तथा ऐश्वर्य सम्पन्न पदाधिकारी (भूपाल) बनते हैं। जिसके हाथ में माला का चिन्ह हो तो वे धनवान और जिनके हाथ में स्वस्तिक का चिन्ह हो तो वे वैभवशाली होते है। जिनके हाथ मे ओखली का चिन्ह हो तो वे यज्ञ करने वाले होते हैं। जिनके हाथ में चक्र, तलवार, फरसा, तोमर शक्ति, धनुष या भाले का चिन्ह हो, वे सेना के उच्च पदाधिकारी बनते हैं। जिनके हाथ में मगर, ध्वजा, कोण की तरह का चिन्ह हो, वे बहुत धनी होते है। जिनके हाथ में बावड़ी, मंदिर या त्रिकोण चिन्ह हो, वे धार्मिक और धनवान होते हैं। सिंहासन तथा रथ का चिन्ह भी अत्यन्त शुभ माना जाता है।

स्त्रियों के करतल के विषय में हिंदू मत के अनुसार यह मान्यता है कि यदि उनके करतल में श्री वत्स, ध्वजा, शंख, कमल, गज, घोड़ा, चक्र, स्वस्तिक, वज्र, तलवार, पूर्ण कुम्भ, रथ, अंकुश, प्रासाद, छत्र, मुकुट, हार, कुंडल, तोरण जैसे शुभ चिन्ह हों तो वे राजा (उच्च पदाधिकारी, राजमंत्री आदि)की पत्नी बनती हैं। जिसके हाथ में रक्त वृक्ष, दण्ड, कुण्ड जैसे चिन्ह हों, वह यज्ञ करने वाले की पत्नी बनती है। जिसके हाथ मे दूकान, तराजू, मुद्रा जैसे चिन्ह हो, वह रत्न और सुवर्ण की स्वामिनी, वैश्य (व्यापारी) की पत्नी होती है। जिसके हाथ में हल, ओखली, बैल जैसे चिन्ह हो, वह ऐसे व्यक्ति की पत्नी होती है जो कृषि से बहुत धन अर्जित करता है।

अनेक प्राचीन ग्रन्थों से संकलित करके जैन धर्मोपदेष्टा श्री शान्ति विजय जी ने हाथ मे अनेक चिन्हों का फल दिया है (देखिए चित्र संख्या 24)।

(1) गज—यदि हाथी का चिन्ह हो तो मनुष्य भाग्यवान, बुद्धिमान, राजा के समान वैभव वाला होता है।

(2) मछली—धनवान, आराम तलब, समुद्र पार देशों की यात्रा करने वाला होता है।

(3) पालकी—बहुत द्रव्य संग्रह, उत्तम सवारी, बहुत-से नौकर-चाकर।

(4) घोड़ा—घोड़ों का सुख, राज्य, ऊंचा पद, सेना में सम्माननीय स्थान।

(5) सिंह—वीर, दूसरों पर शासन करने वाला, कभी न पराजित होने वाला, राज वैभव युक्त, उदार हृदय, धनी, मानी।

(6) फूल माला—प्रसिद्ध, धार्मिक रुचि वाला, विजयी, धनी।

(7) त्रिशूल—धर्म में दृढ़ता, ऐश्वर्य, वैभव, सब कार्यों में सफलता, महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति।

(8) देव-विमान—तीर्थ यात्रा, मन्दिर निर्माण करने वाला, धर्म के कामों में व्यय करने वाला।

(9) सूर्य—तेजस्वी, प्रतिष्ठित, भोगी।

(10) अंकुश—विजयी, धनवान, ऐश्वर्यशाली।

(11) मोर—संगीतज्ञ, प्रतिष्ठित, भोगी।

(12) जिसके हाथ में इस प्रकार का चिन्ह होता है वह प्रतापी, भोगी तथा लोक विख्यात होता है।

(13) कलश—तीर्थ यात्रा करने वाला, विजयी, मन्दिर, धर्मशालादि बनवाने वाला।

(14) समुद्र यान—समुद्र पार देशों से व्यापार करने वाला, भाग्यवान और दीर्घायु।

(15) लक्ष्मी—पूर्ण भाग्यवान, धनी।

(16) स्वास्तिक—विद्याओं में रुचि लेने वाला, बुद्धिमान, ऐश्वर्ययुक्त, प्रतिष्ठित, मन्त्री के समान वैभव युक्त।

(17) कमण्डल—सुखी, धनी, साधु सेवी, धर्म प्रचारक, दूर देशों की यात्रा करने वाला।

(18) तलवार (खड्ग)—भाग्यवान, राज्य सम्मानित, विजयी।

(19) सिंहासन—उच्च पदाधिकारी, राजा या मन्त्री, शासन करने वाला।

(20) बावड़ी—धनी, वीर धार्मिक, परोपकारी।

(21) रथ—सवारी का सुख, धनी, विजयी, बाग-बगीचे, जमीन का सुख।

(23) पर्वत—बड़ी-बड़ी इमारतों का निर्माण करने वाला, जौहरी, व्यापारी, धनी।

(24) छत्र—राजा या राजा के समान अधिकार वाला, धार्मिक, सर्वमान्य।

(25) धनुष—दी॰ विजयी, अपराजित।

(26) हल—जमीन से लाभ, कृषि कार्य से धन प्राप्ति।

(27) गदा—वीर, विजयी, दूसरों पर शासन करने वाला, प्रभावशाली।

(28) सरोवर—धनवान, परोपकारी, कृषि और भूमि से लाभ।

(29) ध्वजा—धार्मिक, कुल दीपक, यशस्वी, प्रतापी।

(30) पद्म—धार्मिक, विजयी, राजा या राजा के समान धन-वैभव वाला, शक्तिशाली।

(31) चामर—राज वैभव युक्त, धार्मिक, मन्दिर-धर्मशालादि बनवाने वाला।

(32) चन्द्रमा—भाग्यवान, सुन्दर, भोग विलास में लिप्त।

(33) कछुआ—समुद्र पार देशों से व्यापार करने वाला, ऐश्वर्यवान।

(34) तोरण—धनी, अचल सम्पत्ति वाला, सौभाग्यशाली।

(35) चक्र—धार्मिक, विद्वानों की सहायता करने वाला, अति धनी, राज्य या राजा के समान, स्त्रियों के प्रति आकर्षित।

(36) दर्पण—उच्च पद पर प्रतिष्ठित होकर शासन करने वाला; वृद्धावस्था मे विरक्त, धर्म प्रचारक, आत्मोन्नति करने वाला।

(37) वज्र—परम वीर, विजयी, उच्च पदाधिकारी।

(38) वेदी—धार्मिक, यज्ञ करने वाला, मंत्र विद्या का ज्ञाता व सात्त्विक ऐश्वर्य से युक्त।

(39) अंगूठों में यव चिन्ह—धनी, बुद्धिमान, सुन्दर, वक्ता, लोक विख्यात, प्रतिष्ठित।

(40) शंख—समुद्र पार देशों की यात्रा और व्यापार करने वाला तथा उससे धन अर्जित करने वाला, धार्मिक, मन्दिर-धर्मशालादि बनवाने वाला, दानी।

(41) षट्कोण—धनी, ऐश्वर्यवान, भूमि-लाभ।

(42) नंद्यावर्त स्वस्तिक चिन्ह—धनी, प्रतिष्ठित, वैभव युक्त धार्मिक।

(43) त्रिकोण—सवारी, गाय भैंस का सुख, भूमि लाभ, प्रतिष्ठित, धनी।

(44) मुकुर—विद्वान, परम चतुर, धार्मिक, लोक विख्यात, यशस्वी, राजा या उच्च पदाधिकारी।

(45) श्री वत्स—धार्मिक, सदैव सुखी, प्रसन्न मुख, वैभव युक्त, मनोरथ पूर्ति।

(46) यश रेखा—इसका प्रसिद्ध नाम जीवन रेखा या पित रेखा है। इस विषय में विवेचन हो चुका है।

(47) ऊर्ध्व रेखा—यह भाग्य रेखा है।

(48) वैभव रेखा—यह शीर्ष या मातृ रेखा है।

(49) आयु रेखा—इसका विवेचन हो चुका है।

(50) सम्पत्ति रेखा—चतुष्कोणाकृति रेखाओं का नाम सम्पत्ति रेखा है। जितने इस प्रकार के चिन्ह हों उतनी ही अधिक सम्पत्ति होगी।

(51) स्त्री रेखा—यह विवाह रेखा है जिसका विवेचन हो चुका है।

(52) धर्म रेखा—धार्मिक प्रवृत्ति वाला, यशस्वी।

(53) विद्या रेखा—यह सूर्य रेखा है।

(54) दीक्षा रेखा—धार्मिक, श्रद्धावान, दीक्षा ग्रहण करने वाला।

(55) यव माला—इसका विवेचन हो चुका है।

इस सम्बन्ध में यह बता देना आवश्यक है कि ये चिन्ह चित्रकारों के बनाये हुए आकारों के समान हाथ में नहीं दिखाई देंगे। जो आकार होंगे वे इन चिन्हों से मिलते-जुलते होंगे और उनको पहचानने के लिए पाठकों को अपनी बुद्धि का उपयोग करना होगा।

(23)

रेखाओं से पूर्ण हाथ—करतल का रंग

यदि सारे हाथ में अनेकों रेखायें एक जाल के समान फैली हुई हों तो जातक का स्वभाव नरवस और संवेदनशील होता है। ऐसा व्यक्ति कल्पित चिन्ताओं से घिरा रहता है और छोटी-से-छोटी प्रतिकूल बात से घबड़ा जाता है। ऐसी साधारण बातें जो दूसरों के लिए कोई महत्त्व नहीं रखती, उसको असंतुलित कर देती हैं। ऐसा प्रभाव उस समय और भी बढ़ जाता है जब हाथ मुलायम हो। बिल्कुल साधारण कष्ट

को वह गम्भीर बीमारी समझने लगते हैं। यदि करतल दृढ़ और सख्त हो तो जातक स्फूर्तिपूर्ण होता है, यद्यपि उत्तेजना उसमें भी काफी होती है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को तो सफल दिखाई देता है; परन्तु वह स्वयं अपने आपको सफल नहीं समझता।

चिकने हाथ

जिन लोगों के हाथ चिकने होते हैं और उनमें रेखायें बहुत कम होती हैं, वे शान्त प्रकृति के होते हैं। वे बहुत कम चिन्ता करते हैं और वे अकारण कभी क्रोध नहीं करते। प्रवृत्ति हाथ की कोमलता या सख्ती से बदल जाती है। जब हाथ दृढ़ होता है तो जातक अपने ऊपर पूर्ण रूप से नियन्त्रण करने में सक्षम होते हैं। कोमल हाथ वाले इतना नियन्त्रण नहीं रख पाते, परन्तु क्रोध उन्हें आता ही कम है।

त्वचा

यदि हाथ की त्वचा रेशम की तरह चिकनी और सुन्दर हो तो जातक का स्वभाव उत्फुल्लता और उल्लास से पूर्ण होता है और उसका युवकों के समान उत्साह उन लोगों की अपेक्षा अधिक दिन तक बना रहता है जिनके हाथ की त्वचा खुरदरी हो। यह सत्य है कि हाथ से काम करने से त्वचा खुरदरी हो जाती है, परन्तु इसके कारण जातक की वैयक्तिकता पर प्रभाव नहीं पड़ता।

करतल का रंग

हाथ के बाहरी भागों की अपेक्षा करतल का रंग अधिक महत्त्व का होता है। करतल स्नायुओं और स्नायविक तरल पदार्थ (Nerve fluid) के नियंत्रण में होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार शरीर के अन्य भागों की अपेक्षा हाथ में सबसे अधिक स्नायु होते हैं और हाथ के अन्य भागों की अपेक्षा करतल में सबसे अधिक होते हैं।

जब करतल का रंग फीका या सफेद-सा होता है, तो जातक अपने अतिरिक्त किसी और में दिलचस्पी नहीं लेता। वह स्वार्थी, अहंपूर्ण और सहानुभूतिहीन होता है।

यदि करतल का रंग पीला हो तो जातक निराशावादी, उदास और चिन्तापूर्ण स्वभाव का होता है।

यदि करतल गुलाबी रंग का हो तो जातक उत्साहपूर्ण, आशावादी और स्थिर स्वभाव का होता है। जब रंग गहरा हो तो जातक अत्यन्त स्वस्थ गठन का होता है, उसमें उत्तेजना और काम-वासना अधिक होती है और उसे क्रोध भी अत्यन्त शीघ्रता से आ जाता है।

(24)

वृहत् त्रिकोण और चतुष्कोण

(The, Great Triangle and quadrangle)

वृहत् त्रिकोण उस त्रिकोणिक आकार को कहते हैं जो जीवन, शीर्ष और स्वास्थ्य रेखाओं द्वारा बनता है। (चित्र संख्या 22)।
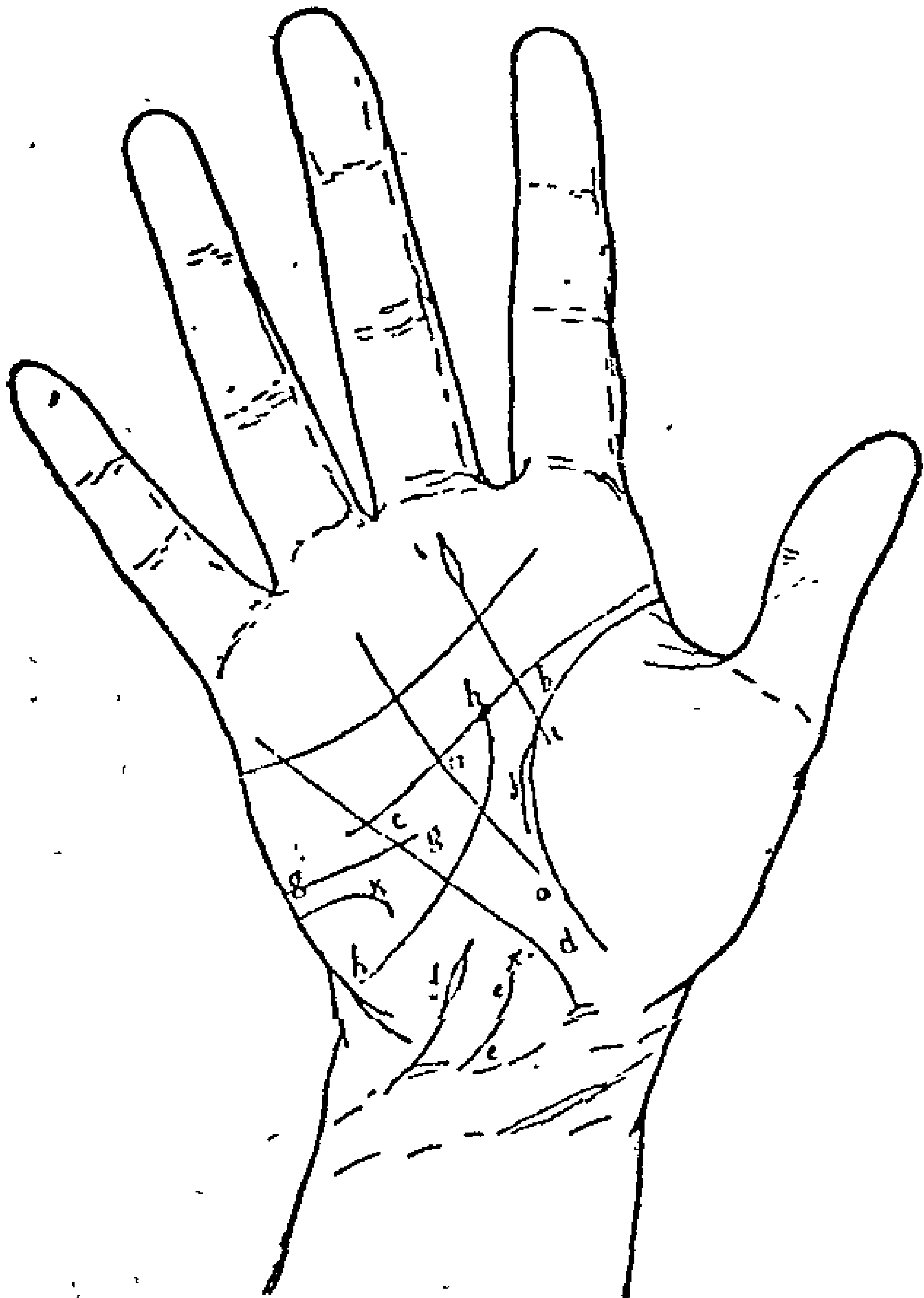
चित्र संख्या—22

जब जैसा कि प्रायः होता है, हाथ में स्वास्थ्य रेखा न हो तो त्रिकोण को पूरा करने के लिए अनुमान करना पड़ता है। कभी-कभी यह आधार बनने का काम सूर्य रेखा भी कर लेती है (चित्र संख्या 22-a-a)। यदि ऐसा हो तो जातक को अत्यधिक अधिकार और सफलता प्राप्त होती है। यद्यपि जातक उतना उदार हृदय नहीं होगा जितना कि वह उस समय होता जब स्वास्थ्य रेखा त्रिकोण का आधार बनती।

जब जीवन, शीर्ष और स्वास्थ्य रेखाओं से त्रिकोण सुगठित रूप से बना हो तो वह इतना चौड़ा होगा कि समूचा मंगल का मैदान उसके अन्दर समा जाएगा। ऐसा होने पर जातक इतना खुला दिल और उदार हृदय होगा कि वह दूसरों की भलाई के लिए अपना बलिदान तक करने को तैयार होगा।

इसके विपरीत यदि यह त्रिकोण तीन छोटी, लहरदार और अनिश्चित रेखाओं से बना हो तो जातक संकोची, डरपोक और नीच प्रकृति का होगा। अपने सिद्धांतों की परवाह न करके वह सदा बहुमत प्राप्त लोगों का साथ देगा।

यदि त्रिकोण बनने में स्वास्थ्य रेखा का काम सूर्य रेखा करती है, तो जातक संकीर्ण-विचार, परन्तु दृढ़ निश्चयी और प्रभावशाली होगा।

ऊपरी कोण (The Upper Angle)

ऊपरी कोण जीवन रेखा और शीर्ष रेखा द्वारा बनता है। (चित्र संख्या 22-b) यह कोण स्पष्ट, नोकीला और सम हो तो जातक के विचारों में सुरुचि होती है और उसके विचारों में शुद्धता और परिमार्जन होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के प्रति सहानुभूति रखता है और उनके साथ शिष्टता से व्यवहार करता है।

यदि कोण बेनोक (Obtuse), हो तो जातक बोलने में मुंहफट और जल्दबाज होता है, दूसरों को तंग करता है, उसमें धैर्य की कमी होती है और किसी भी विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित करने में असमर्थ होता है।

मध्य कोण (The Middle Angle)

मध्य कोण शीर्ष रेखा और स्वास्थ्य रेखा के मिलने से बनता है (चित्र सं 22-c)। यदि यह स्पष्ट रूप से और ठीक बना हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि का, स्वस्थ और जिन्दादिल होता है।

यह कोण बहुत संकीर्ण (Acute) हो; तो अस्वस्थता और घबड़ा जाने वाले स्वभाव का सूचक होता है।

यदि कोण बहुत फैला हुआ (Obtuse) होता है तो जातक मन्द बुद्धि वाला होता है और काम चलाऊ तरीके से काम करता है।

नीचे वाला कोण (The Lower Angle)

नीचे वाला कोण (चित्र संख्या 22-d) जब बहुत संकीर्ण हो और स्वास्थ्य रेखा द्वारा बने तो जातक में उत्साह और स्फूर्ति की कमी होती है। यदि यह बहुत फैला हुआ हो तो मिजाज तेज होता है।

जब यह कोण सूर्य रेखा से बने और संकीर्ण हो तो जातक में वैयक्तिकता तो होती है, परन्तु वह संकीर्ण विचारों का होता है। यदि यह कोण फैला हुआ हो तो जातक उदार हृदय वाला होता है।

चतुष्कोण (The Quadrangle)

शीर्ष रेखा और हृदय रेखा के बीच में जो चतुष्कोणिक स्थान होता है उसे चतुष्कोण कहते हैं (चित्र संख्या 22)। इसका आकार में सम, दोनों अन्तों पर खुला, मध्य में चौड़ा और आन्तरिक भाग चिकना होना शुभ होता है। यदि वह शुभ हो तो मन संतुलित होता है, बौद्धिक क्षमता अच्छी होती है और जातक प्रेम तथा मैत्री में निष्ठावान होता है। यदि यह स्थान संकीर्ण हो तो जातक संकीर्ण प्रवृत्ति का, मताग्रही और धर्मान्ध होता है।

इस स्थान को अत्यन्त चौड़ा भी नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा हो तो धर्म और नैतिकता के सम्बन्ध में उसके विचार इतने अधिक उदार और स्पष्ट होंगे कि उनसे उसकी भी भलाई न होगी—अर्थात् वे उसको भी हानि पहुंचा सकते हैं।

यदि यह स्थान इतना संकीर्ण हो कि कमर का आकार बन जाए तो जातक पूर्वाग्रही और अन्यायी होगा। जब यह स्थान शनि क्षेत्र के नीचे की अपेक्षा सूर्य क्षेत्र के नीचे अधिक चौड़ा हो तो जातक को अपने नाम, ख्याति और प्रतिष्ठा की परवाह नहीं होती।

जब यह स्थान शनि या बृहस्पति क्षेत्र के नीचे अत्यधिक चौड़ा और दूसरे अंत पर संकीर्ण हो तो जातक पहले उदार हृदय वाला होगा, बाद में उसके विचारों में संकीर्णता आ जाएगी।

जब सम्पूर्ण चतुष्कोण अत्यधिक चौड़ा हो तो जातक के विचारों मे कोई नियमितता नहीं होगी, वह लापरवाह होगा, बिल्कुल स्वतंत्र विचार वाला होगा और रीति-रिवाजों का अनुसरण नहीं करेगा।

यदि चतुष्कोण चिकना हो और छोटी-छोटी कटी-पिटी रेखाओं से मुक्त हो तो जातक शांत और संतुलित स्वभाव का होगा।

यदि वहां अनेकों कटी-पिटी रेखाएं हों तो जातक अधीर, उतावला और चिड़चिड़ा होगा।

चतुष्कोण में नक्षत्र शुभ माना जाता है। यदि चिन्ह बृहस्पति क्षेत्र के नीचे हो तो आत्माभिमान और अधिकार का आश्वासन देता है। यदि शनि क्षेत्र के नीचे हो तो

सांसारिक कार्यों में सफलता का लक्षण होता है। यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे हो तो कला के क्षेत्र में ख्याति और सफलता दिलवाता है। यदि बुध क्षेत्र और सूर्य क्षेत्र के मध्य के नीचे हो तो विज्ञान और शोध कार्य में सफलता का सूचक होता है।

(25)
यात्राएं और दुर्घटनाएं

हाथ में यात्राओं की सूचक रेखाएं दो भिन्न स्थानों पर स्थित होती हैं। प्रथम स्थान है चन्द्र क्षेत्र। इस क्षेत्र पर जो भारी रेखाएं होती हैं, वे यात्राओं की सूचक होती हैं। दूसरा स्थान जीवन रेखा है। इसमें से जो सूक्ष्म रेखाएं इसके साथ चलती हैं वे यात्रा रेखाएं होती हैं (चित्र संख्या 22-f)। जब जीवन रेखा दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है—और एक शाखा चन्द्र क्षेत्र और दूसरी शुक्र क्षेत्र को जाती है तो जातक अपनी जन्मभूमि को छोड़कर किसी दूसरे देश, नगर या स्थान को चला जाता है। इसलिए जो यात्राएं जीवन रेखा से निकलने वाली रेखाओं से सूचित होती हैं, वे चन्द्र क्षेत्र की यात्रा रेखाओं से अधिक महत्त्व की होती हैं। चन्द्र क्षेत्र की रेखाएं केवल छोटी-छोटी यात्राओं की सूचक होती हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मणिबन्ध की प्रथम रेखा से कुछ रेखाएं चन्द्र क्षेत्र की ओर ऊपर उठती हैं (चित्र संख्या 22)। ये महत्त्व रखने वाली यात्रा रेखाएं होती हैं। जब भाग्य रेखा जीवन के उसी भाग में कोई शुभ फलदायक परिवर्तन का संकेत दे तो ये रेखाएं भाग्यवर्धक होती हैं।

जब इस प्रकार की यात्रा रेखा के अन्त पर द्वीप चिन्ह हो तो यात्रा निरर्थक सिद्ध होती है (चित्र संख्या 22 e-e)।

जब इस प्रकार की रेखा के अन्त पर द्वीप चिन्ह हो तो यात्रा आर्थिक हानि में समाप्त होती है (चित्र संख्या 22-f)।

मणिबन्ध से उठकर जो रेखाएं चन्द्र क्षेत्र के ऊपर की ओर जाती हैं वे अत्यंत शुभ फलदायक होती हैं।

जब कोई ऐसी रेखा हाथ को पार करके वृहस्पति क्षेत्र को पहुंच जाए तो यात्रा बहुत लम्बी होती है, परन्तु उच्च पदवी, यश, धन-लाभ और अधिकार को देने वाली होती है।

जब ऐसी रेखा शनि क्षेत्र पर पहुंचती है तो यात्रा में कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित होती है। जब ऐसी रेखा सूर्य क्षेत्र को जाती है तो यात्रा से धन तथा मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि ऐसी रेखा बुध क्षेत्र [illegible] तो [illegible] यात्रा में अना- [illegible] धन प्राप्त होता है।

जब आड़ी रेखाएं चन्द्र क्षेत्र को पार करती हुई भाग्य रेखा तक पहुंचती हैं, तो यात्रायें लम्बी होती हैं और उन यात्राओं से अधिक महत्त्व की होती हैं जिन्हे वहां स्थित छोटी और भारी रेखायें सूचित करती हैं (चित्र सख्या 22g-g)।

जब इस प्रकार की रेखा भाग्य रेखा में प्रविष्ट हो जाए और उसके साथ ऊपर की ओर चलने लगे तो जातक को यात्रा से आर्थिक लाभ होता है।

यदि ऐसी कोई रेखा का अन्त मणिबन्ध की ओर झुक जाए, तो यात्रा दुर्भाग्य-पूर्ण सिद्ध होती है (चित्र संख्या 22-k) यदि रेखा अन्त मे ऊपर की ओर मुड़ जाए तो यात्रा सफलता में समाप्त होती है।

जब इस प्रकार की रेखायें एक-दूसरे को काट दें तो बार-बार यात्रा करनी पड़ती है। ऐसी रेखा पर वर्ग चिन्ह संकट-सूचक होता है; परन्तु रक्षा हो जाती है।

यदि यात्रा रेखा शीर्ष रेखा से मिलकर उसमे बिन्दु, द्वीप या फूट का चिन्ह बनाती हो तो यात्रा में दुर्घटना के कारण सिर में चोट लगने की सम्भावना होती है या सिर का कोई रोग उत्पन्न हो जाता है (चित्र संख्या 22 h-h)।

दुर्घटनाएं

दुर्घटनाओं के लक्षण यात्रा रेखाओं पर तो होते ही हैं, परन्तु इस प्रकार के सबसे अधिक लक्षण जीवन रेखा और शीर्ष रेखा पर पाये जाते हैं।

दुर्घटनाओं का चिन्ह जो जीवन रेखा पर अंकित होता है वह शीघ्र ही दुर्घटना होने का सूचक होता है। यदि शनि क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह से कोई रेखा नीचे जाकर जीवन रेखा में प्रविष्ट हो तो वह सांघातिक नहीं तो गम्भीर दुर्घटना की सूचक अवश्य होती है (चित्र संख्या 22 i-i)।

यदि यह रेखा अपने अंत पर छोटा-सा क्रास का चिन्ह लिये हो—यह क्रास चाहे जीवन रेखा पर हो या बाहर हो, तो जातक दुर्घटना से बाल-बाल बचेगा। यदि यह चिन्ह शनि क्षेत्र के मूल स्थान पर हो तो दुर्घटना पशुओं के कारण होती है।

शनि क्षेत्र से कोई भी सीधी रेखा नीचे आकर जीवन रेखा में मिले तो वह संकट की सूचक होती है, परन्तु यह संकट द्वीप या क्रास युक्त रेखा से उत्पन्न किये हुए संकट से कम होता है।

यह नियम शीर्ष रेखा पर भी लागू होता है। अन्तर केवल यह होता है कि शीर्ष रेखा के इस प्रकार दूषित होने पर चोट का केन्द्र सिर होता है, परन्तु इस दुर्घटना-रेखा के मिलने से शीर्ष रेखा टूट न जाये तो जान जाने का खतरा नहीं होता। शीर्ष रेखा यदि उस स्थान पर टूटी हो तो चोट सांघातिक हो सकती है।

तृतीय खण्ड

(1)

आत्महत्या करने वालों के हाथ

जिन लोगों मे आत्महत्या करने की प्रवृत्ति होती है उनके हाथ सामान्तया लम्बे होते हैं, शीर्ष रेखा गहरी ढलान लिये हुये होती है और चन्द्र क्षेत्र, विशेषकर अपने मूल स्थान पर, उन्नत होता है। शीर्ष रेखा जीवन रेखा से अच्छी तरह जुड़ी हुई होती है और उसके कारण जातक में, जो स्वभावतः अत्यधिक संवेदनशीलता होती है, इस गुण की और वृद्धि हो जाती है। जब ऐसा हो तो जातक प्राकृतिक रूप से असुस्थ (Morbid) नही होगा या आत्महत्या करने पर उतारू नही होगा, परन्तु अपनी अत्यधिक संवेदनशीलता और कल्पनाशीलता के कारण, कोई कष्ट, दुःख या कलंक क उस पर प्रभाव हजार गुना बढ़ जायेगा और वह आत्महत्या करके अपने आपको शही बनाना चाहेगा (प्लेट 15)।

यदि इस प्रकार की रेखायें उन्नत शनि क्षेत्र के साथ पाई जायें तो जातक पूर्ण-रूप से संवेदनशील (Sensitive) और असुस्थ (Morbid) होगा। ऐसा व्यक्ति अपनी मानसिक स्थिति से तंग आकर यह निश्चय कर लेगा कि जीवन जीने योग्य नहीं है और किसी कष्ट की थोड़ी-सी उकसाहट या निराशा के कारण अपने मन में जमी हुई धारणा को कार्यान्वित कर डालेगा। अर्थात् आत्महत्या कर लेगा।

किसी कोनिक या अत्यन्त नोकीले हाथ मे गहरी ढलान लेने वाली (Sloping) शीर्ष रेखा (प्लेट 15) भी ऐसा ही फल देती है। परन्तु यहां जातक आत्महत्या क्षणिक आवेश में आकर करता है जो उसके स्वभाव का एक अंग होता है। इस प्रकार के व्यक्ति में कोई गहरा धक्का या कोई मुसीबत उसके आवेश को उत्तेजित करने के लिये काफी होती है। वह अपने आपको कोई सोच विचार करने का अवसर ही नहीं देता।

ऐसा भी होता है कि जातक का स्वभाव आवेशात्मक नहीं होता, तब भी वह आत्महत्या कर लेता है। यह उस समय होता है जब शीर्ष रेखा जीवन रेखा से घनिष्ठता में जुड़ी हो, बृहस्पति का क्षेत्र धंसा हुआ हो और शनि क्षेत्र पूर्ण रूप से उन्नत हो। इस प्रकार के हाथ में शीर्ष रेखा में असाधारण ढलान भी नही होता। ऐसे व्यक्ति पर जीवन के संघर्ष मे निराशावाद और निरुत्साह स्वभावतः होता है। जब उसकी सहन शक्ति जवाब दे देती है तब वह अपने हाथ से अपना जीवन समाप्त कर देता है। परन्तु वह सहसा ऐसा नही करता। परिस्थितियों पर पूर्णरूप से विचार करता है और जब उसे आशा की कोई झलक नही दिखाई देती तो वह जीवन नाटक का पटाक्षेप करना ही उचित समझता है।

(2)
हत्यारे का हाथ

हत्या को कई श्रेणियों मे विभाजित किया जा सकता है। हाथ तो मुख्यतया इस बात को मान्यता देता है कि हाथ में अपराध करने की असाधारण प्रवृत्ति है या नहीं। अपराध क्या रूप लेगा इसको हा॰. की बनावट (अर्थात् वह कैसी श्रेणी का है और जातक की प्रवृत्तियां कैसी हैं) बताती है। कुछ लोगों मे हत्या करने की स्वाभाविक पूर्वाभिरुचि होती है, हम इस बात को स्वीकार नही करते। कुछ लोग जन्मजात अपराधी होते हैं और कुछ जन्मजात साधु। अपराध की प्रवृत्तियों का विकसित होना जातक जिस वातावरण और परिस्थिति में रहता है उस पर निर्भर होता है। आपने देखा होगा कि बच्चों में हर एक वस्तु को नष्ट कर देने की प्रवृत्ति होती है। इसका अर्थ यह नहीं हैं कि उनमें बुद्धि नहीं होती। होता यह है कि उनमें नष्ट करने की जन्मजात प्रवृत्ति होती है। उनको उसका परिणाम समझाकर सुधारा जा सकता है। कुछ लोगों मे जन्म के बाद इस प्रकार की प्रवृत्ति अत्यधिक होती है और यदि वे बुरे वातावरण में और परिस्थितियों में रहने लगें तो वे अपराधी बन सकते हैं और बन जाते हैं। हम यह भी नही मानते कि निर्बल इच्छा-शक्ति के कारण लोग अपराधी बन जाते हैं या आवेश में आ जाते हैं या प्रलोभन के शिकार होते हैं। इसके विपरीत अपराधी होना एक वैयक्तिक गुण है। कोई वस्तु किसी के लिये प्रलोभन उत्पन्न करती है, परन्तु दूसरा व्यक्ति उस वस्तु के प्रति प्रलोभित नहीं होता। हमारा ऐसा कहने का यह अर्थ

कि दण्ड किसी व्यक्ति के अनुसार नहीं, परन्तु उसके अपराध के अनुसार देना चाहिए।

जहां तक हाथ का सम्बन्ध है; हत्या को उसके अनुसार तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

(1) वह हत्या जो आवेश में आने पर, अत्यधिक क्रोधित होने पर और प्रतिशोध के कारण की जाती है।

(2) धन सम्पत्ति या किसी और प्रकार के लाभ के लिये की गई हत्या। ऐसी हत्या जातक अपनी नीच अभिलाषा पूर्ण करने के लिये कर सकता है।

(3) किसी हृदयहीन द्वारा की गई हत्या। ऐसी हत्या करने वालों का स्वभाव ऐसा होता है कि उनको दूसरों की यातनायें देखकर प्रसन्नता होती है; तृप्ति प्राप्त होती है। इस प्रकार का व्यक्ति अपने शिकार के साथ इस प्रकार खेलता है जैसे बिल्ली चूहे को मारकर खाने से पूर्व करती है। वह अपने शिकार के साथ मित्रता करता है, उसकी खातिर करता है और फिर शहद की बूदों में मृत्यु की खुराकें देता है। उसे अपने शिकार को मृत्यु से पूर्व तड़पते देखने मे पैशाचिक तृप्ति प्राप्त होती है।

प्रथम श्रेणी में कोई विशेषता नहीं होती। पुरुष या स्त्री परिस्थितयो से वशीभूत होकर हत्यारे बन जाते हैं। ऐसा हत्यारा एक अत्यन्त सज्जन और मृदुल स्वभाव का व्यक्ति भी हो सकता है, परन्तु किसी विशेष परिस्थिति मे वह क्रोध से पागल हो उठता है और हत्या कर बैठता है। जब होश आने पर उसे अपने हिंसक कृत्य का आभास होता है तो उसका मन पश्चाताप से भर जाता है। इस प्रकार की हत्या करने वाले व्यक्तियों के हाथों में केवल अनियन्त्रित क्रोध और पाशविक उत्तेजना के अतिरिक्त कोई अन्य अशुभ लक्षण नही होते हैं। ऐसा प्रायः निम्न श्रेणी के हाथों में होता है। ऐसे हाथों में शीर्ष रेखा छोटी, मोटी और लाल रंग की होती है। नाखून छोटे और लाल होते हैं और हाथ भारी और खुरदरा होता है। इन लोगों में अंगूठा नीचा स्थित होगा, वह छोटा और मोटा होगा और उसका प्रथम पर्व गदामुखी होगा (चित्र संख्या 8)। इन लोगों के हाथ में शुक्र क्षेत्र भी अत्यन्त विस्तृत होता है। जिसके कारण उनमें कामुकता का आधिक्य होगा और प्रायः इसी दुर्गुण के कारण वे अपना मानसिक संतुलन खो बैठेंगे। यदि शुक्र क्षेत्र असाधारण रूप से उन्नत न हो तो उनमें सबसे बड़ा अवगुण होगा उनका क्रोध, जिस पर नियंत्रण पाने मे वे असमर्थ होंगे।

दूसरी श्रेणी मे कोई भी उपर्युक्त गुण असाधारण नहीं होते। इस प्रकार के व्यक्तियों के हाथों में सबसे अधिक विशेषता शीर्ष रेखा में दिखाई देगी (प्लेट 14)। वह गहराई के साथ अंकित होगी, असाधारण स्थिति में होगी और बुध क्षेत्र की ओर काफी ऊंचाई लेगी या वहां पहुंचने से पूर्व दाहिने हाथ मे अपने स्वाभाविक स्थान से

बिल्कुल हटी होगी। प्रवृत्तियों में वृद्धि होती है, तो वह हृदय रेखा में प्रविष्ट होकर उस पर अधिकार कर लेती है। ऐसे व्यक्तियों का हाथ प्रायः सख्त होता है, अंगूठा असाधारण मोटा नहीं, लम्बा होता है। वह बिल्कुल दृढ़ होता है और उसे पीछे मोड़ा नहीं जा सकता। यह सारी बनावट लालच की प्रवृत्ति देने वाली होती है और ऐसे व्यक्ति लाभ प्राप्त करने के लिये अपने अंतर्विवेक को कुचल डालते हैं।

तीसरी श्रेणी के व्यक्ति के हाथ में साधारण रूप से देखने में कोई भी असाधारण चिन्ह नही दिखाई देगा। परन्तु सब गुणों की परीक्षा के बाद उसके स्वभाव का छल-कपट प्रकाश में आयेगा। उसका हाथ सख्त, बहुत पतला और लम्बा होगा। अगुलियां करतल की ओर कुछ-कुछ मुड़ी होंगी, अंगूठा लम्बा होगा और उसके दोनो पर्व पूर्ण रूप से विकसित होंगे, जिसके फलस्वरूप उसमें योजना बनाने की योग्यता और उसको कार्यान्वित करने की क्षमता होगी। ऐसे व्यक्ति के हाथ में शीर्ष रेखा कुछ ऊपर को स्थित होती है। वह बहुत पतली और लम्बी होती है जिससे उसका छल-कपट का लक्षण प्रदर्शित होता है। शुक्र का क्षेत्र या तो धंसा हुआ होता है या अत्यधिक उन्नत होता है। जब शुक्र क्षेत्र धंसा हुआ होता है तो जातक अपराध केवल अपराध करने के लिये करता है। जब अत्यधिक उन्नत हो तो अपराध पाशविक वासना की तृप्ति के लिए किया जाता है। ऐसे लोगों के लिए हत्या करना भी एक कला होती है, जिसमें उन्हें दक्षता प्राप्त होती है। ऐसे लोग हत्या के लिये हिंसा का उपयोग कभी नहीं करते और प्रायः ऐसे उपाय सोच निकालते हैं जिनके कारण हत्या के आरोप से भी बच जाते हैं।

(3)

उन्माद रोग के विभिन्न चरण (Various Phases of Insanity)

प्रायः लोग कहते हैं कि कुछ-कुछ पागलपन सब मे होता है। जब यह छोटा पागलपन सनकीपन से आगे निकल जाता है तब ही मनुष्य को 'पागल' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। क्योंकि पागलपन कई प्रकार के होते हैं, उनके लक्षण भी विविधतायें लिये हुए होते हैं। हम इस संबंध में केवल निम्नलिखित तीन श्रेणियों के पागलपन का विवेचन करेंगे।

(1) अवसाद या विषाद आसक्ति (Melancholy) और धर्मान्धता, मतिभ्रम (Hallucinations)

(2) सनकीपन
(3) पागलपन

अवसाद और धर्मान्धता

जो लोग अवसाद के शिकार रहते हैं उनके मन में और मुख पर सदा उदासी होती है। सब कुछ उन्हें नीरस और निरर्थक लगता है और वे पूर्णरूप से निराशावादी होते हैं। ऐसे व्यक्तियों के हाथ चौड़े होते हैं और शीर्ष रेखा तेज ढलान लेती हुई चंद्र क्षेत्र के लगभग अन्त तक पहुँच जाती है. शीर्ष रेखा पर वह रूप उनकी अत्यधिक कल्पनाशीलता व्यक्त करता है। इसके साथ-साथ शुक्र क्षेत्र भी समुचित रूप से उन्नत नही होता। जिसके कारण उन्हें किसी व्यक्ति मे दिलचस्पी नही होती। इस योग मे शनि क्षेत्र भी अपनी भूमिका अदा करता है। ऐसे हाथ में उसका पूर्णरूप से प्रभुत्व होता है।

धर्मान्ध का हाथ भी इसी प्रकार का होता है। उनकी धर्मान्धता पागलपन की सीमा तक पहुच जाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अत्यधिक कल्पनाशीलता के कारण बच-पन से ही मतिभ्रम के शिकार बन जाते हैं और धर्म के सम्बन्ध में कट्टर विचारों वाले बन जाते हैं। उनको जितना समझाया जाता है या जितना उनका विरोध किया जाता है, वे उतने ही अधिक और कट्टर बन जाते हैं। आरम्भ में इस प्रकार का रूप वे कभी-कभी धारण करते हैं और बाद में वे विचारों की धारा में बहकर उन्मत्त हो जाते हैं, और अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। आजकल बहुत से तांत्रिक सिद्धियों को प्राप्त करने में संलग्न लोग इस श्रेणी में लाये जा सकते हैं।

सनकीपन

इस प्रकार का पागलपन प्रायः उन लोगों में पाया जाता है जिनके हाथ चमसा-कार या दार्शनिक होते हैं।

अत्यन्त चमसाकार बनावट के हाथ वालों में तेजी से ढलान लेने वाली शीर्ष रेखा इस गुण की सूचक होती है। प्रारम्भ में ऐसे व्यक्ति ऐसी योजनायें बनाते हैं जिन में विस्मयजनक मौलिकता होती है, परंतु विचारों और योजनाओं का इतना विशाल भण्डार उनके मस्तिष्क मे भर जाता है कि वे कोई भी काम पूरा नहीं कर पाते। ऐसे व्यक्तियों को अवसर नही प्राप्त होता कि अपने विचारों को व्यावहारिक रूप दे सकें तो वे पागलों के समान हो जाते हैं। यदि उन्हें अवसर मिल जाये तो कभी-कभी बड़े बड़े आविष्कारों के जन्मदाता बन जाते हैं।

दार्शनिक हाथ में इस प्रकार के गुण या अवगुण की सूचक शीर्ष रेखा ही होती है। यदि वह रेखा सहसा मुड़कर चंद्र क्षेत्र में उतर जाये और हाथ अत्यन्त दार्शनिक बनावट का हो तो जातक के मन में यह सनक सवार हो जाती है कि मनुष्य जाति

रक्षा करने वाला केवल वही एक व्यक्ति है। उसके उद्देश्य गलत नहीं होते, परंतु वह इस प्रकार अपने मतों को यथार्थ करने में कट्टरपंथी बन जाता है कि उसकी क्रियाशीलता पागलों के समान हो जाती है।

वास्तविक पागलपन

इस प्रकार के पागलपन का कारण मस्तिष्क की विकृति होती है जो हाथ की परीक्षा में दो श्रेणियों में विभाजित होती है। एक तो वह जो कभी न सुधरने वाला जड़मूर्ख होता है और दूसरा जो बदमिजाज, दुष्ट और बिल्कुल पागल होता है।

पहली श्रेणी के जातकों में एक चौड़ी, नीचे की ओर ढलान वाली, द्वीप चिन्हों और सूक्ष्म रेखाओं से पूर्ण शीर्ष रेखा होती है। ऐसे व्यक्ति में बुद्धि या समझ नाम की कोई चीज नहीं होती। इनके मस्तिष्क का विकार जन्म-जात होता है और उसका सुधार नही हो सकता।

दूसरी श्रेणी के जातकों में शीर्ष रेखा छोटे-छोटे लहरदार टुकड़ों की बनी होती है जो विभिन्न दिशाओं की ओर मुड़ी होती है। उसमें बहुत सी रेखायें जीवन रेखा के अंदर मंगल क्षेत्र से आरम्भ होती हैं और दूसरे मंगल क्षेत्र की ओर दौड़ती है। ऐसी बनावट के साथ नाखून छोटे और लाल रंग के होते हैं। इस प्रकार के पागल अत्यन्त बदमिजाज, झगड़ालू और शोर-शराबा करने वाले होते हैं। ये लोग कभी होश में भी आ जाते हैं; परन्तु ऐसे अवसर बहुत कम होते हैं। इन लोगों की दशा में भी सुधार होने की कोई आशा नहीं होती।

(4)
हाथ किस प्रकार से देखना चाहिये

हस्त-परीक्षक को जातक के सामने इस प्रकार बैठना चाहिये कि पूरा प्रकाश जातक के हाथों पर पड़े। प्रकाश इतना तेज होना चाहिए कि हाथ की रेखाओं, चिन्हों आदि को देखने में कोई कठिनाई न हो। जब हाथ देखा जा रहा हो तो किसी तीसरे व्यक्ति को वहां न होना चाहिये, क्योंकि वह व्यक्ति बिना जाने-बूझे हस्त-परीक्षक और जातक दोनों के ध्यान में विघ्न उपस्थित कर सकता है। हाथ की परीक्षा के लिए कोई विशेष समय नियत नही है। हिन्दू विद्वानों का मत है कि सूर्योदय के समय या उसके तुरंत बाद हाथ देखने के लिये सबसे अधिक उपयुक्त समय होता है; क्योंकि दिन की थकावट के बाद शाम की अपेक्षा प्रातःकाल हाथ मे रक्त का संचार अधिक ठीक होता

है। इसलिये हाथ और रेखाओं का वास्तविक रंग इस समय उचित प्रकार से ज़ाना जा सकता है। जातक को अपने सामने बैठाकर हस्त-परीक्षक दोनों हाथ ठीक प्रकार से देख सकता है। हस्त-परीक्षा आरम्भ करते समय सबसे प्रथम देखने की बात यह है कि हाथ की बनावट किस श्रेणी की है। फिर देखना चाहिये कि अंगुलियां हाथ की बनावट से मिलती-जुलती हैं या नही, या वे किसी अन्य श्रेणी की हैं। इसके पश्चात् बायां हाथ देखना चाहिये और फिर दाहिना। यह देखना चाहिये कि बाये हाथ से दाहिने हाथ में कितना अन्तर हो गया है। फलादेश के लिये दाहिने हाथ को ही आधार मानना चाहिये।

सब महत्त्वपूर्ण विषयों के लिये जैसे बीमारी, मृत्यु, भाग्य की उन्नति-अवनति, विवाह आदि के लिये यह देखना चाहिये कि बायां हाथ किस प्रकार के आश्वासन देता है और उन सकेतो को देखकर अंतिम निर्णय लेना चाहिये।

जिस हाथ की परीक्षा की जा रही हो उसको हस्त-परीक्षक को अपने हाथ से दृढता से पकडना चाहिये और उस रेखा या चिन्ह को दबाना चाहिये जिसकी परीक्षा की जा रही हो। दबाने से उसमे रक्त का पूरा प्रवाह आ जाता है। इससे यह भी ज्ञात हो जायेगा कि उस रेखा या चिन्ह में क्या परिवर्तन या वृद्धि होने की सम्भावना है।

हाथ के प्रत्येक भाग—करतल, करपृष्ठ, नाखून, त्वचा, रंग, अंगुलियां, अंगूठा मणिबन्ध आदि की परीक्षा आवश्यक है। सबसे प्रथम अंगूठा देखना चाहिये—वह लंबा है या छोटा है, उसका विकसन कैसा है, इच्छा शक्ति का पर्व दृढ है या लचीला, वह बली है या निर्बल। फिर करतल की ओर ध्यान देना चाहिये—यह देखिये कि वह सख्त है, मुलायम या पिलपिला है।

इसके पश्चात् अंगुलियों पर आइये—देखिये करतल से उनका अनुपात क्या है? वे लम्बी हैं या छोटी। उनकी परीक्षा करके यह देखिये कि किस श्रेणी की हैं (वर्गाकार, चमसाकार आदि)। यदि वे मिश्रित प्रकार की हैं तो हर अंगुली की बनावट को ध्यान मे रखिये। अब नाखून देखिये—उनसे यह जानने का प्रयत्न कीजिये कि स्वभाव और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में वे क्या व्यक्त करते हैं। अंत में सारे हाथ पर एक तीखी नजर डालिये। यह करने के पश्चात् ग्रह क्षेत्रों की ओर चलिये। यह मालूम कीजिये कि कौन से ग्रह क्षेत्र प्रमुख रूप से सुस्पष्ट हैं। ग्रह क्षेत्रो के बाद रेखाओं को देखिये। ऐसा कोई निश्चित नियम नही है कि किस रेखा की सर्वप्रथम परीक्षा हो, परन्तु उचित यही होगा कि परीक्षा जीवन रेखा से और स्वास्थ्य रेखा से आरम्भ की जाये और फिर उसके बाद शीर्ष रेखा, भाग्य रेखा, हृदय रेखा आदि पर ध्यान देना चाहिये।

हस्त-परीक्षक की हैसियत से जो कहिये सत्य कहिये, परन्तु सावधानी के साथ सत्य बातों को इस प्रकार कहिये कि जातक को सहसा कोई मानसिक आघात न अनुभव हो। आपका भाव, आपकी चेष्टायें, आपके शब्द सब सहानुभूतिपूर्ण होने चाहिये।

जिसका हाथ आप देखें उसमें दिलचस्पी लीजिये और दिलचस्पी प्रदर्शित कीजिये। उस के जीवन, उसके स्वभाव और भावनाओं में प्रविष्ट हो जाइये। आपका ध्येय उसकी भलाई करना होना चाहिये। यदि आप ऐसा न कर सके तो जातक आपके पास से निराश और उदास होकर लौटेगा। अगर आप अपने कार्य को ऐसा आधार दे देंगे तो आप भी प्रसन्नचित्त बने रहेंगे और अपने कार्य में भी आपको दिलचस्पी बनी रहेगी। यदि जातक आपके मित्र हों तो मित्रता पर आंच न आने दीजिये। यदि जातक आपके शत्रु या विरोधी हों तो अपने मन के भाव को दबाये रखिये। आप अपने काम पर ध्यान दीजिये, शत्रुता-मित्रता को भूल जाइये।

हस्त-विज्ञान ऐसा विषय नहीं है कि एक दो पुस्तक पढ़कर या कुछ हाथ देख-कर आप सिद्धहस्त हो जायेंगे। अपने ज्ञान में वृद्धि और परिपक्वता लाना चाहते हैं तो संतोष और धैर्य रखिये। यदि आपने इस विषय को बिल्कुल सरल समझा था और अध्ययन करने पर उसे कठिन और जटिल अनुभव करते हैं, तो घबड़ाइये नहीं। उसको अपनी योग्यताओं के लिये चुनौती समझ कर उसका पठन, मनन, शोध आदि कीजिये। आप कुछ दिन बाद देखेंगे कि वह आपकी योग्यताओं की पहुंच के बाहर नहीं है। अंधेरी सुरंग के अंत में भी प्रकाश होता है। आप प्रयत्न करेंगे तो कोई कारण नहीं कि वह प्रकाश दिखाई न दे।

हस्त-विज्ञान ज्ञान का भण्डार है। उससे लाभ उठाइये। वह एक प्रकाश स्तम्भ है, उसके प्रकाश से अपना और दूसरों का मार्गदर्शन कीजिये। यदि आप ऐसा करने में सफल हुए तभी आपको इस विज्ञान के वास्तविक अनुयायी बनने का अधि-कार प्राप्त होगा।

(5)

हाथ और समयांकन भागों में विभाजन की पद्धति

(Time—The System of Seven)

हमने अपने लिये हाथ की परीक्षा से घटनाओं का समयांकन करने के लिये जिस पद्धति का अनुसरण किया है, उसका जिक्र हमने किसी अन्य पुस्तक में नहीं देखा है। हमने इसको सदा ठीक पाया है और इसलिये हम तो यही कहेंगे कि पाठक इसी पद्धति के अनुसार घटनाओं का समय निश्चित करें तो उनके फलादेश सत्य प्रमाणित होंगे (चित्र संख्या 23)।

इस सम्बन्ध में हम आपको बता दें कि वैज्ञानिक और मेडिकल दृष्टिकोण से

गणना करने में सात को एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। ऐसी मान्यता है कि शारीरिक व्यवस्था में प्रत्येक सातवें वर्ष पूर्ण परिवर्तन हो जाता है। आधान काल (Prenatal existence) की सात अवस्थायें होती हैं। मनुष्य का मस्तिष्क (Brain) पूर्ण रूप से क्रियाशील होने से पूर्व सात रूप धारण करता है। हम देखते हैं कि आदिकाल से सात के अंक ने संसार के इतिहास में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जैसे—मनुष्य जाति की सात श्रेणियों (Seven Races of Humanity), संसार के सात आश्चर्य (Seven Wonders of the World), सात ग्रहों के देवताओं की सात वेदियां, सप्ताह
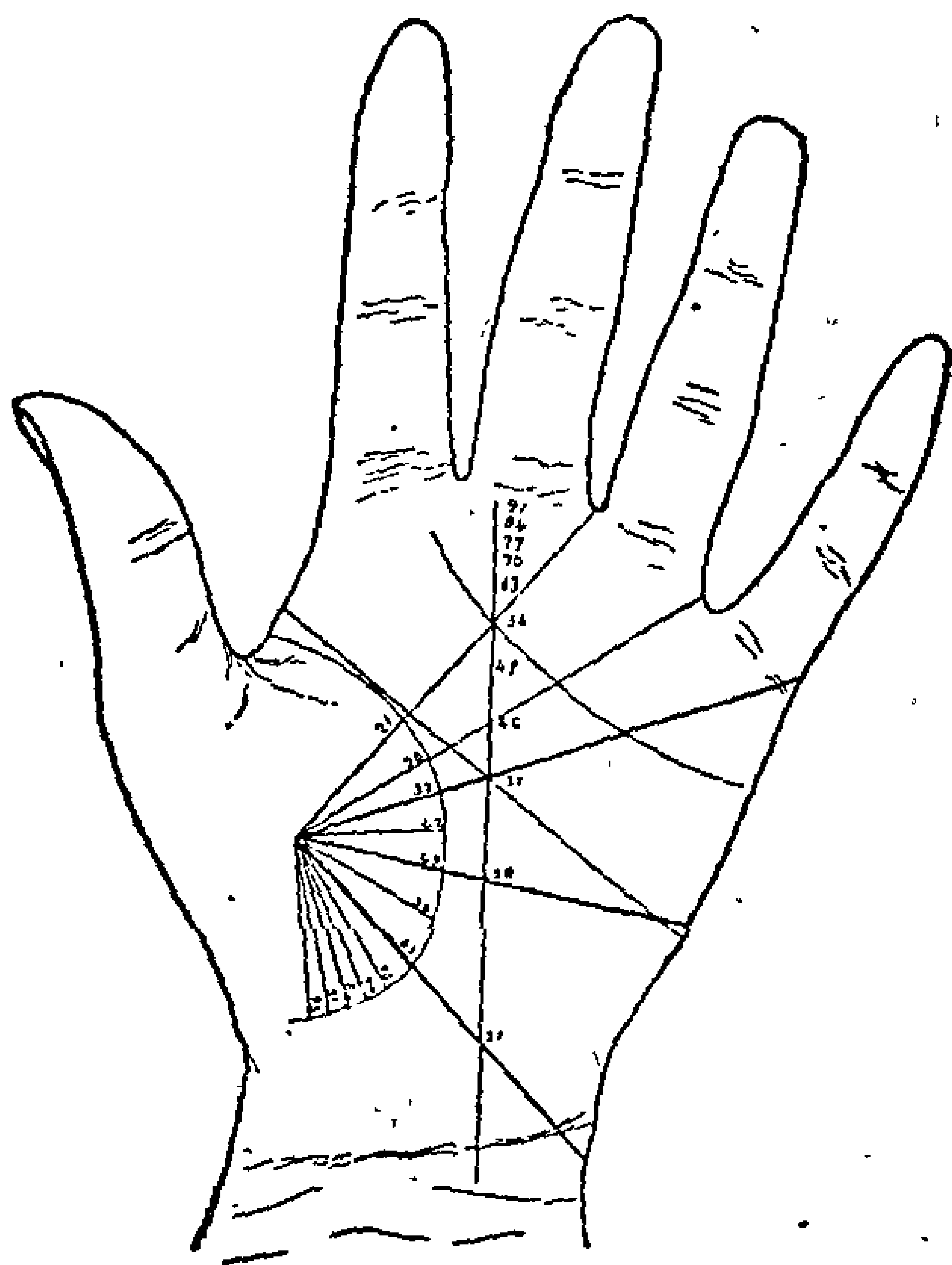
के सात दिन, इंद्रधनुष के सात रंग, संगीत के सात सुर, सात विभागों में बने हुए शरीर के तीन भाग, आदि आदि। हमने इस बात को अत्यन्त ध्यान से देखा है और हमारा अनुरोध है कि पाठक भी इस नियम को अपने अनुभव में परीक्षा करें कि एकांतर सात (Alternate seven) अर्थात् (एक सात को छोड़कर दूसरा सात) शरीर के क्रियात्मक परिवर्तनों के समान अन्य क्षेत्रों में भी उसी प्रकार क्रियाशील होते हैं, जैसे किसी शिशु का स्वास्थ्य सात वर्ष की अवस्था में निर्बल हो जाये तो 21 वर्ष की अवस्था में भी उसका स्वास्थ्य निर्बल होगा। इसी तरह यदि सात वर्ष की आयु में वह पूर्ण स्वस्थ है और सबल है तो बीच के काल में कितना ही अस्वस्थ क्यों न रहा हो, 21 वर्ष की अवस्था मे वह पूर्णरूप से स्वस्थ हो जायेगा। इस नियम से स्वास्थ्य के सम्बन्ध में फलादेश करने में लाभप्रद सहायता मिलती है। हमने इस नियम को अपने अनुभव में बहुत ठीक पाया है। हाथ की प्रत्येक रेखा (कीरो का संकेत प्रधान रेखाओ की ओर मालूम होता है) को सात-सात के विभागों मे विभाजित करके उनके फल का समयांकन काफी शुद्धता से किया जा सकता है। प्रायः जीवन और भाग्य रेखाओं से घटनायें देखी जाती हैं। शीर्ष और हृदय रेखा से भी ऐसा किया जा सकता है। चित्र संख्या 23 में देखिये। हमने भाग्य रेखा को तीन बड़े भागों में विभाजित किया है—21, 35, 49 और यदि हस्त विज्ञान का छात्र इनको याद रखे तो बाकी विभागों को सरलता से पूरा किया जा सकता है। इस प्रकार की गणना करने में हाथ की बनावट का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु नोकीले और वर्गाकार या चमसाकार हाथों में बहुत अंतर होता है, इसलिये उन पर एक ही प्रकार से गणना से कभी शुद्ध समयांकन नही हो सकेगा। इसलिये करतल की लम्बाई के अनुसार स्केल (Scale) को बढ़ाना और घटाना बहुत जरूरी है।

जब तारीखों की गणना करनी हो तो भाग्य रेखा और जीवन रेखा दोनों की एक साथ परीक्षा करनी होगी। आप देखेंगे कि एक रेखा से निकाला हुआ घटना का समय दूसरी रेखा से पुष्टि प्राप्त करेगा।

इस सम्बन्ध में अभ्यास ही सफलता दिलवा सकता है। इसलिये कुछ गलतियों की परवाह न करके अभ्यास मे संलग्न रहिये और वह समय शीघ्र आ जायेगा कि आप किसी बीती हुई या भविष्य में होने वाली घटना का समय शुद्धता से बताने में समर्थ होंगे।

नोट—हम (रूपांतरकार) तो यह समझते हैं कि यदि हस्त-विज्ञान का कोई छात्र किसी घटना का वर्ष भी शुद्ध बता दे तो उसे समझना चाहिये कि वह इस संबंध में काफी सफल और दक्ष हो गया है।

चतुर्थ खण्ड

(1)

हाथों को उदाहरण-प्लेटों का विवेचन

प्लेट 2—हर हाइनेस इन्फैण्टा ईयूलालिया का हाथ

इस हाथ में एक विशेष बात यह है कि इसमें अनेकों रेखायें है जो एक दूसरे के प्रतिकूल अर्थ रखती हैं और इन महिला का स्वभाव भी इन्हीं के अनुरूप था। वह एक चतुर और प्रतिभाशालिनी महिला थीं जिनमें सब कुछ करने की क्षमता थी; परन्तु कोई भी कार्य प्रशंसात्मक रूप से करने में असमर्थ थी।

वह स्पेन के भूतपूर्व सम्राट् आल्फान्जो XIII की चाची थीं और उन्हें यूरोप के एक विशिष्ट राज दरबार में अत्यन्त उच्च और सम्मानित स्थान प्राप्त था; परन्तु उन्होने अपनी उच्च स्थिति का लाभ नहीं उठाया, अनेकों प्रेम सम्बन्ध स्थापित करके अपने माथे पर कलंक का टीका लगाया, अपने वैवाहिक जीवन को विषमय बनाया और अपने धन का अधिकांश भाग ऐश आराम में उड़ा दिया।

उनमें चित्रकारी की अच्छी योग्यता थी, वह एक प्रतिभाशालिनी लेखिका थीं और संगीत में भी प्रवीण थी। वह एक कुशल घुड़सवार थी और बन्दूक चलाने मे भी सिद्धहस्त थीं; परन्तु उन्हें जीवन में कोई विशिष्ट सफलता नही प्राप्त हुई।

उनके हाथ में सूर्य रेखा को देखिये। यद्यपि आरम्भ मे वह अच्छी लगती है; परन्तु लगभग करतल के मध्य मे वह टेढ़ी होकर शनि के क्षेत्र पर समाप्त होती है। किसी के हाथ पर यह एक अशुभ योग है, विशेषकर जब भाग्य रेखा शाखाओं में विभाजित हो जाये और अपने समाप्ति स्थान पर पहुंचने से पूर्व अपने बल को खो बैठे।

हस्त-विज्ञान के छात्र के लिये अन्य देखने वाली बातें हैं—हृदय रेखा के बृहस्पति क्षेत्र पर आरम्भ में उसकी शाखा का नीचे की ओर झुक जाना, हृदय रेखा का सम्पूर्ण रूप, शुक्र मेखला का टूटा-फूटा होना, बुध क्षेत्र के मूल स्थान पर विवाह रेखाओं का झुका होना। शीर्ष रेखा के मध्य में एक स्पष्ट द्वीप चिन्ह है। यह रेखा अपने अन्त पर दो शाखाओ में विभाजित हो जाती है और ऊपरी शाखा के अन्त पर

नक्षत्र चिन्ह है और स्थान है मंगल का दूसरा क्षेत्र। यह योग यद्यपि मानसिक प्रतिभा का सूचक है, परन्तु अनियमित प्रकृति देने वाला है।

इन्फैण्टा ईयुलालिया का अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व था। वह एक अत्यन्त आनन्दमयी और मेहमानों का सत्कार करने वाली मेजबान थी। यद्यपि पुरुष उनकी ओर आकर्षित होते थे; परन्तु उनके बहुत शत्रु थे (इस सम्बन्ध मे वृहस्पति क्षेत्र के नीचे मंगल क्षेत्र को पार करती हुई आड़ी रेखायें देखिये)।

इस हाथ से यह ध्यान में रखना चाहिए कि यदि हाथ मे रेखाओं का जाल हो तो रेखायें अपने शुभ गुण को खो बैठती हैं। वास्तविक रूप से सफल वे ही लोग होते हैं जिनके हाथ में प्रधान रेखायें स्पष्ट रूप से अंकित हों और इधर-उधर से जाने वाली रेखाओं से कटी-फटी न हों।

प्लेट 3—जैनरल सर बुलर का हाथ

इस हाथ में एक विशेष देखने की बात यह है कि इसमें दो शीर्ष रेखायें हैं। एक तो वह है जो हृदय रेखा से चिपकी हुई सीधी करतल को पार कर जाती है और दूसरी वह है जो वृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होती है। तर्जनी के मूल स्थान पर जीवन रेखा से उठती हुई रेखायें भी ध्यान देने योग्य हैं।

हाथ लम्बा है और बौद्धिक श्रेणी का है। अंगूठा अलग होकर स्पष्ट रूप से खड़ा है और प्रबल इच्छा-शक्ति की प्रतिमूर्ति बना हुआ है।

कनिष्ठिका अंगुली ही इस हाथ मे ऐसी है जो समुचित रूप से विकसित नहीं है, तदनुसार जैनरल सर बुलर को अपनी वाक्शक्ति और भाषा पर पूरा-पूरा अधिकार नहीं प्राप्त था और वे एक अच्छे वक्ता भी नहीं थे। जब अपना बचाव करने का समय आया और जब-जब ओजस्वी वक्तव्य करने का समय आया तो वह असहाय बने रहे।

उस हद तक भाग्य और सूर्य रेखायें शुभ हैं जब एक रेखा सूर्य रेखा को शनि क्षेत्र की ओर काटती है। किसी भी हाथ पर यह एक शुभ लक्षण नहीं कहा जा सकता और उस अवस्था में जब उस रेखा से सूर्य रेखा काटती है तो जीवन में कई झटकों या असफलता या उतार-चढ़ाव की सूचना मिलती है।

वृहस्पति क्षेत्र से आती हुई शीर्ष रेखा ने जैनरल सर बुलर को संगठन की असीम क्षमता प्रदान की थी और अपने नीचे काम करने वालों पर उनको पूर्ण रूप से प्रभुत्व प्राप्त था।

परन्तु हाथ में एक योग ऐसा है जो बुरी तरह खटकता है। हाथ मे शीर्ष रेखा और हृदय रेखा के परस्पर जुड़कर एक मोटी रेखा का रूप धारण कर लेना और फिर सीधी होकर समस्त करतल को पार कर जाना एक दुर्भाग्यसूचक लक्षण है। ऐसे लोग केवल एक दिशा में सोचते हैं और किसी भी सलाह को स्वीकार करने के लिये वे

तैयार नहीं होते। किसी भी विषय पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देने की क्षमता के कारण इस प्रकार के लोगों को अपूर्व सफलता मिलती है, परन्तु उसी समय तक जब तक कि उनके हाथ की सूर्य रेखा से कोई रेखा शनि क्षेत्र की ओर नहीं झुक जाती। यदि ऐसा होता तो उनकी सारी योजनायें बालू के महल की तरह ढह जाती हैं।

सर बुलर ने हमारा विश्वास नहीं किया जब हमने उन्हें बताया कि उनको एक और युद्ध अभियान का नेतृत्व करना पड़ेगा। जिसमें वह असफल होंगे और उनके मस्तक पर कलंक का टीका लगेगा। ऐसा ही हुआ। बोयर युद्ध (Boer war) में वे सेनाध्यक्ष थे और उनकी सेना पराजित होने के कारण उन्हें युद्धस्थल से वापस बुला लिया गया और उनकी कटु आलोचना की गई।

प्लेट 4—सर आर्थर सलीवन का हाथ

आपेरा के लिए संगीत संयोजन सर आर्थर सलीवन किया करते थे। उसके लिए सदा उनको स्मरण किया जायेगा। उनके दाहिने हाथ की छाप से स्पष्ट दिखाई देता है कि उनकी शीर्ष रेखा से उनकी जीवन रेखा अलग हो गई, वह लम्बी है और धीरे-धीरे ढलान लेते हुए चन्द्र क्षेत्र के मध्य में पहुंच गई है। शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच मे फासला उनकी नाटक सम्बन्धी योग्यता व्यक्त करता है और चंद्र क्षेत्र की ओर मुड़ी शीर्ष रेखा उनकी मौलिकता और कल्पनाशीलता की जन्मदात्री है।

भाग्य रेखा का शुक्र क्षेत्र से घनिष्टता से जुड़ा होना उनके प्रारम्भिक जीवन की कठिनाइयों की सूचना देता है। उन्होंने अपने परिवार और सम्बन्धियों की सहायता करने के लिए अपना बलिदान कर दिया था। दूसरी भाग्य रेखा जो जीवन रेखा के मध्य में उसके अन्दर से निकलकर वृहस्पति क्षेत्र को जाती है उनकी सफलता की सूचक है और इस संकेत को पूर्णरूप से प्रमाणित करती है। प्रधान भाग्य रेखा अपने अन्त पर वृहस्पति क्षेत्र की ओर मुड़ जाती है।

यद्यपि उनके गुणों और उनकी योग्यताओं को पूरी मान्यता मिली थी; परन्तु हाथ में सूर्य रेखा कहीं भी नहीं दिखाई देती। इसका भी प्रभाव उनके जीवन पर पड़ा था। वे स्वभाव से हंसमुख और प्रसन्नचित्त रहने वाले व्यक्ति नहीं थे। उन्हें ख्याति प्राप्त करने की कोई परवाह न थी और न ही उनको अपने संगीत संयोजन की योग्यता से कोई सांसारिक समृद्धि प्राप्त हुई।

प्लेट 5—विलियम व्हिटले का हाथ

यह सज्जन इंगलैण्ड के एक बहुत बड़े और समृद्ध व्यापारी थे। कहा जाता है कि उनके विशाल संस्थानों मे सुई से लेकर युद्धपोत तक खरीदा जा सकता था।

हाथ वर्गाकार है और अंगुलियां काफी लम्बी हैं और संतुलित मस्तिष्क देने वाली शीर्ष रेखा है जो जीवन रेखा से घनिष्ठता के साथ जुड़ी हुई है। उनके स्वभाव

में न तो जल्दबाजी थी, न उतावलापन था। वे हर काम को पूर्णरूप से सोच-विचार कर और सावधानी के साथ करते थे। इसके साथ-साथ वे अपने आपको सदा किसी भी प्रकार के आपत्तिकाल के लिए तैयार रखते थे।

हाथ में भाग्य और सूर्य रेखायें स्पष्ट रूप से अंकित हैं। एक अनोखी रेखा भाग्य रेखा के मध्य से निकलकर वृहस्पति क्षेत्र के मूल स्थान को जा रही है; परन्तु यह मंगल क्षेत्र से आती और सूर्य क्षेत्र को जाती रेखा से कट रही है। यह योग उस अवस्था में है जब उनके कार्यालय में उनके एक अवैध (जारज) पुत्र ने गोली मारकर उनकी हत्या कर दी थी।

जब हमने उनके हाथ की छाप ली थी तब उनको चेतावनी दे दी थी कि मृत्यु हिंसा द्वारा होगी। हमने उन्हें बताया था कि उस समय से 13 वर्ष बाद यह हिंसक घटना होगी और ठीक 13 वर्ष बाद ही वही हुआ जो हमने कहा था।

प्लेट 6 और 7—जोसेफ चैम्बरलेन, एम० पी० और उनके पुत्र सर आस्टिन चैम्बरलेन के हाथ

प्लेट 6 और 7 मे पिता पुत्र के दाहिने हाथो की छाप हाथ मे वंशानुगतता (Heredity) के चिन्हों के ज्वलन्त उदाहरण हैं। आप देखेंगे कि पिता-पुत्र दोनो के हाथो के आकार एक समान हैं और रेखायें भी बहुत कुछ मिलती-जुलती हैं।

जब हमने ये छापें ली थी तब सीनियर चैम्बरलेन ने हमारे इस फलादेश मे बहुत दिलचस्पी प्रकट की थी कि उनका पुत्र भी उन्हीं के समान राजनैतिक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करेगा।

यह सर्वविदित है कि जैसे-जैसे समय गुजरता गया आस्टिन चैम्बरलेन ने शासन मे वही अत्यन्त उच्च पद प्राप्त किये जिन पर किसी समय उनके पिता आसीन हुए थे। यह हाथो के संकेत का चमत्कार है कि आस्टिन चैम्बरलेन पार्लियामेंट में उसी आयु में प्रविष्ट हुए जिसमे उनके पिता हुए थे। और मंत्रीमण्डल मे उन्होने वही स्थान प्राप्त किये जो उनके पिता को मिले थे। उनको 'सर' के खिताब से भी सम्मानित किया गया। उनके पिता को यह खिताब नही मिला था।

उनको वही रोग हुए जिनसे उनके पिता ग्रसित हुए थे और रोग हुए भी एक-सी आयु में। दोनों को ही नरवस ब्रेक डाउन से राजनैतिक सक्रियता से अवकाश लेना पड़ा था। दोनों के हाथों में स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा पर आक्रमण कर रही है। दोनों को 63 वर्ष की आयु में पक्षाघात हुआ था।

प्लेट 8—कीरो का हाथ

प्लेट 8 में हमारे अपने हाथ की छाप है, जिसमें दोहरी शीर्ष रेखा का स्पष्ट उदाहरण देखा जा सकता है।

हम आपको बता चुके हैं कि दोहरी शीर्ष रेखा बहुत कम हाथों में पाई जाती हैं। आप देखेंगे कि अपने आकार और गुणों में ये दोनों रेखायें एक-दूसरे से भिन्न हैं। जैसा कि नीचे वाली जीवन रेखा से घनिष्टता से जुड़ी हुई शीर्ष रेखा एक संवेदनशील, कलाप्रिय और कल्पनाशील स्वभाव की सूचक है। ऊपर वाली शीर्ष रेखा कुछ दूसरे ही गुण प्रदर्शित करती है। वह बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होती है और करतल को पार कर जाती है। वह आत्मविश्वास, महत्त्वाकांक्षा, प्रभुत्व की भावना और जीवन को एक संतुलित और व्यावहारिक दृष्टि से देखने की सूचक है।

आप सोचेंगे कि एक ही व्यक्ति में एक-दूसरे से विपरीत गुण एक ही साथ कैसे हो सकते हैं ? परन्तु जो ये रेखायें हमारे सम्बन्ध में बता रही हैं वह बिल्कुल सत्य है।

हमारे बायें हाथ में ऊपर वाली शीष रेखा का नाम निशान भी नहीं है। वहां केवल नीचे वाली शीर्ष रेखा है। आप जानकर विस्मित होंगे कि हमारे दाहिने हाथ में ऊपर वाली शीर्ष रेखा उस समय दृष्टिगोचर हुई जब हम तीस वर्ष की आयु पर पहुंचे। इस समय हम एक लेक्चरार और वक्ता के रूप में समाज के सामने आये। इस परिस्थिति मे नीचे वाली शीर्ष रेखा से प्रदर्शित सवेदनशीलता पर नियंत्रण प्राप्त करने को हम विवश हो गये। परिणामस्वरूप हमारी ऊपर वाली शीर्ष रेखा विकसित होने लगी और कुछ ही वर्षों मे अपने पूर्ण रूप से अंकित हो गयी। देखा जाए तो हमारे हाथ में सबसे बलवती यही रेखा है।

हम यह भी बता चुके हैं कि जिनके हाथ में दो शीर्ष रेखायें होती हैं उनके स्वभाव और गुण भी दो प्रकार के होते हैं और वे दो प्रकार के जीवन व्यतीत करते हैं। हमारे साथ ऐसा ही हुआ। तीस वर्षों तक कुछ लोग हमें केवल 'कीरो' के नाम से जानते रहे और कुछ दूसरे लोग केवल हमारे वास्तविक नाम से ही परिचित थे।

अपने हाथ मे संवेदन और कल्पनाशीलता के गुण के फलस्वरूप हम काव्य में बहुत रुचि लेते रहे और हमें कविता लिखने का बहुत शौक बना रहा।

नोट—आप कीरो के हाथ की छाप मे देखेंगे कि उसमे अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा कितनी स्पष्ट रूप से अंकित है। यह रेखा बहुत कम हाथों मे पाई जाती है। दो शीर्ष रेखाओं और इस अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा ने उनको जगत विख्यात और अत्यन्त सफल भविष्य-वक्ता बनाया। आप देखेंगे कि उनकी ऊपर वाली शीर्ष रेखा से एक और रेखा तर्जनी के मूल स्थान को जाती है और उसी से मिली एक रेखा सूर्य क्षेत्र को गई है। ये रेखायें उनके सर्वतोमुखी गुणो मे चार चांद लगा रही हैं। कीरो केवल हस्त-विज्ञान मे ही पारंगत नही थे, ज्योतिष और अंक विद्या में भी वे उतने ही सिद्धहस्त थे। अतीन्द्रिय ज्ञान रेखा ने उनको एक प्रकार की अंतर्दृष्टि प्रदान की थी और उसके प्रदत्त गुणों द्वारा वे यहां तक बता देते थे कि होने वाली घटना किस वर्ष में किस

महीने और किस दिन में घटित होगी। कीरो ने वर्षों पूर्व बता दिया था कि भारत को कब स्वतंत्रता प्राप्त होगी। उन्होंने अन्य देशों और उनके राजनैतिक नेताओं और सम्राटों के संबंध में भविष्यवाणियां की थीं जो सत्य प्रमाणित हुईं।

प्लेट 9—एक शिशु का हाथ

यह हाथ की छाप हमने बच्चे के जन्म होने के चौबीस घण्टे पश्चात् ली थी। शिशुओं के हाथ की छाप लेने में बहुत कठिनाई होती है क्योंकि मांस मुलायम और पिलपिला होता है और बच्चा शान्त नही रह सकता।

परन्तु हमने जो छाप ली है वह काफी अच्छी है और उसकी रेखायें स्पष्टता के साथ दिखाई देती हैं। यह बच्चा अब मर्द बन गया है। यह व्यापार के क्षेत्र में बहुत सफल हुआ है। इसका कारण शायद यह है कि इसके हाथ की ऊपर वाली शीर्ष रेखा हाथ मे एक ओर से दूसरी ओर सीधी चली गई है।

प्लेट 10—मैडम सारा बर्नहार्ट (Madam Sarah Bernhardt) का हाथ

इस हाथ में सबसे अधिक महत्व की भाग्य और सूर्य रेखायें बिल्कुल मणिबन्ध से आरम्भ हुई हैं और समानान्तर चलती हुई क्रमशः शनि और सूर्य क्षेत्र को गई हैं। उन्होंने सारे जीवन (बचपन से वृद्धावस्था) पर अधिकार कर रखा है।

इस महान अभिनेत्री ने नाट्य क्षेत्र में 16 वर्ष की अवस्था मे प्रवेश किया था। उनमें अपूर्व अभिनय योग्यता के होते हुए भी, उनको अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। यह कठिन समय उनकी 26 वर्ष की आयु तक रहा जब दो भाग्य रेखायें साथ-साथ चलने लगी। इसके बाद उत्तरोत्तर वे सफलता के शिखर की ओर बढ़ने लगी और समस्त विश्व में उनकी ख्याति फैल गई।

शीर्ष रेखा तो ऐसी सीधी है जैसे फुट रूल लगाकर खींची गई हो और शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच का फासला उनके उतावलेपन और नाट्य अभिनय की योग्यता को प्रदर्शित करता है।

इस हाथ में एक देखने योग्य बात यह भी है कि जीवन रेखा से अनेकों छोटी छोटी रेखायें ऊपर की ओर उठ रही हैं। ये समय-समय पर उनकी कार्यशक्ति या ओजस्विता के स्फुटन की सूचक हैं।

बुध क्षेत्र से आती हुई स्वास्थ्य रेखा का जीवन रेखा पर आक्रमण हाथ में एक शुभ लक्षण नही होता। इस हाथ में स्वास्थ्य रेखा दिखाई नही देती। मैडम सारा अपनी वृद्धावस्था तक स्वस्थ रही। उनकी मृत्यु 78 वर्ष की आयु मे हुई थी।

नोट—हम (रूपांतरकार) इस हाथ के सम्बन्ध में कुछ अपने विचार भी देना चाहते है। हाथ अनेकों रेखाओ से भरा हुआ है जो शरीर के स्नायु मण्डल को अत्यंत

शीघ्र घबरा जाने का स्वभाव अवश्य होगा। बात वास्तव में यह है कि उनकी प्रधान रेखायें सब बलवती और अत्यंत स्पष्ट रूप से अंकित हैं विशेषकर जीवन रेखा। इसके कारण और शीर्ष रेखा और हृदय रेखा के सशक्त होने के कारण उनमें अपनी घबराहट (Nervousness) पर नियंत्रण करने की क्षमता प्राप्त होगी। उनकी भाग्य और सूर्य रेखायें बहुत सुन्दर हैं; परतु शुक्र क्षेत्र से आती हुई अनेकों आड़ी रेखाओं से वे कटी हुई है। इससे स्पष्ट है कि उन्हें अपने जीवन मे काफी विरोध का सामना करना पड़ा होगा। एक रेखा सूर्य क्षेत्र से निकलकर बुध क्षेत्र की ओर जाती दिखाई देती है। इस रेखा ने उनको अपने क्षेत्र मे व्यापारिक सफलता देने में बहुत योगदान दिया होगा। शुक्र क्षेत्र काफी उन्नत है और बुध क्षेत्र पर चार विवाह रेखायें हैं। ऐसा लगता है कि विवाह नही तो प्रेम संबंध काफी संख्या में रहे होंगे। इनकी सफलता का एक और योग भी हाथ में दिखाई देता है। इनकी सब अंगुलियां सुगठित हैं और एक ही स्तर पर करतल से जुड़ी हुई हैं। हमें तो समुचित रूप से उन्नत बृहस्पति क्षेत्र पर तर्जनी के मूल स्थान से कुछ नीचे एक नक्षत्र चिन्ह भी दिखाई देता है। महत्त्वाकांक्षाओं की पूर्ति और अपूर्व सफलता देने का यह एक निश्चित सूचक है। हृदय रेखा और शीर्ष रेखा के बीच मे कई रेखाओं द्वारा सूर्य रेखा पर भी एक नक्षत्र चिन्ह बना दिखाई देता है। यह अपूर्व ख्याति और सफलता देने वाला माना जाता है।

प्लेट 11—डेम मेल्बा (आस्ट्रेलिया की प्रसिद्ध गायिका) का हाथ

इस हाथ मे भी शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच में फासला है और शीर्ष रेखा बृहस्पति क्षेत्र से आरम्भ होती है जिसका गुण है महत्त्वाकांक्षा देना।

खण्ड दो प्रकरण 5 में हमने कहा है कि जब शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच (आरम्भिक स्थान) में मध्यम फासला होता है तो जातक अपने विचारों और योजनाओं को कार्यान्वित करने में अधिक स्वतंत्र होता है। इससे जातक में स्फूर्ति और काम को करने की प्रेरणा भी मिलती है। प्रकरण 7 में हमने कहा है कि शीर्ष रेखा और जीवन रेखा के बीच में फासला अधिक चौड़ा न हो तो वह शुभ फलदायक होता है। यदि वह मध्यम हो तो जातक को स्फूर्ति और आत्मविश्वास प्राप्त होता है और वकील, बैरिस्टर, अभिनेता धर्मोपदेशक जैसे लोगों के लिए लाभदायक होता है।

डेम मेल्बा को वे सब गुण प्राप्त थे जो उनके सार्वजनिक जीवन के लिए आवश्यक थे। उनके हाथ मे भाग्य और सूर्य रेखायें भी स्पष्ट रूप से अंकित हैं, विशेष कर सूर्य रेखा जो सूर्य क्षेत्र के मूल स्थान पर एक त्रिकोण के रूप में समाप्त होती है। सूर्य रेखा और भाग्य रेखा का बराबर होना जीवन मे सफलता अवश्य दिलवाता है।

हाथ के मध्य मे जीवन रेखा दोहरी है। इसके कारण डेम मेल्बा को असाधारण जीवन शक्ति प्राप्त हुई और बाहर की ओर जाकर यात्रा रेखा से मिल जाने के कारण उन्होंने निरंतर देश-विदेश की यात्रायें की और यश अर्जित किया।

डेम मेल्बा ने हमें न्यूयार्क में अपना हाथ दिखाया था और हमने उन्हें जो कुछ बताया उसके सम्बन्ध में उन्होंने हमें लिखा था—

"Cheiro, you are wonderful—What more can I say ?"

प्लेट 12—लार्ड लिटन का हाथ

लार्ड लिटन के दाहिने और बायें हाथ एक समान थे। उनकी इच्छा थी कि हम अपनी पुस्तक में उनके बायें ही हाथ की छाप को प्रकाशित करें।

पुरुष के हाथ के लिए यह कोनिक या कलाप्रिय हाथ का वास्तविक उदाहरण है जिसका विवरण हमने इस पुस्तक के खण्ड एक प्रकरण पांच में दिया है; परन्तु लार्ड लिटन के हाथ मजबूत और लचीले (Elastic) थे, जिसके कारण वे अपने आराम तलबी के स्वाभाविक गुण को नियन्त्रित करने में सफल हुये। कला की ओर उनकी प्रवृत्ति भी स्वाभाविक थी और उनका स्टूडियो देखने योग्य था। वह यहां एक राजकुमार के समान रहते थे।

उनके हाथ में सूर्य रेखा मणिबन्ध से अनामिका तक जाती है। उसके कारण प्रतिभा, ख्याति और सफलता उनको अपने कॅरियर के आरम्भ से ही प्राप्त हो गयी।

लार्ड लिटन की हाथों के अध्ययन में भी दिलचस्पी थी।

प्लेट 13—प्रसिद्ध लेखक मार्क ट्वेन का हाथ (Mark Twain)

यह छाप मार्क के दाहिने हाथ की है। मार्क ट्वेन हास्य रस के लेखक थे। उनके हाथ में सबसे अधिक विशेष ध्यान देने वाली रेखा है शीर्ष रेखा जो समतल रूप में करतल को पार करती है। ऐसी रेखा उन लोगों के हाथ में होती है जिनमें हर बात के शुभ और अशुभ दोनों पहलुओं को देखने और समझने का गुण विकसित हो जाता है। मार्क ट्वेन में यह गुण पूर्ण रूप से विद्यमान था।

प्लेट 14—एक दोषी निर्णित हत्यारे का हाथ

डॉ० मीयर के हाथ की छाप प्राप्त होने की एक मनोरंजक कहानी है। जब हम प्रथम बार न्यूयार्क गये तो एक समाचार पत्र 'New York World' के कुछ सम्वाददाता हमारे पास आये और हमारी परीक्षा लेने के उद्देश्य से बिना सम्बन्धित व्यक्तियों के नाम और स्थितियों को बताये उनके हाथों की छापें हमारे सामने रखी और हमसे उनके विषय में बताने को कहा। हमने चुनौती स्वीकार कर ली।

लगभग एक दर्जन छापों की परीक्षा करके उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों के स्वभाव, गुण, दोष, कॅरियर, स्वास्थ्य आदि के सम्बन्ध में जो हमारी समझ मे आय हमने बता दिया। उसके बाद हमारे सामने एक व्यक्ति के बायें और दाहिने हाथों की

व्यक्ति के बायें हाथ मे सब रेखायें बिल्कुल सामान्य थीं और दाहिने हाथ में जितना सम्भव हो सकता है उतनी असाधारण थी। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि उसके बायें हाथ मे शीर्ष रेखा स्पष्ट और सीधी करतल मध्य को पार कर गई थी; परन्तु दाहिने हाथ में वह रेखा उमठकर अपने स्थान से हटी हुई थी और शनि क्षेत्र के नीचे से हृदय-रेखा में जुड गई थी। हमने कहा कि इन दो हाथों के स्वामी ने अपने जीवन का कैरियर सामान्य रूप से आरम्भ किया था। सम्भव है अपने प्रारम्भिक जीवन मे वह धर्म-प्रचारक या धार्मिक शिक्षक रहा होगा और बाद में विज्ञान या चिकित्सा के क्षेत्र मे आ गया होगा। हमने बताया कि किसी प्रकार भी धन अर्जित करने की लोलुपता के कारण उसके स्वभाव में धीरे-धीरे; परन्तु नियमित रूप से परिवर्तन होने लगा और अन्त मे वह इस स्थिति मे पहुंच गया कि धन प्राप्त करने के लिए उसे हत्या करने मे भी संकोच न रहा। हमने आगे बताया कि हम यह नहीं कह सकते कि इसने एक हत्या की है या बीस की हैं, परन्तु जब यह चवालीस वर्ष की आयु का होगा तब यह गिरफ्तार किया जायेगा, इस पर मुकद्दमा चलेगा और इसे मृत्युदण्ड प्राप्त होगा। तब यह प्रमाणित होगा कि इसने अपनी बौद्धिक क्षमता और व्यवसाय का अपराधी कार्यवाहियों द्वारा धन प्राप्त करने के लिये उपयोग किया होगा और अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये कोई भी अपराध उसके लिये जघन्य न होगा। इसे मृत्यु-दण्ड होगा; परन्तु यह बड़ी उम्र तक जीवित रहेगा—शायद यह जीवन कारावास में व्यतीत होगा।

जब हमारी हाथों की परीक्षा का विवरण और हमारी भविष्यवाणी उसी रविवार को New York World नामक समाचार पत्र में प्रकाशित हुई, तो हमें ज्ञात हुआ कि उन हाथो का स्वामी शिकागो का डॉ० मीयर था। वह उसी सप्ताह इस आरोप में गिरफ्तार किया गया था क्योंकि उसने अपने उन धनाढ्य मरीजों को विष देकर हत्या कर दी जिनका उसने बड़ी-बड़ी राशियों का जीवन बीमा कराया था।

डॉ० मीयर पर मुकद्दमा चला और उसको मृत्यु दण्ड हुआ। उसने कई अपीलें की, परन्तु सब ऊपरी अदालतों ने मृत्यु दण्ड बहाल रखा। अन्त में बिजली की कुरसी (Electric chair) पर बैठाकर मृत्यु दण्ड कार्यान्वित करने की तारीख भी निश्चित हो गयी। इस तारीख के सप्ताह पूर्व डॉ० मीयर ने हमें जेल से बुलाने का अनुरोध पत्र भेजा। जब हम जेल मे उससे मिले तो हमने देखा कि वह बिल्कुल जर्जर हो गया था। उसने अत्यन्त आर्त्त स्वर में हमसे पूछा—"कीरो साहब ! आपने New York World के सवाददाताओं को बताया था कि मृत्यु दण्ड प्राप्त करके भी मैं काफी दिन जीवित रहूंगा। क्या अब भी ऐसा हो सकता है ?"

हमने उसकी जीवन रेखा को देखा था। वह चवालीस वर्ष की आयु के बाद बिना टूटी और सशक्त थी। यदि ऐसा न भी होता तो उसकी दयनीय दशा को देखकर शायद हम उसे प्रोत्साहन ही देते। उसकी जीवन रेखा का विचार करके हमें ऐसी

धारणा हो रही थी कि किसी चमत्कार द्वारा डॉ० मीयर के जीवन की रक्षा हो जाएगी। हमने उसे यही आश्वासन दिया।

और हुआ भी ऐसा ही। कोई आशा की झलक न दिखाई देने पर उसने फिर सुप्रीम कोर्ट मे अपील की और वहां के न्यायाधीशों को सरकारी प्रमाणों में कुछ ऐसी कमी दिखाई दे गयी जिसके कारण उन्होंने मृत्यु दण्ड को आजीवन कारावास के दण्ड में परिणित कर दिया। इस घटना के पन्द्रह वर्ष बाद तक मीयर जीवित रहा।

कभी ऐसा होता है कि शीर्ष रेखा और हृदय रेखा दोनों के स्थान में केवल एक ही रेखा होती है। उस समय यह कहा जा सकता है कि हृदय और शीर्ष रेखा एक ही है। इस प्रकार की रेखा में और उस रेखा में, जिसका डॉ० मीयर के हाथ में हमने ऊपर जिक्र किया है, अन्तर होता है।

प्लेट –15 आत्महत्या करने वाले के हाथ

यह एक स्त्री के हाथ की छाप है जिसको आत्महत्या करने की धुन लगी रहती थी। इसमें शीर्ष रेखा अत्यन्त ढलान लेकर चन्द्र क्षेत्र के नीचे मणिबन्ध में पहुंच गयी है।

इस युवती में, जो यद्यपि अच्छे कुल की थी; आत्महत्या करने की ओर प्रवृत्ति 18 वर्ष की आयु में उत्पन्न हो गयी थी। उसने अपने प्राण लेने के लिए कई बार प्रयत्न किए और अन्त में जब यह 28 वर्ष की थी तब उसने आत्महत्या कर डाली। यह लम्बा सकरा बहुत नोकीला (psychic) हाथ है और अंगुलियां गांठदार हैं। इस हाथ में मध्यमा के नीचे शनि मुद्रिका भी है और उसमें से निकलकर एक रेखा जीवन रेखा को 28 वर्ष की अवस्था मे काट रही है और सूर्य रेखा पर लगभग उसी आयु पर स्पष्ट द्वीप चिन्ह है।

शीर्ष रेखा का गहरी ढलान लेकर चन्द्र क्षेत्र के नीचे पहुंचना आत्महत्या की प्रवृत्ति का निश्चित लक्षण है। यदि इस प्रकार की रेखा इतनी नीची भी न जाए तो जातक इतना निराशावादी और टूटे दिल का होता है कि निराशा या दु;ख के किसी सहसा आघात से वह आत्महत्या करने को उतारू हो जाता है।

नोट—कीरो ने ऊपर अत्यन्त ज्ञानवर्धक उदाहरण दिए हैं। वे उनके काल के प्रसिद्ध लोगों के हैं।

हम पाठकों के लाभार्थ महात्मा गांधी के हाथों की छाप और उन पर अपना विवेचन नीचे दे रहे हैं।

प्लेट 16—महात्मा गांधी का हाथ

प्लेट 16 में महात्मा के बाएं हाथ का एक स्कैच है। दुर्भाग्य से उनके दाहिने

उचित नहीं समझा। परन्तु उस हाथ के प्रमुख लक्षण जो के०सी० सेन ने अपनी पुस्तक 'हस्त सामुद्रिक शास्त्र' में दिए हैं वे हम नीचे दे रहे हैं।

बायां हाथ (प्लेट 16)—बाएं हाथ में प्रमुख लक्षण ये हैं

(1) दीक्षा रेखा या वृहस्पति मुद्रिका (King of Solomon)

(2) हृदय रेखा की शाखाओं द्वारा बनाए हुए त्रिकोण। यह पताका का चिन्ह भी माना जा सकता है। ये वैराग्य तथा ख्याति के लक्षण हैं।

(3) शुक्र क्षेत्र पर एक मन्दिर का चिन्ह है। यह चिन्ह ख्याति और सौभाग्य देने वाला माना जाता है।

(4) कनिष्ठिका सुगठित है और अन्य अंगुलियों से अलग खड़ी है। यह वैयक्तिक रूप में मौलिकता और स्वतन्त्र स्वभाव का चिन्ह है।

(5) सब अंगुलियां करतल में समतल हैं।

(6) अंगूठा लम्बा है और नीचे को स्थित है। इच्छा शक्ति का पर्व सशक्त है।

(7) कल्पनाशीलता और अवचेतन मन के भाग सुविकसित हैं।

दाहिने हाथ के प्रमुख लक्षण

(1) हृदय रेखा शाखाओं युक्त

(2) हृदय रेखा और हृदय रेखा द्वारा बने हुए त्रिकोण

(3) दीक्षा रेखा (4) धनुष का चिन्ह (5) पताका का चिन्ह

हाथों का विस्तृत विवेचन (डॉ० सेन द्वारा)

हाथ समुचित रूप से संतुलित हैं। अंगुलियां कोनिक और सुगठित हैं। वे मध्यम लम्बाई की हैं। अंगूठा लम्बा और नीचे की ओर जुड़ा हुआ (Low set) है। करतल अंगुलियों के नीचे मणिबन्ध के ऊपर की अपेक्षा अधिक चौड़ा है। वृहस्पति, शनि, सूर्य और बुध के क्षेत्र समुचित रूप से उन्नत हैं। कनिष्ठिका लम्बी और दोनों हाथों में अन्य अंगुलियों से अलग सी लगती हैं। सूर्य की अंगुली काफी लम्बी है और मध्यमा के नाखून के पर्व तक पहुंचती है। ये सब लक्षण एक असाधारण व्यक्तित्व के जन्मदाता हैं। इन लक्षणो से इच्छा शक्ति की प्रबलता, सहानुभूतिपूर्ण स्वभाव, नि:स्वार्थता उदारहृदयता और युक्तिसंगतता आदि गुण व्यक्त होते हैं। अंगुलियों का चिकनापन और उनका कोनिक रूप प्रेरणात्मक तथा अतीन्द्रिय ज्ञानात्मक गुणों की सूचना देते हैं। शुक्र क्षेत्र का अंगूठे की ओर उन्नत होना सच्चरित्रता का द्योतक है और काम की भावनाओ को मानव जाति और देश की सेवा की भावनाओ में परिणित कर देता है। अंगुलियों का समतल होना एक संतुलित स्वभाव, महानता और सफलता का लक्षण है।

कनिष्ठिका लम्बी होने से और उसके अन्य अंगुलियों से अलग होने से अत्यन्त उच्च स्तर की बौद्धिक और मानसिक क्षमता, असाधारण योग्यताओं और अरुढ़िवादी और स्वतंत्र स्वभाव के परिचायक हैं।

जब कनिष्ठिका इस प्रकार की हो तो जातक में असामान्य साहित्यिक योग्यता भी होती है जो सर्वविदित है कि महात्मा गांधी में पूर्ण रूप से थी। यह भी सब जानते हैं कि महात्मा गांधी सदा अपना रास्ता स्वयं निश्चित करते थे और अपने विचारों पर किसी का आधिपत्य नहीं होने देते थे।

उनकी मध्यमा असामान्य रूप से लम्बी थी। वह चिकनी और सीधी भी थी। इसके दो प्रभाव उन पर पड़े। आशावादी और प्रसन्न-चित्त बने रहे और सदा अपने सिद्धांतों के लिए अपने जीवन तक का बलिदान करने में अड़े रहे। बुध क्षेत्र की ओर कनिष्ठिका की सबलता ने उन्हें अपूर्व आत्म-संयम दिया। उनके अवचेतन मन (Sub-conscious) के उच्च स्तर का प्रतिनिधित्व चंद्र, मंगल (बृहस्पति के नीचे वाला); सूर्य और बुध क्षेत्र करते हैं।

उनके दोनों हाथों मे हृदय रेखा अपने स्वाभाविक स्थान से कुछ नीचे है और अन्त में दो शाखाओं में विभाजित हो जाती है। हृदय रेखा पर्याप्त रूप से लम्बी भी है। यह हृदय रेखा बृहस्पति क्षेत्र को घेरती हुई दीक्षा रेखा (वैराग्य सूचक) से मिल कर तर्जनी और मध्यमा के बीच मे एक त्रिकोण बनाती है जो एक असाधारण और बहुत कम हाथों में पाया जाने वाला विशिष्ट राजयोग (मान-प्रतिष्ठा, ख्याति, सच्चरित्रता, सौभाग्य और प्रभुत्व देने वाला योग) है। जब हृदय रेखा निर्दोष और बलवती होकर बृहस्पति क्षेत्र में पहुंचती हैं तो वह उच्चतम स्तर के प्रेम, कर्त्तव्य-परायणता, निःस्वार्थ, सत्यता और उच्च सिद्धांतों के प्रति निष्ठा की सूचक होती है। जैसा हमने कहा है कि दीक्षा रेखा से मिलने और शनि क्षेत्र पर त्रिकोण बनाने से ही गांधी जी को महात्मा गांधी बना दिया।

करतल अंगुलियों के मूल स्थान पर मणिबन्ध की अपेक्षा अधिक चौड़ा है। यह आकार यह व्यक्त करता है कि हाथ का स्वामी अपनी क्रियाशीलता के लिए मौलिक और स्वतन्त्र पथ चुनेगा। महात्मा गांधी का अहिंसा का सिद्धांत इसी का फल है।

बाएं हाथ में शीर्ष रेखा बिल्कुल सीधी और स्पष्ट रूप से अंकित है। इससे प्रकट होता है कि महात्मा गांधी उच्च आदर्शों के साथ वास्तविकता और व्यावहारिकता में भी विश्वास रखते थे।

उनका अंगूठा उनके असीम आत्मविश्वास का सूचक है।

यद्यपि फोटो में स्पष्ट नहीं है, किन्तु सूक्ष्मता से परीक्षा करने से यह मालूम होगा कि महात्मा गांधी के दोनों हाथों में दोहरी शीर्ष रेखा थी।

(2)

हिन्दू मत के अनुसार हस्त सामद्रिक के कुछ अनुभव सिद्ध योग

भक्ति योग

जिस मनुष्य के हाथ मे दो आयु (हृदय) रेखाएँ हों और कर-पृष्ठ दीर्घ हो और पुष्ट हों तो वह मनुष्य भगवद् आराधना में लिप्त रहता है और भविष्य ज्ञाता होता है।

भविष्य-वक्ता योग

चन्द्र स्थान पुष्ट और छोटी-छोटी रेखाओं से कटा हो; चन्द्र और बुध क्षेत्र उन्नत हों तो मनुष्य भविष्य-वक्ता होता है।

त्रिकाल ज्ञान योग

ऊर्ध्व रेखा (भाग्य रेखा) मणिबन्ध से उठकर मध्यमा के प्रथम पर्व तक जाए तो मनुष्य त्रिकालज्ञ होता है।

योगी योग

दीक्षा रेखा स्पष्ट रूप से अंकित हो, शनि और वृहस्पति क्षेत्र उन्नत हो, सूर्य रेखा शुद्ध हो तो मनुष्य योगी होता है। शनि क्षेत्र पर त्रिकोण चिन्ह हो तो मनुष्य योगी होकर विशेष गौरव प्राप्त करता है।

श्रेष्ठ पद लाभ योग

यदि कोई रेखा अनामिका के प्रथम पर्व से तीसरे पर्व तक जाए तो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ पद प्राप्त करता है।

परकीय सम्पत्ति लाभ योग

हाथ में अपरा पितृ रेखा (जीवन रेखा) शोभती हो, या सूर्य क्षेत्र उच्च हो; सूर्य रेखा और भाग्य रेखा अति शुद्ध हों तो मनुष्य दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त करता है।

विद्या योग

बुध, वृहस्पति और सूर्य क्षेत्र उच्च हों और पितृ रेखा (जीवन रेखा) से

उर्ध्व गामिनी कोई रेखा बृहस्पति क्षेत्र को जाए तो मनुष्य विद्या में पारंगत होकर प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।

द्रव्य नाश योग

यदि शुक्र स्थान से छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर पितृ रेखा और भाग्य रेखा को काटती हुई मंगल क्षेत्र (बुध क्षेत्र के नीचे) जाएं तो मनुष्य स्वतः अपने हाथों से अपने धन का नाश करता है।

विवाह में धन प्राप्ति योग

यदि बृहस्पति क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह हो तो मनुष्य विवाह में बहुत धन प्राप्त कर सुख से जीवन व्यतीत करता है। यदि बुध क्षेत्र से परिणय (विवाह) रेखा सूर्य क्षेत्र में पहुंचे तो उत्तम कुल में विवाह होता है और विशेष धन प्राप्त करता है।

कष्टकर विवाह योग

यदि परिणय रेखा (विवाह रेखा) स्थूल और कुत्सित हो अथवा सरल स्वल्प रेखा द्वारा कटी हो तो वैवाहिक जीवन कष्टकारी होता। सुन्दर कुशाग्र और दर्शनीय हो तो सुखप्रद विवाह होता है।

अनेक भार्या योग

शुक्र क्षेत्र में जाल चिन्ह हो तथा तर्जनी के तृतीय पर्व में नक्षत्र चिन्ह हो और परिणय रेखा के मुख पर दो-तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक का अनेक स्त्रियों से संबंध होता है। (परिणय रेखा से जितनी रेखाएं झुकी हों उतनी ही स्त्रियों से विछोह होता है)।

विवाह विचार

परिणय रेखाओं में जितनी रेखाएं कुशाग्र, सुन्दर और समानान्तर बनी हों, उतने ही विवाह होते हैं (या प्रेम सम्बन्ध होते हैं)।

विवाह रेखा से कोई शाखा निकल कर आयु रेखा (हृदय रेखा) का स्पर्श करे तो विवाह होकर सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है।

विवाह रेखा ऊपर अंगुली की तरफ झुकी हो तो जातक अविवाहित रहता है।

भाग्य रेखा से कई रेखाएं निकल कर आयु रेखा का स्पर्श करें तो भी विवाह नहीं होता।

बृहस्पति क्षेत्र के पास तर्जनी की बगल मे नीचे जितनी सुन्दर रेखाएं एक-दूसरे के समानान्तर दिखाई पड़ें, उतने ही विवाह होते हैं (प्रेम सम्बन्ध होते हैं)।

दाम्पत्य जीवन

मातृ रेखा से कोई शाखा निकल कर या स्वतः मातृ रेखा ही पितृ रेखा से मिले तो स्त्री पुरुष से प्रेम करती है।

पितृ रेखा आकर मातृ रेखा से मिले तो पुरुष स्त्री से प्रेम करता है।

दोनों मातृ-पितृ रेखा पृथक-पृथक हों तो दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं होता।

दोनों रेखाएं परस्पर मिली हों, देखने में सुन्दर हों, तो दाम्पत्य जीवन सुखी होता है।

विवाह रेखा आयु रेखा से जितनी निकट हो उतनी ही जल्दी विवाह होता है

कारावास योग

शुक्र और मंगल क्षेत्रों में चतुष्कोण चिन्ह हों तथा हाथ की कोई अंगुली चार पर्वों से युक्त हो तो मनुष्य को कारावास मिलता है।

प्राणदण्ड योग

शनि क्षेत्र और मध्यमा के तृतीय पर्व में यदि दो नक्षत्र चिन्ह हों या मातृ रेखा शनि स्थान में भग्न हो तो मनुष्य को प्राणदण्ड मिलता है।

आत्महत्या योग

भाग्य रेखा (ऊर्ध्व रेखा) के प्रारम्भ में और चन्द्र क्षेत्र में भी नक्षत्र चिन्ह हो और मंगल के स्थान (बुध क्षेत्र के नीचे) में क्रास या जाल चिन्ह हो तो मनुष्य आत्महत्या करते हैं।

अकाल मृत्यु योग

भाग्य रेखा के पास तथा आयु (हृदय) रेखा और मातृ (शीर्ष) रेखा के बीच में गुणक (क्रास) का चिन्ह हो या रेखा भग्न हो या छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो तो मनुष्य की असामयिक मृत्यु होती है।

अल्पायु योग

भाग्य रेखा मातृ रेखा को न काट कर शनि को पहुंचे तो मनुष्य अल्पायु वाला होता है।

तीर्थ स्थान में मृत्यु

चन्द्र क्षेत्र और वृहस्पति क्षेत्र उन्नत हों तथा शनि क्षेत्र पर पद्म ... हो तो मनुष्य की मृत्यु किसी तीर्थ स्थान में होती है।

दीर्घायु योग

हाथ की अंगुलियां लम्बी हों, आयु (हृदय) रेखा बुध स्थान से बृहस्पति क्षेत्र तक स्पष्ट और अखण्ड हो तो मनुष्य दीर्घायु होता है।

पितृ (जीवन) रेखा लम्बी; स्पष्ट, वक्र, नीचे की ओर झुकी तथा अछिन्न हो तो भी दीर्घायु योग होता है।

मध्यायु योग

हाथ की अंगुलियां मध्यम हों तथा आयु रेखा शनि क्षेत्र तक निर्दोष होकर जाए तो जातक मध्यायु वाला होता है।

अल्पायु योग

अंगुलियां छोटी हों, कृश और वक्र हों, आयु रेखा अनामिका के मूल तक ाए और छिन्न-भिन्न हो, पितृ रेखा पतली या चौड़ी, म्लान, भद्दी तथा ण्डित हो, मातृ रेखा शनि स्थान तक जाए और शाखाहीन हो, तो अल्पायु ोग होता है।

ास संबंध में 'हस्त संजीवनी' का मत

यदि आयु (हृदय) रेखा में (1) रक्त नील मिश्रित बिन्दु; (2) केवल रक्त बन्दु (3) श्वेत बिन्दु या (4) श्याम बिन्दु हों तो मनुष्य को क्रमशः सर्पदंशन, रक्त ोग, सन्निपात, विषपान का भय होता है।

यदि आयु रेखा श्याम वर्ण हो और उसमें रक्त बिन्दु हो तो मनुष्य को बेजली के द्वारा भय होता है।

यदि रेखा किसी सीधी रेखा से कटी हो तो शस्त्र के द्वारा चोट खाने से ृत्यु का भय होता है। यदि कोई रेखा बुध क्षेत्र से अंकुश के समान नीचे होकर ायु रेखा को काटे तो हाथी के द्वारा चोट खाने का भय होता है। यदि आयु रेखा अन्त में अनेक रेखाएं हों तो घोड़े के द्वारा भय होता है।

यदि दाहिनी ओर से अनेक टेढ़ी रेखाएं आयु (हृदय) रेखा को काटें तो जलकर मृत्यु होने की आशंका होती है। यदि बायीं ओर से ऐसी रेखाएं आयु रेखा को काटें तो जल में डूबकर मृत्यु होने की संभावना होती है।

यदि आयु रेखा अन्य रेखाओं से अनेक स्थानों पर कटी हो तो स्त्री द्वारा कलक प्राप्त होता है और अल्पमृत्यु होती है।

यदि आयु रेखा से कोई रेखा नीचे की ओर झुकी हो तो उच्च स्थान से गिर-कर मृत्यु होने की सम्भावना होती है।

सम्बन्धी चिन्ता होती है। उसका मन चंचल तथा उद्वेगयुक्त होता है।

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु

यदि भाग्य रेखा के आरम्भ में यव (द्वीप) या त्रिकोण चिन्ह हो तो जातक अपनी बाल्यावस्था में अपने माता-पिता को खो बैठता है।

पुरुष व्यभिचार योग

यदि शुक्र क्षेत्र में जाल चिन्ह तथा तर्जनी और मध्यमा में क्रम से नक्षत्र और त्रिकोण चिन्ह हो तो मनुष्य व्यभिचारी होता है।

धर्म-परिवर्तन योग

भाग्य रेखा से निकल कर कोई रेखा मणिबन्ध की ओर जाए और सूर्य क्षेत्र में गुणक (क्रास) चिन्ह हो; तो मनुष्य अपना धर्म छोड़कर दूसरा धर्म ग्रहणकर लेता है।

भाग्योदय

यदि मणिबन्ध वलय के ऊपर गुणक चिन्ह हो तथा ऊर्ध्व (भाग्य) रेखा पुष्ट हो, तो मनुष्य अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है।

जल-मग्न योग

यदि सब अंगुलियों के तीसरे पर्व में यव चिन्ह हों तो मनुष्य दुराचारी होता है और जल में डूबकर उसकी मृत्यु होती है।

सम्पत्ति और सुख

यदि आयु (हृदय) रेखा बृहस्पति क्षेत्र तक जाए और उसकी एक शाखा शनि क्षेत्र को जाए तो मनुष्य शत्रुओं को पराजित करके सम्पत्तिशाली बनता है और सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

००१